जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट-माला—४

पत्र-व्यवहार

भाग २

—जमनालाल बजाज का रियासती कार्यकर्ताओं से—

●

सम्पादक
रामकृष्ण बजाज

प्राक्कथन
डा. बी० पट्टाभि सीतारामैया

●

१९५८

मुख्य विक्रेता
सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, बंबई
की ओर से
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली
द्वारा प्रकाशित

पहली बार : १९५८
मूल्य
तीन रुपये

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
१० दरियागंज,
दिल्ली।



"अब ऐसा दूसरा पुत्र मै कहां से लाऊं ?"

—मो. क. गांधी

प्रस्तावना

इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने में मुझे बड़ी प्रसन्नता अनुभव होती है, क्योंकि किसी लोक-हितैषी के जीवन-वृत्त अथवा अन्य रचना से पाठकों को परिचित कराना बड़े महत्व का काम है।

जब हम लोग सन् १९२१ में कांग्रेस के नागपुर-अधिवेशन में उपस्थित हुए तो जिस व्यक्ति ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा और सबके दिल में अपने लिए आदर-भाव पैदा किया, वह था गोरे रंग, स्वस्थ शरीर, लंबे कद, मूर्त्ति-जैसी सुडौलता और सुंदर चेहरेवाला। हरकोई पूछता था—"ऐसी मोहक आकृति का यह छः-फुटा आदमी कौन है, जिसका चेहरा बुद्धिमत्ता के कारण चमक रहा है और जिसके सौम्य व्यक्तित्व से भी बढ़कर उसके व्यवहार और आचरण की सहज विनम्रता है?"

"यह वह करोड़पति है, जिसे ब्रिटिश सरकार ने 'रायबहादुर' बनाया था, लेकिन जिसने भारत की खोई हुई आजादी फिर से प्राप्त करने के लिए महात्मा गांधी द्वारा ब्रिटिश सरकार के साथ अहिंसात्मक संग्राम के अंग-रूप में बताये गये रास्ते तथा जीवन की नई योजना और नैतिकता के अनोखे शास्त्र के अनुसार अपना खिताब छोड़ दिया है।"

हर किसी व्यक्ति के मुंह से, जो एक ओर जमनालालजी से और दूसरी ओर महात्माजी से, साथ ही उन दोनों—गुरु और शिष्य—के बीच तेजी से बढ़ती हुई मित्रता और पारस्परिक स्नेह से परिचित था, तुरंत यही उत्तर निकलता था।

श्री जमनालाल बजाज का जन्म मारवाड़ में हुआ था और उन्हें वर्धा के एक धनिक ने गोद ले लिया था। उन्होंने नागपुर तथा बंबई को अपने व्यवसाय का केंद्र बनाया। नागपुर से रेल द्वारा जाते समय वर्धा के पास जो एक बड़ी इमारत दिखाई पड़ती है, वह सेठजी द्वारा निर्मित हाईस्कूल था,

जहां अब कामर्स कालिज चल रहा है, और वह उनके अनेक दानों में से एक है। इन्हीं दानों के कारण ही तो उन्हें ब्रिटिश सरकार ने 'राय बहादुर' का खिताब दिया था।

दिसंबर १९२१ में होनेवाले कांग्रेस-अधिवेशन की स्वागत-समिति का उन्हें अध्यक्ष बनाया गया। तबतक वह 'राय बहादुर' का खिताब छोड़ चुके थे और ब्रिटेन के विरुद्ध गांधीजी के आंदोलन में भाग लेनेवाले असहयोगी वकीलों की सहायता के लिए उन्होंने 'तिलक स्वराज्य फंड' में एक लाख रुपया दान दिया था। वह सहायता के निमित्त वकीलों के प्रार्थना-पत्रों को निपटाने के लिए बनी समिति के तीन सदस्यों में से एक थे। दूसरे दो थे गांधीजी तथा मोतीलालजी।

गांधीजी की गिरफ्तारी और उन्हें छः वर्ष की कैद की कड़ी सजा दिये जाने के बाद जब कांग्रेस के कार्य विभिन्न कार्यकर्त्ताओं को सौंपने पड़े, तब सेठजी पर खद्दर के कार्य-संचालन का दायित्व डाला गया। इस कार्य के लिए जमनालालजी को पांच लाख रुपये देने की बात कही गई। मलाबार में सहायता-कार्य के लिए समिति ने ८४,००० रुपये स्वीकृत किय। सेठजी ने उदारतापूर्वक एक लाख रुपये और दिये।

१९२२ में गया में अपरिवर्तनवादियों की जीत के साथ रचनात्मक कार्यक्रम पर अधिक जोर डालने का युग प्रारंभ हुआ, जिसका बाबू राजद्रप्रसाद, राजाजी, जमनालालजी, तथा श्री देवदास गांधी—इन सदस्यों के शिष्ट-मण्डल द्वारा जोर-शोर से प्रचार किया गया। इस शिष्ट-मंडल ने सारे देश का दौरा किया और 'तिलक स्वराज्य फंड' के लिए एक अच्छी रकम जमा की।

सन् १९२३ में झंडा-सत्याग्रह चल रहा था। शीघ्र ही उसपर सारे राष्ट्र का ध्यान केंद्रित होगया और उसने कार्य-समिति तथा अ० भा० कांग्रस कमेटी का समर्थन किया। झंडा-सत्याग्रह-आंदोलन में राष्ट्र-व्यापी दिलचस्पी पैदा करने के लिए गांधी-जयंती 'झंडा-दिवस' के रूप में मनाने का निश्चय किया गया। प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों को झंडा-जलस निकालने और झंडे का

जनता द्वारा सार्वजनिक प्रदर्शन करने का आदेश दिया गया। उस समय तक इस सत्याग्रह-आंदोलन के सिलसिले में जमनालालजी भी गिरफ्तार कर लिये गए। ३०००) के जुर्माने की वसूली के लिए उनकी कार कुर्क कर ली गई, लेकिन कार नागपुर में बिक ही न सकी और इसलिए उसे बिक्री के लिए काठियावाड़ ले जाना पड़ा। नागपुर में बंदियों तथा देश के सभी प्रांतों से आनेवाले सत्याग्रहियों ने भांति-भांति के कष्ट सहे। नागपुर-सत्याग्रह-आंदोलन अखिल भारतीय आंदोलन बन गया। उसकी सफलता का बहुत-कुछ श्रेय, जेल में होते हुए भी, जमनालालजी के साहस और दृढ़ता को है।

कांग्रेस के कार्य में जमनालालजी की दिलचस्पी बहुमुखी थी। सविनय-अवज्ञा-आंदोलन उन्हें रचनात्मक कार्यक्रम—विशेषकर खद्दर तथा अस्पृश्यता-निवारण—जितना ही आकर्षित करता था। सन् १९३० से १९३३ तक नमक-सत्याग्रह की ओर लोगों का ध्यान लगा रहा। कार्य-समिति ने पूना में कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा दिये गये पूर्व आदेशों को संशोधित करके सभी कांग्रेसियों का आवाहन किया कि वे कांग्रेस की सामान्य गतिविधियों के लिए कमेटियों का पुनर्गठन करें। सविनय-अवज्ञा-आंदोलन के बंद होते ही कार्यकारी अध्यक्ष का पद समाप्त होगया और कांग्रेस-अध्यक्ष सरदार पटेल के जेल में होने के कारण समिति ने अध्यक्ष का कार्य-भार संभालने और कांग्रेस के अगले अधिवेशन तक उस पद का सारा कार्य करने के लिए जमनालालजी को नामजद किया।

सितंबर १९३९ में द्वितीय महायुद्ध के शुरू होने तक का काल विशेष हलचल का नहीं था, लेकिन जमनालालजी हाथ-पर-हाथ रखकर नहीं बैठे रहे। वह एक देशी रियासत के रहनेवाले थे—जयपुर राज्य में सीकर के। सीकर में एक सत्याग्रह-आंदोलन हो रहा था, जिसमें उन्होंने सक्रिय भाग लिया। वह जेल में डाल दिये गये और इस काल में उनको तीव्र साइटिका और घुटनों के दर्द की शिकायत रही। इसके लिए बिजली की चिकित्सा की गई। उसमें कुछ अतिरेक होगया और बिजली ने उनके सारे घुटने और टखने की मांसपेशी के आस-पास का हिस्सा जला दिया। इससे वह महीनों चारपाई पर पड़े

रहे। बीमारी की इस गंभीर अवस्था में, स्वास्थ्य की बुनियाद पर, वह रिहा कर दिये गये। अपनी रिहाई के बाद वह अचानक सख्त बीमार पड़ गये और ११ फरवरी १९४२ को उनका देहांत होगया।

इस महान् देश-भक्त और लोक-हितैषी, राजनीतिज्ञ और लोकनीतिज्ञ के देहांत के समाचार ने जनता को स्तब्ध कर दिया। वह कांग्रेस के नये संविधान के लगभग आरंभ होने के समय से ही कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे थे। उनका जन्म सन् १८८९ में हुआ था और इस प्रकार वह श्री जवाहरलाल नेहरू के समसामयिक थे। यद्यपि जनता की निगाह में वह विशेष रूप से सन् १९२० में ही आये, तथापि देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सार्वजनिक गतिविधियों में वह जो भाग लेते रहे, उसकी कोई भी उपेक्षा नहीं कर सकता। कांग्रेस के नागपुर-अधिवेशन के समय वह केवल ३१ वर्ष के थे, लेकिन अपने लोकहितकारी कार्यों एवं दानशीलता के द्वारा उन्होंने लोगों के दिलों में अपना स्थान बना लिया था।

भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार में भी उन्होंने कम दिलचस्पी नहीं ली। यह ठीक है कि वह अंग्रेजी के पंडित नहीं थे, लेकिन कम ही लोग जानते होंगे कि उनकी अंग्रेजी की जानकारी कितनी विस्तृत और गहरी थी। वह कांग्रेस के प्रस्तावों के प्रत्येक अंग्रेजी मसविदे की बारीकी से जांच करते थे और कार्यसमिति के सामने पेश किये गये प्रस्तावों के मसविदों के आशय और भाषा में गंभीर संशोधन करके अपने मित्रों को अचम्भे में डाल देते थे। वह किसी भी चीज को वैसे ही स्वीकार नहीं कर लिया करते थे, और कभी-कभी वह किसी तथ्य को सुधारने और सही ढंग पर व्यक्त करने के लिए छोटा-सा सुंदर मौज़ूं वाक्य अंग्रेजी में बोलकर अपने मित्रों को चकित कर देते थे। उनकी मृत्यु के पहले के २५ वर्षों में कोई भी ऐसा राजनैतिक, सामाजिक या आर्थिक आंदोलन नहीं था, जिसमें उन्होंने ठोस भाग न लिया हो। वह गांधी-सेवा-संघ, अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा तथा अन्य सामाजिक एवं आर्थिक कल्याणकारी संस्थाओं के संस्थापक थे और शिक्षा, राष्ट्रभाषा हिंदी, हाथ-कताई तथा हाथ के बने कपड़े आदि की प्रगति के निमित्त बनी

कांग्रेस से संबद्ध अनेक संस्थाओं की स्थापना उन्हींके द्वारा हुई थी।

रचनात्मक कार्य के प्रसार की दृष्टि से सेठजी ने कई बार देश का एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौरा किया। उनकी मुख्य दिलचस्पी गांवों में थी। वहां उन्होंने पुराना चरखा देखा और उसमें क्या सुधार हो सकते हैं, इसपर विचार किया। जब कभी स्वाधीनता-संग्राम की पुकार आई, जमनालालजी ने अपने-आपको गिरफ्तारी के लिए आगे कर दिया। वह गांधीजी की सीख के अनुसार रहने का यत्न करते थे। वह गो-सेवा संघ के सदस्य थे और गाय के दूध, घी, मक्खन आदि का ही इस्तेमाल करते थे। गाय उनके लिए करुणा की मूर्त्ति थी।

कहने की आवश्यकता नहीं कि जमनालालजी की पत्नी और पुत्र-पुत्रियों आदि सबने उनके जीवन के सिद्धांतों को अपनाया और राष्ट्र को विविध प्रवृत्तियों में अपना योगदान दिया।

जमनालालजी से मिलनेवाले थोड़े ही लोग उन्हें धनी मानते थे। उनकी पोशाक मोटी होती थी और वह अपनी धोतियां तथा कपड़े अपने ही हाथ से कते सूत के बनवाने का आग्रह रखते थे। अपने निकट-संबंधियों में वह विशेष दिलचस्पी लेते थे।

जैसाकि गांधीजी माना करते थे, अगर धनी व्यक्ति अपना धन समाज की धरोहर के रूप में रखनेवाला ट्रस्टी है, तो एक व्यक्ति था, जिसने गांधीजी के जीवनकाल में ही उनकी इस परिभाषा को और अपेक्षा को पूर्ण कर दिया; अगर संपदा सेवा में सहायक है, तो एक व्यक्ति था, जिसने अपने साधनों का उपयोग अपने देशवासियों के दुखों और कष्टों को दूर करने के लिए किया; अगर अहिंसा समाज में मित्र और शत्रु और सृष्टि में ऊंच-नीच में कोई भेद-भाव नहीं करती, तो एक अनुभूतिशील हृदयवाला व्यक्ति था, जो मानव और पशु की समान रूप से सेवा करता था; अगर मनुष्य का कर्तव्य संसार में परि-पूर्ण जीवन-यापन करना है, तो एक व्यक्ति था, जिसका जीवन जितना बहु-मुखी था, उतना ही परिश्रमशील भी था और जितना एकनिष्ठ था, उतना ही व्यापक भी; अगर संसार में जीवन की उपलब्धियों का मूल्यांकन व्यक्ति के

जीवन की लंबाई से नहीं, बल्कि उसके जन्मजात अथवा प्राप्त गुणों से किया जाता है, तो एक व्यक्ति था, जिसकी त्याग, आत्म-संयम, विनम्रता, अनासक्ति, भाईचारे एवं सबके प्रति सदिच्छा की उदात्त भावना ने उसके ५२ वर्ष के अल्प जीवन में ही उसे महान् व्यक्ति की कोटि में पहुंचा दिया, जोकि आने-वाले युगों में धनिकों के लिए एक दृष्टांत के रूप में कार्य करेगा—वह व्यक्ति था सेठ जमनालाल बजाज।

उनके पत्र-व्यवहार का यह संग्रह अपना विशेष महत्व रखता है। उससे हमारे आजादी के इतिहास के बहुत-से पृष्ठों पर प्रकाश पड़ता है।

मैं आशा करता हूं कि कि इसका सर्वत्र आदर और स्वागत होगा।

हैदराबाद
२ अक्तूबर, १९५८

—बी० पट्टाभिसीतारमैया

सम्पादक का निवेदन

भारत की आजादी के इतिहास में देशी रियासतों के संघर्ष की लंबी कहानी अपना विशेष महत्व रखती है। उस आंदोलन के साथ पूज्य पिताजी (स्व. जमनालाल बजाज) का घनिष्ठ संबंध रहा। उन्होंने स्वयं उसमें सक्रिय भाग लेने के साथ-साथ उसका संचालन भी किया। इस सिलसिले में विभिन्न राज्यों के नेताओं तथा कार्यकर्ताओं से उनका काफी पत्र-व्यवहार हुआ। सौभाग्य से अधिकांश पत्र सुरक्षित रह गये और उन्हींमें से चुने हुए पत्रों का इस पुस्तक में संग्रह किया गया है।

पिताजी राजस्थान के थे। अतः स्वाभाविक रूप से उस प्रदेश के साथ उनका विशेष संपर्क रहा। इस पुस्तक के पत्रों में विशेष रूप से राजस्थान की ही चर्चा हुई है। लेकिन वह एकांगी नहीं है। रियासती आंदोलन के साथ-साथ राजस्थान की कोई भी ऐसी प्रवृत्ति नहीं है, जिसका उल्लेख इन पत्रों में न हुआ हो। बिजोलिया का आंदोलन, अजमेर की राजनीति, कांग्रेस का कार्य, प्रजा-मंडलों की स्थापना, सीकर का आंदोलन, जयपुर का सत्याग्रह, इन सबपर तो प्रकाश पड़ता ही है, गांधी सेवा संघ, सस्ता साहित्य मंडल, हटूंडी आश्रम, किसान-पंचायत, मजदूर-मालिक-संबंध आदि का भी अच्छा परिचय मिल जाता है।

वैसे तो महत्व के सभी पत्रों को, भले ही वे किसी नेता के लिखे हुए हों या सामान्य कार्यकर्ता के, इस पुस्तक में देने का प्रयत्न किया है, लेकिन कुछ व्यक्तियों के पत्र अधिक हो गये हैं, जैसे सर्वश्री हरिभाऊजी उपाध्याय हीरालाल शास्त्री, माणिकलाल वर्मा आदि-आदि के। उनके सैकड़ों पत्र हैं। उनमें से बड़ी कठिनाई से छांटकर केवल वे ही पत्र लिये गये है, जिन्हें छोड़ना मुश्किल था। पाठक जानते हैं कि पूज्य गांधीजी और राजस्थान के कार्यकर्ताओं के बीच पिताजी एक कड़ी थे। कार्यकर्ताओं को व्यक्तिगत

मार्ग-दर्शन देने तथा उनकी कठिनाइयों को सुलझाने में वह हरिभाऊ उपाध्याय से विशेष चर्चा करते थे और उनके सुझाव लेने की कोशिश करते थे। इसी प्रकार श्री हीरालालजी शास्त्री, माणिकलालजी वर्मा आदि भी समय-समय पर उन्हें अपने विचारों से अवगत कराते रहते थे। कार्यकर्ताओं से इन लोगों का सजीव संपर्क रहने के कारण उनकी समस्याओं तथा कठिनाइयों का उन्हें प्रायः सामना करना पड़ता था। अतः वे उनके तथा वनस्थली आदि संस्थाओं के बारे में अक्सर पिताजी को सूचना देते रहते थे। यही कारण है कि इन सबके पत्रों की संख्या अधिक है; पर वे सार्वजनिक महत्व के हैं और उस समय की बहुत-सी ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं।

और भी अनेक महानुभावों के पत्र इस पुस्तक में शामिल किये गये हैं, जिनमें वैयक्तिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर विचार प्रकट किये गये हैं।

हमें विश्वास है कि पाठकों को इसमें ऐतिहासिक महत्व की सामग्री मिलेगी, साथ ही उसके अध्ययन से अपने काम में प्रेरणा भी।

हम डा. पट्टाभि सीतारमैया के आभारी हैं, जिन्होंने इस पुस्तक के लिए विस्तृत भूमिका लिख देने का अनुग्रह किया और उसमें देशी राज्यों के संघर्ष का इतिहास देकर पुस्तक की उपयोगिता में चार चांद लगा दिये। पुस्तक को तैयार और प्रकाशित करने में 'सस्ता साहित्य मंडल' के मंत्री श्री मार्तण्ड उपाध्याय का विशेष हाथ रहा है।

पत्रावली का पहला भाग पाठकों को पहले ही मिल चुका है। उसमें भारतीय नेताओं के साथ हुआ पिताजी का पत्र-व्यवहार है। प्रस्तुत पुस्तक में देशी राज्यों के राजनैतिक नेताओं तथा कार्यकर्ताओं के पत्र हैं। आगे तीन भाग और पाठकों को शीघ्र ही प्राप्त होंगे।

—रामकृष्ण बजाज

पत्र-व्यवहार

भाग २

पत्र-व्यवहार

अजमेर

: १ :

बीकानेर, ५-१०-२५

श्री हरिभाऊजी,[1]

आपका पत्र बिना तारीख का मुझे भागलपुर में मिला। बराबर दौरे में रहने के कारण शीघ्र उत्तर न दे सका। पू. बापूजी के लिखे हुए पत्र की नकल भेजी, सो भी पढ़ी। पत्र का जवाब संक्षेप में ही देना चाहता हूं। पू. बापूजी से बातचीत हुई। उन्होंने आपको सीधा पत्र लिखा ही होगा। 'नवजीवन' का दूसरी तरह से पूरा बंदोबस्त हो जाने से आप राजस्थान जा सकते हैं, ऐसी उनकी राय है। मुझे भी आपका विचार रुचिकर मालूम हुआ है, अतएव, 'नवजीवन' किसी योग्य सज्जन को सौंपकर आप राजस्थान में जा सकते हैं। मेरी राय में वह सज्जन हिंदी के विद्वान होने चाहिए तथा उनकी शैली सरल होनी चाहिए। वे पूज्य बापूजी के जीवन तथा सिद्धांतों को पूरी तौर से समझ गये हों या समझने का सतत प्रयत्न करते हों। आप जैसे पू. बापूजी के कार्य के लिए तैयार हो गये हैं, वैसे वे भी थोड़े दिनों में तैयार हो सकें, ऐसे हों। श्री मोहनलालजी से मेरा विशेष परिचय नहीं है, परंतु आप, स्वामीजी तथा काकासाहब की राय में अगर वे इस कार्य के लिए योग्य हैं, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

आपका स्थायी तौर से राजस्थान कब से जाने का विचार है, सो खबर देंगे तो उस मुताबिक मुझे आपके लिए इंतजाम करने में सुविधा होगी। मैंने कार्यकर्त्ताओं के लिए अजमेर के नजदीक हटुंडी नाम का स्टेशन है, वह

१. श्री हरिभाऊ उपाध्याय

स्थल पसंद किया। वहां की आबोहवा अच्छी है। आपके अगर कोई दूसरा स्थान नजर में हो तो सूचना देंगे।

यहां कल शाम को आया हूं। आशा है, अन्य स्थानों-जैसी यहां भी सफलता मिलेगी। आज श्री महाराजासाहब से भेंट होवेगी, तब अधिक हाल मालूम होवेगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: २ :

कोटा, १५-१०-२५

श्री हरिभाऊजी,

आपका पत्र ता. ७ का अहमदाबाद से लिखा हुआ मिला। आपका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है, यह पढ़कर चिंता हुई। आप पूरा आराम लें और तबियत बिल्कुल ठीक हो जाने पर राजस्थान में कार्य आरंभ करें।

'हिंदी नवजीवन' की आपने जो व्यवस्था की है, सो ठीक है। इस तरह से अगर चल सके तो अच्छा है।

मेरा राजस्थान का दौरा यहां समाप्त होता है। यहां खादी के काम में सबसे अधिक सफलता मिलने की आशा है। महारावसाहब उदार विचार के मालूम होते हैं। राज्य में अफसरों को या प्रजा को खादी का काम करने में किसी तरह की रुकावट नहीं है। एक तहसीलदार तो ऐसे मिले जो अपने गांव में लोगों के पास सूत कतवाते हैं तथा रुई का भी संग्रह करवाते हैं। उन्होंने राज्य की तरफ से इस काम में कैसी सहायता हो सकती है, इस बारे में योजना भी बनाई है। दारू-निषेध के लिए भी वे कोशिश कर रहे हैं। कई अफसर ऐसे हैं जो पहले से ही रेजी धारण किये हुए हैं।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ३ :

बंबई, १०-१-२६

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका पत्र मिला। मैं दो दिन पूना गया था। आप जनवरी के आखिर

तक रहेंगे, सो ठीक है। आशा है, तबतक आपका स्वास्थ्य संपूर्णतया सुधर जायगा।

शंकरलालभाई से मेरी बातचीत हुई। उनकी राय है कि आप करीब एक वर्ष तक साबरमती में ही चर्खा-संघ के आफिस में रहकर काम करें। वहां भिन्न-भिन्न प्रांतों की रिपोर्टें आती हैं। उनका अभ्यास करने से आपको अधिक लाभ होगा। इसके अलावा पू. बापूजी की इच्छा है कि चर्खा-संघ के आफिस का काम सब हिंदी में चले। इसके लिए भी शंकरलालभाई को किसी आदमी की जरूरत है। अगर आप उस आफिस में रहना पसंद करें तो उनको दूसरा आदमी देखने की जरूरत न होगी।

श्री बैजनाथजी के बारे में आपने लिखा सो ज्ञात हुआ। मेरी राय में इस तरह से उनकी नियुक्ति करना उचित नहीं होगा। 'मंडल' की प्रथा के अनुसार ७५ रुपये दिये जा सकते हैं तथापि उनके लिए १०० रुपये का विचार किया जा सकता है। परंतु कायम के लिए नियुक्ति करनी हो तो 'मंडल' की रजिस्ट्री होने के बाद कमेटी की अनुमति से ही होनी चाहिए। सभापति श्री घनश्यामदासजी बिड़ला हैं, यह आप जानते हैं। इसके सिवाय उनके लिए क्या काम रहेगा, इसका भी अधिक स्पष्टतया निश्चय हो जाना चाहिए। 'मंडल' की रजिस्ट्री करने में तो जीतमल ही देरी कर रहे हैं। मुझे कानपुर में मिले थे, तब उन्होंने कहा था कि अब जल्दी करा लेंगे।

मेरा यहां करीब १५ दिन रहने का इरादा है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

चर्खा-संघ के कार्यालय में अगर आप एक वर्ष तक कार्य करें, तो मुझे विश्वास होता है कि बहुत-सी बातों का अनुभव हो जायगा। पूज्य बापूजी भी एक वर्ष तक आश्रम में रहनेवाले हैं, इसलिए खादी के संबंध में उनके विचार, अनुभव तथा अन्य बातों का अनुभव हो जायगा। हम लोग समय-समय पर वहां आते रहेंगे। अगर आप ठीक समझें तो मुझे व शंकरलालभाई को लिखें।

ज० ब०

: ४ :

बंबई, १७-१-२६

श्री हरिभाऊजी,

आपका पत्र मिला। समाचार विदित हुआ। आप राजस्थान में कार्य करने को उत्सुक हैं और इसलिए साबरमती नहीं रह सकेंगे, सो ठीक है। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। राजस्थान के लिए मंत्री की जगह पर श्री देशपांडे, जो गुजरात प्रा. स. में काम करते थे, की नियुक्ति हो गई है। परंतु वहां तो और भी गुंजाइश बहुत है। आप स्वास्थ्य सुधरने के बाद एक बार तो आश्रम में आवेंगे ही, तब पू. बापूजी तथा श्री शंकरलालभाई से परामर्श करके भविष्य का कार्य निश्चित कर लिया जायगा।

जीतमलजी ने मेमोरंडम ऑफ एसोशियन मेरी सही के वास्ते भेजा है, उससे मालूम होता है कि 'मंडल' जल्दी ही रजिस्टर्ड हो जायगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ५ :

साबरमती, ३०-८-२६

श्री हरिभाऊजी,

आपका पत्र यहां मिला। वहां का काम हो जाने से आप श्री जीतमलजी को साथ लेकर एक बार श्री घनश्यामदासजी से पिलानी आकर मिलें और खादी के काम की तथा 'सस्ता-साहित्य मंडल' की योजना उन्हें समझा दें। प्रेस के बारे में भी उनसे बातचीत कर लें और सब बातें इस तरह से उन्हें समझा दें कि उनको इन कामों में रस पैदा हो सके और वह कुछ प्रत्यक्ष सलाह-मदद देने को प्रवृत्त हो सकें। मार्तण्ड मुझसे मिला था। उसके बारे में कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ६ :

पूना, १२-७-२७

प्रिय हरिभाऊजी,

मैं बंगलौर से आज सुबह यहां आया हूं। स्कूल आगे चलाने के बारे में

आपने लिखा सो मुझे वे उसका सभापति बनाना चाहते हैं। अगर मेरा वहां रहना होता तब तो सभापति बनने में कोई आपत्ति न थी, लेकिन बाहर रहकर पूरा ध्यान न रह सके, ऐसी अवस्था में सभापति होना मुझे उचित मालूम नहीं होता, तथापि वे लोग किस तरह की कार्यकारिणी बनाना चाहते हैं, वह मुझे लिखियेगा। यदि आपकी राय हो तो सभापति बनने में मेरा कोई खास विरोध न होगा। परंतु इसके पहले मैं सब परिस्थितियों से भली प्रकार से वाकिफ होना चाहूंगा।

सर गंगारामजी का विलायत का पता आपने मंगवाया, लेकिन आज ही दुखद खबर मिली है कि लंदन में उनका स्वर्गवास हो गया।

बिजौलिया के बारे में पू. बापूजी छोटी-सी नोट देनेवाले हैं। संभव है, आगामी अंक में आ जाय। मेवाड़-यात्रा के बारे में आप उचित समझें, वैसा करें। पू. बापूजी के स्वास्थ्य के बारे में तो लिख ही चुका हूं। वे अगस्त के आखिर तक बंगलौर को ही सेंटर करके बीच-बीच में घूम आयेंगे।

मैं श्री महाराजासाहब मैसूर से मिला था। उनसे मिलकर उनके प्रति आदर बढ़ा। बहुत ही सज्जन मालूम हुए। करीब २० मिनट तक एकांत में बातें हुईं। वहां के दीवान भी सज्जन हैं। मैसूर स्टेट का प्रबंध देख व सुनकर यह मालूम होता है कि बिना अंग्रेजों के हम लोग सुंदर-से-सुंदर प्रबंध कर सकते हैं। एक आदर्श स्टेट वर्तमान स्थिति में समझी जा सकती है। मैसूर प्रांत में खादी का अच्छा प्रचार हुआ ह।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ७ :

उज्जैन, २०-२-२८

मान्यवर श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। ग्वालियर में मुख्य काम थे—(१) गृह-उद्योग-कमीशन में मेरी गवाही और (२) आगामी अप्रैल मास में खादी-प्रदर्शनी की व्यवस्था। कमीशन में मेरी गवाही तथा बातचीत के फलस्वरूप यह तय पाया गया है

कि कमीशन अपनी बिक्री तथा वस्त्र-स्वावलंबन दोनों पद्धति पर एक-एक प्रयोग-केंद्र स्थापित करने की सिफारिश करे। कमीशन ने यह बात मान ली है कि किसानों के लिए सहायक धंधे के तौर पर खादी के सिवा दूसरी चीज नहीं हो सकती। दोनों केंद्रों का काम संतोषजनक होने पर हर जिले में एक-एक केंद्र खोला जाय, यह सब होगा—रियासत की तरफ से, रियासत के खर्चे से, रियासत के महकमे की देखरेख में। रियासतवाले अभी हमारे चर्खा-संघ से सीधा संबंध रखने में हिचकते हैं। इसलिए तय पाया है कि उज्जैन में 'ग्वालियर राज्य खादी संघ' नामक एक गैर-सरकारी संस्था स्थापित की जाय।

प्रदर्शनी के संबंध में यह तय हुआ कि अभी छोटे पैमाने पर की जाय। ५००-६०० रुपये तक के खर्चे में काम निकाल लिया जाय। खर्च की व्यवस्था वहांवाले कर देंगे। अभी राज्य की आंतरिक स्थिति ऐसी है कि बड़े पैमाने पर खादी-प्रदर्शनी करना उचित नहीं समझा गया है। पू. बापूजी को बुलाने के लिए कौंसिल के हिंदू सदस्य उत्सुक तो हैं, पर इसके लिए किसी और मौके की राह वे देख रहे हैं।

सेवक
हरिभाऊ

: ८ :

साबरमती, १५-५-२८

प्रिय हरिभाऊजी,

आपके २९-४-२८ और ११-५-२८ के पत्र मिले। ग्वालियर में खादी-भंडार के लिए आप कोशिश कर रहे हैं, सो कबतक खोलना संभव है?

इंदौर-महाराज से मसूरी में मेरी जो करीब १॥ घंटे बातें हुईं, इसका मुझ पर यह असर पड़ा कि कोई ऊंचे दरजे का पुरुष उनके पास रहता था, अब भी रहे तो उनके पास कुछ कार्य करवा सके। यह बहुत संभव है कि आप लिखते हैं वैसे वह बोलने में मीठे व धूर्त हों, परंतु मुझसे जब बातें कर रहे थे

तब उनके हृदय में पश्चाताप की भावना दिखाई देती थी। ज्यादा पता तो दो-चार बार मिलने पर या अधिक सहवास होने पर ही मिल सकता है।

मनोहरपुर, अमरसर के बारे में श्री देशपांडेजी ने मुझे सब हकीकत लिख भेजी है।

'मंडल' और 'त्यागभूमि' के लिए आपने करीब दो मास अजमेर में ही रहने का निश्चय किया, सो ठीक। आपका स्वास्थ्य ठीक न हो तो मेरी समझ में, आप थोड़ा समय कश्मीर हो आवें तो कोई हर्ज नहीं है। श्री ब्रजमोहनजी, श्री गोपाल आदि वहां गये ही हैं। अगर आपका स्वास्थ्य ठीक हो तब तो कोई प्रश्न ही नहीं।

दिसंबर और अप्रैल तक का 'मंडल' का आंकड़ा तैयार हो गया वह अच्छा हुआ। उसकी आप शीघ्र आडिट भी करवा लीजिएगा। आंकड़े की मुख्य-मुख्य कलमों का आपने जो वर्णन लिखा वह मैंने देख लिया। मेरा यह विश्वास है कि पहले से हिसाब अगर पद्धतिवार रहता और उसका पूरा खयाल रखा जाता तो इतनी हानि और इतनी अव्यवस्था नहीं होती। परंतु अब वह अनुभव भी 'मंडल' को बहुत लाभकारी होगा और फिर से ऐसी गलती न होगी।

वहां आने की इच्छा तो है; लेकिन यहां थोड़ा समय रहकर राजस्थान के भविष्य के बारे में विचार कर लेने का इरादा है। मेरा जाना कब होगा, यह कह नहीं सकता। अपने कार्य के लिए एक बार बिजौलिया हो आने का विचार है।

'मंडल' और 'त्यागभूमि' में मेरी और भाई घनश्यामदासजी की कार्य-पद्धति में जरूर थोड़ा अंतर है। मेरा तो यह विश्वास है कि सार्वजनिक संस्था के भविष्य के काम की दृष्टि से मेरी मान्यता ठीक है। तथापि 'सस्ता साहित्य मण्डल' व 'त्यागभूमि' की नैतिक व आर्थिक जबाबदारी मैं उनपर सहर्ष छोड़ने को तैयार हूं। एक प्रकार से तो छोड़ ही रखी है। परंतु मुझे संतोष तभी रहेगा कि मूलधन में कमी न होने पावे और भाई घनश्यामदासजी, द्रव्य की सहायता के अलावा कार्य किस प्रकार चल रहा है, उसके अध्ययन

में भी कुछ समय दें। खाली हम लोगों पर विश्वास रखकर द्रव्य की सहायता ही दिया करें, यह मुझे ज्यादा हितकर मालूम नहीं होता है। तथापि 'मंडल' की स्थापना के समय उनको सभापति होने के लिए जो पत्र लिखा था, उसमें ही मैंने लिख दिया था कि 'मण्डल' की कुल जवाबदारी तो उनके सिर ही है और 'त्यागभूमि' की जवाबदारी तो उन्होंने ले ही रखी है।

आप लिखते हैं कि अधिक दिनों तक आप दोनों तरफ की मार सहन न कर सकेंगे। इस लिखावट से मालूम होता है कि आपमें घबराहट और कुछ कमजोरी आ गई है। मेरी समझ से अभी तक आपको असली असंतोष और मार खाने का मौका हम दोनों की ओर से तो क्या, किसीकी ओर से नहीं आया है। जो कुछ थोड़ी-सी मार पड़ी है वह प्रेम से भरी हुई मार पड़ी है। 'मण्डल' और 'त्यागभूमि' के काम में ऐसी प्रेम से भरी हुई जो मार पड़ी है उसमें से एक तरफ से याने मेरी तरफ से मैं आपको बचा सकता,था। परंतु एक तो आपके प्रति प्रेम और आपके जरिये राजपूताने का कार्य बढ़ता रहे और आपकी सच्ची प्रतिष्ठा बढ़ती रहे तथा जिन मित्रों से आपको परिचय का मौका मिल गया हो, उनके मन में किसी प्रकार से भी कार्य-पद्धति के दोष के कारण अभाव पैदा न होने पावे, इस मोह ने ही मुझे 'मंडल' और 'त्यागभूमि' के कार्य में चिंता करने का मौका दिया। और इससे ही आप लोगों के साथ कठोर-सा बर्ताव करना पड़ा। मेरा पूर्णतया विश्वास हो गया है कि काम बहुत थोड़े परिमाण में ही क्यों न हो, अगर कार्यकर्त्ता सुचारु रूप से करें तो अवश्यमेव वह कार्य आगे बढेगा और लोगों को आकर्षित करेगा। कार्य आवश्यक समझकर बढ़ा दिया जावे और उसे हम सम्हाल न सकें और कार्य बिगड़े, उसका परिणाम बहुत ही भयंकर होता है। जनता की तथा मित्रों की श्रद्धा बहुत कम हो जाती है और अपने दिल में भी कमजोरी आ जाती है। इस प्रकार अविश्वास बढ़ने के कारण भविष्य में कोई भी नया काम उठाने में बहुत बाधा आती है। मेरी इस प्रकार की दृष्टि से मैं आपको व श्री जीतमलजी आदि को एक प्रकार से कार्य बढ़ाने के मोह के कारण क्यों न हो, दोषी मानता हूं, जबकि थोड़ा-सा कार्य भी हम सुचारु रूप से न कर सके थे, वैसी हालत में अधिक

काम बढ़ाने का हमें क्या अधिकार था ? मेरा तो विश्वास है कि हम लोगों ने इसमें अवश्य गलती की। हम लोग सरीखे मामूली कार्यकर्त्ताओं को सार्वजनिक कार्य को व्यक्तिगत मोह के कारण एकदम बढ़ा देना नहीं चाहिए। अपनी ताकत, योग्यता का पूरा खयाल रखकर ही जितना-जितना काम सम्हाल सकें, उतना ही काम उठाना चाहिए। मेरा यह मानना है कि जनता के पैसे पर अपनी ताकत से बाहर जाकर प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस बारे में पू. बापूजी की कार्य-प्रणाली का हम सर्वथा अनुकरण नहीं कर सकते हैं, क्योंकि पू. बापूजी का देश में जो स्थान है, और जिस योग्यता के साथ बापूजी जो कार्य अपने हाथ से करते हैं, उसमें जितनी चिंता रख सकते हैं और उनके ध्यान में कार्य बिगड़ने न पावे, और एक पाई का भी दुरुपयोग न हो, उसका दर्द और खयाल वह रखते हैं। ये तीनों बातें हम लोगों में नहीं हैं, यह हमें भूलना नहीं चाहिए। वैसे तो आपको सब पता ही है, तथापि मेरा हृदय और अनुभव आपके और अन्य कार्यकर्त्ताओं के सामने रख देना उचित समझकर यह लिखा है। इस बारे में मैं दूसरे कार्यकर्त्ताओं पर दबाव नहीं डालना चाहता। जवाबदार कार्यकर्त्ता अपने विश्वास और अनुभव के मुताबिक चाहे उस प्रकार का प्रयोग कर सकता है। मुझे पूरा-पूरा विश्वास है कि आप तो क्या, अन्य मित्र भी इसको ग़लत नहीं समझेंगे। आप उचित समझें, तो उन कार्यकर्त्ताओं को मेरा पत्र पढ़ा देंगे।

हटुंडी के दोनों मकान बन जाने पर खर्चे का पता लगेगा सो ठीक, तथापि आप उसके बारे में खर्च का हिसाब वर्धा भिजवा दीजिये। मैं वर्धा लिख देता हूं।

ग्रेग साहब की अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद जल्दी छप जाना आवश्यक है। मैं समझता हूं, उसका अनुवाद भी श्री रामदास गौड़ से करवाना ठीक रहेगा। चर्खा-संघ से इस बारे में आपको कम-से-कम कितनी सहायता की आवश्यकता होगी, वह आप मंत्री, चर्खा-संघ को लिख दें, और उसकी एक नकल मुझे भी भेज दें। आप इस बारे में श्री घनश्यामदासजी से भी पुछवा सकते हैं।

रामायण के बारे में आपका भेजा हुआ अंदाज-पत्र मिला। इस संबंध

में समक्ष मिलने पर ही अधिक विचार किया जा सकेगा।

बिजौलिया के मामले के बारे में आपके पास आया हुआ पत्र वापस भेज रहा हूं। बिजौलिया के किसानों की स्थिति सुधारने में हम लोग कुछ काम कर सकते तो बड़ा संतोष होता; परंतु जिस प्रकार की स्थिति है, उससे दुख है कि हम लोग अधिक कामयाब नहीं हो सकते। वर्तमान में चर्खा और खादी के जरिये जो कुछ सेवा हो रही है, उसमें अगर अधिक सहायता की आवश्यकता हो, तो अवश्य उसका विचार कर सकते हैं। क्या आप बिजौलिया जाना पसंद करेंगे?

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ९ :

अजमेर, १८-५-२८

मान्यवर श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। श्रीमद्राजचंद्र के अनुवाद और छपाई का एस्टीमेट पू. बापूजी को मैंने भेज दिया है। श्री पुंजाभाई का पता याद न रहा था। यदि श्री पुंजाभाई शीघ्र ही उत्तर लिख दें तो अच्छा हो।

मेरा शरीर तो कमजोर होता ही जा रहा है और काम का बोझ भी बहुत है; परंतु जबतक 'मंडल' के आगे के काम के लिए द्रव्य का काफी प्रबंध नहीं हो जाता, तबतक मुझे आराम करने का हक नहीं है, न मेरा दिल ही लगेगा। मैं घबराया हूं या कमजोरी आ गई है, ऐसी बात तो नहीं है, पर इन दिनों कुछ झुंझलाहट जरूर रहा करती है। इसका प्रधान कारण तो यही है कि घर की और बाहर की तथा काम की कई उलझनें एक साथ आ गई हैं, जिससे इन दिनों बड़ा मानसिक क्लेश हो रहा है।

वह चिट्ठी मैंने आपको लिख तो दी, पर बाद को मुझे दुख हुआ। इस खयाल से कि आपकी चिंताओं का बोझ कम करने की बजाय अपनी चिंताओं में आपको उलझाना ठीक नहीं है। पर अपने मार्गदर्शक, और आप नाराज न हों तो, अपने व्यावहारिक क्षेत्र के गुरु, के सामने अपने दिल का गुब्बार निकाल डालने से दिल कुछ हलका भी हुआ। आपके असंतोष से मेरे दिल पर एक भार-

सा बना रहता है और इसलिए आपका विनोदयुक्त मृदुल उलहना भी, शायद मेरे स्वभाव के दोष के कारण हो, मेरे दिल को बहुत लग जाता है। यदि आपके अगाध प्रेम का अनुभव मुझे न हुआ होता तो मैं 'मंडल' के और दूसरे कामों से अबतक अलग हो गया होता और आश्रम की शांति में 'हिंदी नवजीवन' की सेवा के लिए फिर से चला गया होता। मेरे प्रति, 'मंडल' के अन्य भाइयों के प्रति और सबसे बढ़कर जिस काम के लिए आपने द्रव्य एकत्र कराया, अपनी शक्ति लगाई, उसके प्रति आपका प्रेम और चाव होने के कारण आपको इससे भी अधिक कठोरता रखने का पूरा अधिकार है और कम-से-कम मैंने तो उससे लाभ ही उठाया है। मुझे आपकी कठोरता उतनी नहीं खलती जितनी आपके असंतोष की स्मृति और आपकी तथा श्री बिड़लाजी की कार्य-नीति की हलकी-सी खींचातानी। आपके उद्गारों से और इस पत्र से आपके असंतोष के इतने अर्थ निकलते हैं—

१. शुरू में हिसाब-किताब व्यवस्थित नहीं रखा गया, २. काम संभाल नहीं सके, ३. काम बढ़ा दिया गया, ४. घाटा इतना लग गया, ५. जनता के पैसे पर प्रयोग और ६. पू. बापूजी का अनुकरण।

पहली बात को मैं सोलह आने मंजूर करता हूं। आपके कहने-सुनने के अलावा मैंने अपनी तरफ से भी इसका खूब प्रायश्चित्त कर लिया है और अब आप हिसाब-किताब को इतना व्यवस्थित और साफ पावेंगे कि कम-से-कम अजमेर की किसी सार्वजनिक संस्था में आपको ऐसा न दिखाई देगा। 'काम संभाल न सकने' की बात मेरी समझ में नहीं आई। सिवा प्रेस के और 'त्याग-भूमि' की पृष्ठ संख्या के ६४ से १२० कर देने के, कोई काम नहीं बढ़ाया गया। 'त्याग-भूमि' का भार 'मंडल' ने अपनी खुशी से उठाया, पेजों की संख्या भाई घनश्यामदासजी की प्रेरणा से बढ़ाई और बंबई में आपने भी कहा था कि घटी का प्रबंध ४-५ साल का भी हो जाय तो बढ़ाने में मुझे कोई आपत्ति नहीं। हां, प्रेस मेरी जिद का परिणाम अलबत्ते है—मगर ईश्वर की कृपा से वह दो पैसे 'मंडल' को देगा ही, घटी नहीं पड़ने देगा। 'त्याग-भूमि' की घटी बिड़लाजी के जिम्मे है। रहा 'मंडल', सो उसकी घटी की जिम्मेवारी सबपर

है। शुरू से बिल्कुल ही घटी नहीं रहती, इस बात को मैं नहीं मान सकता और मैं इस बात को भी मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि अजमेर प्रकाशन-कार्य के लिए अनुकूल स्थान नहीं है; और ऐसा शुद्ध और इतना साहित्य तीन साल के अंदर बिना घटी खाये कोई निकाल सकता। इसमें संदेह नहीं कि इस कार्य में जो कुछ भी सफलता मिली है, वह आप लोगों के द्रव्य से, पुण्य से मिली है और हम लोगों में यदि कोई थोड़ा भी इसके श्रेय का अधिकारी हो सकता है तो वह जीतमलजी हैं। यदि आपकी यह अटल शर्त है कि 'मंडल' की मूल पूंजी घटे नहीं, और इसका यह अर्थ है कि घटी किसी प्रकार भी न होने पावे तो कम-से-कम मैं इस शर्त पर 'मंडल' की सेवा न कर सकूंगा। अबतक जो कुछ भली-बुरी सेवा बन सकी, वह कर दी। भलाई के जस की मुझे जरा भी इच्छा नहीं। जो कुछ भी त्रुटि रही, उसके लिए अगर आवश्यकता होगी तो और भी प्रायश्चित्त कर लेने को सहर्ष तैयार हूं। अबतक के सारे काम का पूरी तरह से निरीक्षण हो जाने के बाद जो कुछ त्रुटियां या दोष पाये जायंगे, मेरा कर्तव्य होगा कि उनको दूर करने की बलभर चेष्टा करूं और फिर संस्था का काम दूसरे सुयोग्य पुरुषों के हाथों में दे दिया जाय। जहां संस्था को शोचनीय दशा में छोड़कर भागना मैं उचित नहीं समझता, तहां हममें से यदि किसीका भी यह खयाल हो कि मैं किसी व्यक्तिगत कारण से इसमें पड़ा हूं तो मेरा धर्म नहीं है कि मैं उसमें उलझा रहूं और अपनी जिद चलाये जाता रहूं।

यदि 'मंडल' एक अपनी ढंग की नई चीज है, तो निस्संदेह यह एक नया प्रयोग है और यह मैंने नहीं बल्कि हम सबने शुरू किया है और यह जनता के ही पैसे पर हो रहा है। मैंने कोई प्रयोग अबतक ऐसा नहीं देखा जिसमें कुछ खर्च न हुआ हो, घटी न खानी पड़ी हो। खादी-कार्य में ही क्या हो रहा है ?

पू. बापूजी के अनुकरण का संबंध जहांतक काम के बढ़ा लेने से है, वहांतक मैं नहीं कर रहा हूं। हां, व्यक्तियों के साथ व्यवहार से जहांतक संबंध है, मेरी चित्तवृत्ति उनसे मिलती है। आपके विचारों ने मेरे हृदय में मंथन अवश्य उत्पन्न कर दिया है, पर अभी मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा हूं।

आपकी और भाई घनश्यामदासजी की कार्य-नीति के भेद के संबंध में मुझे इतना ही कहना है कि किसी एक की नीति से काम होना ठीक है। मेरे लिए तो यह नया काम है—मैं इसमें पड़ गया—इसे मेरी गलती ही समझ लीजिए। इसलिए इसके संबंध में मेरी त्रुटियों और दोषों का तो जरूर ही पार न होगा। ऐसी अवस्था में आप और भाई घनश्यामदासजी का अत्यंत कृतज्ञ हूं कि सच्ची मार से अभी तक आप लोगों ने मुझे बचा रखा है। भाई घनश्यामदासजी ने तो अभी तक काम देखा ही नहीं है। जब इन झगड़ों में पड़ा हूं तो क्या मीठी और क्या कड़वी, क्या सच्ची और क्या झूठी—सब तरह की मार खाने की शक्ति मुझे बटोर रखनी चाहिए। पर मुझे यह भय हो रहा था कि आप दोनों के नीति-भेद से मुझे दुविधा की जबर्दस्त मार न खानी पड़े और हमारे पास पूंजी कम है, इसलिए आपको सूचित कर दिया। आपके और मेरे बीच अब ऐसी बात तो रही नहीं है कि किसी बात की गलतफहमी हो, अतएव निःशंक होकर मैंने आपको लिख दिया था।

जहांतक मुझसे संबंध है, 'मंडल' के पिछले काम के बारे में मेरा यह आखिरी लंबा पत्र होगा। आशा है इसके लिए आप क्षमा करेंगे।

सेवक,

हरिभाऊ उपाध्याय

: १० :

साबरमती, २१-५-२८

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका पत्र ता० १८ का लिखा हुआ मिला।

'मंडल' के बारे में आपका खुलासा पढ़ा। मूलधन को कायम रखने का लिखने में मेरा आशय यह नहीं था कि उसमें से कुछ भी खर्च नहीं किया जाय; किंतु मेरा अभिप्राय यह था कि उसमें से जो रकम खर्च हो वह फिर कहीं से इकट्ठी करके उसकी पूर्ति कर दी जाय, जिससे मूलधन कायम बना रहे।

आप कलकत्ता जा रहे हैं, सो ठीक है। कब जावेंगे, इसकी सूचना

दीजिएगा। और आप वहां भाई श्री घनश्यामदासजी से मिलकर 'त्यागभूमि' तथा 'मंडल' के भविष्य के कार्य के संबंध में उचित व्यवस्था कर लीजिएगा। इससे आपके कार्य का भार भी कुछ हल्का हो जायगा। आपको अपने स्वास्थ्य की फिक्र तो रखनी ही चाहिए।

घरेलू बातों की तो ज्यादा फिक्र नहीं करनी चाहिए। इस संबंध में और बातें मैं चि. मार्तण्ड से जानकर लिखूंगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ११ :

साबरमती, १८-६-२८

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका पत्र मुझे समय पर मिल गया था। आजकल बारडोली की लड़ाई खूब जोर से चल रही है। सरकार भी जोर से सामना कर रही है। और भविष्य में और जोर से करेगी, ऐसा संभव है। मैं वहां सात-आठ रोज घूम आया। वहां का किसान (खेडूत) वर्ग और वहां की जनता की तैयारी तो बड़ी अच्छी मालूम होती है। मुझे तो लगता है कि पू० बापूजी का संदेश सारे भारतवर्ष में और तमाम दुनिया भर में बारडोली के जरिये फैलना संभव है। बारडोली-युद्ध लंबा चला तो हम सबको तैयार रहना होगा। आप खूब बारीकी से बारडोली का अध्ययन करते होंगे। मुझे अगर बारडोली जाना न पड़ा तो जुलाई के आरंभ में वर्धा पहुंचने का इरादा है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १२ :

साबरमती, ६-७-२८

प्रिय हरिभाऊजी,

पत्र आपका तारीख १७ का मिला।

बारडोली को महाभारत का स्थान प्राप्त होता दीखता है। परमात्मा जल्दी ही भारत के भविष्य में आशाकारक परिवर्तन कराना चाहता है, ऐसे

चिह्न दिखाई देते हैं। आप ३ जुलाई से लगाकर बाद के 'टाइम्स' के अंक, बारडोली के बारे में, मौका मिल जाने पर पढ़ जावें।

'मंडल' व 'त्यागभूमि' के बारे में भाई घनश्यामदासजी से बातचीत हुई। आपने मेरी राय उन्हें कह दी सो ठीक किया। हटुंडी आने पर और खुलासेवार बातचीत करने में सुविधा रहेगी।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १३ :

अजमेर, श्रावण बदी ८-८४

(१०-७-२८)

मान्यवर श्री सेठसाहब,

सादर प्रणाम। इस तरफ चार प्रश्न महत्वपूर्ण हैं—(१) सूत-सुधार, (२) स्थानीय बिक्री, (३) कार्यकर्ताओं में पारस्परिक सद्भाव और (४) अछूत-पाठशालाएं। आप कुंवार-कार्तिक में यहां आने का कार्यक्रम अवश्य रखें। यहां आने पर पिछले तीन और विशेषकर दो प्रश्नों पर आपको खास तौर पर ध्यान देना होगा। इस तरफ के कार्यकर्ताओं में अभी-अभी त्रुटियां विशेष रूप से दिखाई देती हैं। एक तो परस्पर में कुटुंब-भाव की, हृदय की स्वच्छता की कमी और दूसरे वेतन-वृद्धि की तथा नौकरी स्थायी रूप से मिलने की इच्छा। ये लोग ५० रुपये से ७५ रु० मासिक का स्केल चाहते हैं। आपके आने तक इसपर विचार करना स्थगित रखा गया है।

अछूत-पाठशालाओं का प्रश्न कुछ जटिल हो रहा है। राज्य के इंस्पेक्टरों ने हिदायत दी कि राज्य से स्वीकृति ले लो नहीं तो पाठशालाएं बंद करनी पड़ेंगी। मैं जयपुर में श्री श्यामसुंदरजी से मिला। शिक्षा-विभाग के मेंबर से भी मिला। स्वीकृति लेना तो अनिवार्य है। स्वीकृति कौंसिल से मिलेगी। इस विषय में कौंसिल के सामने दो प्रश्न रहेंगे (१) अछूत-पाठशालाओं को अलग जारी रखने और खोलने की स्वीकृति देना या नहीं, और (२) हम लोगों से संबंध रखनेवाली पाठशालाओं को स्वीकृति देना या

नहीं। जयपुर राज्य म अभी तक अछूतों की अलग पाठशालाओं को स्वीकृति नहीं मिली है। जो अछूत-पाठशालाएं चल रही हैं, वे अछूतों के नाम पर नहीं, साधारण पाठशालाओं के नाम पर हैं और इसी कारण उन्हें स्वीकृति मिली है। राज्य में अभी एक चैरीटेबल ऐक्ट पास हुआ है। डायरेक्टर साहब की यह इच्छा मालूम होती है कि हम लोग रुपया इस फंड में दे दें और पाठशालाएं उनकी मार्फत चलें। उनका कहना है कि अछूत-मंडल के द्वारा दरखास्त देने से मंजूरी में झगड़ा पड़ेगा। हीरालालजी शास्त्री की राय है कि दरखास्त पुरोहितजी—सर गोपीनाथजी को दिखाकर देनी चाहिए। उनकी मार्फत मैंने सारा मामला पुरोहितजी तक पहुंचा दिया है।

हीरालालजी ऐसे आदमी मालूम होते हैं जो यदि हमारे संघ में आ जायं तो हमारी एक बड़ी कमी दूर हो सकती है। अभी मुझसे थोड़ी बातें हुई हैं।

मेरी राय में आप दाणी-विद्यालय के अध्यक्ष-पद को ग्रहण कर लें तो अच्छा हो। आपका इस तरफ आना-जाना तो बढ़ता ही रहेगा।

सेवा-संघवालों ने स्थान बदल दिया है। सुना है, कुछ अंदरूनी झगड़े खड़े हो रहे हैं। शोभालालजी और चौधरीजी में खींचातानी चल रही है। पथिकजी को इन उलझनों से स्वाभाविक ही कष्ट होता होगा। हमारे देश का यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि किसी भी संस्था में दो आदमी एकदिल होकर नहीं रह रहे हैं।

'मंडल' के प्रेस में पहली पुस्तक पू० बापूजी का आत्म-चरित ही छापने का विचार है। माला का आरंभ भी पू० बापूजी की पुस्तक से हुआ था।

'त्यागभूमि' के लिए एक अपना संदेश ही फिलहाल भेज दीजिए। पू० बापूजी का संदेश तो मिल गया है।

सेवक,

हरिभाऊ

: १४ :

श्रावण सुदी ३-८४ (२०-७-२८)

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका श्रा. बदी ८ का पत्र अभी मिला। आप भ्रमण करके अजमेर आये। उसपर से चार प्रश्न पर विचार करना जरूरी लिखा, सो ठीक। मेरे वहां आने पर इन प्रश्नों पर खुलासेवार विचार करने का आप लोगों ने निश्चय किया, सो ठीक। वहांतक आप अपने व देशपांडे के अनुभव नोट कर रखें ताकि विचार करने में सहायता व सुगमता होवेगी। अछूत-पाठशालाओं का प्रश्न भी जटिल हो रहा है, लिखा सो मुझे भी आपका पत्र पढ़ने से और जयपुर के कर्मचारियों की कठिनाइयों का अनुभव करते हुए बहुत संभव दीखता है कि हमें यह प्रश्न अपने कार्य से अलग करना होगा, तथापि खुलासा विचार तो वहीं किया जायगा। आप काम बढ़ाने का खयाल बिल्कुल न रखें, जहांतक समाधानकारक व्यवस्था न हो जाय।

श्री हीरालालजी के बारे में आपने लिखा सो मुझे याद है। मैंने आपसे इन्हींके बारे में जिक्र किया था। परंतु हाल में उनका विचार होते हुए भी उनपर श्री पुरोहितजी का बहुत प्रभाव है। उसका सामना करना शायद कठिन हो—यानी विद्यालय के बारे में भी वहीं आने पर सब परिस्थिति साफ करके नवीन घटना तैयार करनी पड़ेगी। उस समय मेरा नाम सभापति में रखना जरूरी होगा, तो रख लिया जावेगा।

श्री कपूरचंदजी को खादी-कार्य की लगन लग गई। वह भी कुछ समय आश्रम में रहना चाहते हैं,सो ठीक है। वह अगर पूरी लगन से इस काम में पड़ जावेंगे तो मुझे विश्वास है वह खूब काम कर सकेंगे। उन्हें घर की परिस्थिति, बने उतनी, अपने अनुकूल कर लेने का प्रयत्न रखना चाहिए। वह अगर मेरे साथ रह सकेंगे तो मुझे बहुत संतोष मिलेगा और उन्हें भी भविष्य के कार्य के लिए बहुत-सी बातें जानने को मिलेंगी।

मुझे हटूंडी ठहराने का विचार लिखा, सो मुझे भी वहीं ठहरने में अधिक-

सुख-शांति मिलेगी। वहां ठहरने से २-४ रोज ज्यादा भी रहना संभव हो सकता है।

श्री काकासाहब ने मराठी-हिंदी-कोश के बारे में आपको खूब फटकारा, सो ठीक। नरम आदमी से प्रायः सबको ही फटकार के साथ कार्य करा लेने की इच्छा हो जाया करती है। पू० काका साहब ने मुझे भी कहा था। मैंने तो यह पुस्तक छपाने की सहायता के लिए मेरे पास से दोसौ रुपये श्री पुंडलिक को दिये हैं। मीटिंग के समय आपका व श्री आनंदस्वामी व जीतमलजी का काम था कि जोर के साथ यह प्रश्न रखते। अगर आप लोगों (पुस्तक-निर्वाचन-कमेटी) ने इसे स्वीकार कर लिया था तो फिर मीटिंग में यह प्रश्न क्यों आया ? इस प्रकार के सब प्रश्नों का 'मंडल' के उद्देश्य का खयाल रखकर भी विचार किया जाना चाहिए।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

आपके पत्र भी लंबे होते हैं और मेरा जवाब भी लंबा-चौड़ा होता है। अब थोड़े में निपटाने का दोनों ओर से प्रयत्न करना पड़ेगा।

ज. ब.

: १५ :

वर्धा, भाद्रपद बदी ९-८४ (सितंबर '२८)

प्रिय हरिभाऊजी,

पत्र आपका श्रा. सुदी ८ का मिला। मुझे एकाएक पूज्य बापूजी ने तार भेजकर प्रयाग-सम्मेलन की सभा में जाने को लिखा। मद्रास-प्रचार के मामले के बारे में वहां गया था। परसों वापस आया हूं। श्री माखनलालजी खण्डवे से व गणेशजी कानपुर से आ गये थे। पूज्य मालवीयजी भी अचानक उसी रोज प्रयाग आये हुए थे। उनको भी बुला लिया गया था। आखिर में मामला संतोषजनक रीति से निपट गया, तथापि वर्तमान में सम्मेलन के कार्य का भार जिनके हाथों में है उनमें से श्री माखनलालजी को छोड़कर प्रायः सभी अंराष्ट्रीय विचारों के हैं व अनुदार हैं। सम्मेलन इन्हींके हाथों में रहा तो

उसकी प्रतिष्ठा व कार्य को हानि पहुंचने का पूरा डर है। इसका विचार फिर कभी करेंगे।

श्री बापनासाहब ने पांच हजार की मंजूरी प्राप्त कराकर भेजी सो देखी। उन्होंने अपना काम किया है। हम लोग यह जिम्मेवारी लेने लायक हैं या नहीं, इसीका विचार करना है। आप विचार कर योजना करेंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

कृपाकर आप 'सेठजी' न लिखा करें तो ठीक होगा।

ज. ब.

: १६ :

पूना, आश्विन सुदी १४-८४ (अक्तूबर, २८)

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

पत्र कल लिखा ही है। 'चीन की आवाज' नाम से गुजराती में श्री चंद्रशेखर शुक्ल ने डिकिंस के पत्रों का अनुवाद किया है। पूज्य काकासाहब ने भूमिका लिखी है। मुझे यह पुस्तक बहुत पसंद आई है। आपने पढ़ी होगी, नहीं तो पढ़ें। वर्तमान चीन की स्थिति में इस प्रकार की पुस्तक हिंदी में निकलना जरूरी मालूम होता है। आपकी भी यही राय हो तो अपने यहां से निकालने का शीघ्र प्रबंध करा दें।

अब मेरे साथ रहनेवाले योग्य सहायक की अधिक जरूरत हो गई है। चर्खा-संघ का तथा और काम बढ़ रहा है। मुझे याद है, शायद मैंने इस बारे में आपसे बात की है। **नीचे लिखी** योग्यतावाले कोई योग्य सज्जन मिले तो जरूर आप खयाल रखें—

१. अंग्रेजी-हिंदी की पूरी योग्यता।

२. हिसाब जानता हो।

३. पू० महात्माजी के सिद्धांतों में पूरी श्रद्धा—खासकर **खद्दर,** हरिजन-कार्य में प्रेम।

४. मुझसे उम्रमें छोटा हो और मैं उनसे पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर का काम प्रेम के साथ यानें छोटे भाई के समान ले सकता हूं, उतना ले सकूं।

ऊपर लिखे अनुसार कोई सज्जन मिल जावें तो ७५ रुपये अथवा १०० रुपये तक मासिक देना पड़े तो मैं दे सकता हूं। खाना-पीना तो मेरे साथ होगा ही। आप तलाश कर लिखें। मुझे तो विश्वास है कि मुझे सहायता होवेगी ही, साथ-ही-साथ में रहनेवाले को भी बहुत-सी बातों की जानकारी, परिचय का मौका मिलेगा। अब मै विद्यार्थियों को लेकर तैयार करने का जो मेरा पहले से एक विचार था, उसे निराश होकर छोड़ना चाहता हूं और ऐसे मनुष्य की जरूरत अनुभव करता हूं कि वह मेरे कार्य की पद्धति समझकर मुझे स्वतंत्रतापूर्वक सहायता कर सके।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १७ :

मदुरा, १-२-२९

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका पो. शु. १३ का पत्र मिला। 'हिंदी नवजीवन' के लिए काशीनाथजी की व विद्यापीठ के लिए हिंदी अध्यापक की व्यवस्था कर दी सो ठीक। आशा है, दोनों अपना काम ठीक तौर से करेंगे।

'गांधी-सेवा-संघ' राजस्थान ब्रांच के बजट की नकल भेजी, वह मिली। सेवा-संघ के मंत्री को दिये गये पत्र की नकल नहीं मिली, लेकिन बजट की दो प्रतियां मिली हैं।

श्री प्रताप सेठ के पत्र का क्या जवाब आया?

श्री नरसिंहदासजी अभी शांत हैं, यह पढ़कर संतोष हुआ। हटुंडी आश्रम में आने पर ही बाकी के नामों को निश्चित करना ठीक रहेगा। श्री आबिदअली से राजपूताना में रहकर काम करने के लिए बात तो हुई है। कुछ समय के बाद निश्चित जवाब देने को कहा है। अगर वह राजपूताना में रहना निश्चित कर लेंगे तो राजस्थान के कार्य में ठीक सहायता मिलेगी।

मुझे कांग्रेस-कमेटी के बारे में आपने लिखा। मुझे तो कलकत्ते में ही पंडित मोतीलालजी ने संगठन करने का भार लेने को कहा था, लेकिन मैंने इनकार

कर दिया। अब जवाहरलालजी की तरफ से जो पत्र-व्यवहार आया, वह आपको भेज रहा हूं, जिससे आपको पता रहे। जहांतक हो सके, इस पत्र-व्यवहार का पब्लिक तौर पर उपयोग न किया जाय, तो ठीक रहेगा।

वहां की प्रांतीय समिति के बारे में जबतक वातावरण बिल्कुल शुद्ध व साफ न हो जाय, तबतक इसमें आपका पड़ना मैं उचित नहीं समझता; क्योंकि श्री सेठीजी तथा उनके पक्ष के लोग न्याय, अन्याय की परवा न कर पूरी तरह से हैरान करेंगे। उनकी लड़ाई का तरीका सीधा व सच्चाई पर होता, तो कोई आपत्ति नहीं होती। अजमेर-कांग्रेस-कमेटी के संबंध में जितनी उदासीनता रखी है, उसका आपको पता है ही, फिर भी उनकी तरफ से किस प्रकार से घृणित और बिल्कुल असत्य आरोप किये जाते हैं, वह उनके, श्री गुप्ता के पत्र से आपको पता लग जायगा। अजमेर की जनता में जहांतक कार्य करने की जिम्मेवारी का खयाल न हो, वहांतक हम लोग क्या कर सकते हैं ? तथापि इस संबंध में आप मित्रों से बातचीत करें। जयपुर जाना हो तो श्री कपूरचंदजी, ईश्वरदासजी सोगाणी, व देशपांडेजी आदि से भी बातचीत करें। मेरी राय में या तो अर्जुनलालजी व उनकी पार्टी बिल्कुल रिटायर हो जाय, अथवा अजमेर तथा राजपूताने के अन्य मित्र लोग कांग्रेस-कमेटी को अर्जुनलालजी से सीधे व सच्चे तरीके पर लड़ाई चलाकर अपने हाथ में ले लेवें। पीछे हम लोगों की सेवा लेनी चाहें तो हम लोग पीछे से कर सकते हैं। मुझे सभापति अथवा और कोई अधिकारी बनना नहीं है। कुछ योग्य मुसलमान मित्रों से भी परिचय आप लोग बढ़ा सकें तो अच्छी बात है। उम्मेद है, तारीख ८ मार्च तक मेरा पूना या बंबई पहुंचना हो जायगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १८ :

मद्रास, २७-२-२९

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका तारीख २०-२ का पत्र मिला।

बिजौलिया के बारे में फैसला संतोषकारक होने की पूर्ण आशा है। लिखा, सो पढ़कर प्रसन्नता हुई। आशा है कि आपका प्रयत्न सफल होगा।

श्री जेठालालभाई का पत्र मुझे भी मिला। शिवरात्रि के समय तिलस्वां में खादी-प्रदर्शनी तथा गांव के सब लोगों के मिलने का आयोजन किया, यह देख वहां आने की बहुत इच्छा होती है। वहां आने में मन को बहुत शांति भी मिलती, और मन को संतोष भी होना संभव था। कई कारणों से एक बार वर्धा जाना जरूरी है। नागपुर में भी राजनीतिक-कांफ्रेंस ९-१० मार्च को होनेवाली है। नागपुर प्रांतीय कांग्रेस का भविष्य का प्रोग्राम यशस्वी हो सकता है क्या, इस बारे में विचार करने के लिए भी मेरी उपस्थिति वहां जरूरी है। इनसब कारणों से मेरा वहां आना नहीं बनेगा।

आप मेरी ओर से बिजौलिया-निवासियों को—खास करके किसानों को बधाई दें और उनसे प्रार्थना करें कि श्री जेठालालभाई ने शुद्ध प्रेम-भाव से प्रेरित होकर जो परिश्रम उनके कल्याण के लिए किया है, उसका खयाल कर अपने जीवन में खादी के स्वावलंबन मंत्र को कदापि न भूलें और अपने इष्ट-मित्र, सगे-संबंधियों में इसके महत्व का भली-भांति से प्रचार करें। सामाजिक त्रुटियां जो कुछ हों, उन्हें बहादुरी व हिम्मत के साथ दूर करने का निश्चय करें। परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें सद्‌बुद्धि व सन्मार्ग पर चलने के लिए हिम्मत प्रदान करें।

आपका बिजौलिया-निवासियों से—खासकर वहां के किसानों व राज्य-कर्मचारियों से अधिक प्रेम व घनिष्ठता का संबंध होते देखकर एक प्रकार से ईर्ष्या होती है कि मुझे यह मौका क्यों नहीं मिला? लेकिन ऐसे मौके तो ईश्वर की कृपा से ही मिलते हैं। विश्वास होता है कि उदयपुर व बिजौलिया के राज-कर्मचारियों पर भी हम लोगों के सीधे व सच्चे भाव से सेवा करने का स्थायी तौर से असर होगा और भविष्य में प्रजा व उनका संबंध घनिष्ठ प्रेममय बना रहेगा। श्री ट्रेन्चसाहब को मेरी ओर से भी वंदेमातरम् कहना। सब मामला पूरी तरह से संतोषकारक तय हो जाने पर उसकी संक्षिप्त रिपोर्ट श्री ट्रेन्चसाहब व वहां की पंचायत को दिखाकर 'यंग इंडिया' में प्रकाशित

*कर देना ठीक होगा, जिससे राज्य की व प्रजा दोनों की उदारता व न्याय-*प्रियता का असर और लोगों पर भी पड़े।

गांधी-सेवा-संघ की मीटिंग कोरम न होने से नहीं हो सकी। राजेंद्र-बाबू बीमार हो गये और गंगाधर रावजी को श्री खाडिलकरजी की गिरफ्तारी के कारण बंबई जाना पड़ा। मीटिंग बहुत करके २४ मार्च के लगभग अहमदाबाद में होना संभव है। आपके बजट के बारे में श्रीसंतानमजी आपको लिखेंगे ही। बिजौलिया के प्रचार-खर्च की तो आपके पत्र से आवश्यकता नहीं रही और माणिकलालजी का खर्च भी वर्तमान परिस्थिति में संघ को उठाना उचित नहीं मालूम होता है। उन्हें खर्च देना ही पड़े और वहां स्थानीय-व्यवस्था न हो सके तो दूसरी प्रकार से व्यवस्था हो सकेगी। बाकी आपका बजट आपके लिखे मुताबिक ट्रस्टियों के पास भेजकर पास कराना निश्चित हुआ है। आपका, जेठालालजीभाई का, व नरसिंहदासजी का सदस्य-फार्म सही होकर संथानमजी के पास नहीं पहुंचा, सो फार्म सही कर शीघ्र भिजवा देना आवश्यक है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १९ :

बंबई, २४-४-२९

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका तारीख २१ का पत्र मिला। मैं आज उन्नई रानीपरज परिषद् में जाकर आया हूं। सभा ठीक हुई। रानीपरज की प्रजा में खूब जागृति हुई है। खादी-प्रचार व दारू-विरोध का खास कार्य हुआ है। उनकी जाति में आज हजारों की संख्या में लोगों ने दारू पीना बंद कर दिया है। हजारों की संख्या में शुद्ध खादी पहननेवाले स्त्री और पुरुष हैं। जिस समय वहां की स्त्रियां (देवियां) सैकड़ों की संख्या में शुद्ध सफेद खादी पहने हुए राजनीतिक जागृति व बारडोली-संगठन, चर्खे का महत्व तथा अन्य सामाजिक सुधार के गीत व भजन अपनी भाषा में व गुजराती भाषा में गाती हैं, उस समय किसी

भी सहृदय भारतवासी के मन में उनकी इस प्रकार की जागृति देख आनंद का संचार हुए बिना नहीं रहता। ईश्वर ने चाहा तो इस पिछड़ी हुई जाति में, जिसमें पूज्य बापूजी दरिद्रनारायण के दर्शन करते हैं, अवश्य पूज्य बापू की तपश्चर्या के कारण नव जीवन स्थायी तौर पर स्थापित हो जायगा। मैं समझता हूं, अवश्य होवेगा, अगर हम लोग सच्ची लगन और प्रामाणिकता के साथ सेवा करते रहे तो। वर्तमान में तो राजपूताने का दुर्भाग्य है, वहां न तो सच्चा कार्यकुशल कोई नेता ही है, और न सच्चाई व लगन के साथ काम करनेवाले सेवक ही हैं। हाल तो परमात्मा से प्रार्थना करके ही संतोष करना पड़ता है कि वह राजपूताने में नव-जीवन का संचार करें।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

आपने लिखा, श्री मिरजा अब्दुल कादरबेग खुली तौर से दूसरे पक्ष की मदद करते हैं, अब आप लोगों को भी मदद मिलनी चाहिए। सो आपको मालूम होगा, मेरा पहले तो विचार था कि मैं चुनाव में किसी प्रकार का भाग या संबंध नहीं रखूं। वह विचार समझौता टूट जाने के बाद और वहां की परिस्थिति का थोड़ा परिचय होने के बाद मैंने बदल दिया और यह मैंने आप लोगों के सामने ही श्री मिरजा अब्दुल कादरबेग, श्री जुबेरीजी को कह दिया था। मैं आपके पक्ष की हृदय से सफलता चाहता हूं। मैंने चुनावों के संबंध में जो शर्तें आप लोगों से की हैं, वह तो आपको पालना ही होवेंगी और किसी कारण से चुनाव में सफलता नहीं भी मिली तो आप लोगों को यानी अपनी पार्टी को सदैव कांग्रेस का रचनात्मक कार्य करने को तैयार रहना होगा और वैसी हालत में मैं समय-समय पर अपनी सलाह से व मित्रों द्वारा आर्थिक सहायता कराने का प्रयत्न करता रहूंगा। मैं यह अवश्य चाहता हूं, राजपूताना-कांग्रेस की प्रतिष्ठा गुजरात, बिहार आदि प्रांतों के मुताबिक बढ़ जावे। सेठीजी के बारे में मैं क्या लिखूं। मैं तो यही मानकर उनकी अनुचित असत्य बातों का व आक्षेपों का विचार नहीं करना चाहता कि एक तो उनकी पहले की सेवा है; दूसरे उनका मगज उनके भी काबू में नहीं है। इस प्रकार से मैं तो

मानता हूं कि उनकी भारी भूलों के कारण उनका मगज विक्षिप्त-सा हो गया है। ज० ब०

: २० :

हटुंडी, ११-७-२९

मान्यवर श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। संघ के बारे में अभी जयपुर में खादी के प्रायः सभी जिम्मेवार मित्रों से खूब विचार-विनिमय हुआ। गांधी-सेवा-संघ में जो प्रांतीय स्वाधीनता दी गई है, उसे तो सब पसंद करते हैं, किंतु संचालक को सर्व-सत्ता दे देने पर आपत्ति है। यदि गांधी-सेवा-संघ में संचालक के लिए एक परामर्श-समिति और उसका निर्णय बंधन रूप हो जाय तो उन्हें संतोष हो जायगा; अन्यथा वे स्वतंत्र संस्था चाहते हैं। सब इस बात से तो सहमत हैं कि पूर्ण जनतंत्रात्मक संघ अभी अनुकूल न होगा, पर संघ का वर्तमान संगठन उन्हें अपनी आकांक्षाओं के अनुकूल नहीं मालूम होता। अधिक जोर श्री देशपांडेजी का है। मेरी समझ में यदि संचालक आप बन जायं तो वर्तमान संगठन से भी शायद सबको संतोष हो जाय। आपका संचालक रहना अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण और आवश्यक है। मैं इस परम उत्तरदायित्त्वपूर्ण पद के लिए अपनेको योग्य भी नहीं समझ रहा हूं, और न किसी तरह इस कार्य में अप्रत्यक्ष रूप से ही बाधक बन जाना चाहता हूं। उल्टा मेरा तो यह खयाल है कि साधारण सदस्य रहकर मैं संघ की और प्रांत की अधिक सेवा कर सकूंगा। जहां पद और नेतृत्व का प्रश्न प्रधान है, ऐसे प्रांत में कुछ व्यक्ति ऐसे भी होने चाहिए जो बिना इनके भी कुछ सेवा करते रहें। यों मित्र और साथी लोग प्रेम से मुझे निबाह लेते हैं। अतएव यदि आप सचमुच इस प्रांत में कार्यकर्त्ताओं का सुदृढ़ संगठन बनाना चाहते हैं तो संचालकत्व आपको ही स्वीकार करना चाहिए। आशा है कि आप इसपर गंभीरता और गुरुता के साथ विचार करेंगे।

विनीत,

हरिभाऊ उपाध्याय

: २१ :

हटुंडी, ३१-७-२९

मान्यवर श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। २५-७ का पत्र मिला। मेरी हार का मतलब यह नहीं है कि मैंने अपना विचार बदल दिया है; बल्कि यह है कि यहां अब इन विचारों के अनुकूल वातावरण नहीं है और इसका मुख्य कारण मैं अपने पहले पत्र में, जो साबरमती से लौटकर भेजा है, लिख चुका हूं। चरखा-संघ की कार्य-प्रणाली पर भी उनके आक्षेप हैं और उनमें भी सच्चाई है।

आपकी सूचना का मैं पूरी तरह आदर करता हूं। पर आपके सदृश कड़ाई या बेरुखी का अभ्यास होते-ही-होते होगा।

बिजौलिया में कुछ उपद्रवी और स्वार्थ-साधक लोग रावजी साहब को बहकाकर जमीन की वापसी में बहुत बाधा डाल रहे हैं। अभी तक ६०० बीघे से अधिक जमीन किसानों के पल्ले नहीं पड़ी है; हालांकि कम-से-कम आधी जमीन तुरंत वापस दिलाने का आश्वासन कामदार साहब ने दिलाया था। अभी तो मैं लिखा-पढ़ी द्वारा ही कोशिश कर रहा हूं।

प्रताप सेठ की रकम के लिए हमने तो इसीलिए आगे नहीं लिखा कि आपने उनसे यह तय किया था कि पहले वह राजपूताना में आकर सब देख-कर यह तय कर लें कि वे किस तरह रकम लगाना चाहते हैं। तब रकम मांगी जाय। अब आप सलाह दें तो रकम का तकाजा उन्हें करें, अथवा आप ही बाला-बाला लिखें।

धनी लोगों में जहां सच्चाई है और सहृदयता है, वहीं मेरा स्नेह या आदर हो सकता है। मैं शुरू ही से धनियों के संपर्क से दूर रहता आया हूं। गरीबी, छोटापन, अप्रसिद्धि मुझे शुरू से ही प्रिय रहे हैं और यह बातें धन एकत्र करने-वाले के लिए दुर्गुणवत् हैं। कभी-कभी तो यह भी दिल में आ जाता है कि संपादकी का या लड़के पढ़ाने का काम लेकर बैठ जाऊं तो अच्छा हो। परंतु अंगीकृत कार्यों को अधूरा न छोड़ने की भी एक आदत मुझे है।

अस्तु । फिर मुझे गांधी-सेवा-संघ के लिए रुपया तभी मिल सकता है, जब उसका कुछ कार्य यहां के लोगों की दृष्टि में जंचने लायक हो ।

विनीत,
हरिभाऊ

: २२ :

हटुंडी, २-११-२९

मान्यवर श्री भाईजी,

यह अच्छी बात है कि आपकी बातें शंकरलालभाई से हो गई हैं । मुझसे भाई देशपांडेजी ने कहा था कि पोद्दारजी और जेठालालभाई के इस प्रकार निरीक्षण को वह आपत्तिजनक समझते हैं और ऐसे "सिक्रेट इंस्पैक्शन" को शंकरलालभाई ने भी बुरा कहा है । यह बात मुझे बहुत खटकी । खैर, जब आपको विश्वास हो गया है, तो मुझे कहना ही क्या है । पर एक बात आप जरूर करें । देशपांडेजी से अपना सीधा व्यवहार अधिक बढ़ावें । उन्हें आपके और पूज्य बापूजी के निकट आने के अवसर अधिक मिलने चाहिए । दिसंबर में आप उन्हें वर्धा बुला लें । जिस तरह मुझसे बातें करते हैं, उसी तरह उनसे करें । उन्होंने अभी आपको पूरी तरह समझा नहीं है । मेरी तो अब भी यही राय है कि या तो शंकरलालभाई की मार्फत उनसे काम लीजिए या फिर उन्हें पूरे विश्वास में लेकर उनसे सीधा काम लीजिए । इस विषय में यह मेरी अंतिम सूचना है । इधर के खादी-संबंधी काम के बारे में आप मुझे भी जितना कम लिखें, उतना अच्छा होगा ।

विनीत,
हरिभाऊ

: २३ :

वर्धा, ६-११-२९

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका २-११-२९ का पत्र मिला । विश्रांति के बारे में लिखा,

सो वैसे तो विश्रांति काम के बीच में मिल ही जाती है। खादी, अछूतों व मंदिरों का जहांतक संतोषकारक रास्ता नहीं बैठता, वहांतक मानसिक विश्रांति मिलनी कठिन मालूम होती है। बाकी तो रात्रि को निद्रा तो ठीक आ ही जाती है।

आपको बीच-बीच में ज्वर आ जाया करता है, यह पढ़कर चिंता रहती है। आपको किसी काढ़े का सेवन करना चाहिए।

चरखा-संघ के बारे में आपकी सूचना का खयाल रखूंगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: २४ :

बंबई, ४-५-३१

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

आपका पत्र २-५-३१ का मिला। बिजौलिया-सत्याग्रह के संबंध के कागजात भी मिले। मैंने सब पढ़ लिये हैं। मेरे पास तो अभी तक सर सुखदेव-प्रसादजी का कोई जवाब नहीं आया है। आपके पास महाराणा या मिस्टर ट्रेंच का कोई उत्तर आवे, तो मुझे सूचित करेंगे।

बिजौलिया की नई घटनाएं लिखते रहेंगे। मेरी समझ से अधिकारियों के साथ चर्चा व उसके साथ ही उग्ररूप का आपकी तरफ से ही प्रचार दोनों साथ-साथ में जारी होना एक प्रकार से ठीक नहीं मालूम होता है। आपकी सब कोशिश खतम होने के बाद ही सत्याग्रह चालू होना चाहिए था। अब जब सत्याग्रह आपने शुरू कर दिया, तो फिर अगर कोशिश की जा सकती हो तो दूसरे लोगों को करनी चाहिए, जिनका सत्याग्रह से प्रत्यक्ष रूप से संबंध न हो। आज आपकी सही से 'त्यागभूमि' के लेख पढ़ने पर ये विचार मेरे मन में पैदा हुए, वे लिखे हैं। मेरी यह भी राय है कि सत्याग्रह शुरू करने में जल्दी से काम लिया गया है। आशा है कि प्रचार-कार्य का मुख्य खयाल बाहर के आंदोलन के साथ-साथ या उससे ज्यादा सत्याग्रहियों को

मजबूत व उत्साहित करने में मदद करने और वे ज्यादा संख्या में तैयार हों, उस तरफ लगाने का रहेगा, तो ठीक होगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: २५ :

हटुंडी, १०-५-३१

मान्यवर श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। उदयपुर से शायद ही आपको जवाब मिले। मुझे हरविलासजी से मालूम हुआ है कि वे लोग बाहरवालों को बीच में पड़ने देना नहीं चाहते। पूज्य बापूजी ने मणिभाई को तार दिया, परंतु न तो उनका कुछ पता ही है, और न उनसे कोई उत्तर ही मिला है।

ट्रेंचसाहब बिजौलिया जा पहुंचे हैं। खबर तो ऐसी आई है कि वह मामला निबटा देंगे। आधे वापीदार जमीन लौटा देने की राय रखते है। बिजौलिया की मांजी साहिबा भी जोर लगा रही हैं। यहां से पंडित लादूरामजी और रमादेवी को बिजौलिया भेजा है।

पू. बापूजी का पत्र आया है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि किसान अहिंसक रहेंगे तो उनकी विजय निश्चित है। सारी स्थिति को देखकर तुमको जो प्रतीत हो, उसके अनुसार काम करना। मैंने उन्हें लिख दिया है कि यदि समझौता न होकर दमन शुरू हुआ तो आपको 'यंग इंडिया' में कुछ लिखना पड़ेगा। करांची से आते ही मैंने ट्रेंच, सर सुखदेव और महाराणासाहब सबको पत्र लिखे और मिलने का समय मांगा। किसीने समय न दिया। सर सुखदेव के अलावा किसीने जवाब भी न दिया। इधर अक्षय तृतीया अब नजदीक आ रही है। उस दिन हल चलाने से ही किसान जमीन पर कब्जा कर सकते थे। अधिकारियों का रुख ऐसा नहीं था कि जिसके लिए और राह देखी जाती। अखातीज चूकने से बात फिर एक साल पर जा पड़ती, इसलिए मेरी समझ से तो जल्दी नहीं हुई है। लोग मजबूत हैं। अहिंसक भी रहे हैं। हममें से कोई-न-कोई कार्यकर्त्ता यहां बना रहे तो वे पीछे न हटेंगे।

मैं खुद तो अब तबतक कोई समझौते की बात नहीं कर सकता, जबतक कि राजवाले न चाहें। मैं तो किसानों का मुखिया बन गया। आप या मालवीयजी पड़ें तो हो सकता है। इसलिए मेरा प्रचार करना अनुचित नहीं है। फिर मैं इस बात की भी चेष्टा करता ही रहता हूं कि अपनी तरफ से बात बढ़ने न पावे। वापीदारों के नाम जो अपील छापी है, वह इसीलिए। अभी 'त्यागभूमि' में किसानों के नाम एक पत्र छापा है, वह भी इसी उद्देश्य से। मुख्य शक्ति बिजौलिया के सत्याग्रहियों में ही लगाई जा रही है। आप और भी उपयोगी सूचनाएं समय-समय पर भेजते रहिये। यदि ट्रेंचसाहब ने वहां जाकर समझौता नहीं कराया और दमन किया तो आपको उदयपुर आना पड़ेगा, या पू. मालवीयजी को आप भिजवाइयेगा।

अमरसर में बलाइयों की पंचायत हुई। २००० के लगभग स्त्री-पुरुष एकत्र थे। मुर्दा मांस न खाने, शराब न पीने, स्वदेशी वस्त्र पहनने के प्रस्ताव स्वीकार हुए। जयपुर-राज्य के थानेदार ने हम लोगों को पंचायत में जाने से रोकना चाहा था, पर विफल हुआ। कपूरचंदजी भी थे। थानेदार ने कहा, हमारे पास खानगी आर्डर है कि सारे जयपुर रियासत में किसी तरह की कोई सभा न की जाय। हमने कहा—"मजिस्ट्रेट का आर्डर ले आओ, तो मान लेंगे।" वास्तव में यह थानेदार की ज्यादती थी। आर्डर सिर्फ इतना ही है कि जयपुर-नगर की म्यूनिसिपल सीमा में कोई सार्वजनिक सभा महकमा खास की इजाजत के बिना न की जाय। थानेदार पंचायत में भी आये थे। फिर यह कहकर चले गये कि अब मुझे तसल्ली हो गई। हम लोगों ने उसके साथ बहुत सभ्यता और प्रेम का बर्ताव किया था।

आज मैं रतलाम और इंदौर की तरफ जा रहा हूं। बिजौलिया में दमन शुरू न हुआ तो ८-१० दिन उसी तरफ रहूंगा। पिकेटिंग के सिलसिले में जाना जरूरी है।

विनीत,
हरिभाऊ

इसके बाद आपका पत्र ता. ८-५ का मिल गया। नई जिम्मेदारी मैंने कुछ नहीं ली है। ग्राम-सेवा के लिए रुपया लाने का भार अलबत्ते लिया है। पर उसमें अधिक श्रम नहीं पड़ेगा। मैं अधिक काम और कष्टों से नहीं घबराता हूं। सिर्फ मित्रों से प्रेम और सहानुभूति चाहता हूं। अधिकांश में तो वह मिलती भी रहती है। सिर्फ एक साथी या सहायक की जरूरत है। उसके लिए ५०-६० रुपया मासिक आप गांधी-सेवा-संघ में से मंजूर कर दें तो बड़ी मदद मिले। अधिकारियों के मिलने से इनकार करने के बाद सत्याग्रह शुरू हुआ है, पहले नहीं। पत्र-तार सब यहीं के पते पर दें।

ह० उ०

: २६ :

शिमला, १५-५-३१

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

आपका १०-५-३१ का पत्र पू. श्री बापूजी ने मुझे दिया है। बिजौलिया के बारे में उन्होंने आपको लिखा ही है कि वह वर्तमान हालत में इस मामले के बीच में नहीं पड़ सकते। परिस्थिति ऐसी ही है कि उनके लिए इस संबंध में इस समय कुछ करना ठीक नहीं होगा। मैं बंबई में बीकानेर के महाराज से मिला था और उनके एक आदमी के साथ उदयपुर उनका पत्र भेजा है। देखा जाय, उस पत्र का क्या असर होता है।

आपने ग्राम-संगठन की योजना श्री बैजनाथजी की लिखी हुई भेजी सो पहुंची। आपके ग्राम-सेवा-विभाग का क्या उद्देश्य है, सो मेरी समझ में बराबर नहीं आया है। इसके सिवाय यह योजना तो बहुत खर्चीली है। गांधी-सेवा-संघ की मीटिंग होगी तब योजना मीटिंग के सामने रख दी जायगी। लेकिन योजना स्वीकृत होनी संभव नहीं है और स्वीकृति नहीं मिलेगी, यह समझकर आपको चलना चाहिए। मेरी और गांधी-सेवा-संघ की ग्राम-संगठन की जो कल्पना है, वह इस योजना से भिन्न है। वर्धा तहसील में पू. विनोबा भावे ने जो काम किया है, कितने कम खर्च से किया है। मैं समझता हूं कि १०० रुपये महीने से अधिक खर्च न हुआ होगा। पांच कार्यकर्त्ता बराबर कार्य कर रहे

हैं। वहां यदि आप ग्राम-संगठन का काम शुरू करना चाहते हैं तो वर्धा किसीको भेजकर अच्छी तरह समझ लेवें, तो ज्यादा ठीक होगा।

आपने श्री गोवर्द्धनलाल नामके उदयपुर के एक लड़के की छात्रवृत्ति के लिए, सिफारिश की, सो सरकारी स्कूल-कालिजों में पढनेवाले लड़कों को छात्रवृत्ति देने की मेरे पास कोई व्यवस्था नहीं है। मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष को, वह चाहे तो, छात्र-वृत्ति के लिए पत्र दे सकता है।

आपकी ग्राम-योजना के बारे में मुझे इतना ही कहना है कि आप लोगों का उत्साह देखकर तो खुशी होती है, परंतु इतनी खर्चीली योजना का असर ग्राम के लोगों पर व जनता पर भविष्य में ठीक न होने का डर है। आपने जिनके नाम लिखे हैं, उनमें से कई सूबों को ग्राम-संगठन का कम अनुभव है। इसलिए बहुत जल्दी करने से यह काम सफल होना कठिन है। गांधी-सेवा-संघ में जिनके ऊपर कर्ज या कुटुंब की ज्यादा जिम्मेवारी हो, उन्हें सदस्य लेने का ट्रस्टियों का व मेरा कम विचार है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: २७ :

हटुंडी, १०-७-३१

प्रिय श्री भाईजी,

बिजौलिया-सत्याग्रह के बारे में सरकारी पत्र और सूचनाओं में सर सुखदेव प्रसाद ने मेरे विरुद्ध कई आरोप लगाये हैं।

१. लगान बढ़ाने के बारे में सर सुखदेव प्रसाद कहते हैं—तथ्य कुछ और ही है। लगान बढ़ाया नहीं गया, बल्कि ८ प्रतिशत घटाया गया है। किसानों के स्थानीय नेता श्री माणिकलाल ने मुझे जो आंकड़े दिये हैं, उनके अनुसार तो व्यक्तिगत जांच के अनुसार नये बंदोबस्त के पहले के २९५५ रुपये बकाया है। कुल ५३,२४७ रुपये देना था, जिसमें १०,२९२ रुपये वृद्धि भी शामिल थी। १९२२ के समझौते के अनुसार भी किसानों ने शिकायत की कि लगान बहुत ज्यादा है। इसी आधार पर उन्होंने नये बंदोबस्त का आग्रह

किया हालांकि ठिकाने के दफ्तर न कुल रकम ४७,००० रुपये निर्धारित की थी। इसलिए यह समझौता हुआ कि जबतक नया बंदोबस्त न हो, तबतक लगान वर्तमान दर से तीन-चौथाई वसूल किया जाय। समझौते में यह शर्त जोड़ी जाने से यह साबित होता है कि किसानों की मांग उचित थी और बाद में जब मैं उनकी ओर से प्रतिनिधि रूप में मि. ट्रेंच से मिला तो मैंने उनके सामने दो विकल्प-प्रस्ताव रखे—या तो लगान-दर में संशोधन किया जाय या वर्तमान दर में २५ प्रतिशत कमी की जाय। मि. ट्रेंच ने बंदोबस्त के संशोधन के बदले लगान रुपये में एक आना घटाने की बात मंजूर कर ली। इस मंजूरी से यह मालूम हो जाता है कि किसानों की शिकायत जायज थी। किसी भी हालत में जबतक जांच फिर से नहीं हो जाती, तबतक यह नहीं कहा जा सकता कि किसानों का बयान गलत है। उन्होंने कोटा की लगान-दर मंजूर की थी। उनकी यह दलील थी कि औसत रूप में लगान के बंदोबस्त में जो दरें निर्धारित की गई हैं, वे वही हैं जो उनकी शिकायत के रूप में बनी हैं। व्यक्तिगत रूप में मैंने पड़ोसी राज्यों—इंदौर, देवास, ग्वालियर, धार, नरसिंहगढ़ और कोटा के बंदोबस्तों का अध्ययन किया है, और उनकी लगान-दरों की सूची बनाई है। मैंने उसकी एक नकल मि. ट्रेंच को भी दे दी है। उससे जाहिर होता है कि बिजौलिया की दरें सचमुच ज्यादा हैं। फिर भी मैं कोई बंदोबस्त-विशेषज्ञ नहीं हूं और इसीलिए मैंने फिर से हिसाब लगाने का आग्रह किया। अब चूंकि लगान एक आना प्रति रुपया घट गया है, और कसरत तथा बकाया घटा दिया गया है, इसलिए जमीन के लगान के सिलसिले में किसानों की कोई शिकायत नहीं रही है।

२. बिजौलिया के असामी अपनी समर्पित जमीन वापस पाने के लिए इसलिए आतुर नहीं हैं कि उन्होंने अपनी जमीन किसी शर्त पर और विरोध के रूप में समर्पित की थी और उसे पुनः प्राप्त करने का दावा इसलिए कर रहे हैं कि उनकी मांग पूरी नहीं तो आंशिक रूप में पूरी हो सकेगी।

३. सर सुखदेव प्रसाद की दलील है कि भूमि का समर्पण किसी शर्त

पर नहीं किया गया था। इसके जवाब में मैं किसानों के समर्पण-पत्र की नकल नत्थी कर रहा हूं। मैं अपने वक्तव्य की सच्चाई का विश्वास आपको दिला दूंगा। इसमें स्पष्ट कहा गया है—"हम तबतक जमीन रखने योग्य नहीं हैं, जबतक कि लगान घटा नहीं दिया जाता और हमारे सामूहिक प्रार्थना-पत्र में जिन अन्य शिकायतों का वर्णन दिया गया है, वे दूर नहीं कर दी जातीं।" इसी प्रकार इस सामूहिक प्रार्थना-पत्र में ये स्पष्ट पंक्तियां भी हैं—"इन गलतियों के विरोध में हमने माल (असींच) जमीन सर्मपित कर देने का फैसला किया है और इस पत्र द्वारा सर्मपित कर रहे हैं। इसलिए हमारी प्रार्थना है कि या तो ऊपर बताई गई शिकायतें दूर की जायं, अथवा माल जमीन की जुताई किसी और ढंग से कराई जाय।" इस उद्धरण से असंदिग्ध रूप से प्रमाणित हो जाता है कि समर्पण शर्त पर था। इसके अलावा यह बात समझने के लिए असाधारण बुद्धि की आवश्यकता नहीं है कि किसानों को समर्पण की नौबत क्यों आई ?

४. मुझे मेरे वकील दोस्तों ने सलाह दी थी कि किसानों का समर्पण स्वीकार करने के पहले नोटिस देने की जरूरत थी।

५. मैं जब बिजौलिया पहले इस उद्देश्य से गया कि किसानों के केस को समझूं तो उस दरम्यान नये पट्टेदारों ने आ-आकर मुझे बताया था कि किस तरह पट्टे उनके गले बांधे गये। बिजौलिया के भूतपूर्व कामदार मकसूद अली और हनुमतमल लोधा, रावजी तथा मि. ट्रैंच से बातचीत के सिलसिले में मैंने यह प्रस्ताव किया था कि अगर वह जांच करे तो मैं यह आरोप साबित करने को तैयार हूं, पर इस मांग पर जोर नहीं दिया गया, क्योंकि बातचीत का रुख पारस्परिक समझौते का था।

जमीन के नये काबिज तीन श्रेणी के हैं; एक तो ठिकाने के नौकर, व्यापारी और बालाई, बोला आदि दलित जाति के लोग। इनमें से अंतिम के बारे में यह बात कुछ सचाई के साथ कही जा सकती है कि वे अपनी नई प्राप्त भूमि से कब्जा उठाने से नफरत करते हैं। लेकिन अन्य काबिज ऐसे हैं जो सिर्फ अधिकारियों के डर के मारे जमीन छोड़ने को तैयार नहीं हैं और

यह तथ्य है कि कुछ अधिकारी उनके पीठ-पीछे हैं। यह कहना बिल्कुल गलत है कि वे अपनी जमीन अब छोड़ने को तैयार नहीं हैं क्योंकि वे उन्हें अपनी अभिलाषित संपत्ति मानते हैं। इसके विपरीत सत्याग्रह के आंदोलन के बाद भी नये काबिजों, असामियों की एक सभा में उपस्थित लोगों में से आधे ऐसे थे जो अपनी जमीनें उनके असली मालिकों को सौंपने के लिए तैयार थे। इसके सिवा मेवाड़ के एक जिम्मेदार अफसर ने मुझे बताया कि नये काबिज असामी अपनी जमीन छोड़ने को इस शर्त पर तैयार हैं कि पुराने असामी उनसे मांगें और साथ ही सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं से अपना संबंध त्याग दें। इसमें शक नहीं कि यह बादवाली शर्त अगर कभी की गई होगी तो अधिकारियों की प्रेरणा से।

६. हालैण्ड-समझौता तोड़ने की मिसालें मैं संग्रह कर रहा हूं। मैंने इन दोनों को १९२९ में गांवों में अधिकारियों से बातचीत करते समय पेश की थीं, जिनमें पहली है पंचायत को ३० रुपये मासिक शिक्षा-वृत्ति देना बंद करना और दूसरी २४ रुपये मासिक की दवा बांटना बंद करना। बाद में उनकी पूर्त्ति कर देने का वायदा भी हुआ। पर यह वादा पूरा नहीं किया गया।

७. अजमेर-मेरवाड़ा के कमिश्नर को लिखे गये मेरे पत्र में जो 'जब्ती' शब्द आया है, उसके लिए मुझे अफसोस है। इसका इस्तेमाल समर्पित भूमि के लिए किया गया था। मुझे इस गलती के लिए अफसोस है और मैंने इसकी सूचना मिस्टर गिब्सन को भी दे दी है।

सर सुखदेव प्रसाद को यह भ्रम है कि "जमीन हरिभाऊजी की बुरी सलाह से असामियों को समर्पित की गई थी।" तथ्य यह है कि जमीन सौंपने का काम श्री विजयसिंह 'पथिक' की सलाह से हुआ था। यह १९२७ की बात है जब मेरा बिजौलिया के किसानों से परिचय भी नहीं था। उन्होंने मुझे तो अपना प्रतिनिधि १९२९ में नियुक्त किया।

मैंने कहीं भी यह नहीं कहा कि दरबार या उनके अधिकारियों ने कोई लिखित समझौता पुराने असामियों को जमीन देने के बारे में किया है। मेरा

दावा तो सिर्फ यह है कि मि. ट्रेंच और मेरे बीच यह बात हुई थी कि जमीन नये पट्टेदारों को समझा-बुझाकर पुराने वाकफदारों को लौटाई जायगी। श्री हनुमतमल ने तो इस संबंध में यह वादा कर लिया कि अगले दशहरे तक जमीन वापस पा जाने की कोशिश की जायगी। इस एक जबानी आश्वासन का मूल्य और महत्व अनेक निर्जीव प्रतिक्रियाओं से अधिक इसलिए है कि अगर ऐसा वादा उस समय न किया जाता, तो कोई समझौत हो ही नहीं सकता था। मुक्त जमीन को समर्पित करने के सवाल को समझौते की कोई औपचारिक शर्त नहीं बनाया गया था, हालांकि अमुक्त भूमि के बारे में ऐसा किया गया था। इसका कारण यह था कि मैंने अधिकारियों की कठिनाइयों का खयाल रखा था कि इससे उनकी स्थिति भद्दी हो जायगी। मैं किसानों में शांति स्थापित करने के समान ही अधिकारियों की इस नैतिक जिम्मेदारी को बहुत जरूरी समझता हूं कि वे जमीन वापस करने के वादे को पूरा करें। अधिकारीगण कानूनी लफ्जों पर अड़ने के बदले अपनी इज्जत और नैतिक बल की रक्षा करके खतरों से बचेंगे।

८. यह आश्वासन कि राज्य के न्यायालय खुले हैं और अगर कोई जुल्म हुआ है तो तत्काल इन्साफ किया जायगा, ऐसा है, जिससे कम तसल्ली मिलती है। ऐसी ज्यादतियां, जिनके किसानों की ही तरह सार्वजनिक कार्यकर्त्ता भी शिकार हुए हैं, ऐसी पाशविक हैं कि अगर अधिकारी काफी मनुष्यता रखनेवाले होते तो उनकी जांच फौरन की जानी चाहिए थी। किसानों के माने हुए प्रतिनिधि के रूप में मैंने अनेक बार ऐसी जांच के लिए महकमा खास और हिज-हाईनेस महाराजसाहब से अनुरोध किया। मुझे मालूम हुआ है कि किसानों ने भी एक ऐसी दरख्वास्त महकमा खास को दी थी। ऐसे सभी अनुरोध अभी तक व्यर्थ सिद्ध हुए हैं। इस संबंध में मैं ठिकाना पुलिस पर एक निश्चित आरोप लगाता हूं कि उसने कानून के नाम पर कानून को ही पैरों तले रौंदा है और राज्य की पुलिस पर यह इल्जाम लगाता हूं कि उसने ठिकाना पुलिस की गैर-कानूनी कार्यवाहियों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मदद की है। केवल एक

निष्पक्ष कमीशन की जांच से ही जनता को संतोष हो सकता है। देशी राज्य प्रजा-परिषद् की बिजौलिया-जांच-समिति पर लगाई गई निषेधाज्ञा से राज्य के न्याय के प्रति जनता का संदेह बढ़ा है।

मेरे जवाब से सर सुखदेव प्रसाद की गलतफहमी और उन्होंने जान या अनजान में मेरे प्रति जो अन्याय किया है, उसकी सीमा का पता लग जायगा। जिसने ठिकाना और राज्यको नाजुक समय में चिंता-मुक्त किया है और जिसने दो वर्षों से किसानों में क्रोधोत्पादक कारणों और जुल्मों के होते हुए भी शांतिपूर्ण वातावरण कायम रखा है और जिसने व्यक्तिगत अप्रतिष्ठा का खयाल न करके शांति का दरवाजा खुला ही नहीं रखा है, बल्कि सभी साधनों द्वारा अपने काबूभर परिस्थिति को आसान बनाये रखा है, उसे झूठा और बदसलाहकार कहना सचाई की बेइज्जती करना है।

सरकारी सूचना के अनुच्छेद ३ का यह बयान कि यह लगान असामियों ने कबूल कर लिया था गलत है। सचाई यह है कि जब नये पट्टे तकसीम किये गये तब किसानों ने उन्हें लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने लगान की पुर्जी तभी ली जब उन्हें यह कहा गया कि उन्हें अपनी उज्रदारी बाद में भेजने का हक होगा।

सूचना के अनुच्छेद ४ के मुद्रित समर्पण में लगान बढ़ाने के अलावा दूसरी शिकायतों का भी हवाला था। अगर सूचना लिखनेवाले का यह तर्क कि लगान किसानों ने कबूल किया था, सच है तो फिर उन्हीं द्वारा वही जमीन समर्पित करने की नौबत क्यों आई ?

सूचना के छठे अनुच्छेद का जवाब इस पत्र के दूसरे अनुच्छेद में है। मुझे किसानों द्वारा २१-६-२७ को ठिकाने को दी गई नोटिस की जानकारी नहीं है। जबतक सारे कागजात मेरे सामने नहीं हैं, तबतक प्रसंग से अलग किये गये कुछ उद्धरणों से कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। सूचना से उद्धृत वाक्य अर्थात् "चाहे उसे शिकार खेलने को रख सकते हैं" ऐसा है जो किसानों के असंतोष की कटुता प्रकट करता है।

सूचना के सातवें अनुच्छेद में लिखनेवाले ने किसान-आंदोलन का जिक्र

उड़ा दिया है और मेरी मध्यस्थता से जो समझौता हुआ था, उसको भी। इसी प्रकार उसने समझा-बुझाकर जमीन को समर्पित कराने की बात को भी भुला देना पसंद किया है। यह चूक और विस्मृति ध्यान देने योग्य है।

सूचना के बाकी हिस्सों में ऐसी और कोई बात नहीं है, जिसपर इस पत्र में विचार न किया गया हो।

सर सुखदेव प्रसाद ने आपके साथ बंबई में बातचीत करते समय यह शिकायत की है कि मैंने अभी तक 'त्याग-भूमि' में प्रकाशित उस लेख के प्रति खेद प्रकाशित नहीं किया है। मैंने उस लेख का खंडन प्रकाशित कर दिया है और उसकी एक प्रति आपको भेज दी गई है। मैं माफी मांगने का कोई कारण नहीं देखता, क्योंकि जब वह लेख प्रकाशित हुआ था, उस समय मैं उस पत्रिका का संपादक नहीं था और जहांतक उस लेख का संबंध है, मैं अपनेको बेकसूर समझता हूं।

विनीत,

हरिभाऊ उपाध्याय

: २८ :

उदयपुर, २१-७-३१

प्रिय हरिभाऊजी,

मैं कल शाम को यहां पहुंच गया। हम लोग गेस्ट हाउस में ठहराये गये। व्यवस्था ठीक है। आज मैं सर सुखदेवप्रसादजी से मिला। सुबह ८ से १० तक बातचीत की। उन्हें जो उत्तर भेजा था, वह उन्हें दिया। उन्होंने पढ़ा, थोड़ी चर्चा हुई। उन्होंने किसानों को जमीन वापस कराने में ठिकाने की ओर से कानूनी अड़चनों का उल्लेख किया। मुझे जो कहना था वह कहा है तथा लिखकर दिया है। कल सुबह फिर मिलना तय हुआ है। देखें क्या होता है। यहां एक आफिसर भेजकर वहां जो कुछ जुल्म हुआ है, उसकी पूछ-ताछ करने तथा आगे नहीं होने देने के बारे में तो यह कहते हैं। परंतु उनकी राय से अभी हम लोगों का भी बिजौलिया जाना उचित मालूम नहीं पड़ता। तथापि कल प्राय: निश्चय हो जायगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: २९ :

साबरमती, २-८-३१

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

बारडोली का कल का तार आज मुझे मिला है। उसमें लिखा है—

"हटुंडी से तार आया है—शोभालालजी को, जब वह बिजौलिया जा रहे थे, जूतों से पाशविक ढंग से मारा-पीटा गया है। तफसील बंबई और उदयपुर तार द्वारा भेज दी है।"

तार सुनकर मुझे दुःख और आश्चर्य दोनों हुए। पूरी रिपोर्ट आपने बंबई भेज दी होगी। अगर न भेजी हो तो श्री शोभालालजी से इस मारपीट की तथा दूसरी सारी रिपोर्ट भिजवा दीजिएगा।

शायद ठिकानेवालों के पास स्टेट से इत्तिला न पहुंच पाई होगी। यदि ठिकानेवाले अत्याचार करें तो हमें कोई डरने की बात नहीं है। जितना ठिकानेवाले अत्याचार करेंगे, उतनी ज्यादा हमारी पोजीशन स्टेटवालों के सामने साफ और अच्छी हो जायगी और किसानों का मतलब भी उतनी ही जल्द सिद्ध हो जायगा। इसलिए ठिकाने के जुल्मों से हमें घबराना ही नहीं चाहिए।

हमने स्टेट के साथ जो मीठे ताल्लुकात पैदा किये हैं, उन्हें जहांतक हो सके, कायम रखने की कोशिश करनी चाहिए। इसलिए बेहतर है कि आप अभी रियासत से सीधी लिखा-पढ़ी न करके श्री शोभालालजी या अन्य वहीं के कार्यकर्त्ता के ही द्वारा होने दें। आपके लिखने से फिर कुछ गलतफहमी न पैदा हो जाय, यह डर है। अपनेको अपनी तरफ से उन्हें कोई शिकायत का मौका नहीं देना है। इसलिए या तो बिजौलिया के कार्यकर्त्ताओं द्वारा ही रियासत-वालों से पत्र-व्यवहार होना जरूरी है, या मेरे द्वारा।

जहांतक हो सके, वर्तमान हालत में अखबारों में इन खबरों को प्रचारित करने से बचाया जाय तो अच्छा है।

श्री शोभालालजी एक विगतवार रिपोर्ट मेरे पास भेज दें और एक

सर सुखदेवप्रसादजी के पास। वह उदयपुर जाकर उनसे मिलकर भी सब हाल सुना सकते हैं।

श्री शोभालालजी की पूरी रिपोर्ट मिलने पर ही वहां की असली हालत का पता लगेगा। श्री शोभालालजी बिजौलिया के मामले में मेरे मुआफिक ही विचार रखते हैं तथा मेरी कार्य-पद्धति से पूरी तरह वाकिफ हो गये हैं। ऐसी मेरी समझ होने के कारण ही मैंने उन्हें वहां जाकर मेरे विचार व कार्य-पद्धति साफ तौर से किसानों व कार्यकर्त्ताओं को समझाने के लिए भेजा। ऐसी हालत में उन्हें कष्ट व अपमान सहना पड़ा हो तो मुझे दुख तो अवश्य रहेगा परंतु इस तरह के प्रसंग से ठिकानेवाले अपनी ताकत कमजोर तो कर ही बैठेंगे। शायद, आशा है कि, आपसे बातचीत हुए मुताबिक 'त्याग भूमि' द्वारा आप स्टेट के हाथ मजबूत करने का खयाल रखेंगे, जिससे किसानों को जमीन मिलने में रास्ता साफ होता रहे।

चूंकि पू. बापूजी यहां आ गये, इसलिए मैं बारडोली नहीं गया। आज रात को गुजरात मेल से बंबई जा रहा हूं।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ३० :

बंबई, १३-१२-३१

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

आपके तथा श्री रामनारायणजी के लिखने से मालूम होता है कि अगर मैं श्री घीसूलालजी ब्यावरवाले पर से अपने रुपये की मांग उठा लूं, तो ब्यावर का झगड़ा सुलझ जाता है। वैसे तो मैं इसके खिलाफ हूं कि ऐसा करके झगड़ा मिटाया जाय। उनका अभी जो व्यवहार रहा है, वह ठीक नहीं रहा है। मुझे उनके व्यवहार से बिल्कुल संतोष नहीं रहा है। फिर भी यदि आपलोगों का ऐसा खयाल है कि मेरे रुपयों के कारण आपके काम में बाधा पड़ती है, तो मैं डिग्री को "रिन्यू" नहीं करता और आपके पास भेज देता हूं। आप और चौधरीजी जैसा ठीक समझें करें। आप चाहें तो घीसूलालजी

के सामने उनको बताकर उनसे बातचीत करके उसे फाड़कर फेंक देना या जैसा आप लोग ठीक समझें, करना। जब उनकी इच्छा हो, रुपये दें। नहीं तो उन्हें बट्टेखाते मांड देंगे। बाद में उनकी इच्छा हो, वैसा करें। अगर इतना करने से आप लोगों का रास्ता साफ हो जाता है, तो ठीक है।[1]

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ३१ :

वर्धा, २७-७-३३

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

आपका १४-७ का पत्र मिला। आपके पत्र को पढ़कर ऐसा मालूम हुआ कि आप काफी व्याकुल हैं। इसीलिए आपको आज तार भी दे दिया है। शांति के साथ प्रयत्न करना अपना कर्तव्य है। मेरी समझ से सच्चा प्रयत्न काफी है। उसके नतीजे का विचार करने की अपनेको जरूरत नहीं। ईश्वर पर भरोसा होना चाहिए। संसार में पूर्ण कौन है? पूर्ण होने के लिए तो जन्म ही लेना पड़ा है। खैर! मैंने काफी 'सर्मन' दिया है। आप कोई भी खास निर्णय मेरी बगैर सलाह के न करना। मिलने पर सब तय कर लिया जायगा। श्री जीतमलजी से भी यही कह देना।

मैंने तो जेल से आने के बाद अभी तक चर्खा-संघ की कोई जिम्मेदारी नहीं ली है। अब तो मेरी समझ से सब लोग अपना काम सर्वत्र खूब प्रेम और उत्साह से करें और आपसमें ज्यादा मतभेदका मौका न आवे, यही खयाल आप लोगों को रखना ठीक होगा। अगर दोनों ओर से समझदारी से काम लिया जा सकेगा तो, मुझे आशा है कि इससे भविष्य में खादी-कार्य को लाभ ही पहुंचना संभव है। हरिजन-पाठशाला को गांधी-सेवा-संघ तो अब कोई सहायता नहीं कर सकेगा। उसकी आर्थिक स्थिति इन वर्षों में काफी कमजोर होती जाती है। कारण सब जगह गांधी-सेवा-संघ से सहायता-खर्च तो होता ही है। आमदनी अभी तक प्रांतों से नहीं हो रही है। चर्खा-संघ अगर मदद कर सकता हो तो श्री देशपांडेजी व श्री शंकरलालभाई से निश्चय कर सकते हैं।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

१. देखिये पत्र नं० ५९

: ३२ :

वर्धा, २४-६-३४

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

आपका १७-६ का पत्र मुझे ठीक समय पर मिल गया था।

बिजौलिया के किसानों की जमीनें लौटाई जा रही हैं, यह जानकर खुशी हुई।

वहां की कांग्रेस पर की निषेधाज्ञा अभी तक नहीं हटाई गई, यह आपने लिखा और सलाह मांगी कि ऐसी हालत में क्या करना चाहिए। मैंने आपको तार दे दिया है। अगर सरकार जान-बूझकर 'बैन' नहीं हटा रही है तो उस हालत में सरकार की तवज्जोह इसकी तरफ खींचने की जरूरत नहीं है। अगर कोई ऐसा मामला हो जिसमें ऐसा मालूम दे कि "ओवर साइट" (नजर चूक जाने) से वह नहीं हटाया गया तो सरकार को लिखकर उसकी तवज्जोह उधर खींचने में कोई आपत्ति नहीं है।

श्री धोत्रे ने गा. से. सं. के भावी संगठन के बारे में पूछा है, सो आप अपनी तथा बैजनाथजी की राय लिखकर जरूर भेज देना। सब मित्रों की राय आने के बाद भविष्य का निर्णय करने में मदद मिलेगी।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ३३ :

वर्धा, २१-१०-३४

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका पत्र मिला। परसों तार भी मिला था। कल रात्रि की गाड़ी से श्री ओंकारनाथजी अजमेर के लिए रवाना हो गये हैं। श्री भागीरथी बहन वगैरह बंबई से श्री राधाकिशन के साथ गई हैं। चि. मार्तण्ड का पत्र पढ़कर थोड़ा आश्चर्य तो अवश्य हुआ। मैं समझ नहीं सका, उसके मन में यह भाव पैदा क्यों हुए। आपसे वह मिले तो उसे कह देना, उसकी कल्पना या समझ बिल्कुल गलत थी। वह मुझे यहां मिलता तो मैं उससे बातें कर लेता। वर्धा आपको स्थायी तौर से रहना है। इसका भी विचार कर देखा जावे तो इसमें मेरा हाथ या संबंध नहीं मिलेगा, क्योंकि मैंने स्थायी तौर की कल्पना

ही कभी नहीं की थी। मेरी तो उल्टे यह समझ थी कि चि. मार्तण्ड, भागीरथी तथा अन्य घर के लोग भी कुछ समय के लिए आपको वहां से हटाना चाहते हैं। महिला-आश्रम की माला तो आपको राधाकृष्ण पहनाना चाहता था। मैंने तो उसी समय कह दिया था कि यह अभी कम संभव है। वह राजपूताना नहीं छोड़ सकेंगे। चि. मार्तण्ड का पता नहीं। आपकी तो बात ही अलग है। मामूली सच्चे कार्यकर्त्ताओं को भी राजपूताने से स्थायी तौर से हटाने में या हट जाने में मुझे कितना दुख होता है। खैर! बिना अनुभव बच्चों की इस प्रकार की समझ हो सकती है, क्योंकि वह मेरे पास बहुत थोड़ा रहा है। मुझे अभी तक पूरा पहचान नहीं सका।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ३४ :

बंबई, ११-१-३५

प्रिय हरिभाऊजी,

अजमेर से लिखे पत्र का जवाब इसीलिए नहीं दिया कि आपके वर्धा आने पर आपको पत्र दूं।

आपने अपने भावी कार्यक्रम के बारे में लिखा सो इसके विषय में आप तथा धोत्रेजी एवं श्री किशोरलालभाई मिलकर विचार-विनिमय करक निश्चित करें। मेरी तो दो-तीन सूचनाएं इस विषय में हैं, जिनका खयाल रख के कार्यक्रम निश्चित किया जावे तो ठीक होगा।

१. आप जो कोई भी योजना तैयार करें, उसके खर्च का जो बजट आप बनावें उसका बोझ मध्यवर्त्ती संस्था पर बिल्कुल न पड़े। अगर हो सके तो मध्यवर्त्ती संस्था को थोड़ी-बहुत सहायता ही पहुंच सके।

२. आप जो भी योजना बनावें, उसकी आर्थिक जिम्मेदारी तथा उसके बिगाड़-सुधार की, सफलता-असफलता की, सब जिम्मेवारी आप अपनी समझें।

३. राजस्थान की वर्तमान परिस्थिति का खयाल करते हुए यही उचित प्रतीत होता है कि अपनी शक्ति का पूरा ध्यान रखते हुए व अन्य मित्रों

की सहकार्य की आशा न रखते हुए ही किसी कार्य को अपनाया जाय।

मेरी शारीरिक व मानसिक परिस्थिति के कारण तथा अन्य कारणों से अब कुछ समय के लिए राजपूताने के कार्य से अलिप्त रहना चाहता हूं। राजपूताने के लिए अबतक काफी शक्ति भी खर्च हो गई और उससे असंतोष भी काफी रहा। वहां के आपसी विद्वेष व राजनीतिक झगड़ों के कारण उस तरफ अभी खयाल नहीं जाता।

मैं यह भी नहीं चाहता कि आप अपने पर कोई ऐसी जिम्मेवारी लें और फिर उसको पूरी न कर सकें। मुझे यह दुःख के साथ कहना पड़ता है कि आजतक अनेक काम आप लोगों ने उठाये और गांधी-सेवा-संघ को उसके लिए काफी बोझ उठाना पड़ा। गांधी-सेवा-संघ को भी तो यह खयाल रखना पड़ता है कि हमारे सदस्य की प्रतिष्ठा में संघ की प्रतिष्ठा है।

अजमेर के मित्रों के बारे में मैंने पहले भी आपसे कहा है कि वहां के मित्रों की राय का मेरे दिल पर वर्तमान में विशेष असर नहीं हो रहा है। इस बात का मुझे दुख है। जहांतक किसी राय के अंदर सच्चाई के साथ जवाबदारी का खयाल न हो तो वह कैसे असर कर सकती है?

मेरी समझ से आपके लिए ग्राम्य-जीवन की कल्पना सुंदर तो जरूर है, परंतु आपके स्वास्थ्य का व आज तक की आपकी मनःस्थिति से जहां तक मैं परिचित हुआ हूं, उसका खयाल करते हुए मेरी तो यह हिम्मत नहीं होती कि आपको यह सलाह दूं।

इंदौर मिल ओनर्स के नाम आपकी अपील आज के 'फ्री प्रेस' में प्रकाशित हो गई है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ३५ :

बंबई, २०-१-३५

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका १५-१-३५ का पत्र मिला। आपके भावी कार्यक्रम के विषय में आपने श्री किशोरलालभाई तथा श्री धोत्रेजी की सलाह से जो निश्चय किया है, वह ठीक मालूम होता है।

पहले भी मैंने आपसे बात की थी कि राजस्थान में, खासकर अजमेर में, खादी का वातावरण बढ़ना बहुत आवश्यक है। राजस्थान में जितने भंडार हैं, उतने सबको स्वावलंबी होने की आवश्यकता है और यह भी अत्यावश्यक है कि जो माल राजपूताने में उत्पन्न होता है, उसकी बिक्री भी राजपूताने में ही हो जाय। इस विषय में श्री देशपांडे के साथ पत्र-व्यवहार तो होता रहता है। आपने जिन तीन प्रकार के कार्य करने का निश्चय किया है, उनमें से पहले व दूसरे निर्णय के अनुसार तो आप भी इस काम के लिए काफी सहायता पहुंचा सकते हैं। यदि अजमेर में कम-से-कम १,००० स्त्री-पुरुष खादीधारी हो जायं, तो फिर वहां का वातावरण कांग्रेस के समग्र प्रोग्राम—खासकर रचनात्मक प्रोग्राम—के लिए अनुकूल हो सकता है। राजपूताने से मन में अधिक प्रेम रहता है, इसीलिए राजपूताने के लिए अधिक दुख भी होता है। इतने वर्षों के अनुभव से अन्य कार्यकर्त्ताओं का तो प्रश्न ही दूर रहा, मुझे अपने ही मित्रों की कार्य-पद्धति और व्यावहारिक भूलों के कारण तथा पारस्परिक प्रेम व विश्वास की कमी दिखाई देने के कारण कई बार दुख पहुंचा है। वर्तमान अवस्था में मेरे मन की स्थिति तथा वहां की हालत दोनों का विचार करते हुए मुझे ऐसा मालूम होता है कि कुछ समय के लिए अगर उदासीन रह सकूं तो मेरेलिए तथा वहां के कार्यकर्त्ताओं के लिए—दोनों के लिए शायद परिणाम ठीक आ सकता है। इस उदासीनता में भी प्रेम तो भरा ही है। उससे मुझे अपनी कमजोरियों का भी ठीक पता लगेगा तथा राजस्थान के लिए इतना प्रेम होते हुए भी परिणाम संतोषकारक नहीं आ सका, इसका कारण भी तो समझ में आ सकेगा।

राजपूताने के मित्रों के प्रति तथा खासकर आपके प्रति मेरे मन में कितना प्रेम है, यह कहकर अथवा लिखकर बता नहीं सकता। इसलिए भी अधिक दुख हुआ करता है। खैर! अब आप अपने मन पर इसका बोझ भी न रखें व इसकी चिंता भी न करें। हम लोगों की सेवा शुद्ध व प्रामाणिक होगी तो इसका परिणाम अच्छा ही आवेगा। अगर उसमें कुछ दोष रहा होगा तो उससे भी मुक्त होने का मौका मिलेगा।

श्री जानकीदेवी को समय दे सकें और वह उसका लाभ उठाना चाहें तो देवें। उसका चिंता का कोई कारण तो है नहीं। परंतु मनुष्य-स्वभाव है, बिना कारण के, जिस प्रकार में भी कार्य करके व्यर्थ की चिंता करता हूं, वह मुझसे ज्यादा बिना मतलब की चिंता किया करती है। अगर कोई उपाय निकलेगा तो ठीक है नहीं तो आदमी जब काम में लग जाता है, चिंता आपसे ही कम हो जाया करती है। बिना सच्चे काम के चिंतित रहना स्वाभाविक हो जाता है। और सब ठीक चल रहा है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ३६ :

वर्धा, ८-५-३५

पूज्य हरिभाऊजी,

सादर प्रणाम। आपको मेरा कल का पत्र मिला होगा। पूज्य बापूजी से आज फिर चर्चा हुई। वह श्री छोटूरामजी चौधरी को जानते हैं। उनका कहना है कि श्री छोटूरामजी पूरे सरकारी आदमी हैं। सरकारी तौर से जो कुछ होना संभव होगा, उतना तो कराही लेंगे। कांग्रेसवालों का दखल वे सहन नहीं कर सकेंगे। जाटों में काफी जोरदार आदमी हैं। वे जहांतक अपने-आप सलाह लेने को तैयार हों वहांतक उनको ही काम करने देना चाहिए आपलोगों से सलाह-मशविरा की जितनी सहायता वे चाहें उतनी देने में कोई आपत्ति नहीं है। उनकी एक तो यह खास सूचना है कि आफिस दिल्ली में रहना चाहिए। वह आफिस नियमित हो, सब रेकार्ड उसमें पूरा हो। दूसरी महत्व की बात यह है कि अखबारों में जो खबरें निकलें वे सच्ची होनी चाहिए, नहीं तो जो सच्ची खबरें होंगी उनको भी लोग झूठी समझने लगेंगे। खबरें झूठी बिल्कुल ही न हों। एकाध खबर कम आवे तो हर्ज नहीं, पर बढ़ाकर आने से उन खबरों की सारी ताकत ही मारी जाती है।

मेरे यह पूछने पर कि खड़ी और इदल में जाटों की ओर से जो गलतियां हुईं उस बाबत अफसोस जाहिर करना चाहिए क्या—उन्होंने कहा कि जरूर,

सच्ची परिस्थिति लोगों के सामने रखनी ही चाहिए। जहां अपनी गलती हो, अपने लोगों के सामने रख देवें और जहां सामनेवाले की गलती हो वहां बराबर उसकी गलती बतावें। तभी दुनिया को आपके कथनों पर विश्वास हो सकता है।

मैंने एक सवाल यह भी पूछा कि क्या हरिभाऊजी और रामनारायणजी जरूरत पड़ने पर इस मामले में आफिसरों से भी मिल सकते हैं ? जवाब में कहा गया कि हां, वे जरूरत समझें तो अवश्य मिल सकते हैं।

थोड़े में हम सबने जो अजमेर में विचार किया था उसको पुष्टि मिल गई है।

इसके बाद मैंने यह भी सवाल पूछा कि वे (जाट) लोग सीकर ठिकाना छोड़कर बीकानेर रियासत में चले जाने का भी विचार करते हैं। बीकानेर-वाले कुछ प्रलोभन भी दे रहे, सुनते हैं। इसपर पूज्य बापूजी ने कहा कि बीकानेर भी आखिर में रियासत ठहरी। ऊपर से सरकार का जोर पड़ा तो वे भी इन लोगों को अपनी रियासत में आने से रोक सकते हैं। उठ करके कहीं बसना ही हो तब तो ब्रिटिश इलाके में बसना अच्छा है। और भी इधर-उधर की सारी बातें जो मुझे मालूम थीं और समय पर स्मरण रहीं वे कहीं।

जमीन एक साल के लिए पड़ी रखना चाहते हैं और जमीन का इस्तीफा देना चाहते हैं, यह प्रश्न नहीं पूछा है। कई जाट, सिख या मुसलमान होने तक को इस अपमान से अच्छा समझते हैं, यह भी कह दिया है। चौधरी छोटूरामजी के जाहिरनामे के बाबत भी पू. बापूजी से कहा। तब उन्होंने कहा कि हां, मैंने कहा था वही बात आ गई न कि वे लोग कांग्रेस आदि से दूर रहकर, अपने-आप निपटाने को समर्थ हैं।

आपलोगों ने जो स्टेटमेंट तैयार किया है वह जल्दी ही अखबारों में आ जायगा, यह बात उनको पसंद आई।

आपका,

राधाकृष्ण बजाज

: ३७ :

वर्धा, २१-७-३५

प्रिय हरिभाऊजी,

आपके पत्रों का जवाब तो समय पर मिल ही गया होगा। श्री भागीरथी बहन से आज मैंने थोड़ी बात की है। मेरी इच्छा तो पहले से ही रही है और अब वह ज्यादा निश्चित हुई है कि भागीरथीबहन महिला-आश्रम का काम अपना निजी व जीवन-कार्य समझकर करने का निश्चय करेंगी तो उसमें महिला-आश्रम का व उनका श्रेय है और मैं भी चिंता से मुक्त हो सकूंगा। आप जिस प्रकार उचित समझें लिखें। यहां किस तारीख को आवेंगे ? इंदौर तो चलना ही है। साथ ही चलने का प्रयत्न करेंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ३८ :

इंदौर, ३०-८-३५

श्रद्धेय भाईजी,

मैंने यह अच्छी तरह अनुभव कर लिया है कि मेरे यत्न करते हुए और आपके अत्यंत प्रेम का अनुभव करते हुए भी मैं अपनी प्रकृति से आपको संतुष्ट नहीं कर पाता हूं। मेरा यह स्वभाव है कि अपने बड़ों को यदि मैं संतुष्ट नहीं कर पाता हूं तो उनसे आर्थिक संबंध रखने में तबीयत नहीं लगती। गांधी-सेवा-संघ को मैं आपसे जुदा नहीं मानता हूं। इसलिए बार-बार मेरे मन में आर्थिक संबंध न रखने की प्रेरणा उठा करती है।

इधर भागीरथी के काम से आपको संतोष है, इसलिए मैंने यह सोचा है कि कर्ज उतर जाने के बाद यदि भागीरथी की योग्यता इतनी समझी जाय कि उसका अलाउन्स बढ़ा दिया जाय तो उसमें से मैं अपनी गुजर चला लेना चाहता हूं। भागीरथी की योग्यता और परिश्रम से यदि मुझे आखिरी दिनों में अपना गुजर करना पड़े तो विशेष सुख होगा।

विनीत,

हरिभाऊ

: ३९ :

दिल्ली, २१-३-३६

श्रद्धेय भाईजी,

सादर प्रणाम। इस बार आपके दौरे के समय आपके संबंध में मित्रों से कुछ मनोरंजक बातचीत हुई, जो आपके उपयोग के लिए लिख दे रहा हूं —

प्रश्न—सेठजी को नई-नई शादियां पसंद हैं। आजकल उन्होंने शास्त्रीजी से शादी की मालूम होती है। पहले बाबाजी से की थी, फिर आपसे की, रामनारायणजी से करते हुए दिखाई दिये। अब शास्त्रीजी से कर रहे हैं।

मेरा उत्तर—इस तरह विचार करना अनुचित है। भाईजी का राजस्थान से अत्यंत प्रेम है। वे यहां खूब काम करना और कराना चाहते हैं। उनके अपने निश्चित सिद्धांत और नीति हैं। उनका अपना काम करने का एक ढंग और एक मर्यादा है। कार्यक्रम भी है। उसके लिए जो आदमी उन्हें सुयोग्य मालूम पड़ता है उसे वे काम में लगाते और प्रोत्साहित करते हैं। यदि आपका अवलोकन सही मान लिया जाय तब भी मुझे इसमें दोष नहीं मालूम पड़ता। बाबाजी को अपनाने से जब हानि अधिक और लाभ कम दिखाई दिया तो वे क्यों उन्हें प्रोत्साहित करें। यदि मुझसे अच्छा और सुयोग्य दूसरा आदमी मिले तो क्यों न उसका उपयोग वे करें? यदि मैं उनका एजेंट सच्चे अर्थ में रहूं और यह देखूं कि उन्हें मैं पूरा संतोष नहीं दे रहा हूं तो पहले मेरा फर्ज है कि मैं उन्हें अपने से अधिक योग्य आदमी तलाश करके दे दूं। यदि ऐसा न कर सकूं तो जिसे वे सुयोग्य समझकर जिम्मेवारी सौंपें उसका स्वागत अवश्य करूं। यदि वे शास्त्रीजी को अपना रहे हैं तो यह मेरे लिए आनंद ही की बात है; क्योंकि शास्त्रीजी को मैं अपना भाई ही मानता हूं। शास्त्रीजी से उनका संबंध नया नहीं है।

प्रश्न—तो क्या इससे यह नतीजा नहीं निकलता कि वे किसी एक पर विश्वास नहीं रखते। जिससे जबतक काम बनता है, उसे अपनाते हैं, फिर छोड़ देते हैं। क्या यह नीति ठीक है?

मेरा उत्तर—इस प्रकार विचार करने से हम अनुदारता के दोषी बनते हैं। मेरी समझ में भाईजी कार्य को मुख्य स्थान देते हैं, व्यक्ति को गौण। कार्य ही के पीछे व्यक्ति की कदर करते हैं। जिस काम का मेल उनके सिद्धांत, नीति, कार्यक्रम या स्वभाव से नहीं खाता उसके प्रति उनकी उदासीनता रहती है।

मैं खुद मानता हूं कि मेरे स्वभाव की नरमी व अव्यवहारिकता से उन्हें असंतोष रहता है तो क्यों आशा रखूं कि वे मुझे प्रोत्साहित करें? मैंने तो उन्हें खुद ही लिख दिया था कि आप राजस्थान के मित्रों से सीधा संबंध और व्यवहार रखें, मेरी मार्फत नहीं। मेरी उनके प्रति श्रद्धा का आधार मेरी योग्यता या उपयोगिता नहीं, बल्कि उनके गुण हैं। वे जबतक मुझे दिखाई देते रहेंगे तबतक मेरी श्रद्धा उनपर से नहीं डिग सकती। अपनी श्रद्धा का कोई एवज मैं उनसे नहीं चाहता। उससे मुझे अपना जीवन बिताने में जो प्रोत्साहन मिलता है, वही मेरे लिए बहुत है। मैंने अपने जीवन में किसीसे किसी भौतिक वस्तु की अभिलाषा नहीं रखी है। रहा कार्य, सो वह तो अपनी खूराक आप मांग लेगा। फिर मैं राजस्थान में केवल भाईजी की प्रेरणा से नहीं आया हूं। मेरे मन में स्वतंत्र रूप से प्रेरणा उठी थी। भाईजी के प्रोत्साहन से उसमें विशेष बल आ गया और उनकी सहायता से कुछ काम भी मेरे हाथों हो गया। अब वे ही काम बिगड़े हैं तो इसका जिम्मेवार मैं अपने-को मानता हूं क्योंकि सुधार का श्रेय अपनी तरफ लेना और बिगाड़ की जिम्मेवारी दूसरे पर डालना मैं गलत समझता हूं।

ये प्रश्न किसी दुर्भाव से नहीं पूछे गये, जिज्ञासु के रूप में पूछे गये थे।

विनीत,
हरिभाऊ उपाध्याय

: ४० :

हटुंडी, २३-८-३६

श्रद्धेय भाईजी,

सादर प्रणाम। भाई रामनारायणजी और अंजनाबहन कल आये थे। बहुत प्रसन्न थे। वर्धा जाने से बहुत लाभ हुआ। यहां भी साथियों से बात-

चीत करने के बाद उनके दिल का कांटा निकल गया है। भाई राधाकृष्णजी, जानकीमैयाजी और आपके स्नेह-वर्षण की बहुत प्रशंसा करते थे, और उससे बहुत प्रभावित हुए हैं। पूज्य बापूजी से तो उन्हें अपार शांति मिली है। किंतु आपकी चिंता-ग्रस्तता का जिक्र करते थे। आपकी चिंतागार में मैं कहीं भी होऊं, तो आप उससे बिल्कुल निश्चिंत हो जाइये। जानकीमैयाजी के संबंध में तो आपको तुकाराम की वृत्ति धारण कर लेनी चाहिए। उनके अपने कुछ स्वतंत्र विचार हैं, संस्कार हैं, जिनके अनुसार वे सुख-दुख की भागिनी होती हैं। आप उनके प्रति अपना कर्त्तव्य-पालन कर दें। इसके बाद परिणाम की चिंता करने की क्या आवश्यकता है। आप उनके परमेश्वर तो हैं नहीं। पूज्य बापूजी को तो आपने उनकी आसक्ति पर इतना डांटा था; पर मुझे तो आपकी इस चिंता में आसक्ति ही दिखाई देती है। नये-नये कामों का भी बोझा आप क्यों लेते रहते हैं। आपरेशन के बाद आपको कुछ भी विश्रांति नहीं मिली है। यहां के लोगों से तो आप वैसे ही नाराज हैं; नहीं तो हटुण्डी में आपको कुछ दिन ठहरने को कहता व आग्रह करता। आज मैं आपकी शिकायत पूज्य बापूजी से भी कर रहा हूं।

हां, कुछ दिन हुए वर्धा दूकान से एक पत्र आया था, जिसमें उन १००० रुपयों की विगत मांगी थी जो मैंने अपने नाम लिखाकर यहां के कांग्रेस-चुनाव (१९२९) के दिनों में मंगाई थी। आपको शायद याद होगा कि ५०० रुपये तो श्री मणिभाई ने भेजने के लिए कहा था और ५०० रुपये के लिए आपने कहा था कि तुम बंबई आ जाना तो मैं मित्रों से दिला दूंगा। इत्तफाक से मेरा बंबई आना न हो पाया—फिर जेल चला गया और वह रकम बाकी रह गई। जबकि मैंने अपने नाम लिखाकर रुपया मंगाया तो उसे जमा कराने की जिम्मेवारी मेरी ही है।

पिछली कुछ रकम मेरे यानी मार्तण्ड के नामे दर्ज है और उसमें २० रुपया मासिक जमा होता है, सो उसके साथ ही यह रकम भी उतर जायगी। वैसे तो यह बोझ भी प्रकारांतर से सार्वजनिक संस्था पर ही पड़ता है, परंतु जबतक संघ को मैं ५० रुपये मासिक पर मंहगा सदस्य नहीं जंचता हूं तब-

तक इसमें मुझे अनैतिकता मालूम नहीं होती। यदि एक हजार भी मेरे नाम रहें और इस तरह उतर जायं तो मुझे जरा भी आपत्ति नहीं है। मैं यह चाहता हूं कि दूकान का नियम भंग न हो। मेरे साथ खास रियायत की गई, ऐसा आक्षेप करने का किसीको मौका न मिले और आपके दिल पर खामख्वाह बोझा न पड़े। तीनों को सोचकर मैंने यह तजबीज सुझाई है। मैं समझता हूं अभी ४-५ वर्ष तो मेरा शरीर इस योग्य रहेगा कि संघ पर मेरा वेतन भारी न पड़े।

आप राजस्थान में भ्रमण करनेवाले थे सो कबतक आवेंगे ?

विनीत,

हरिभाऊ

: ४१ :

ब्यावर, १२-१०-३६

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। आपका कार्ड व तार मिल गया था। मैं परसों से यहां हूं। यहां की हड़ताल की स्थिति एकाएक गंभीर बन गई थी और फौरन आने के लिए यहां के मित्रों ने आदमी भेजा था। एक फैसला सेठ घीसूलालजी कराकर लाये थे जिसे मजदूरों ने नामन्जूर कर दिया। इसपर घीसूलालजी तथा दूसरे मजदूर-नेताओं ने मजदूर यूनियन से इस्तीफा दे दिया और मजदूरों ने कांग्रेस की सहायता चाही। वे अनाथ-से हो गये। ऐसी दशा में मुझे आना पड़ा। कांग्रेस के दिलचस्पी लेते ही लोगों में जान आ गई। इधर सेठ घीसूलालजी ने कल फिर दूसरा समझौता करने की बहुत कोशिश की; मगर कहते हैं कि मालिकों की तरफ से यह जवाब मिला कि भूखे मरते हुए मजदूर आप आ जावेंगे। इसपर से कल शाम को मजदूरों की सभा में घीसूलालजी ने आमरण-उपवास का संकल्प जाहिर किया, जबतक कि सम्मानपूर्ण समझौता न हो जाय। मैं कल शाम को और आज सुबह स्थानीय मित्रों और मजदूर-कार्यकर्त्ताओं की प्रेरणा से सेठ घीसूलालजी से मिला। उन्होंने सब काम मेरे हाथों में सौंप दिया है। इससे यहां के कांग्रेसी मित्रों को

संतोष हुआ है। और अब सब मिलकर मजदूरों की सहायता कर रहे हैं। स्थानीय सब कांग्रेसी मित्रों की सलाह से मैंने धीसूलालजी को आश्वासन दिया है कि आप शांति से उपवास करें, आपसी मतभेद के कारण मजदूरों के काम को धक्का पहुंचने नहीं दिया जायगा।

मालिकों में, सुना है, राठीजी बहुत सख्त हैं। गुलजारीलालजी के आने पर मालिकों से समझौता-संबंधी कोई बातचीत करने पर निश्चय करेंगे। संभव है, आपको बीच में पड़ना पड़े। स्थिति देखकर हम आपको तार देंगे।

विनीत,
हरिभाऊ

: ४२ :

हटुंडी, ६-६-३८

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। परसों और कल यहां श्री धोत्रेजी, शास्त्रीजी, देशपाण्डेजी, लादूरामजी, बालकृष्ण और मैं—इतने लोगों का प्रांत की वर्तमान परिस्थितियों और हमारे कर्त्तव्य पर खूब विचार-विनिमय हुआ, जिसके फलस्वरूप नीचे लिखे निर्णय हुए :—

१. राजस्थान संघ का स्वरूप व्यापक किया जाय और उसके आर्थिक आधार को कम करके स्वावलंबन की दिशा में विशेष प्रयत्न किया जाय।

२. कुप्रचार का सौजन्य और गौरवयुक्त, लेकिन मुंहतोड़ जवाब लेखों, पर्चों और पुस्तिकाओं द्वारा दिया जाय।

३. 'राजस्थान संघ' का एक मुखपत्र प्रकाशित किया जाय।

४. कांग्रेस-संगठन को मजबूत करने की पूरी कोशिश करना।

इनपर सविस्तर बातचीत मिलने पर करेंगे।

सीकर की परिस्थिति दिन-दिन शोचनीय होती जा रही है। आपकी सलाह की उपयोगिता को अधिकांश लोग वहां मानते हैं; लेकिन दृढ़ता के

साथ खुलकर कहने की और उसपर चलने की हिम्मत नहीं है। ऐसा लगता है कि १०-१५ दिनों में कोई विशेष परिस्थिति बनेगी और यह काण्ड समाप्त हो जायगा। राजपूत तो सशस्त्र मुकाबले के लिए बिल्कुल तैयार हैं। १००-२०० मर भी सकते हैं।

ग्वालियर के शहीद-दिवस के लिए अनुसूयाबाई काले को लिखने की तजबीज हो रही है। यदि उनका इनकार आ गया तो फिर अमृतकुंवर बहन को आप कुछ लिख सकेंगे ?

विनीत,
हरिभाऊ

: ४३ :

वर्धा, ८-७-३८

प्रिय हरिभाऊजी,

आपका २२-६-३८ का पत्र मिला। श्री नरसिंहदासजी, रामनारायणजी आदि के कुप्रचार को देखकर बड़ा दुख होता है। सीधे मार्ग पर न चलकर उनकी बुद्धि उलटे ही मार्ग पर चलती जा रही है। मैंने इनमें से कुछ पर्चों को और राजस्थान में "जयचंदशाही' को इधर-उधर देखा है। अभी-अभी उनका 'गांधी सेवा संघ और मैं' शीर्षक एक वक्तव्य भी निकला है। श्री नरसिंहदासजी के पत्र भी कभी-कभी आ जाते हैं। पिछले दिनों एक पत्र में उन्होंने मुझे लिखा था "मुझे आपसे न दुशमनी थी और न अब है, न वल्लभभाई से। सारी फिसाद की जड़ में उपाध्यायजी हैं। हमको आपस में लड़ाकर बीच में उन्होंने अपने स्वार्थ-साधन का मौका हासिल किया है। मुझे आपसे और वल्लभभाई से कोई झगड़ा नहीं है। हम जिन लोगों को नहीं चाहते, आप लोग उन्हें रुपया और सहायता देकर हमारे सन्मुख खड़ा कर देते हैं। यही झगड़े की जड़ है और यही जहर है। आपके प्रति मेरे मन में कोई जहर नहीं है।" बंबई में वे जब मुझसे मिले थे तब भी ऐसा ही कहा था। लेकिन 'जयचंदशाही' में, जहांतक मेरे देखने में आया, सारी बातें प्रायः मेरे ही खिलाफ लिखी गई हैं। मुझसे वे कह गये थे कि मैं या तो बंबई

रहूंगा या दिल्ली। अजमेर के सार्वजनिक जीवन में दखल नहीं दूंगा। लेकिन आज भी वे उसीमें बुरी तरह फंसे हुए हैं। इस परस्पर-विरोधी आचरण से, मुझे तो ऐसा लगता है कि उनका मस्तिष्क ठीक काम नहीं कर रहा है। जब जयपुर-जेल में मैं उनसे मिला था तब भी और बाद में भी जब जयपुर-जेल से छूटने के बाद उन्होंने 'हिंसावादी कांग्रेसी' का बिल्ला लगाया और उसके बारे में सफाई दी उससे मुझे पहले से ही यह शंका हो गई थी कि उनकी विवेक-शक्ति ठीक काम नहीं कर रही है। कभी-कभी तो उनपर मन में बड़ी दया आती और उन लोगों पर क्रोध भी जो उनकी मानसिक स्थिति का खयाल न करके उन्हें अपना हथियार बना लेते हैं। आपने मुझे वक्तव्य देने के लिए लिखा पर अव्यवस्थित दिमाग से उपजी और मिथ्या बातों पर क्या वक्तव्य दिया जाय ?

राजस्थान के सार्वजनिक जीवन और खास करके राष्ट्रीय जीवन में मैं पिछले १५ वर्षों से दिलचस्पी ले रहा हूं। एक राजस्थानी होने के नाते मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। जो भी कार्यकर्त्ता मुझे मिले, मैंने सबका उत्साह बढ़ाया, उन्हें या उनके कामों में आर्थिक सहायता भी काफी दी तथा दिलाई। दुर्भाग्य से अनुभव के बाद बात-बात में ऐसी खराबियां और बुराइयां पाई गईं, जिनके कारण मैंने बारंबार उन्हें समझाने और काफी मौका देने के बाद व उनके द्वारा प्राप्त सुधार करने के आश्वासनों का पालन न होने के बाद अपनी सहानुभूति व सहायता हटा ली। सेठीजी, पथिकजी, रामनारायणजी, नरसिंहदासजी तथा कई कार्यकर्त्ताओं को मैंने निजी या उनके कामों में भरसक सहायता की तथा कराई है। इन्हींके पैदा किये हुए कारणों से इनकी सहायता बंद हो जाने के बाद इनमें से कोई यदि मुझे बदनाम करने की कोशिश करते हैं तो इसका कोई इलाज नहीं है। श्री नरसिंहदासजी आदि राजस्थान के बाहर के रुपये न लेने के सिद्धांत का जो अब प्रचार कर रहे हैं वह उसी समय करते, जब वे आपके साथ काम करते थे; तब उनके सिद्धांत की सचाई समझ में आ सकती थी। आज जिनकी प्रतिष्ठा और साख लोगों में बनी हुई है और जो सचाई तथा लगन के साथ राजस्थान

की सेवा में लगे हुए हैं उनको लोग पैसा देते हैं, इससे चिढ़कर उनके विरुद्ध प्रचार करने से वे सिवा अपनी प्रतिष्ठा गंवाने के और क्या फायदा कर सकते हैं। मेरे खयाल से तो यह उनकी गलती ही है जो यह समझते हैं कि ऐसे झूठे प्रचार से भले और सच्चे आदमियों को लोगों की निगाह से गिराया जा सकता है।

सेठीजी के विरुद्ध चुनाव लड़ने के मामले में तो आपके नरसिंहदासजी का साथ देने पर मैंने सख्त ऐतराज किया था—यह आपको याद ही होगा। मैंने आपलोगों का समर्थन उस समय किया जब वल्लभभाई, मणिभाई और मेरी मध्यस्थता से हुए समझौते को श्री सेठीजी की पार्टी ने तोड़ दिया और नरसिंहदासजी ने इस बात पर जोर दिया कि अब हमारा साथ दें। मैंने जो उस समय आप लोगों का समर्थन किया उसका तो अफसोस नहीं है। हां, इस बात पर अवश्य ही खेद है कि नरसिंहदासजी इस मामले में खुद 'चोर ऊपर से शोर' वाली बात कर रहे हैं। रही पार्टी की बात। मैं सेवा और काम के लिए पार्टी या संगठन बनाना बुरा नहीं समझता, लेकिन उसमें आदमी चरित्रवान होने चाहिए व गंदे तरीके से कोई काम न होना चाहिए। कहीं गंदगी मालूम होते ही उसे फौरन दूर करना चाहिए या उससे अपना संबंध हटा लेना चाहिए। अपना नेतृत्व राजस्थान में जमाने की मुझे कल्पना तक नहीं है। सच पूछिये तो श्री सेठीजी, नरसिंहदासजी आदि ने कई बार ऐसा आग्रह किया है कि मैं राजस्थान का नेतृत्व ले लूं, लेकिन मैंने सदा ही राजस्थान के कार्यकर्त्ताओं को यह जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित किया है।

'जयचंदशाही' पुस्तिका तो मुझे एक दृष्टि से अच्छी लगी। वह दाताओं को सावधान करती है कि आंखें खोलकर दिया करो। आप जानते हैं कि मैं तो पसंद ही नहीं करता कि धन कोई किसीको आंख मूंद कर दे। अच्छा हो कि हम लोग इस पुस्तक की एक-एक प्रति साथ रखें और जहां कहीं आर्थिक सहायता लेने जायं, वहां पहले इसे उनके हाथ में दे दें, फिर सहायता की बात करें। मेरी राय में तो दाता को वहीं धन देना चाहिए, जहां उन्हें

विश्वास हो और वे देखें कि उनकी पाई-पाई का सदुपयोग होता है। मैं यह भी मानता हूं कि स्थानीय कार्यों में स्थानीय धनिक और दूसरे लोगों को खूब रस लेना चाहिए। उन्हें खुले दिल से सहायता और सहयोग करना चाहिए, क्योंकि वे जब अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करते तब बाहर की सहायता लेने पर मजबूर होना पड़ता है।

एक बात को देखकर मुझे बड़ा दुख हुआ है। प्रजा-मंडल के अधिवेशन के अवसर पर जयपुर के श्रीगोपाल शर्मा के पीटे जाने की झूठी बात बनाकर तो इतना प्रचार किया गया, मगर सचमुच जिन्होंने असभ्यता और जहालत का प्रदर्शन किया और उन्होंने तथा उनके साथियों ने जलसे को बिगाड़ने की जो कोशिश की, उसपर उनमें से किसीने कुछ भी नहीं कहा। इससे मालूम होता है कि उन लोगों ने झूठ एवं 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' पर ही कमर कस ली है।

श्री नरसिंहदासजी ने 'गांधी सेवा संघ और मैं' नामक लेख में लिखा है, "मुझे बताया गया है कि सेठ जमनालाल बजाज ने अपने कुछ मित्रों को सूचित किया है कि वे मेरे व्यक्तिगत खर्च के लिए मुझे आर्थिक सहायता देते रहे हैं। और जब उन्होंने आर्थिक सहायता देने से इनकार कर दिया तो मैंने प्रांतीय मामलों में विरोध करना शुरू कर दिया।" मुझे तो ऐसा याद नहीं पड़ता कि मैंने किसीसे यह कहा हो। श्री नरसिंहदासजी की चिट्ठियों से और बातचीत आदि से जो कुछ मैंने समझा है, वह तो यह कि वे मेरे खिलाफ प्रचार इसलिए कर रहे हैं कि मैं आपका तथा श्री हीरालालजी आदि का साथ दे रहा हूं। वे चाहते हैं कि आप लोगों का साथ छोड़कर उनका तथा उनके मित्रों का जैसा वे कहें, साथ दूं। परंतु इस संबंध में मेरी नीति स्पष्ट है। मुझे किसी व्यक्ति का मोह नहीं है। जो कार्यकर्त्ता अच्छे हैं और रीति-नीति से, सचाई के साथ, काम करते हैं, मैं उनका साथी हूं। जिनकी रीति-नीति में खराबी और गंदगी मालूम हो जाती है, उनका साथ छोड़ देता हूं। यदि आपमें और हीरालालजी के काम में भी कभी गंदगी और बुराई मालूम होगी तो मुझे आप लोगों का साथ छोड़ने में भी कोई झिझक न होगी।

'जयचंदशाही' में उन्होंने एक जगह मान-हानि का दावा करने का चैलेंज मुझे दिया है। यह तो अपने-आप झगड़ा मोल लेने की प्रवृत्ति मालूम होती है। ऐसा मुकदमा चलाकर उन्हें जेल भेजने में मुझे कोई खुशी नहीं हो सकती। मैंने तो उल्टा उन्हें जयपुर-जेल से छुड़ाने की भरसक कोशिश की थी। और दावा करने से तो फायदा ही क्या ? उनकी इन बेतुकी बातों से मेरा तो यही विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि उनका दिमाग ठीक काम नहीं कर रहा है।

अब रही आपपर हमला करने आदि की तथा आश्रम पर कब्जा कर लेने की धमकियों की बात। मुझे तो यह जानकर उन लोगों की बुद्धि पर तरस ही आता है। मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि सच्चे कार्यकर्त्ताओं पर ऐसी धमकियों का कोई असर नहीं हो सकता। हां, वे लोग जो ऐसे भद्दे तरीके काम में लाते हैं, अपनी प्रतिष्ठा और कद्र लोगों की निगाह से घटाते हैं। और, यदि इनमें से किसीने ऐसा कर भी दिया तो अपना भावी सार्वजनिक जीवन नष्ट कर लेगा। मैं समझता हूं कि यदि उनके मन में सेवा का कुछ भी भाव है तो वे ऐसी कोई मूर्खता न करेंगे। इसलिए आप इस बारे में निश्चित रहें।

इस सिलसिले में और भी बहुत-सी बातें हैं। लेकिन पत्र काफी लंबा हो गया है। श्री नरसिंहदासजी के बारे में तो मैं भी चिंतित हूं। ईश्वर उन्हें सन्मार्ग दिखाये।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ४४ :

हटुंडी, २३-१०-३८

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। इससे पहले भेजा मेरा पत्र आपको मिल ही गया होगा। राजस्थान-संघ के सम्मेलन के बारे में बाबू राजेंद्रप्रसादजी का इनकारी का पत्र आ गया जो इसके साथ है। इसमें यदि आप उनसे कुछ कहने की गुंजाइश

देखते हों तो उन्हें लिखने की कृपा करें। उनके आने से जनता में विशेष उत्साह आवेगा।

यहां हम लोगों की यह भी तीव्र इच्छा है कि सम्मेलन के अवसर पर आप अवश्य आवें। थोड़े-से लोगों ने चाहे कैसा ही वातावरण बनाया हो, आखिर राजस्थान की प्रायः सब राष्ट्रीय प्रवृत्तियों को आपसे पोषण, प्रोत्साहन और बल मिला है और मिलता है। रा. संघ जिन स्थितियों और कठिनाइयों में बना तथा उसका मार्ग जैसा श्रमसाध्य है और उसकी प्रायः सारी जिम्मेदारी जिस तरह मुझपर आ गई है इनसब बातों को देखते हुए आपका इस अवसर पर पधारना बहुत आवश्यक है। इससे आपको यहां के राजनीतिक प्रश्न को सुलझाने में भी विशेष सुविधा होगी। पूज्य बापूजी ने मार्ग-दर्शन तो कर ही दिया है, फिर भी किस परिस्थिति में कब हमें हट जाना चाहिए अथवा डटे रहना चाहिए—इसका निर्णय मैं इस अवसर पर कर लेना चाहता हूं। मुझे किसी प्रकार की अशांति या चिंता तो नहीं है, किंतु जो कुछ आखिरी निर्णय करें उसमें सहसा भूल नहीं होनी चाहिए। इतना ही चाहता हूं कि यदि हम लोग कांग्रेस से हटें ही तो फिर मैं अपनी शक्ति इस संघ को जमाने में प्रधान रूप से लगाऊं।

यहां अजमेर नगर में मेहतरों की दो दिन की हड़ताल हो गई थी। बालकृष्ण ने उसका सफल संचालन किया। इस सिलसिले में पं. जियालालजी से उनकी कहा-सुनी हो गई। वे हड़ताल तोड़ने की कोशिश में थे। जाहिरा तो इससे हमारे विरोध की और आग भड़कती है, परंतु इसके अंत में सुपरिणाम ही आ सकता है।

इधर अकाल-संकट-निवारण की जरूरत है। प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी ने मेरी अध्यक्षता में एक रिलीफ कमेटी बनाई है। उसमें सहायता देने के लिए मैंने महोदयजी को यहां आ जाने का अनुरोध किया है। उनके प्रश्न का क्या निपटारा हुआ ?

विनीत,
हरिभाऊ

: ४५ :

वर्धा, २७-१०-३८

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

आपके दो पत्र तारीख १५-१० व २३-१० के हाल में मिले। चि. कमल के विकास के बारे में आपको संतोष हुआ, यह जाना।

'राजस्थान संघ' का वार्षिक सम्मेलन ता. १०,११ को होनेवाला है, सो मालूम हुआ। श्री राजेंद्रबाबू का आना नहीं बनेगा। उनका कल पत्र आया था। इस बीच में देहली में उनका स्वास्थ्य फिर गड़बड़ हो गया। मैंने कल थोड़ा इशारे से लिखा तो है कि आपकी बहुत इच्छा है। परंतु स्वास्थ्य के आगे मैं कैसे आग्रह कर सकता हूं ?

श्री किशोरलालभाई व चि. राधाकृष्ण तो बहुत करके आवेंगे ही; मेरा आना नहीं बनेगा। मुझे वहां के विरोध की जरा भी परवाह नहीं है। विरोध के लिए तो आने की इच्छा हो जाती है। परंतु एक तो यह प्रांत में हाल में नहीं छोड़ सकता—कई कारणों से, दूसरे मुझे जल्दी ही कुछ मानसिक तथा शारीरिक आराम लेने के लिए कहींपर जाने की इच्छा हो रही है। कब जाना हो, यह कहना कठिन हो रहा है। इच्छा तो जल्दी जाने की हो रही है। आप मुझे क्षमा करें।

आपका बजट तो बहुत ज्यादा बढ़ा-सा मालूम देता है। आपसे व हीरालालजी से बातचीत हुई थी। उसमें तो बजट बहुत कम करने का निश्चय हुआ था। आपने व हीरालालजी ने यह ठीक समझा होगा। मेरे विचार तो आप जानते ही हैं। अधिक लिखना नहीं चाहता। आप अपनी ताकत से ज्यादा बोझा उठाना ही पसंद करें, तब क्या हो ? आपकी पूरी ताकत, यही बजट रहा तो, रुपया जमा करने में ही लगनेवाली है। और एक बार बजट बढ़ाकर कम करना कठिन होता है। फिर आपसे तो संभव ही नहीं। आप ठीक समझें तो फिर से विचार कर लेवें।

इतने आपरेशन होने पर भी आपकी जुखाम-सर्दी की शिकायत दूर नहीं हुई। आप खयाल तो रखते ही होंगे।

श्री भागीरथीबहन का मन तो हाल में लग रहा मालूम होता है।

सीकर के रावराजा से तो यही आशा थी।

श्री लादूरामजी को एक वर्ष की सजा सुना दी गई है या दो हजार की जमानत व मुचलका देने को कहा गया है। जयपुर से आखिर जोरदार लड़ाई लड़े बिना रास्ता साफ होनेवाला नहीं है।

श्री बैजनाथजी का आखिर फैसला तो श्री किशोरलालभाई ही करेंगे। मेरी राय तो आपको मालूम है। राजेंद्रबाबू का पत्र वापस भेजा है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ४६ :

पूना, २१-१०-३९

प्रिय हरिभाऊजी,

मैं कल शाम को यहां आया। अभी तो दिनशा का इलाज शुरू कर दिया है। यहीं रहकर इलाज करवाने का विचार है।

इंदौर की खबरों में इंदौर-नरेश के बारे में व्यक्तिगत रूप में ही टीका-टिप्पणी आती है। मेरा खयाल है व्यक्तिगत टीका अपने सिद्धांतों की दृष्टि से भी ठीक नहीं है। आशा है, आप बैजनाथजी तथा अन्य मित्रों का ध्यान भी इस ओर आकर्षित करेंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ४७ :

हटुण्डी, २७-११-३९

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। आपका पोस्टकार्ड मिल गया, जिससे यह जानकर खुशी हुई कि आपने ५१वें वर्ष में पदार्पण किया है। मेरे कुटुंब में आपका वही स्थान है जो एक बुजुर्ग का होता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। आपने हमलोगों के जीवन को बनाने और तरह-तरह से हमें प्रोत्साहित करने में जो निरंतर दिलचस्पी ली है वह कुटुंब के एक बुजुर्ग के अनुरूप ही है। इस अवसर पर हम सब लोगों की ईश्वर से यही हार्दिक प्रार्थना हो सकती है कि यदि हम लोगों ने कुछ भी पुण्य संचय किया है तो उसका सारा बल

उन तमाम कारणों को मिटाने में लगे जिनसे आपको अशांति रहती है। मुझे विश्वास है कि नया वर्ष लगने के बाद से आपकी अशांति मिटती जायगी। हम लोग अपनेको कृतार्थ समझेंगे, यदि हम आपको शांति-लाभ कराने में कुछ भी उपयोगी साबित होंगे।

मैंने अपने उपयोग के लिए और जब कभी अशांति होती है तो पाठ करने के लिए कुछ भजनों का संग्रह किया है। उसमें से एक की नकल इसके साथ भेज रहा हूं। संभव है, इससे आपको सहायता मिले। इसके बोल हैं—"बिन काज आज महाराज लाज गई मोरी, दुख हरो द्वारकानाथ शरण मैं तोरी।"

विनीत,

हरिभाऊ

: ४८ :

यात्रा में (रतलाम स्टेशन) ३०-४-४०

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। आज सवेरे यहां आया हूं।

जिस प्रकार एकमत से व हार्दिकता से आपको प्रजा-मंडल का पुनः अध्यक्ष चुना गया है, उसकी मुझपर अच्छी छाप पड़ी है। आप जयपुर की ओर इसी प्रकार ध्यान देते रहेंगे तो इससे यहां की राजनीतिक स्थिति सुधर जायगी। अजमेर में मुझे यह भी मालूम पड़ा कि भाई श्री चौधरीजी और शोभालालजी आपके पास यह प्रस्ताव लानेवाले हैं कि आप प्रांत की कांग्रेस का नेतृत्व स्वीकार कर लें। मेरी समझ में, जब वे लोग, जो आपसे नाराज थे, इस प्रकार का प्रस्ताव ला रहे हैं तो आपको उसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। इससे सब प्रकार प्रांत का भला होगा।

अजमेर के कमिश्नर ने टाउन-हाल में भी राजनैतिक मीटिंग की मनाही कर दी, जिसकी सूचना आपको अजमेर से मिली होगी।

विनीत,

हरिभाऊ

: ४९ :

अजमेर, १८-१०-३४

पूज्य ताऊजी

सादर प्रणाम। आपका १९-९-३४ का कार्ड यथासमय मिल गया था। आपके इन शब्दों ने कि "श्री हरिभाऊजी की सेवाएं राजस्थान को मिलती रहेंगी" संजीवनी का कार्य किया है।

मैं १९३४ में तो जेल से इसी विचार को लेकर निकला था कि अब तो मुझे चलकर किसी भी तरह ग्राम में बैठ ही जाना चाहिए। अथवा ग्रामवासियों की सेवार्थ मुझे किसी आश्रम में जाकर उसकी तैयारी में लग जाना चाहिए। किंतु मैं नहीं बैठ सका, क्योंकि जिस समय मैं जेल से बाहर आया उस समय देश में अस्पृश्यता-निवारण-आंदोलन बड़ी तेजी से चल रहा था। किंतु अजमेर इसमें बहुत पीछे था। उस समय अजमेर में केवल एक रात्रि-पाठशाला ही चल रही थी और इसकी भी व्यवस्था ठीक नहीं थी। श्री भैयाजी (चौधरीजी) ने मुझसे कुछ समय तक अजमेर हरिजन-सेवक-समिति में कार्य करके इसकी व्यवस्था ठीक कर देने को कहा। मेरे बहुत आनाकानी करने पर भी आखिर उन्होंने कुछ माह के लिए यहां का भार मेरे सिर पर डाल ही दिया। फिर भी मैंने यहां का कार्य संभालने से पूर्व ही यह शर्त उनके सामने रख दी थी कि मैं हमेशा के लिए इस भार को नहीं उठा सकूंगा। यहां की व्यवस्था ठीक होते ही तुरंत अलग हो जाऊंगा।

इस समय अजमेर में समिति की ओर से ११ हरिजन-पाठशालाएं चल रही हैं और उनकी आर्थिक तथा अन्य दशा भी अच्छी है। ऐसी हालत में अब मैं अक्तूबर मास के अंत तक इस भार से मुक्त होने की सोच रहा हूं।

आगे मेरी इच्छा नवंबर और दिसंबर मास तो पू० दा० सा० (हरिभाऊजी) के साथ वर्धा-आश्रम में रहने की है। आशा है, इसके लिए तो आप अवश्य स्वीकृति देंगे ही, किंतु साथ ही मुझे कोई ऐसा भी अवसर देने की कृपा करेंगे कि मैं कुछ समय तक आपके पास रहकर आपसे कुछ अनुभव

प्राप्त कर सकूं और आप भी मुझे पहचान सकें। मेरी प्रबल इच्छा है कि मैं आपके अधिक-से-अधिक निकट आऊं। आशा है, आप अवश्य मुझे ऐसा अवसर देकर मेरे उत्साह को बढ़ावेंगे।

आपका आशीर्वादाभिलाषी,
बालकृष्ण गर्ग

: ५० :

अजमेर, २३-६-३८

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। मैं तथा प्रो. गोकुलदासजी आसावा १९-६-३८ को सीकर गये थे। २१ को वापस लौटे। सीकर के कार्यकर्ताओं से तो मिले ही किंतु लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, रामगढ़, रींगस आदि स्थानों के कार्यकर्ताओं से भी मिलने का अवसर मिला। २० तारीख को श्री मणिशंकरजी और कैप्टेन महेशजी भी वहां आ गये थे। उनमें से महेशजी से भी मुलाकात हुई। वहां के संबंध में जो-कुछ मुझे अनुभव हुआ वह आपकी सेवा में जानकारी के लिए लिख रहा हूं।

वहां की जनता में काफी एकता है, खासकर राजपूत अधिक दिलचस्पी ले रहे हैं। यह आंदोलन जयपुर-नरेश और रावराजाजी के बीच व्यक्तिगत रूप से आरंभ हुआ किंतु धीरे-धीरे आज तो जनता ने अपनी मांग "रावराजा की छत्रछाया में" उत्तरदायित्वपूर्ण शासन बना ली है। वे अहिंसा की महत्ता को भले ही न समझे हों किंतु अबतक उन्होंने कोई हिंसात्मक कार्य नहीं किया है। किला न खोलने देने की बात एक विचारणीय है कि अहिंसावादियों के लिए ठीक है या नहीं।

राजपूत हथियार हाथ में जरूर रखते हैं, किंतु उनका उपयोग नहीं करते। दरवाजों पर राजपूतों का पहरा है, कभी दरवाजे खोल दिये जाते हैं और कभी आधे बंद कर लिये जाते हैं। यह भी ठीक है कि उनका आंदोलन जितना व्यवस्थित होना चाहिए उतना नहीं हो रहा है। कभी वे क्या मांग पेश करते हैं और कभी क्या? उन लोगों में कोई अनुभवी नहीं है। सीकर में

एक बद्रीनारायणजी कार्य करते हैं। वे भी तो आखिर इस कार्य में एक नये आदमी ही तो हैं। ऐसी हालत में आज भी मेरी समझ में तो पंडितजी (लादूराम जोशी) को इस आंदोलन में खुला भाग लेना चाहिए, नहीं तो इस आंदोलन में बड़ी दुर्दशा होगी। आज जयपुर-अधिकारी जाटों में काफी-फूट डलवा रहे हैं। सरकार-पक्ष के जाट कमेटी-पक्ष के जाटों की जमीनें कब्जे में कर रहे हैं। श्री मणिशंकरजी से यह भी मालूम हुआ है कि अधिकारियों ने यह भी तय कर लिया है कि यदि गुरुवार तक कोई रास्ता नहीं निकला तो अधिकारी किन्हीं भी परिस्थितियों में कोर्ट को जबरन खोलेंगे। अंत में मेरे रवाना होने तक कमेटीवालों की यह मांग थी कि—

१. रावराजाजी पर से पाबंदी हटा ली जावे और वे बिना रोक-टोक सीकर जाने दिये जावें।

२. वेब और बापना बर्खास्त किये जावें तथा इनके अधीनस्थ अधिकारियों के खिलाफ कमेटी की ओर से जो चार्जशीट पेश की जावे उसकी खुले कोर्ट में पैरवी की जाय।

३. वेब के स्थान पर जयपुर-राज्याधिकारियों की ओर से कोई अफसर न आकर ब्रिटिश गवर्नमेंट की ओर से कोई अधिकारी आवे।

४. जिस प्रकार वेब के साथ है उसी प्रकार उसके स्थान पर आनेवाले अधिकारी के साथ भी जनता में से ४ सदस्यों की एक एडवाइजरी कमेटी हो।

५. पब्लिक कमेटी को मान्य कर लिया जाय।

इन मांगों को लेकर एक डेप्यूटेशन २१ तारीख को आबू गया था। इसके बाद पता नहीं क्या हुआ। लेकिन ऐसा खयाल है कि कोई-न-कोई रास्ता निकल आवेगा। नहीं तो शीघ्र ही कोई-न-कोई दुर्घटना होगी। जो भी हो जैसी परिस्थिति है वह बड़ी पेचीदा प्रतीत होती है। भगवान जाने वहां क्या-क्या होनेवाला है।

इनसब परिस्थितियों में भी मेरी राय में तो किसी-न-किसी को या पंजितजी को खुले रूप से इसमें भाग लेना चाहिए और जब कभी भी उन्हें

यह प्रतीत हो कि इससे हमारे उद्देश्य या सिद्धांत की हत्या हो रही हो, उन्हें साफ कहकर अलग हो जाना चाहिए। इस समय प्रजा-मंडल के तो अनुकूल वातावरण है नहीं, इसलिए यदि कोई इसमें भाग लेगा तो वह व्यक्तिगत हैसियत से ही लेगा।

चरणसेवक,
बालकृष्ण गर्ग

: ५१ :

सिंगोली, ३०-७-३१

प्रिय भाईजी,

सादर वंदे। आपके आदेशानुसार मैं आपसे मिलने आये हुए रामाजी और तुलसीरामजी किसान को साथ में लेकर २६ तारीख की रात को बिजौलिया के लिए रवाना हुआ। मैं ता० २७को ३॥ बजे सिंगोली पहुंचा। मोटर से उतरते ही बिजौलिया थाने का एक सिपाही, बद्रीनाथ मुझे मिला। उसने मेरा और किसानों का नाम-पता पूछा और लिख लिया। इसके बाद बद्रीनाथ ने कहा कि इस वक्त आप बिजौलिया मत जाओ, सुबह मैं अपने आदमी के साथ भेजूंगा। मैंने जवाब दिया कि मुझे तो अभी जाना है, मैं तुम्हारे लिए कैसे ठहर सकता हूं? उसने कहा कि अगर आप मेरा कहना नहीं मानते हैं तो थाने में चलिये। मैंने थाने में जाने से इंकार करते हुए कहा—"मुझे थाने मे जाने की कोई जरूरत नहीं है; अगर कोई हुक्म हो और तुम ले आवोगे तो मैं चला चलूंगा।" इसपर बद्रीनाथ थाने में गया; किंतु थानेवालों ने कहा कि हमारे पास जाब्ते का कोई हुक्म नहीं है इसलिए हम किसीको थाने में नहीं रोक सकते। इसी झंझट में एक घंटा बीत गया। सवारी की तलाश की, मगर मिली नहीं। अतः सुबह ही जाना तय किया। साथ ही इस रोकथाम का कारण जानने के लिए मैंने तुलसीरामजी किसान को एक चिट्ठी कामदार के नाम लिखकर बिजौलिया भेज दिया। चिट्ठी में लिख दिया था कि जमनालालजी उदयपुर गये थे और सुखदेवप्रसादजी से बातचीत करके उनकी इजाजत से ही मुझे भेजा है। मुझे पत्र-वाहक के हाथ जवाब भेजिये कि

मैं बिजौलिया आ सकता हूं अथवा नहीं। परंतु इस चिट्ठी का कोई जवाब नहीं मिला। बाद में मालूम हुआ कि चिट्ठी ले जानेवाले किसान को हिरासत में रख दिया गया।

मैंने बिजौलिया के थाने के सिपाही बद्रीनाथ से फिर पूछा कि अगर तुम कहो तो मैं बिजौलिया नहीं जाऊंगा। मगर उसने यही जवाब दिया कि मैं जाने के लिए भी नहीं कहता और नहीं जाने को भी नहीं कहता। आखिर मैंने यही सोचा कि एक दफे मुझे जाना तो चाहिए। अगर ठिकानेवाले मना करेंगे तो वापस लौट आऊंगा। इसके अनुसार रामाजी किसान को लेकर मैं सिंगोली से बिजौलिया के लिए रवाना हुआ। साथ में बद्रीनाथ भी हो लिया। हम लोग घाट पर, जहां बिजौलिया की चौकी है, पहुंचे।

बद्रीनाथ ने कंजरों को आवाज लगाई जो वहीं तैनात थे। उनसे कहा कि मेरी और रामाजी किसान की मुश्कें बांधकर कोतवालसाहब के पास ले जाओ। कंजरों ने कहा कि पहले कोतवालसाहब के पास इत्तला भेज दो, जैसा उनका हुक्म होगा वैसा करेंगे। इत्तला भेजी गई।

थोड़ी देर में कोतवाली के सवार संग्रामसिंहजी आ पहुंचे। उन्होंने पूछा—"क्यों आये ?" मैंने बताया कि मैं इस तरह से जमनालालजी का भेजा हुआ आया हूं। माल-जमीन के बारे में उदयपुर से ऐसा भरोसा दिलाया गया है। मैं यह वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया था कि संग्रामसिंहजी ने पास में ही खड़े हुए चौकी के सिपाही से कहा—"माल-जमीन का नाम ले दिया, लगाओ ग्यारह जूते।" सिपाही थोड़ा हिचकिचाया, मगर संग्रामसिंहजी के यह कहने पर कि देखता क्या है, उसने गिन-गिन करके मेरे सिर में जूते लगाने शुरू किये। जूते में लोहे की नाल लगी हुई थी। जिस समय जूते पड़ रहे थे, उस समय दिल में यह कल्पना उठ रही थी . . . "हे परम पिता इन्हें माफ करो, क्योंकि ये जानते नहीं कि ये क्या कर रहे हैं।"

जूते लगने का एक काण्ड तो इस तरह पूरा हुआ। थोड़ी देर बाद कोतवाली के दूसरे सवार धूलसिंहजी आये। उन्होंने आते ही गालियों की झड़ी लगा दी और घोड़े से उतरकर मुझे उल्टा ढकेला, कई लातें लगाईं,

थप्पड़ जमाई और मेरी नाक दांतों के बीच में लेकर अपने दांत उसमें गड़ा दिये। शायद उनका इरादा काटने का न था, केवल कुछ निशान बना देना चाहते थे। मेरे से छुट्टी पाकर उनकी नजर रामाजी किसान की तरफ गई। पूछा—"इसकी पूजा हुई या नहीं ?" उत्तर 'नहीं' मिला तो उसके भी कान खींचे गये, थप्पड़ लगीं। इसके बाद मेरी तलाशी ली गई। किसान-पंचायत के सरपंच मंत्री के नाम आपने जो चिट्ठी दी थी वह संग्रामसिंहजी ने ले ली। इतने में बारिश होने लगी। बारिश रुकने पर रामाजी को और मुझे दोनों सवार इंद्रपुरे गांव में ले गये जहां बिजौलिया के कोतवाल गजानंदजी ठहरे हुए थे।

कोतवालसाहब ने पहुंचते ही रामाजी से कहा—"अजमेर क्यों गया ?"—मां-बहन की गालियां दीं। सिपाही से कहा—"लगाओ साले के दस जूते।" बिचारे गरीब पर पड़ने लगे जूते तड़ातड़। फिर कोतवालजी ने रामा से कहा—"ये जो सामने जूते पड़े हुए है किसके हैं ?" उसने कहा—"मेरे हैं।" कोतवाल साहब बोले—"एक जूता हाथ में लेकर लगाओ तुम्हारे बाप के।" किसान दो दफे हिचकिचाया, मगर जब उसे बहुत दबाया गया तो उसने कोतवालसाहब के हुक्म की तामील की—दस जूते लगाये। फिर भी शिकायत यही रही कि उसने जोर से जूते क्यों न लगाये।

इस समय इंद्रपुरा के दाणी रामसुखजी तथा गांव के दूसरे कई लोग वहां मौजूद थे।

कोतवालसाहब ने कहा रामाजी पर तो मुकदमा बना ही डालें। पांच आदमियों को इकट्ठा किया और पंचनामा बनाया। रामाजी की तरफ से खुद बोलते गये। आपने मुझे जो चिट्ठी दी थी वह रामाजी के हाथ में दी गई और पंचनामे में लिखाया—"यह जो चिट्ठी मैं पेश करता हूं, मुझे जमनालालजी ने दी है और शोभालाल को मेरे साथ भेजा सो इनको लेकर आ रहा हूं।" इसके बाद पूछा—"तुम किसके कहने से अजमेर गये थे।" रामाजी ने नाम बताने में थोड़ा संकोच किया तो कोतवालसाहब ने कहा—"इसे भीतर ले जाकर समझा लाओ, धूलसिंहजी"—और मकान के

भीतर ले गये और बेंत से मारपीटकर वापस लाये। इस तरह दो-तीन बार मकान के भीतर उसे समझाने के लिए भेजा गया। उसकी अंगुलियों, पीठ पांव—सब जगह बेंत के निशान थे। आखिर पंचनामा तैयार होगया और 'धर्मावतार' पंचों ने उसपर हस्ताक्षर कर दिये। रात में दो सिपाहियों के साथ वापस सिंगोली भेज दिया गया। रामाजी तो हिरासत में हैं। उनसे नेकचलनी की जमानत, मुचलका मांगा जा रहा है। ऐसी स्थिति में जब कि दमन और जूते का बाजार गर्म है, क्या आप समझ सकते हैं कि कोई अच्छा नतीजा निकल सकता है? जुर्माने के एवज में किसानों के मवेशी नीलाम हो रहे हैं। कहते हैं सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री अगरचंद को हाल ही में बुरी तरह पीटा गया।

कोतवालसाहब का कहना था कि ठिकाना नामर्द नहीं हो गया है। बाहरवालों को हमारे घर में घुसने का क्या हक है? हम यह साबित कर देना चाहते हैं कि हमारी जूती में जोर है। इस तरह जूती के जोर पर ठिकाना अपनी सत्ता कायम रखना चाहता है। किंतु सवाल यह है कि क्या उदयपुर के बुद्धिमान राज्याधिकारी इस जूती के शासन को पसंद करते हैं, इसकी ठिकानों को छूट दे रखी है? मैं नहीं समझता कि बात ऐसी है। न्याय और इंसाफ का यह तकाजा है कि वे ठिकाने के कुछ बेरहम और अन्यायी नौकरों के खिलाफ़ कड़ी कार्रवाई करें। तभी वे अपनी व्यर्थ की बदनामी से बच सकेंगे। कोतवालसाहब ने यह भी कहा—"शोभालाल तुमने कोई ऐसी जगह नहीं देखी होगी जहां कोई कानून न हो, तो देख लो, बिजौलिया ऐसी जगह है जहां कोई कानून नहीं है।" क्या उदयपुर के अधिकारी इस गैरकानूनी सजा का अंत करेंगे?

एक बात और। मेरे साथ जो व्यवहार हुआ उसका मुझे जरा भी दुःख नहीं है। मैंने जूतों की मार को पुष्पों की वर्षा समझने की कोशिश की है। मुझे लोक-सेवा के लिए मरना भी पड़ता तो मेरे लिए उससे बढ़कर सौभाग्य की बात और क्या होती? परंतु सवाल मेरे सुख-दुख का नहीं है। मेरा खयाल है, आपको यह अनुभव करना चाहिए कि मेरे जो एक-एक जूता

लगा है वह आपके खुद के लगा है। बस, मैं यही चाहता हूं। मुझे आशा है आप उदयपुर सर सुखदेवप्रसादजी को लिखेंगे और इस सारी घटना का उचित परिमार्जन कराने की चेष्टा करेंगे।

मैंने सुखदेवप्रसादजी को तार भेजा है। इस पत्र की नकल भी भेजी है।

आपका,
शोभालाल गुप्त

: ५२ :

शोभालालजी, ३१-८-३१
त्यागभूमि, अजमेर।

पत्र और तार पढ़कर दुःख हुआ। मुझे संदेह है कि मैं यह सब इतनी खुशी के साथ सहन कर सकता। आपको बधाई। यह निश्चय ही हम सबका और उदयपुर राज्य का अपमान है। आशा है कि ठिकाना का यह पाशविक अत्याचार किसानों के उद्देश्य की सिद्धि में सहायक होगा।[१]

—जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ५३ :

अजमेर, २६-८-३१

मान्यवर भाईजी,

सप्रेम वंदे। मैं बिजोलिया हो आया। करीब एक सप्ताह वहां ठहरा। श्री लक्ष्मीलालजी जोशी मेरे ही मामले की जांच के लिए गये थे। मुझे ठिकाने ने लोगों से मिलने-जुलने तथा जहां चाहे जाने-आने की इजाजत नहीं दी। बिना ठिकानेवालों की अनुमति और मौजूदगी के मेरे साथ बिजौलिया का कोई आदमी बातचीत नहीं कर सकता था। मैं श्री लक्ष्मीलालजी जोशी के पास ही ठहरा। अन्यत्र मैं नहीं ठहर सकता था। वहीं बिजौलिया ठिकाने के वकील भी ठहरे हुए थे।

मैं १५ तारीख को १२ बजे के करीब बिजौलिया पहुंचा। उस समय श्री लक्ष्मीलालजी बिजौलिया से तीन-चार मील दूर उस किसान का बयान

[१] अंग्रेजी तार का अनुवाद

लेने चले गये थे जो अजमेर से मेरे साथ गया था। इसलिए मुझे कोतवाली में रखा गया; रातभर वहीं रहा। दूसरे दिन इंद्रपुरे लक्ष्मीलालजी के पास गया था। श्री लक्ष्मीलालजी का व्यवहार शिष्टतापूर्ण और सौजन्यपूर्ण था। उनकी उपस्थिति के कारण मुझे अपने काम में बड़ी सहायता मिली। जांच का काम जिन परिस्थितियों में हुआ—अर्थात् मुझे स्वतंत्रता नहीं मिली और ठिकाने के कर्मचारी, जिनके खिलाफ शिकायत थी, जहां चाहे जा-आ सकते थे, ठिकाने की सत्ता का अपने हक में लाभ उठा सकते थे, उसमें यह संभव न था कि बहुसंख्यक गवाह मेरे आरोपों का समर्थन कर सकते। फिर भी रामाजी किसान ने उनसब बातों का समर्थन किया है। इंद्रपुरा के गवाहों ने, मारपीट हुई, यह कहने का साहस नहीं किया परंतु उनकी शहादत से यह सिद्ध हो गया कि कोतवाल ने झूठा पंचनामा बनाया। ठिकानेवालों ने मारपीट से तो इंकार किया ही, साथ ही यहांतक स्वीकार नहीं किया कि मैं महकमे खास की चिट्ठी लेकर दुबारा बिजौलिया गया। किंतु यह निश्चित है कि चाहे जुडीशियली मामला पूरी तरह साबित न हुआ हो, जांच-आफिसर यह समझ गये हैं कि घटना वास्तव में उसी रूप में हुई है जिस रूप में कि बयान की गई है। उसपर उनकी क्या सिफारिश होती है, यह देखने की बात है।

जांच कराने के अलावा दूसरा काम मैंने बिजोलिया में यह किया कि ठिकानेवालों की अनुमति से किसानों की एक सभा में उदयपुर में हुए समझौते की शर्तें समझाईं। इस सभा में ठिकाने के वकील, कोतवालऔर श्री लक्ष्मीलालजी मौजूद थे। मैंने जो कुछ कहा, उसपर ठिकानेवालों का यह कहना था कि मैंने सीमा का उल्लंघन किया; किंतु श्री लक्ष्मीलालजी ने मेरे भाषण के नोट लिये हैं, इसलिए उदयपुर में कोई गलतफहमी होने की संभावना नहीं प्रतीत होती।

जेल में जो लोग हैं उनसे मिलने का मुझे अवसर नहीं दिया गया। इस समय करीब ३० आदमी जेल में हैं। इनमें से १४ आदमियों को नकल फैसले दिये गये और शेष के लिए यह कह दिया गया था कि अपील की

मियाद गुजर चुकी है, इसलिए फैसले की नकलें नहीं दी जा सकतीं। इसपर श्री लक्ष्मीलालजी जोशी ने ठिकानेवालों को हिदायत कर दी है कि फैसले की नकलें तो उनको देनी चाहिए। अगर वे चाहें तो उनपर यह नोट लगा सकते हैं कि अपील की मियाद गुजर चुकी है। आशा है कि फैसले की नकल भी अब मिल जायगी। जिनके फैसले की नकल मिल गई, उनकी अपीलें लिखवाकर मैंने उदयपुर भिजवा दी हैं। आप सर सुखदेवप्रसादजी को लिखेंगे अथवा तार देंगे कि जिनकी अपीलें दाखिल हो चुकी हैं उनको रिहा करने का हुक्म ठिकाने के नाम जल्दी ही भेजा जावे। १३-१४ आदमी जमानत मुचलके दाखिल करके जेल से छूटे हैं। जुर्माने की वसूली के लिए जो कुर्की तथा नीलामी की कार्यवाही हो रही थी, वह महकमे खास के हुक्म से रोक दी गई है। बिजौलिया के कोतवाल उदयपुर गये हैं। शायद खुशामद वगैरा के द्वारा अपना पिंड छुड़ाने की कोशिश करेंगे।

किसानों पर जो ज्यादतियां हुई हैं, उनकी जांच करने को मांडलगढ़ के हाकिम मुकर्रर हुए हैं। शायद उन्होंने अपना काम शुरू कर दिया होगा।

बिजौलिया में इस बार एक घटना यह हुई कि ठिकाने के एक सवार ने मेरा एक हैण्डबेग नदी में बहा दिया जो बाद में मिल गया, किंतु कागज-पत्र सब भीग गये।

शेष कुशल-मंगल है। आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका,

शोभालाल गुप्त

: ५४ :

अजमेर, १-९-३२

मान्यवर भाईजी,

वंदे। आपका २६ तारीख का पत्र मिला। बिजौलिया के बारे में जो समझौता हुआ है उसके बारे में चूंकि उदयपुर रियासत ने ठिकानेवालों को कोई निश्चित सूचना नहीं दी है, इसलिए समाचारपत्रों में प्रकाशित आपके वक्तव्य पर वे पूरी तरह विश्वास नहीं करते। उनका यह निश्चित मत है कि

किसानों को उनकी जमीनें नहीं लौटाई जा सकतीं। हां, वे इस बात में काफी सतर्क प्रतीत होते हैं कि किसान बाहरवालों से किसी तरह का संबंध नहीं रखें। साथ ही समझौता हो जाने के बाद जैसी स्पिरिट होनी चाहिए, उसका तो सर्वथा अभाव ही है। उदयपुर से आनेवाले हुक्मों का धीरे-धीरे और अधूरे दिल से पालन करना इस बात का प्रमाण है। किसानों का जहांतक संबंध है वे इतना तो समझने लगे हैं कि स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ है; किंतु उन्हें इस बात का कम विश्वास है कि राज्य ने जो कुछ वायदा किया है, उसके अनुसार काम हो सकेगा। इस अविश्वास का होना स्वाभाविक भी है, कारण कि मैं उनसे खुले तौर पर नहीं मिल सका और अभी तक उनके कैदी जेलों में ही पड़े हुए हैं। उनके साथ होनेवाले कठोर व्यवहार में कोई अंतर नहीं पड़ा।

कुर्कियां बंद होने की आज्ञा आने से पहले ही जिन किसानों का माल नीलाम हो गया, जहांतक मुझे पता है, उस माल को लौटाने की या उसकी क्षति-पूर्ति कराने की रियासत ने अभी तक कोई आशा नहीं दी है। उस माल को वापस लौटा सकना तो असंभव ही समझिए। नीलाम में जितना रुपया ठिकाने को मिला है, वह अपील में यदि जुर्माना माफ कर दिया गया तो ठिकाना लौटा देगा। अपीलों के निर्णय के पहले रियासत इस बारे में शायद ही कोई कार्रवाई करे।

मैंने अपने भाषण के कोई नोट्स नहीं रखे और न श्री लक्ष्मीलालजी के नोट्स ही मेरे पास हैं। ठिकानेवाले तो केवल इतना चाहते थे कि मैं किसानों को एक ही बात कहूं कि वे बाहरवालों से कोई संबंध नहीं रखें। और न बाहरवाले उन्हें कोई सहायता देंगे। वे यह नहीं चाहते थे कि मैं समझौते की अन्य शर्तों के बारे में किसानों से कुछ कहूं। श्री लक्ष्मीलालजी को मैंने पहले ही बता दिया था कि मैं अमुक-अमुक बात कहूंगा। भाषण के बाद मैंने उनसे पूछा था कि उनकी क्या राय है। उन्होंने कोई आपत्ति नहीं की। मैंने किसानों को बताया था कि अमुक-अमुक कारणों से बाहर-वालों के लिए यह संभव नहीं है कि यदि आप कोई आंदोलन करें तो उसमें

वे सहायता दे सकें। दूसरे जब राज्य ने आपकी सारी शिकायतों को दूर कर देने का आश्वासन दिया है तो आपको आंदोलन करने की जरूरत ही नहीं रह जाती है। अगर आपको कोई तकलीफ हो तो आप ठिकाने में रावजी साहब को अर्ज करें। वे आपकी तकलीफ अवश्य दूर कर देंगे। अगर वहां से राहत नहीं मिली तो आपको उदयपुर बड़े हाकिमों से मिलना चाहिए। इसके अलावा मैंने किसानों के कष्ट-सहन की तारीफ की थी और उन्हें समझाया कि समझौते में अमुक-अमुक बातें ही तय हुई हैं। किसानों ने मुझसे एक सवाल यह पूछा था कि जिन लोगों की सजा खत्म हो चुकी है और जो लोग इसीलिए कैद में हैं कि उन्होंने जमानत-मुचलका नहीं लिखा है, उनको जमानत-मुचलका लिखना चाहिए अथवा नहीं। जमानत-मुचलकों में यह लिखवाया जाता है कि मैं बाहर के लोगों से—नेताओं से कोई ताल्लुक नहीं रखूंगा और ऐसी जमात में शरीक न होऊंगा जो बदअमनी फैलाती हो। मैंने कहा कि अभी धीरज रखना चाहिए। अपीलों का फैसला होनेवाला है, उससे पहले किसीको जमानत-मुचलके नहीं देने चाहिए। ठिकानेवालों को यह सलाह पसंद नहीं आई।

जो लोग जमानत-मुचलकों पर छूटे हैं, उनको अपीलें करना चाहिए, ऐसी सलाह मैंने किसानों के दो प्रतिनिधियों को दे दी थी, जो अपीलें लेकर उदयपुर गये थे। मुझे पता नहीं, उनकी अपीलें की गईं अथवा नहीं। बिजौलिया से चलते समय तक खारिज-मियाद फैसले नहीं दिये गये थे। ऐसी आशा थी कि ठिकानेवाले दे देंगे। यदि उन्होंने इंकार किया तो, किसानों को मैंने सलाह दी थी कि, उदयपुर दरख्वास्त दे दें।

वेगूंवालों ने वृद्धिसिंह को रिहा कर दिया, यह मुझे बेगू के किसानों से बिजौलिया में मालूम हुआ। हां, मोतीलालजी तेजावत अभी रिहा नहीं हुए हैं, जैसाकि अपने लोगों को उदयपुर में पता लगा था।

चार किसानों की मेवेशियां आदि कुर्क की गईं। एक किसान ने ५०० रुपये देकर अपने मवेशी छुड़ा लिये। तीन किसानों के मवेशी नीलाम हुए। हरएक पर ५०० रुपया जुर्माना हुआ था। यह ठीक नहीं कहा जा सकता कि

दरअसल कितनी कीमत के मवेशी नीलाम हुए। किंतु जो मवेशी ६० रुपये के थे वे २० रुपये में नीलाम हुए। इस हिसाब से यदि १५०० रुपये वसूल किये गये हों तो कम-से-कम तीन हजार का माल तो नीलाम हुआ ही होगा।

आपका,

शोभालाल गुप्त

: ५५ :

केलवाड़ा (मेवाड़), २९-९-३३

मान्यवर भाईजी,

सादर वंदे। मैं मुख्यतः हरिजन-काम के संबंध में घूमने निकला हूं और कल दोपहर को यहां पहुंचा हूं। यह वह स्थान है जहां उदयपुर-राजा ने श्री माणिकलालजी को नजरबंद कर रखा है। कांकरोली रेलवे स्टेशन से यह स्थान ३०-३५ मील दूर स्थित है और यहां पहुंचने के लिए अत्यंत कठिन रास्ता पार करना होता है। ऊंची-ऊंची पहाड़ियों और झरनों के बीच राज्य ने बिल्कुल एकांत स्थान चुना है। यहां मैं आसानी से माणिकलालजी को मिल सका। इस समय वे सख्त बीमार हैं। उनको मोतीझरा निकला है। बुखार आते हुए आज २० दिन हो चुके। वे बहुत कमजोर हो गये हैं। बुखार अब भी बना हुआ है। बहुत बेचैनी रहती है और प्यास बहुत अधिक रहती है। कभी-कभी बहकी बातें भी करते हैं। इतनी गंभीर अवस्था होते हुए भी और आवेदन-पत्र भेजने पर भी आज तक किसी डाक्टर ने उनको देखा-भाला नहीं। इसपर उनके साले श्री गणपतलालजी उदयपुर गये और राजनगर डाक्टर के लिए जो यहां से ३०-३५ मील दूर रहते हैं, हुक्म लेकर आये हैं। उनके आज जाने की आशा की जाती है। अभी माणिकलालजी की अवस्था खतरे के बाहर हो गई है ऐसा नहीं कहा जा सकता है। परमात्मा ने अबतक उनकी रक्षा की है और आगे भी उसकी दया पर ही सबकुछ निर्भर है।

यहां का जलवायु भी श्री माणिकलालजी के अनुकूल नहीं है। उनकी

पत्नी अस्वस्थ रहती हैं । कब्ज की शिकायत और प्रदर रोग से पीड़ित हैं। यहीं उनकी माता का देहांत हो चुका है।

आपको मालूम होगा कि श्री माणिकलालजी को नजरबंद किये सवा साल से ऊपर हो चुका। वे काफी कष्ट पा चुके हैं। उनका ऐसा कोई अपराध नहीं, जिसे राज्य सिद्ध कर सके। उनके गिरफ्तार करने से पहले पं. सुखदेव प्रसादजी ने उनसे कहा था कि तुम किसानों का काम छोड़ दो, तुमको राज्य ५० रुपये मासिक की अच्छी जगह दे देगा। किंतु जब उन्होंने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तो अपने बंगले पर ही उनको गिरफ्तार करवाकर यहां भेज दिया। उनको यह कहा गया था कि तुम किसानों को जाति बाहर करवाते हो और उनसे जुर्माने वसूल करते हो। माणिकलालजी का यह कहना था कि किसानों का यह जातिगत संगठन है, और इसमें राज्य हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

मेरा पत्र लिखने का यह उद्देश्य है कि जब माणिकलालजी इतने बीमार हैं और उनका कोई विशेष अपराध नहीं तब क्या यह उचित न होगा कि राज्य उनको इस कैद से मुक्त कर दे। यदि आप समझते हों कि इस बारे में आपका पं. सुखदेवप्रसादजी को लिखने का कुछ असर होगा तो आप अवश्य उनको लिखने का कष्ट करें।

आजकल बिजौलिया में लक्ष्मीलालजी जोशी मुंसरीम हैं। उनसे परसों नीमच स्टेशन पर मुलाकात हो गई थी। उनसे मालूम हुआ कि किसानों को जमीनें वापस लौटाये जाने के स्वयं ए. जी. जी. विरुद्ध हैं और अभी कोई आशा नहीं है कि किसानों को जमीनें वापस मिल सकें। वैसे श्रीलक्ष्मीलालजी का किसानों के प्रति व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण ही है। उन्होंने हाल ही में किसानों को ४-५ हजार रुपये, जो किसानों की तरफ बाकी निकलता था, लौटा दिया है।

पं. सुखदेवप्रसादजी ने जमीनों के बारे में आपको जो आश्वासन दिया था उस बारे में क्या आप इस स्थिति में हैं कि कुछ कार्यवाही कर सकें?

आशा है, आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मैं यहां से कल प्रातःकाल

रवाना हो जाऊंगा। श्री माणिकलालजी की चिंता तो रहेगी, किंतु सेवा-सुश्रूषा करनेवालों की उनको कमी नहीं है।

आपका,

शोभालाल गुप्त

: ५६ :

अजमेर, २२-९-३१

श्रद्धेय भाईजी,

सादर वंदे। कल शाम को मैं फिर शारदाजी से मिला था। उन्होंने आपको तार देना तो जरूरी नहीं समझा। कल रविवार भी था और वे सुखदेवप्रसादजी के उत्तर की प्रतीक्षा भी कर लेना चाहते थे। उन्होंने सुखदेवप्रसादजी को आपके लिए लिखा है—"मेरे दिल में जमनालालजी खुद के लिए बड़ा आदर है। वे आपके लिए सहायक सिद्ध होंगे। आप उनसे अवश्य मिल लीजिए। बाहर के कार्यकर्ताओं के जाने की जरूरत आप खुद किसानों के कष्ट दूर करके मिटा सकते हैं। नजराने के बारे में ठीक निर्णय करके जमीन लौटा देने से समझौता हो सकेगा।"

हरबिलासजी का यह खयाल है कि आप अवश्य कल सीधे उदयपुर जायं। सुखदेवप्रसादजी आपसे अवश्य मिलेंगे।

आप उदयपुर जायं तो इधर खबर जरूर करें।

आपका,

रामनारायण चौधरी

: ५७ :

राजपूताना हरिजन-सेवा-संघ

अजमेर, २३-२-३४

पूज्य भाईजी,

सादर प्रणाम। जिन परिस्थितियों पर और जिन कारणों से राजस्थान-सेवक-समिति का प्रस्ताव हुआ है,उनसे यह योजना अस्वाभाविक और आरो-

पित हो गई है। यह अव्यवहार्य है। यह तो इसके बनानेवालों को भी दिख जाना चाहिए था।

मेरे खयाल से विरोधी विचार के लोग किसी लोक-संचालक-संस्था में केवल मत-प्रदर्शन करनेवाली संस्था में तो बहुमत के सहारे रह सकते हैं। परंतु काम करनेवाली संस्था में यह असंभव-सा है। इस खयाल से समिति की वर्तमान योजना मेरी राय में सर्वथा अव्यावहारिक है। इसके बजाय ऐसी संस्था बननी चाहिए, जो राजस्थान की सार्वजनिक शक्तियों में संघर्ष-निवारण और सहयोग-स्थापनमात्र का काम करे। स्वभाव-शक्ति और विचार-भेद के कारण नैसर्गिक दलों के कार्य-स्वातंत्र्य में दखल न दिया जाय। साथ ही प्रत्येक ऐसे दल या व्यक्ति को अपना एक-एक विशिष्ट काम भी चुन लेना चाहिए। फिर इन सबका एक संघ (फेडरेशन) उपरोक्त दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बने। राजस्थान की वर्तमान स्थिति में जहां न तो कोई एक नेता है और न परस्पर गहरा सद्भाव है, वहां यही योजना सफल हो सकती है।

भाई बाबाजी मुझे इस काम में जो महत्व दे रहे हैं, मैं उसका पात्र नहीं हूं। मैं दिनोंदिन चालू राजनीति से उदासीन हो रहा हूं। एक विशेष काम में लगा हूं, जो स्वयं मेरी सामर्थ्य से बाहर का है। मेरी देशी राज्यों की रचनात्मक सेवा की ओर अधिकाधिक रुचि बढ़ रही है। अनुभव से मेरी मनोवृत्ति एक विचार के लोगों के साथ काम करने की दृढ़ हो रही है। अतः मैं अपनी शक्ति स्वधर्मपालन अर्थात् स्वरुचि की ओर पहले से लिये हुए कामों के करने में ही लगा सकता हूं। अन्य कामों में यदि वे अनुकूल हों तो मैं सहयोग दे सकता हूं। सहानुभूति रख सकता हूं।

बाबाजी का कहना है कि बाहर के पैसे और बाहर के आदमियों का प्रभाव हमारे प्रांतीय कार्यों पर नहीं पड़ना चाहिए। ये सिद्धांत ही मेरे खयाल से गलत हैं। प्रांत तो क्या संसार ही ऐसे प्रभाव से व्यवहार में अछूता तो नहीं रह सकता। इसे कोई भी न पालन कर रहा है और न कर सकता है। स्वयं समिति की योजना में यह नग्न रूप में मौजूद है। एक मनुष्य

अपना नेता किसीको भी माने, अपने शुभ कार्य के लिए किसीसे भी उचित सलाह और सहायता ले। इसमें दूसरे को दखल देने का अधिकार ही क्या ? मुझे तो आश्चर्य है कि आपने और हरिभाऊजी ने भी इसे स्वीकार ही कैसे कर लिया।

आप इस पत्र की दूसरी प्रति भाई बाबाजी को भेज दें, ताकि उन्हें मेरे विचार स्पष्ट मालूम हो जायं। आप या वे मुझे मेरी गलती समझा देंगे तो उसे मान लूंगा और सुधार का प्रयत्न अवश्य करूंगा।

शेष कुशल। पारिवारिक वियोगों के समाचारों से मुझे दुख हुआ है। आपका स्वास्थ्य अच्छा है, इससे संतोष हुआ।

आपका,
रामनारायण चौधरी

: ५८ :

अजमेर, १९-८-३६

आदरणीय भाईजी,

प्रणाम। इस बार आपने जिस आत्मीयता के दर्शन कराये, वे बहुत कुछ आपके स्वभाव के अनुसार अप्रत्यक्ष थे, परंतु थे बड़े सुखद ! मुझे ऐसा लगा कि बीच-बीच में स्वभाववश मैं जो असंतोष व्यक्त करता रहा, वह अनुचित था। आशा है, क्षमा करेंगे।

मैं तो प्रेम का भूखा हूं। आप बड़े भाई हैं। स्नेह और विश्वास रखें तो मुझे तो सुख-ही-सुख मिले। आपसे मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

आ. जानकीबहन को मेरा प्रणाम लिखें। भाई दामोदरजी के प्रेमपूर्ण व्यवहार की भी इस बार खूब स्मृति है !

अन्य समाचार भाई राधाकृष्ण कहेंगे ही।

विनीत,
रामनारायण चौधरी

: ५९ :

बंबई, २०-१२-३१

प्रिय घीसूलालजी,[1]

मेरी बंबई की दुकानवालों ने आप पर नालिश करके डिग्री करवा ली। इस वजह से आपको दुख व नाराजी हुई है, ऐसा आपकी बातचीत से भी मालूम हुआ था व श्री हरिभाऊजी तथा रामनारायणजी के पत्रों से भी। हाल में इस संबंध में पू० काकासाहब कालेलकर का भी पत्र मुझे मिला है। इनसब बातों का विचार करके मैं यह पत्र आपको लिख रहा हूं। जो डिग्री आप पर हुई है उसका अमल न करने को मैंने दुकानवालों को कह दिया है और इस पत्र द्वारा आपको भी लिख देता हूं कि अब आपकी इच्छा व आपको जिस प्रकार संतोष हो उस प्रकार आप रकम देना चाहें तो देवें, अथवा जब व जिस प्रकार देने में सुविधा समझें वैसा करें। मेरी ओर से अब रकम वसूल करने की कार्रवाई नहीं की जावेगी। आशा है, आपके मन में जो दुख व नाराजी हुई हो उसे भूलकर पूर्ववत प्रेम बनाये रखेंगे व सार्वजनिक काम में इस आपसी व्यवहार के कारण जो हानि पहुंची, वैसी भविष्य में न पैदा हो उसका पूरा खयाल रखेंगे। और ज्यादा खुलासा कोई समय समक्ष में मिलना होगा तब हो जायगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ६० :

वर्धा, ८-२-२६

श्री नारायणसिंहजी,

आपका पत्र ता. ४ का मिला। उत्तर में आपको निम्नलिखित तार कर दिया है : "आपका पत्र मिला। कोई निश्चित कदम न उठावें। पत्र की प्रतीक्षा करें।" आपने लिखा है उससे मैं संपूर्ण सहमत हूं। राज्य के साथ पूरी सफाई कर लेना आवश्यक है। परंतु मेरी

[1] श्री घीसूलालजी जाजोदिया श्रीमती जानकीदेवी बजाज के भतीजे ब्यावर कांग्रेस के प्रमख कार्यकर्ता थे।

राय में यह मामला कुछ गंभीर है और आपको निपटाने के लिए मेरी हाजरी की वहां जरूरत है कि जिससे भविष्य में राज्य के साथ गैरसमझ का कारण न रहे। मेरे प्रोग्राम के मुताबिक मुझे यहां कुछ दिन रहना होगा, उसके बाद २१ तारीख को साबरमती में 'सस्ता साहित्य मंडल' की सभा रखी है और उसके बाद २८ तारीख को चि. कमला का ब्याह है। इन कामों की वजह से मार्च के प्रथम सप्ताह के पहले मेरा आना असंभव-सा दिखाई देता है। मार्च की १५ तारीख को मारवाड़ी अग्रवाल महासभा का अधिवेशन दिल्ली में होनेवाला है, वहां जाने के आगे मैं सीकर आने की कोशिश करूंगा। अतएव मेरी आपसे यह सलाह है कि तबतक आप कैसा भी निभा लें और राज्य के लड़कों को पृथक न करें। मैं वहां आके राज्य से साफ बातचीत कर लूंगा और अगर बोर्डिंग वहां से उठाना मुनासिब मालूम हुआ तो कहां ले जाना, इस बात का भी उसी समय विचार कर लिया जायगा। पत्रोत्तर देंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ६१ :

बंबई २४-४-२६

श्री नारायणसिंहजी,

पत्र आपका ता. २३ का मिला। राज से ८०) रुपये कमती क्यों मिले सो समझ में नहीं आता। आप पत्र लिखके इंतजाम करवा लेंगे।

सीनीयर अफसर को देखकर संतोष हुआ, यह खुशी की बात है। मेरे पर उनका असर अच्छा पड़ा है। मेरी राय में आप भी अगर उनसे मिलने-जुलने का व्यवहार रखेंगे तो फायदा ही होगा।

अंत्यजों के बारे में मैं श्री रणविजयसिंहजी को लिखूंगा।

ज्ञानसिंह अभी भले करौली चला जाय। उसके स्थान पर दूसरा कोई आदमी आपने देखा है क्या ?

शिक्षा-मंडल के बारे में श्री बेणीप्रसादजी से बातचीत करने का विचार

है। उनसे यह काम हो सकेगा कि नहीं इस बारे में मुझे शंका है। अतएव आप अभी यकायकी जाने का विचार न करें।

मिश्रजी के बारे में जो अफवाह है सो मुझे विश्वसनीय नहीं मालूम होती। तथापि आप पूरी जांच करवा लेंगे और मुझे लिखेंगे।

पू. महात्माजी का मसूरी जाने का स्थगित हुआ, यह तो आपको मालूम हुआ होगा। चि. आनंद किशोर २–३ रोज में सीकर आनेवाला है। यहां से फतेहपुर जावेगा। चि. गुलाब मेरे साथ है। बोर्डिग के बच्चे याद आया करते हैं।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम

: ६२ :

अजमेर, २८-२-३६

श्रद्धेय सेठजी,

सादर वंदेमातरम्। आपका कृपापत्र मिला। मुझे खेद है कि मैं आपके दर्शन नहीं कर सका।

मेरी इच्छा है कि अजमेर से एक पत्र निकाला जाय; क्योंकि अब यहां से कोई भी पत्र नहीं निकल रहा है और राजपूतों की दशा दिन-पर-दिन दयनीय होती जा रही है। इसलिए विचार तो जातीय पत्र निकालने का कर रहा हूं; पर राजपूतों का जातीय पत्र कठिनता से चल सकेगा। इसलिए सार्वजनिक साप्ताहिक ही अच्छा रहेगा। मैं सब कार्य आपसे परामर्श करके किया करता हूं, इसलिए आपकी सलाह चाहता हूं।

आपने सीकर से बोर्डिग हटा लिया। वह फंड तो राजपूतों के लिए था। वह किस कार्य में लगाया गया है? उस फंड का रुपया तो राजपूतों की शिक्षा में ही खर्च होना चाहिए। क्या आप अजमेर में एक राजपूत बोर्डिग के लिए उसमें से कुछ दे सकेंगे। यहांपर एक बोर्डिग पहले था। किंतु राजपूत महासभा टूटने से वह भी बंद हो गया। यहां बोर्डिग की बड़ी भारी जरूरत है। यहांपर मेओ कालेज के पास गोल्फ ग्राउंड और मिलिटरी कैंपिंग ग्राउंड के बीच राजपूत महासभा की जमीन पड़ी है, जो उसने बोर्डिग हाउस बनाने के लिए ५०००) रुपये में खरीदी थी। पर वह अब वैसे ही

पड़ी है। यह सब विचार है। अब आप ही सलाह दें कि मैं क्या करूं। यहां मेरा जी नहीं लग रहा है। कृपया उत्तर दीजिएगा।

विनीत,
नारायणसिंह

: ६३ :

अजमेर, २७-४-४०

मान्यवर सेठजी,

सादर वंदे। मैं इत्तिफाक से इस वर्ष अजमेर-मारवाड़ प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का सभापति चुन लिया गया हूं। पिछली प्रदर्शनी के समय मुझे आपके अजमेर आने की सूचना नहीं मिली, इसलिए मैं उस समय आपसे मिलने न आ सका। यहां आने पर मुझे ज्ञात हुआ कि आपने यहां के स्थानीय कार्य-कर्त्ताओं से जो बातचीत की उससे लोगों को यह आशा होने लगी है कि आप अब प्रांतीय कांग्रेस के कामों में पूरी दिलचस्पी लेंगे, यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इस वर्ष मुझे आपकी रहनुमाई और सहायता की अत्यंत आवश्यकता है। कृपया लिखें कि आप जयपुर कबतक ठहरेंगे।

भवदीय,
त्रिलोकचंद माथुर

: ६४ :

अजमेर, माघ कृष्ण ७।९२
(जनवरी, ३६)

माननीय भाईजी,

सादर वंदे। आपका ३०-१२-३५ का कृपापत्र मुझे मिल गया था। किंतु उत्तर में दो सप्ताह का विलंब हुआ।

अजमेर से दैनिक पत्र निकालने के विचार से मैं आपको सहमत नहीं कर सका, इसका मुझे दुःख है। जिस शुद्ध सेवा-भाव से प्रेरित होकर मैंने इस प्रस्ताव को उठाया था, उससे मुझे इस बात की कल्पना न थी कि जिनके शुभ आशीर्वाद और सक्रिय सहानुभूति के बल पर मैं इस काम को खड़ा करना

चाहता हूं, उन्हें इसका इतना प्रबल विरोधी पाऊंगा। यह तो मैं पहले से ही जनता था कि समाचारपत्रों की ओर से आपकी रुचि दिन-पर-दिन घटती जाती है किंतु जहां किसी प्रभावशाली एवं उपयोगी पत्र का सर्वथा अभाव है वहां भी आप उसी विचारसरणि से काम लेंगे, यह आशंका न थी। यहां से पत्र निकालने की उपयोगिता से तो आपको इंकार नहीं है, केवल सफलता में संदेह है, और संदेह का कारण है हिंदी के अन्य दैनिक पत्रों की आंतरिक स्थिति से आपका परिचित होना। मैंने यह कभी नहीं कहा कि यहां से पत्र निकलते ही सफल हो जायंगे। हिंदी के दैनिक पत्रों के संबंध में आपका जितना अनुभव है, मैं अपनेको इतना अनुभवी होने का दावा नहीं करता। किंतु जब से दैनिक निकालने का विचार हुआ, मैंने उस दिशा में अध्ययन करने का प्रयत्न किया है।

आरंभ से ही दो बातों का विचार मैंने रखा है। एक तो यह कि पर्याप्त पूंजी के बिना पत्र आरंभ न किया जाय और दूसरे यह कि अपने-आपको उसके लिए मुख्य जिम्मेवार बनाया जाय। इतनी बड़ी रकम लगाने के लिए यदि एक आदमी पर भरोसा न हो तो एक प्राइवेट ट्रस्ट भले ही बना दिया जाय, लेकिन उसके लिए प्रधान जिम्मेवारी एक ही आदमी की रहे। यह हो जाने के बाद, फिर सफलता के लिए आवश्यकता होती है पत्र के प्रचार की, उसके लिए विज्ञापनों की और प्रेस के लिए पर्याप्त काम की जिससे कि वह खाली न रहे। सो, यदि पत्र का संपादन अच्छी तरह हुआ और प्रांत के हित की दृष्टि से हुआ तो ईश्वर की कृपा से प्रचार की कमी न रहेगी—सारा राजपूताना और मध्य भारत सूना पड़ा है और यहां के निवासी सारे देशभर में फैले हुए हैं। राजपूताना तथा मध्य भारत का एकमात्र दैनिक होने से विज्ञापनों की भी कमी न रहेगी। यह केवल कल्पना नहीं है, अनेक मित्रों से इसके लिए बातचीत करने के बाद ऐसी आशा की गई है। इसी प्रकार प्रेस को भी काम की कमी न रहेगी। निर्भीक रहते हुए आरंभ में माडरेट नीति से काम चलाया जा सकता है। रचनात्मक काम के लिए उग्रनीति की अधिक आवश्यकता नहीं होती। कार्य आरंभ करने और उसे जमाने के

लिए माडरेट नीति की भी उपयोगिता होती ही है। इतना होने पर भी यदि सफलता न मिले तो दुर्भाग्य ही समझना चाहिए। किंतु उस दशा में मिली हुई असफलता भी, उस समय तक हो चुकनेवाले काम की दृष्टि से महंगी न पड़ेगी। प्रत्येक राष्ट्र में स्वतंत्रता का संग्राम अंतिम महान विजय से पहले असफलताओं की शृंखला ही रहा है। कई बार ऐसा भी होता है कि कहीं भी किसी काम में बड़े-बड़े आदमियों को सफलता नहीं मिलती, किंतु छोटे आदमी उसे पूरा कर ले जाते हैं। क्या आश्चर्य है कि दूसरों के अनुभव से लाभ उठाकर यहां कोई काम खड़ा किया जाय और काफी सावधानी रखी जाय तो दूसरी जगह सफलता न मिलने पर भी यहां सफलता मिल जाय। मुझे तो सब दृष्टियों से विचार करने पर असफलता का कोई भय नहीं होता। स्वर्गीय गणेशशंकरजी से जब-जब बातचीत हुई वह बराबर यही कहते रहते थे कि पत्र की सफलता के लिए जहां उत्तरदायित्वपूर्ण संपादन की आवश्यकता है, तउनी ही अधिक आवश्यकता प्रबंध में सुव्यवस्था की है। इस बात को मैं बराबर अनुभव करता आ रहा हूं। इसीलिए यदि आपकी कृपा हो गई और आपके आशीर्वाद से काम आरंभ हो सका तो मैं प्रबंध के संबंध में इस बात का पूरा ध्यान रखूंगा।

स्थानीय मित्रों में उत्साह है अवश्य, किंतु आपकी सहानुभूति और आशीर्वाद के बिना यह सब पंगु है। मैं निराश नहीं हूं, यह बात अवश्य है। आप व्यवहार-कुशल व्यक्ति हैं, अतः जबतक कोई बात व्यवहार में सफलता-पूर्वक परिणत न हो, केवल कल्पना के आधार पर इस संबंध में अपना मत परिवर्तन न करेंगे। यह स्वाभाविक ही है, किंतु जैसाकि मैंने पहले ही लिखा था, कई बार कई बातों में अपना मतभेद होते हुए भी परिस्थितिवश उसमें सहायक बनना ही पड़ता है। अपने जीवन में अनेक ऐसे परीक्षण आपको करने पड़े होंगे, जिनमें आरंभ में तो आशा रही होगी किंतु पीछे असफलता का मुकाबला हुआ होगा। एक परीक्षण यह और सही। इसमें आरंभ से ही आपको आशा नहीं है, अतः यदि आगे चलकर असफलता ही पल्ले पड़ी तो आपके चित्त को अशांति न होगी, क्योंकि आप तो परिणाम पहले ही सोचे बैठे

हैं। किंतु इसके विपरीत यदि ईश्वर-कृपा से सफलता मिल गई, जोकि सर्वथा असंभव तो नहीं है, तो आपको सहज ही संतोष होगा।

इससे अधिक और क्या निवेदन करूं ?

विनीत,
शंकरलाल वर्मा

: ६५ :

अजमेर, १२-८-३८

प्रिय सेठसाहब,

आपका श्री चुडगर को लिखा हुआ पत्र यहां मेरी गैरहाजिरी में मिला। मैं राजकोट श्री चुडगर से मिलने गया था, वहां से हम दोनों दो-चार दिन के लिए बंबई गये और मैं वहां से कल वापस आया। श्री चुडगर राजकोट वापस गये, जहां वे इस महीने के अंत तक रहेंगे।

आपका पत्र मैंने उन्हें राजकोट भेज दिया है।

सीकर की स्थिति वैसी ही है जैसी आप देखकर गये थे और उसमें कोई सुधार नहीं हुआ है। छोटे सरकारी नौकर, खासकर सीकरवाले सभी विभागों में दबाये जा रहे हैं और रोज-बरोज के कामों में भी उन्हें तकलीफें दी जा रही हैं। कई महीनों से उनकी तनख्वाहें अभीतक नहीं दी गई हैं और वे सभी बड़ी आर्थिक तंगी में है।

कैप्टेन वेब गये पखवारे में दो बार सीकर जा चुके हैं और हर बार वहां तीन-तीन दिन ठहरे हैं। और वे वहां सीकर के विरुद्ध जयपुर-केस के लिए सामग्री जमा करने में लगे रहे हैं। यह भी खबर है कि उन्होंने सीकर से फाइलें और कागजात हटाकर जयपुर पहुंचा दिये हैं। इस तरह वास्तव में सीकर की नौकरी में काम करनेवाले अधिकारी ही सीकर के विरुद्ध केस तैयार करने में लगे हैं और जयपुर के अधिकारी सीकर के दफ्तरों का उपयोग खुले रूप में कर रहे हैं।

अभी तक कमीशन ने अपना काम शुरू नहीं किया है। सीकर का केस कमीशन के पास भेजा गया है; पर जयपुर का बयान अभी तक नहीं मिला

है। जब वह मिल जायगा तो कमीशन अपनी कार्रवाई शुरू करेगा और दोनों पक्षों की गवाहियां लेकर उन्हें दर्ज करेगा।

गिरफ्तार व्यक्तियों पर अभी तक आरोप नहीं लगाया गया है और कहा जाता है कि उनमें से कुछका उसी १७ तारीख को चालान दाखिल किया जायगा।

सुना गया है कि बंबई के लोग इस मामले में सफाई-पक्ष की मदद करने के लिए कुछ कर रहे हैं; पर वे अभी तक क्या कर पाये हैं, इसका पता नहीं लगा। उस समय आम रिहाई की बड़ी जरूरत है और गिरफ्तारों को छोड़ने तथा रावराजा के विरुद्ध निषेधाज्ञा उठाने की आवश्यकता है।

यह जानकर संतोष हुआ कि आप जनता को राहत पहुंचाने का पूरा प्रयत्न कर रहे हैं और मेरा विश्वास है कि आपकी कोशिशें कामयाब होंगी।

आदर के साथ।[1]

आपका विनीत,
महेशचंद्र शर्मा

: ६६ :

अजमेर, ३०-८-३८

प्रिय सेठसाहब,

आपके २४ तारीख के पत्र के लिए कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद।

मुझे खुशी है कि अब भी आप उस मामले में उसी उत्सुकता के साथ दिलचस्पी से लगे हुए हैं और मुझे निश्चय है कि भगवान आपके प्रयत्नों को सफल करेंगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि जनता के प्रबल आंदोलन के कारण सीकर के कुछ अधिकारियों के बर्ताव के विरुद्ध जयपुर उनके खिलाफ घूसखोरी,

[1] अंग्रेजी से अनूदित।

भ्रष्टाचार की जांच कर रहा है। लोग गवाहियों और प्रमाणों के साथ आगे आ रहे हैं। चुंगी और महकमें जकात के सुपरिंटेंडेंट के विरुद्ध जांच समाप्त हो चुकी है और उसके संबंध में अधिकारियों ने इस्तीफे दे दिये हैं; लेकिन यह अजीब बात है कि उनके इस्तीफे चुपचाप मंजूर कर लिये गये हैं और उन्हें उनके कुकर्मों के लिए कोई सजा न देकर योंही जाने दिया जा रहा है। एग्जीक्यूटिव इंजीनियर के खिलाफ अभी तक जांच हो रही है।

जयपुर-अधिकारियों को आरोपों की सचाई पर विश्वास तो हो चुका है; पर उनका विचार यह है कि खुली और स्वतंत्र जांच नहीं कराना चाहते, क्योंकि उससे मि० वेब के शासन का पर्दाफाश हो जायगा। इससे जनता की इस मांग को बल मिल जायगा कि वेब को निकाल दिया जाना चाहिए। इससे वेब के विरुद्ध जनता का असंतोष सही साबित हो जायगा। यही कारण है कि वे उन्हें दंड दिये बिना चुपचाप चले जाने देना चाहते हैं।

वेब और बापना ने भी इस्तीफा दे दिया बताते हैं और ऐसा सुनने में आया है कि बापना सितंबर में यहां से चले जायंगे।

अदालतों के बहिष्कार की कोशिश हो रही है। लोग नये केस तो ले ही नहीं जाते पुराने को भी नहीं चलाते। बापना अभी तक अपने गढ़ के दफ्तर में हाजिर नहीं हुए हैं, क्योंकि जनता ने खुल्लमखुल्ला घोषित कर दिया है कि उनके दफ्तर में आते ही वह हड़ताल करेगी।[1]

आपका विनीत,

महेशचंद्र शर्मा

: ६७ :

अजमेर, १२-७-३८

मान्यवर सज्जन शिरोमणि प्यारे भाई जमनालालजी बजाज,

सादर सप्रेम नमस्ते। मुझे अखबारों में यह पढ़कर खुशी हुई कि आप

[1] अंग्रेजी से अनूदित

सीकर का जयपुर के साथ समझौता करवाने के लिए जयपुर पधार रहे हैं। इस कार्य में मैं आपकी हृदय से सफलता चाहता हूं। यह तो आपको ज्ञात ही है कि गत बीस वर्षों से आप और हम सब राजस्थानी कार्यकर्ता इस बात के प्रयत्न में लगे हुए हैं कि देसी राज्यों की प्रजा को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन मिले। परमात्मा की कृपा से हम सबका मनोरथ पूर्ण होने का समय आ गया है। राव राजासाहब स्वयं सीकर की प्रजा को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देवे को तैयार हैं। ऐसी दशा में जयपुर के अधिकारी इस शुभ काम में क्यों व्यर्थ के रोड़े अटकाते हैं। यदि आपने सीकर-निवासियों के लिए उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन जयपुरवालों से मनवा लिया तो सारे राजस्थान में एक नई जागृति आवेगी और देशी नरेश स्वयं ही अपनी प्रजा को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देने लगेंगे। यदि आपके मिशन में मेरी सेवा की आवश्यकता हो तो मैं सहर्ष सहायता देने को तैयार हूं। आशा है कि आप आनंद-मंगल में होंगे। यथायोग्य सेवा लिखें। कृपा-दृष्टि रखें।

आपका प्यारा भाइ,

चांदकरण शारदा

: ६८ :

वर्धा, २८-७-३८

प्रिय भाई चांदकरणजी,

आपका १२-७-३८ का पत्र मिला। आपको अखबारों से सीकर के हाल-हवाल मालूम पड़े होंगे। परंतु वर्णन एकांगी है। कई तार जयपुर-सरकार ने सेंसर कर लिये हैं। जनता का दृष्टिकोण लोगों के सामने नहीं आ पाया है। परंतु मुझे संतोष इस बात का है कि एक बार वहां शांति स्थापित हुई।

आपने लिखा कि राव राजासाहब स्वयं सीकर की प्रजा को उत्तर-दायित्वपूर्णशासन देने को तैयार हैं। मुझे भी कुछ मित्रों द्वारा यह खबर मिली है, जिससे मुझे खुशी होना स्वाभाविक ही है। अच्छा तो यह होगा कि आप राव राजासाहब से इस आशय का लिखित वक्तव्य प्राप्त कर सकें,

जिससे सीकर की जनता की कुछ सच्ची सेवा भी की जा सके और उनका स्थायी हित भी हो सके।

आपने कांग्रेस-कार्यकारिणी का सीकर के विषय का प्रस्ताव देखा ही होगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ६९ :

अजमेर, २६-९-३९

सज्जन शिरोमणि मान्यवर प्यारे भाई जमनालालजी बजाज,

सादर सप्रेम नमस्ते। जयपुर प्रजा-मंडल की जय कराकर जेल-मुक्त होने पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं। आप और मैं करीब-करीब एक ही समय जेल में गये थे। और वह भी उसी उद्देश्य से कि देशी राज्यों की प्रजा को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन और नागरिक अधिकार मिलें। मैं हैदराबाद की जेल में था और आप जयपुर-जेल में थे। दोनों ईश-कृपा से सफल हुए। आपका और मेरा सन् १९१७ से, जब आपने और हमने दिल्ली में भाई गणेशशंकरजी विद्यार्थी के सहयोग से राजपूताना-मध्यभारत-सभा स्थापित की थी, एक ही उद्देश्य चला आ रहा है और वह यह कि भारत स्वतंत्र हो और देशी राज्यों की प्रजा को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन मिले। आपको याद होगा कि नागपुर में कांग्रेस के अधिवेशन के समय इसी राजपूताना-मध्यभारत-सभा के तत्वावधान में अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य प्रजापरिषद कायम की गई थी और मैं और भाई मणिलालजी कोठारी इस अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद के जनरल सेक्रेटरी चुने गये थे। मुझे हर्ष है कि आज अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् भाई जवाहरलालजी के सभापतित्व में फल-फूल रही है और राजस्थान और मध्यभारत की प्रत्येक देशी रियासत प्रजा-मंडल बनाकर अपने अधिकार प्राप्त कर रही है और आपका तथा हमारा इतने वर्षों का उद्योग सफल होता दृष्टिगोचर हो रहा है।

आपका,

चांदकरण शारदा

: ७० :

जोधपुर, २८-२-२६

प्रियवर मान्यवरजी,

नमस्ते। मैं रात ९ बजे दिल्ली से आया। तब आपका पोस्टकार्ड मिला। बड़ा हर्ष हुआ। विवाह आज ही होगा। मेरा आना नहीं हो सकता। खेद है। यह आनंद का अवसर था, इस शुभ अवसर पर आने की श्रद्धा तो बहुत थी परंतु बन नहीं सकता। समय नहीं रहा। महात्माजी महाराज के दर्शन भी हो जाते। मेरी धर्म-पत्नी की भी इच्छा थी। दो दिन पहले मुझे मालूम हो जाता तो सीधा दिल्ली से साबरमती चला जाता। दो दिन के लिए जरूर आ जाता। आपके दर्शन से मुझे बहुत आनंद होता है। ऐसे पवित्रात्मा के दर्शन व समागम से आनंद व सुख होता ही है। दिल को शांति होती है। विवाह आनंद से हुआ होगा। मेरी परमात्मा से प्रार्थना है कि बाई कमला बहन के पति को चिरायु करे व आनंद प्राप्त हो।

मैं ४ मार्च के दिल्ली पीछे जाऊंगा और १४-१५ दिन ठहरूंगा। सुना है कि आप भी १० ता० को पधारेंगे। अग्रवाल-महासभा की बैठक होगी तो दर्शन करूंगा।

मेरा और मेरी धर्म-पत्नी का सविनय नमस्ते सेठाणीजी की सेवा में अर्ज करा दें।

आपका,

हरविलास शारदा

: ७१ :

जोधपुर, २७-८-२६

श्रीमान जमनालालजी साहब,

सविनय नमस्ते। आपने मुझे सीकर के लिए कहा था। एक सज्जन मेरी नजर में आये हैं, जो पूरे ईमानदार और नेक हैं। वे अभी करौली रियासत में दीवान हैं। उनका नाम रायसाहिब पंडित शंकरनाथजी है। इनपर पोलिटिकल अफसरों की भी मेहरबानी है और यह सीकर में पूरी

कामयाबी से काम कर सकेंगे। बहुत ही खुशाल और योग्य हैं। आप चाहें तो आपसे या दरबार से मिल लेंगे। मेरी राय में दूसरा आदमी ऐसा नहीं मिलेगा। हर तरह अच्छे हैं। आपका उत्तर आने पर मैं उनको लिखूंगा। तनख्वाह का कुछ मामला नहीं होगा। आप मुझे कृपाकर जल्द उत्तर दें।

उत्तर जोधपुर जज चीफ कोर्ट के पते से दें। वंदेमातरम्।

आपका,

हरविलास शारदा

: ७२ :

बंबई, १९-६-३१

प्रिय श्री हरविलासजी साहब,

मुझे श्री हरिभाऊजी से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने बिजौलिया के मामले में अच्छी दिलचस्पी ली है। आपको तो मालूम है कि देशी राज्यों के संबंध में हम लोगों की, पू० महात्माजी की और कांग्रेस की क्या नीति है। इस समय तो जबकि महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्नों पर नरेशों के और सीकर के साथ नाजुक बातचीत हो रही है, इस प्रकार का पारस्परिक संघर्ष और भी अवांछनीय है। इसीलिए महात्माजी ने और मैंने श्री हरिभाऊजी को सलाह दी है कि वे सत्याग्रह स्थगित रखें। इस बीच हमारा प्रयत्न है कि समझौते का कोई रास्ता निकल आवे, परंतु मेरे मार्ग में एक रुकावट आ पड़ी है। वह इस तरह की है कि यों तो पं० सुखदेवजीप्रसाद पुराने और समझदार आदमी हैं, मेरे परिचित भी हैं और जोधपुर में उनका मेरे प्रति आदरपूर्ण व्यवहार रहा था। परंतु इस बार बिजौलिया के संबंध में मैंने उन्हें पत्र और तार दिया था, उसका उत्तर भी उन्होंने नहीं दिया। बीच का मार्ग निकालने का और भी प्रयत्न किया गया; परंतु अभी कोई सूरत नहीं निकली है। वैसे मामला छोटा-सा है, परंतु बहुत बढ़ गया है। वह प्रत्यक्ष मिलने से सुलझ सकता है।

मैं चाहता हूं कि आप इस मामले में अधिक दिलचस्पी लें और दो-चार दिन इसके लिए निकालने की सुविधा कर लें। या तो आप अकेले

पहले उदयपुर जाकर सर सुखदेवप्रसादजी से मिल लें और मुझे बुला ल अथवा आप और मैं अजमेर से वहां साथ-साथ चलें, या आप और मैं सीधा उदयपुर पहुंचूं। जैसी आपकी राय हो, मुझे पत्र मिलते ही तार से सूचित करें। आपको बिजौलिया के बारे में हालात तो मालूम होंगे ही।

यह कष्ट मैंने आपको इसलिए भी दिया है कि आपने कई बार ऐसी इच्छा प्रदर्शित की थी कि आपसे सहायता ली जावे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ७३ :

अजमेर, २५-६-३१

प्रियवर श्री जमनालालजी साहब,

नमस्ते। आपका पत्र १९-६-३१ का मिला। मैंने उसी समय उदयपुर चिट्ठी लिख दी; परंतु अभी कोई उत्तर तो नहीं आया। मैं पूरा भरोसा करता हूं कि आप पधारेंगे तो श्रीयुत सर सुखदेवप्रसादजी साहब आपसे प्रेम से मिलेंगे और अच्छी तरह बातचीत हो जावेगी और कार्य भी सफलता से हो जायगा। मैं परसों शिमला जा रहा हूं—रिट्रेंचमेंट कमेटी में। मुझे आपकी इच्छानुसार कार्य करने में कोई उज्र नहीं है, परंतु आपका ही वहां जाना ठीक है। उनका एक पत्र कल आया था। यह पत्र मेरे उनको पत्र लिखने के पहले का लिखा हुआ था। इसमें भी आपके निस्बत कुछ प्रेमभाव ही था। आप पधारें। मैंने सविस्तर हाल लिख दिया है।

आपके दर्शन कहीं होंगे ?

आपका कृपाभिलाषी,
हरविलास शारदा

: ७४ :

१२-२-३६

प्रिय श्री जमनालालजी साहब,

नमस्ते। आपका पत्र आज मिला। आपने लिखा कि अजमेर नहीं

ठहरेंगे, सीधे सीकर जावेंगे। मेरा स्वास्थ्य अभी ऐसा नहीं है कि आपसे आकर स्टेशन पर मिलूं। कुछ-कुछ चलता-फिरता हूं। आपके दर्शन बहुत दिनों से नहीं हुए। इच्छा बहुत है। वापसी के समय सूचना दें तो ठीक है। मेरा इरादा २५ ता० को एक हफ्ते के लिए बंबई जाने का है; जो बन गया तो जाऊंगा। वरना यहीं हूं। आप खबर देंगे।

आपका दर्शनाभिलाषी,

हरविलास शारदा

: ७५ :

मेवाड़, १९३९

प्रिय श्री हरविलासजी,

मेवाड़ में इन दिनों जो सत्याग्रह चल रहा है उसका हाल आपको मालूम होता ही रहता होगा। किसीको भी यह गुमान नहीं हो सकता था कि मेवाड़ में प्रजा-मंडल के अस्तित्व को बरदाश्त नहीं किया जायगा। राजकोट में जो लड़ाई प्रजा-मंडल को लड़नी पड़ी या जयपुर में जैसी लड़ाई आती हुई दीखती है, उसका मुख्य कारण तो यह है कि वहां सारा शासन अंग्रेजों के हाथ में है; परंतु जहां हिंदुस्तानियों के हाथ में शासन-सूत्र है वहां यदि लोगों को उनके खिलाफ लड़ना पड़े तो उसे देखकर हम लोगों को बड़ा दुख होता है।

मेवाड़ के कार्यकर्ताओं से मेरा पहले का संपर्क और परिचय है और श्री धर्मनारायणजी से भी थोड़ा संबंध मेरा आया है। उनके स्वर्गीय पिता सर सुखदेवप्रसादजी से तो मेरा खूब परिचय हो गया था, जिसकी शुरुआत आप ही के द्वारा हुई थी। और यदि वह आज होते तो मैं उनसे मिलकर इस मामले को जल्दी निबटा लेने की आशा रखता था। यों तो श्री धर्मनारायणजी को भी मैंने एक-दो पत्र लिखे हैं; परंतु कहीं मिलने का मौका नहीं आया, जिससे मैं उन्हें अपनी सब बातें विस्तार से समझा पाता। अब तो जयपुर-सरकार के द्वारा मुझपर जयपुर-राज्य में आने की रोक लगा देने के कारण मेरा अपना सारा ध्यान जयपुर की तरफ लग रहा है। इससे पं० धर्म-

नारायणजी से मिलने का अवसर और भी कम आता दीखता है। अतएव इस मामले में अब आपकी मदद की जरूरत है। मैं चाहता हूं कि आप जल्द ही मौका निकालकर कहीं किसी जगह पं. धर्मनारायणजी से मिलें और समझावें कि इतनी मामूली बात पर वहां लड़ाई होने देना किसी तरह मुनासिब नहीं है। जबकि बाज-बाज रियासतों में उत्तरदायी शासन की मांगें पूरी की जा रही हैं और प्रजा-मंडल तो बीसियों रियासतों में—राजपूताना और मध्य-भारत की भी कई रियासतों में—धड़ल्ले से काम कर रहे हैं, तब मेवाड में प्रजा-मंडल पर रुकावट रहना किसी तरह राज्य को शोभा नहीं देता। हम लोग चाहते हैं कि राज्य इस बदनामी से बचे और मेवाड़ के कार्यकर्ताओं की शक्तियां लड़ाई से हटकर रचनात्मक कामों में लगें। जिन रियासतों में हिंदुस्तानी अधिकारी हैं वहां तो कोई लड़ाई का मौका आना ही न चाहिए। कांग्रेस और खासकर महात्माजी का भाव तो देशी राज्यों के प्रति मित्रता का ही है। इसलिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि मेवाड़-जैसी रियासत में लड़ाई का कोई कारण न रहने दिया जाय। चूंकि आपका संबंध भी स्व० सर सुखदेवप्रसादजी से बहुत था और धर्मनारायणजी से भी होगा ही—इसलिए मैंने खास तौर पर आपको तकलीफ दी है। जयपुर-राज्य में ऐसी परिस्थिति पैदा हो रही है कि शायद मैं थोड़े ही दिन बाहर रह सकूं। अतएव इस विषय में आपकी कोशिशों का नतीजा यदि मुझे जल्दी ही मालूम हो जाय तो अच्छा।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

मध्य भारत

(इंदौर)

: ७६ :

इंदौर २०–१०–३९

श्रीमान सेठ जमनालालजी बजाज,

सादर वंदेमातरम्। स्थानीय खादी-भंडार में पू. महात्मा गांधी की ७१वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में इस वर्ष गांधी-मास तारीख १० सितंबर से १० अक्तूबर १९३९ तक मनाया। उसमें होल्कर राज्य प्रजा-संघ ने भी अपना हाथ बंटाकर पूर्ण सहयोग दिया। सर्वप्रथम इस संघ ने १० सितंबर से १७ सितं-बर तक गांधी-सप्ताह मनाया, जिसमें प्रभात-फेरी, खादी-फेरी, आम सभा और हुंडियों की बिक्री की। इस सप्ताह में हुंडियां और खादी करीब ५०० से अधिक की बिकीं। पश्चात् श्रीमंत होल्कर नरेश का जन्मदिन इसी मास में २४ सितंबर को आ जाने से, चूंकि उन्हें स्वदेशी से प्रेम है, अतएव उसके उपलक्ष में ५ अक्तूबर से ११ अक्तूबर १९३९ तक खादी-प्रर्दाशनी करने का संघ ने निश्चय किया। जनता का विशेष आग्रह रहने पर प्रर्दाशनी का समय बाद में ४ दिन और बढ़ा दिया गया था। बरसात के भय से रक्षा पाने तथा खर्च की बचत की गरज से प्रदर्शनी स्थानीय टाउनहाल में की थी। प्रर्दाशनी के खास-खास कार्यों में होल्कर सरकार से सहयोग और सहायताएं यथासमय प्राप्त हुई। प्रर्दाशनी का उद्घाटन श्रीमान एम. एम. रशीद खां साहब, गृहसचिव होल्कर स्टेट, के हाथों कराया गया था। श्री रशीदसाहब ने अपने भाषण में गृह-उद्योग को होल्कर सरकार द्वारा अधिक उत्तेजन देने की नीति रखने का आश्वासन दिया। राज्य के प्रधानमंत्री तथा अन्य मंत्री एवं उच्चाधिकारियों ने प्रर्दाशनी में पधारकर खादी खरीदी। नगर के प्रतिष्ठित सेठ-साहूकारों ने भी अपना पूर्ण योग दिया। प्रर्दाशनी में बिकी खादी में सबसे अधिक खरीदी श्रीमान रा. ब. राज्य-भूषण सेठ हीरालालजी साहब ने की,

जिनसे आप परिचित हैं ही। आपने गांधी-मास के प्रथम सप्ताह भर तो शुद्ध खादी ही पहनने का एहद किया था। इतना ही नहीं आपने मोटर में घूम-घूमकर खादी फेरी की तथा हुंडियां भी बेचीं।

खादी-प्रदर्शिनी में करीब ७५ हजार जनता ने आकर भाग लिया, जिसमें स्त्रियों की संख्या भी काफी रही। ९-१०-३९ को खास महिला-दिवस रखा था। उस दिन ५००) से अधिक की बिक्री हुई और स्त्रियों की भीड़ भी काफी रही। स्त्रियों की आम सभा भी उसी दिन की गई जिसमें सौ. मंजुलाबाई वागले बी. ए. के नेतृत्व में सौ. कमलाबाई सा. किबे का 'खादी के महत्व' पर समयानुकूल रोचक एवं प्रभावशाली भाषण हुआ।

इस खादी-प्रदर्शिनी में ४९३२-४-६ की खादी बिकी। प्रदर्शिनी में स्थानीय खादी-भंडार की तथा दोगांव-ग्राम (होल्कर स्टेट) की ऊनी, सूती, रेशम खादी रखी, गई थी। प्रदर्शिनी के समय भीलाश्रम पांच पिपल्या (होल्कर स्टेट) के बालकों की कताई, बुनाई, धुनाई आदि के प्रयोग भी रोचक रूप से दिखाये गये। साथ ही आदर्श भीलाश्रम निमखेड़ा (धार स्टेट) के बने हुए शुद्ध कागज के लिफाफे और ब्लाटिंग पेपर भी रखे गये थे, जो जनता द्वारा खूब पसंद किये गये। इस प्रकार दरिद्रनारायण की पूजा का संदेश इंदौर के प्रत्येक नागरिक के घर पर पहुंचाया गया है।

जनता व सरकार के सहयोग से संघ की आयोजित प्रदर्शिनी सफल हुई। आपकी कृपा से भविष्य में संघ जनहितार्थ विशेष सेवा करे—ऐसा आदेश प्रदान करें, यही नम्र निवेदन है।

अ. भा. च. संघ द्वारा प्रमाणित खादी की आयात पर सरकार में की जानेवाली चुंगी की माफी मिलने के लिए श्री होल्कर राज्य प्रजा संघ भरसक प्रयत्न कर रहा है और उसमें सफलता पाने के हेतु आपकी सहानुभूतिपूर्ण सहायता की आशा करता है? इति शुभम्।

भवदीय विनीत

भाई कोतवाल

: ७७ :

वर्धा, २०-११-३७

प्रिय श्री जड़ियाजी,

वंदे। आपका पत्र तथा साथ के कागजात मिले। इंदौर राज्य में प्रजा-मंडल बन गया है, यह जानकर संतोष हुआ। यदि जिम्मेदारी और समझदारी के साथ काम किया गया तो प्रजा-मंडल की प्रगति होने में संदेह नहीं है।

प्रजा-मंडल ने सभा-बंदी के कानून की पाबंदी हटाने का आंदोलन उठाया है। यह आपके पत्र से मालूम हुआ। मेरी राय में किसी भी सुव्यवस्थित और प्रगतिशील राज्य का यह लक्षण है कि वहां जनता को प्रारम्भिक अधिकार प्राप्त हों। सभा करने की स्वतंत्रता जनता और नागरिकों का प्राथमिक अधिकार है। यह सचमुच दुख की बात है कि इंदौर में अभी तक सभा-बंदी-कानून की जरूरत समझी जा रही है। तमाम इंदौरवासियों का यह कर्तव्य है कि ऐसी स्थिति पैदा करें जिससे यह कानून हट जाय। यह इंदौरवासियों के ही सहयोग से हो सकता है। बाहरी लोगों की सहायता इसमें बहुत उपयोगी साबित न होगी।

इंदौर को मैं एक प्रगतिशील राज्य मानता हूं और मुझे आशा है कि वहां के प्रगति-प्रिय नरेश और प्रधान-गण जनता की मांग पर यथोचित ध्यान देंगे। श्रीमंत इंदौर-नरेश हाल ही में स्वतंत्र देशों की यात्रा करके आये हैं और उन्हें जनता की इस मांग के औचित्य को समझने में देर न लगेगी।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ७८ :

इंदौर ११-५-४१

पूज्य श्री भाईजी,

सा. प्रणाम। कल बंबई के पते पर आपको एक तार दिया था और आज भी उसी पते पर एक पत्र दिया है। हम लोगों ने पहले तो राजकुमारीजी

(अमृतकौर) से विनती की थी कि वे हमारी परिषद् का उद्घाटन करें। परंतु उन्हें और पू. बापूजी को लगा कि यहां की धूप शायद उन्हें बर्दाश्त न होगी। उनकी तंदुरुस्ती भी कुछ कमजोर ही रहा करती है। अतः पू. बापू ने सुझाया कि हम लोग आपसे विनती करें। तदनुसार आपके लिए पहले राज्य से इजाजत ली और उसके मिलने पर आपको कल ही तार दिया।

इस समय आपका इंदौर आना बड़ा मददगार हो सकता है। मैं परिस्थिति नीचे लिखता हूं। पिछले वर्ष की हड़ताल के समय से राज्याधिकारी और लोक-सेवकों के आपसी ताल्लुकात में बड़ा फर्क आ गया है। उसी समय यहां के मंत्रिमंडल में भी परिवर्तन हुआ। कई कारणों से वह इंदौर में स्वागत योग्य चीज नहीं समझी गई। राज्य में और अखबारों में उसके खिलाफ काफी प्रचार हुआ। इससे मंत्रिमंडल चिढ़ा। उसे लगा कि इस सब प्रचार की जड़ में प्रजा-मण्डल है। अतः उन्होंने एक तरफ प्रजा-मंडल को दबाना शुरू किया और दूसरी तरफ स्थानीय सेठ-साहूकार और जागीरदारों को बगल में लेकर प्रतिस्पर्धी संस्था स्थापित की। जब कटुता बढ़ती गई तब आपको और राजकुमारीजी को बुलाने की कोशिश हुई। राजकुमारीजी आईं और उनके प्रयत्नों से वातावरण कुछ साफ हुआ। प्रजा-मंडल-पत्रिका भी निकलने लगी। इससे प्रजा-मंडल का जोर और विस्तार फिर बढ़ने लगा।

वैसे तो हम लोग काफी सोच-समझकर काम करना चाहते हैं, परंतु आपके आने से और भी सहायता मिलेगी। अतः जरूर आने की कृपा करें।

बैजनाथ महोदय

(ग्वालियर)

: ७९ :

बंबई २२-३-२८

श्रीमंत सरदार आंग्रे साहब,

१९ मार्च का कृपापत्र वर्धा से लौटकर यहां मिला। आपके इस प्रेमपूर्ण निमंत्रण के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं। मुझे बड़ी खुशी होती, यदि मैं

इस शुभ अवसर से लाभ उठाकर ग्वालियर आ पाता, परंतु खेद है कि मेरी बंगाल-यात्रा आगामी ५ अप्रैल से निश्चित हो चुकी है और समाचार-पत्रों में भी उसकी सूचना छप गई है। मेरे साथ अ. भा. चरखा-संघ के और भी कई सज्जन रहेंगे। अतएव उस यात्रा के रहते हुए मेरा ग्वालियर आना इस समय असंभव है। इस असमर्थता के लिए कृपया क्षमा कीजिएगा।

श्रीयुत हरिभाऊजी यहीं हैं। मेरी बातचीत उनसे हुई है। समय वास्तव में अब बहुत थोड़ा रह गया है, फिर भी उनसे हो सका तो वह यहां से तथा राजपूताने से कुछ खादी लेकर वहां आने का प्रयत्न करेंगे। आप तो हर तरह उनकी सहायता करेंगे ही।

इलाहाबादवालों को इस संबंध में लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं मालूम होती, क्योंकि हमारी प्रांत-रचना में ग्वालियर राजपूताना के अंदर माना गया है।

विशेष कृपा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ८० :

इंदौर २२-१-३६

मान्यवर भाईजी,

मैंने आपको लिखा था कि सौ. रामेश्वरी और चि. कमला दोनों के ही लिए छात्र-वृत्ति की व्यवस्था होनी चाहिए, कारण कि मैं जल्दी ही मजदूर-संघ के कार्य से अलग होनेवाला हूं। यदि बाद में दूसरा कार्य करने लगा और इनके व्यय का कुछ भार उठा सका तो मैं सहर्ष छात्र-वृत्तियों में कमी करा दूंगा। इसके उत्तर की मैंने प्रतीक्षा की, परंतु प्राप्त नहीं हुआ। अभी रामेश्वरी वर्धा नहीं आ सकेगी, क्योंकि कन्या-विद्यालय बंद हो जाने से वहां कमला न रह सकेगी, ऐसा हमारा खयाल हो गया। रामेश्वरी को अकेली जाना पसंद न आया। परंतु श्रीयुत काशीनाथजी से और श्री हरिभाऊजी से मालूम हुआ कि महिलाश्रम में लड़कियां रह सकती हैं। अतः कमला भी

जा सकती है और सौ. रामेश्वरी की व्यवस्था भी हो सकती है। कृपया छात्र-वृत्तियों के विषय में उत्तर दीजिय कि क्या व्यवस्था हो सकेगी। मुझे आशा है, आप अवश्य दोनों के लिए छात्र-वृत्तियों की व्यवस्था करने की कृपा कर देंगे।

आपका,
गोपीकृष्ण विजयवर्गीय

: ८१ :

वर्धा, २३-४-४१

श्रीमान् तख्तमलजी साहब,

आपका १४–४–४१ का कृपा-पत्र मिला। मैंने कागज के संबंध में श्री बाबू रूपनारायणजी से पत्र-व्यवहार करने के लिए कहा था; परंतु बहुत संभव है नाम लिखने में कोई गड़बड़ हो गई हो। मैंने बाबू रूपनारायणजी को लिख दिया है। वे आपको इस संबंध में पूरी जानकारी लिखेंगे। देहाती उद्योगों की उन्नति करके ग्रामीण जनता में आत्म-विश्वास निर्माण करने का कार्य आप जिस लगन से कर रहे हैं वह सराहनीय है। मुझसे और कोई सेवा इस सिलसिले में की जा सके तो मुझे खुशी होगी। पत्र दें। कृपा रखें।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

(रीवां)

: ८२ :

वर्धा, ३०-७-३८

प्रिय अवधेशप्रतापसिंहजी,

आपने सोहावल-गोलीकाण्ड के संबंध में जो बातें हम लोगों को याने मुझे, सरदार वल्लभभाई व राजेंद्रबाबू को बतलाई हैं, अगर यह सच हों तो

सचमुच वह बहुत ही भयंकर है। आप पूरी चौकसी कर अपना इतमिनान होने पर सही रिपोर्ट हम लोगों के पास भेजें ताकि इस घटना पर भली प्रकार विचार किया जा सके।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ८३ :

इलाहाबाद, ६-६-३८

सेठ जमनालालजी,

प्रणाम। आप संभवतः यह जानते ही हैं कि मैं मध्यभारत की देशी रियासत रीवां का रहनेवाला हूं और अपने राजनैतिक कामों के कारण आज १४ वर्षों से वहां से निर्वासित हूं। प्रथम १२ वर्ष तक मुझे अपने माता-पिता के दर्शन भी दुर्लभ थे किंतु इधर २ साल से वे लोग मेरे पास यहां इलाहाबाद आने-जाने लगे।

तारीख १५ मई को मेरे पिताजी का यहां स्वर्गवास हो गया। वे ८-१० दिन पहले मुझसे मिलने के लिए यहां आये थे और उसपर भी उनके अंतिम संस्कारों को उनके और अपने जन्मस्थान पर करने के लिए मुझे रीवां राज्य के अंदर आने की इजाजत नहीं मिली। बात यह है कि आज तक न तो मुझे कोई अपराध बतलाया गया और न उस हुक्म की कि जिसके द्वारा मैं निर्वासित किया गया हूं, नकल ही मिली है।

मेरे पिताजी एक बड़ी जागीर छोड़ गये हैं। मेरी माताजी की यह इच्छा है कि उनके अंत समय में मैं उनकी सेवा ही में रहूं। और इसलिए मैं यह चाहता हूं कि मैं अपनी जन्मभूमि में जाऊं और जब-जब कांग्रेस-कार्यों से फुरसत मिले, तब अपनी पूजनीया माता की सेवा भी करूं।

अब आप बतलायें कि मैं क्या करूं? मैं इस संबंध में आपसे परामर्श करने स्वयं आता किंतु तीन मास से मैं बीमार हूं और घर के बाहर निकलने के योग्य नहीं हूं। इससे यह पत्र लिख रहा हूं। अगर आज भी कांग्रेस-सेवकों पर इस प्रकार का जुल्म कोई राजा कर सके, तो यह आश्चर्य की बात है। आप इस संबंध में रीवां महाराज को पत्र लिखकर या समाचारपत्रों में अपना

स्टेटमेंट निकालकर बहुत-कुछ सहायता इस मौके पर कर सकते हैं। इसी आशा से यह पत्र सेवा में भेज रहा हूं। कृपया बतलावें कि मैं क्या करूं?

आपका,

नर्मदाप्रसादसिंह

: ८४ :

इलाहाबाद, १०-९-३८

प्रिय भाईसाहब सेठ जमनालालजी बजाज,

लगभग तीन मास हुए होंगे जब आपने मेरे संबंध में रीवां दरबार को लिखा था और उसकी प्रति मेरे पास भी भेजी थी। किंतु अबतक मैं आपकी इस कृपा के लिए धन्यवाद न दे सका। इसका कारण यह था कि मैं इस प्रतीक्षा में था कि रीवां में परिस्थिति क्या रूप धारण करती है, इसका मुझे निश्चित रूप से पता चल जाय, तब आपको लिखूं। आशा है, विलंब के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे।

आपको ज्ञात ही है कि पं. जवाहरलालजी ने विदेश जाने के पूर्व रीवां दरबार को मेरे संबंध में एक पत्र लिखा था, और उसके बाद ही आपने भी कृपा करके इस संबंध में लिखा। इसी बीच में सरदार वल्लभभाई पटेल ने भी बघेलखंड कांग्रेस कमेटी को मेरे बारे में लिखा। इनसब पत्रों का यह असर हुआ कि मेरे रीवां जाने पर जो प्रतिबंध लगा था वह उठा लिया गया और १४ साल के राज्य-निर्वासन के बाद पुनः मैं अपनी जन्मभूमि देख सका। ४ जुलाई को मैं वहां गया था।

मेरे वहां पहुंचने पर कई स्थानों पर अत्यंत ही आदर और प्रेम के साथ मेरी अगवानी की गई। मेरे रीवां आने के संबंध में जो समाचार लीडर में प्रकाशित हुआ है, उसकी नकल इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। श्री चिंतामणि साहब की मेहरबानी के कारण लीडर का एक खास संवाददाता भी मेरे साथ रीवां गया था।

वहां मेरा जो स्वागत किया गया वह मेरे व्यक्तित्व का नहीं किंतु कांग्रेस की जो सेवा मैं कर रहा हूं, उसका था। रिपोर्ट से आपको यह भी पता

चलेगा कि मैं अपनी जागीर के संबंध में क्या करने का विचार कर रहा हूं और इस प्रकार यह साबित कर देना चाहता हूं कि एक कांग्रेसी जमींदार क्या कर सकता है ।

मेरी भौमिक पैतृक संपत्ति का प्रश्न अभीतक विचाराधीन है। दरबार ने अबतक मुझे अपने स्वर्गीय पिता का उत्तराधिकारी नहीं बनाया है। दरबार मुझसे यह शर्त चाहता था कि मैं किसी प्रकार का राजनैतिक कार्य राज्य के अंदर न करूं और शासन-प्रबंध में उनकी सहायता करूं और अंत में इस बात पर जोर दिया गया कि मैं अपने इलाके में पंचायत-शासन न स्थापित करूं जैसा कि मैंने अपने वक्तव्य में कहा है और साथ में लगी हुई रिपोर्ट से आप देखेंगे। किंतु मैंने किसी प्रकार की शर्त कबूल करने से इनकार कर दिया। मैंने उन लोगों से कहा कि एक कांग्रेसी के नाते तो मैं सार्वजनिक कामों को अवश्य करूंगा। वर्तमान स्थिति में मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता कि यह मामला किस ओर पलटा खायगा, किंतु आशा है कि संभवतः दरबार मेरी जागीर का प्रश्न मेरे ही पक्ष में तय करेगी। पूर्ण रूप से मामला तय हो जाने पर मैं पुनः आपको सूचित करूंगा। यह सब आप लोगों की कृपा का फल है और मैं पुनः आपको इसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं। यदि आपका सहयोग न प्राप्त होता तो यह मामला इतना सुलभ न होता।

आपका,

नर्मदाप्रसादसिंह

राजस्थान

(अलवर)

: ८५ :

अलवर, ५-६-४०

श्रद्धेय सेठजी,

सादर वंदे। जयपुर में अलवर के संबंध में बातचीत करते समय जाहिर किया था कि चीफ मिनिस्टरसाहब से प्रजा-मंडल की रजिस्ट्री के संबंध में लिखा-पढ़ी हो रही है। चीफ मिनिस्टरसाहब का आबू से पत्र आ गया है। उसमें उन्होंने प्रजा-मंडल का उद्देश्य उत्तरदायी शासन मानने से इंकार करते हुए लिखा है कि प्रजा-मंडल का उद्देश्य यदि "प्रोग्रेसिव एसो-सियेशन आफ दि पीपुल विथ दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि स्टेट" हो तो रजिस्ट्री की जा सकती है। हमने इस पत्र का जो उत्तर भेजा है उसकी नकल इस पत्र के साथ है।

मैं यह उचित समझता हूं कि अब आइंदा से प्रजा-मंडल की रजिस्ट्री के संबंध में लिखा-पढ़ी आपकी राय से की जाय। इसलिए हमारे तीन पत्रों की कापी तथा चीफ मिनिस्टर के दोनों पत्रों की कापी भी आपके पास भेज रहा हूं, ताकि आप भी स्थिति से पूर्णतया परिचित रह सकें।

आशा है, आप इस संबंध में उचित नेतृत्व प्रदान करेंगे।

आपका,

भोलानाथ मास्टर

: ८६ :

अलवर, २-८-४०

पूज्य सेठजी,

सादर वंदे। अलवर राज्य प्रजा-मंडल की रजिस्ट्री भी अगस्त मास में उसके संशोधित उद्देश्य "दि प्रोग्रेसिव एसोशियेशन आफ पीपुल विद

दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि स्टेट" के साथ हो गई है। मैंने मोदी नत्थूरामजी के साथ जयपुर में अधिवेशन के समय आपसे मुलाकात करते समय चीफ मिनिस्टरसाहब का पत्र दिखाया था। उसमें भी उन्होंने इसी शब्दावली पर जोर दिया था। इसके बाद का पत्र-व्यवहार आपकी सेवा में बंबई के पते पर भेजा गया था, परंतु कोई उत्तर नहीं मिला। लेकिन वह बात इन पत्रों से साफ जाहिर है कि वे अपने ही शब्दों पर अड़े रहे। इन्हीं दिनों में पूज्य महात्माजी का भी पत्र आ गया, जिसमें उन्होंने पिछले पत्रों के हवाले पर अलवर के हालात पूछे थे। उनकी सेवा में सारा पत्र-व्यवहार भेज दिया और उनकी आज्ञा प्राप्त कर ली कि यदि प्रजा का बल प्रजा-मंडल की रजिस्ट्री कराने के बाद बढ़ता जान पड़े तो प्रजा-मंडल की रजिस्ट्री करा ली जाय।

इसपर संशोधित उद्देश्य के साथ प्रजा-मंडल की रजिस्ट्री हो गई है। अन्य शर्तें बाहर से संबंध, पदाधिकारियों और झंडे आदि की वैसी ही हैं जैसी अन्य जगहों पर हैं।

प्रजा-मंडल की रजिस्ट्री के बाद मेंबर बनाने में सुविधा हो ही गई है और मेंबरों की संख्या भी बढ रही है। कृपया आशीर्वाद दीजिये कि अलवर राज्य प्रजा-मंडल भी अपने उद्देश्यों में सफल होकर जनता की सच्चे मानो में सेवा करनेवाली संस्था बन सके। हमें तो आप-जैसे तपस्वी नेताओं के ही आशीर्वाद का सहारा है। अलवरवाले आपके इन वचनों के लिए बड़े कृतज्ञ हैं कि आप अलवरवालों से दूर नहीं हैं। इसी भांति कृपा-भाव बनाये रखें।

अंत में यह भी निवेदन करूंगा कि यदि प्रजा-मंडल को प्रोग्राम-संबंधी सलाह आपकी ओर से दी जायगी तो हम आपके बड़े कृतज्ञ होंगे। मैंने अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् का पूना का प्रस्ताव पढ़ा है। उसमें जो ऐसी रियासतों का ध्यान रखा गया है, जहांपर अभी प्रजा-मंडलों ने, जोर नहीं पकड़ा है, काफी प्रेरणा देनेवाला है। इससे हमारे-जैसे भाइयों को भी आपके नेतृत्व के मिलने की आशा होती है। और यह भी प्रकट होता है कि आप पिछड़े हुए रियासती भाइयों को भूले नहीं हैं।

अंत में फिर निवेदन है कि अलवर को भी आपका संरक्षण प्राप्त होगा।

आपका,

भोलानाथ मास्टर

: ८७ :

अलवर, १२-५-४१

पूज्य सेठजी,

सादर वंदे। कारावास से छूटने के शुभ समाचार पत्रों द्वारा ज्ञात हुए। परंतु आपका स्वास्थ्य गिरा हुआ है, यह जानकर बड़ी चिंता हुई। एक-दो दिन बाद यह खबर पाकर कि चिंता की बात नहीं है, मन को तसल्ली हुई। हम सब भी आपके शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ की शुभ कामना करते रहे हैं।

अलवर राज्य-प्रजा-मंडल भी आपकी कृपा से दिनोंदिन उन्नति कर रहा है। हाल ही में १ और २ जून, ४१ को प्रजा-मंडल की तरफ से जागीर माफी-प्रजा-कांफ्रेंस हुई थी जो बड़ी सफल रही। इस सभा में जागीर-माफी के गांवों में बिस्वेदारी हकूक की मांग की गई थी। अब इस मांग को मंजूर कराने का उद्योग किया जायगा। आशा है, आपकी कृपा तथा आशीर्वाद से हम सफल होंगे। जयपुर से भी इस कांफ्रेंस में लादूरामजी जोशी, टीकारामजी पालीवाल और वीरेंद्रजी आदि पधारे थे।

मैं हाल ही में जयपुर से स्वयंसेवक-सम्मेलन से लौटा हूं। श्री शास्त्रीजी, जोशीजी, हरलालसिंह जी आदि आपसे मुलाकात करने वर्धा पधारे हैं।

इस अवसर पर भरतपुर के कार्यकर्त्ता भी जयपुर पधारे थे। श्री जोशीजी के सुझाव के मुताबिक अलवर में ही जागीर-माफी-प्रजा-कांफ्रेंस के अवसर पर यह तय हुआ था कि राजपूताने की रियासतों का संगठन किया जाय। इसपर आगे बढ़ाने के लिए जयपुर में श्री शास्त्रीजी की उपस्थिति में खूब दिल खोलकर बातचीत हुई है। सरसरी तौर से यह विचार किया गया है कि जो रियासतें संगठन में आना चाहें उनसे संपर्क बढ़ाया जाय और उनके सम्मेलन आदि

में भी शामिल होना चाहिए। लेकिन इस प्रस्ताव को मूत रूप देने के विषय को अभी छोड़ दिया गया है। आगे बातचीत बढ़ाने का काम श्री शास्त्रीजी ने अपने हाथों में ले लिया है।

मुझे आशा है कि इस निश्चय पर श्री शास्त्रीजी आपका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

जागीर-माफी-प्रजा-कांफ्रेंस के भाषण पहले ही सेवा में भेज चुका हूं।

आपका,

भोलानाथ मास्टर

(मंत्री राज्य-प्रजा-मंडल)

: ८८ :

सेवाग्राम, १८-६-४१

प्रिय श्री भोलानाथजी,

आपका १२-६-४१ का पत्र मिला। श्री शास्त्रीजी यहां आये थे, तब उनसे भी इस संबंध में बात हुई थी। आप लोग इस संबंध में कोई प्रयत्न कर सके तो उससे शायद कुछ लाभ होगा ही। मेरे खयाल से रचनात्मक कार्यक्रम का संगठन हरएक रियासत में अधिक बढ़ना चाहिए। मुझे तो इस समय केवल स्वास्थ्य-सुधार की ओर अपना ध्यान देना पड़ रहा है। इसलिए खेद है कि मैं खुद तो इस संबंध में कुछ नहीं कर सकूंगा।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: ८९ :

अलवर, २४-१०-४१

पूज्य सेठजी,

सादर वंदे। आपके आशीर्वाद से खादी-ग्रामोद्योग-प्रदर्शिनी को अभूत-पूर्व सफलता मिली। इन दिनों में प्रजा-मंडल का अधिकारियों से अच्छा संबंध रहा; लेकिन यह सब इसलिए हो सका कि अलवर के वर्तमान चीफ

मिनिस्टर मेजर हार्वे एक अच्छे स्वभाव के अंग्रेज साबित हुए। उन्होंने अपनी उदारता से कई दफा संघर्ष की नौबत आने पर टाल दी।

लेकिन अफसोस है कि दिसंबर के पहले हफ्ते से यह मालवा के रेजीडेंट होकर जा रहे हैं। इनकी जगह नागपुर से सी. पी. सरकार के रिवेन्यू मंत्री श्री कुंजबिहारीलालजी सेठ आई. सी. एस. आ रहे हैं। इनके आने से पहले यह जान लेना जरूरी भी है कि यह किस मिजाज के व्यक्ति हैं। इसलिए आपको कष्ट दे रहा हूं कि कृपा करके किन्हीं जरियों से यह मालूम करवा दें कि ये कुंजबिहारीलालजी किस किस्म के आदमी हैं, ताकि हम भी अपनी नीति उसीके अनुसार बना लें।

राजपूताने में अभी इस प्रकार की नीति काम में लेना मेरी तुच्छ राय में ठीक है, क्योंकि व्यक्तियों को समझने में गलती करने से तथा उनकी व्यक्तिगत आलोचना करने से भी कभी-कभी कठिनाई उपस्थित हो जाती है।

आपने जयपुर-प्रजा-मंडल के दूसरे अधिवेशन के अवसर पर जयपुर में भी मुझे ऐसी सलाह भी दी थी और साथ ही यह भी विश्वास दिलाया था कि मैं ऐसे कार्य में आप लोगों की मदद कर सकूं। इसलिए आपको कष्ट दे रहा हूं। कृपया आप क्षमा करेंगे।

अलवर एक बहुत ही पिछड़ी और साधनहीन जगह है। इसपर भी पूर्ववत् ही कृपा बनाये रहें।

आपका,
भोलानाथ मास्टर

: ९० :

अलवर, २३-८-२६

श्रीमान् महोदय

प्रणाम। कृपापत्र ता. २० का आया, कृतार्थ हुआ।

आपने सीनियर आफिसरी के लिए मेरी राय पूछी व किसी तजुर्बेकार रिटायर्ड व्यक्ति के लिए सूचना की सो मैंने सोचा। मेरी समझ में तो रायसाहब पंडित जगतनारायणजी भार्गव इस पद के लिए ठीक होंगे। यह पहले

अजमेर में तहसीलदार थे, फिर बुंदेलखण्ड में बेरिकसाहब ने उन्हें बुला लिया सो वहां बावनी के राज्य का प्रबंध बहुत ही अच्छा किया। गवर्नमेंट से प्रशंसा हुई। फिर ग्वालियर में मेरे जमाने में रेव्यनू बोर्ड के सदस्य व सर-सूबा रहे। फिर खुद इस्तीफा देकर चले आये। कुछ दिन देवगढ़ में भी दीवान रहे। देवगढ़ में ठिकाना है। रेजीनाल्ड साहब भी उनको खूब जानते हैं और उनको कुछ काम देना चाहते हैं।

यह मेरे दोस्त बाबू रामजीवन के पुत्र हैं। रामजीवनजी शाहपुरा राज्य के दीवान थे। बहुत अच्छा काम किया। वहां जगतनारायण प्राइवेट सेक्रेटरी व महाराज कुमारी के गार्जियन थे। निहायत ईमानदार, सादा चाल के व मेहनती हैं।

दूसरा और इस वक्त निगाह में कोई नहीं। सिर्फ एक रघुबरदयाल-जी बी. ए. एल. एल. बी. अभी खेतड़ी में जुडीशियल मेंबर हैं। यह पहले उदयपुर में सदर मैजिस्ट्रेट व सिविल कोर्ट के सदर अफसर बहुत अरसे तक रहे। मेरे कुटुंब में भतीजे होते हैं। मेरी सिफारिश पर महाराजा-साहब ने उनको लिया था। उसके पहले ए. जी. जी. बड़े साहब के वाल्टर और राणा के सेक्रेटरी रह चुके थे। उदयपुर १५-१६ वर्ष रहे। वहां उनकी बहू व कई लड़के एक साथ प्लेग में मर गये, सो जी उचटा और चले आये। फिर पालमपुर दरबार के वकील होकर जोधपुर वकील-पंचायत में रहे। वहां से दीवान होकर चले गये। अब खेतड़ी में जुडीशियल आफिसर हैं। अब ५३–५४ वर्ष की उम्र है। नेकनाम हैं, होशियार हैं। पत्र दिलावें।

आपका,
श्यामसुंदरलाल

(उदयपुर)

: ९१ :

अनंतपुर २१–४–३५

श्रीमान सेठसाहबजी,

सादर वंदे। बिजौलिया खादी-कार्य के संबंध में हम आपसे निवेदन करना चाहते हैं। पहले जो वहां खादी-कार्य हुआ उससे तो आप

पूरी तरह परिचित होंगे। वहां का कार्य अधूरा ही छोड़कर भाई श्री जेठालालजी यहां अनंतपुर आ गये किंतु वहांपर सूत औसत से ५–६ नंबर से आगे नहीं बढ़ सका। चर्खा का सुधार भी यहां जैसा वहां नहीं हो सका था। इसी प्रकार पींजन के भी ध्यान देने की बात है। जब सूत की ऐसी दशा है, उस हालत में बुनाई का भी अनुमान लगाया जा सकता है कि वह किस प्रकार चालू रह सकती है। उस समय वहां जो खादी-कार्य हुआ वह किसानों के संगठन के बल पर ही हुआ था। खादी-प्रचार-कार्य में भी विशेष शक्ति खर्च नहीं हुई, क्योंकि उस समय किसानों में जागृति थी। इसके फलस्वरूप लगभग १०० विद्यार्थी बुनना सीख गये थे। इसमें से अधिकांश अपने घरों में ही बुनाई का काम करते रहे थे। यह पहले की बात हुई। इसके बाद माल जमीन का आंदोलन शुरू हुआ और उससे लोगों के पास से जमीन छिन गई। इससे लोगों के दिल को बहुत चोट पहुंची और रियासत ने काफी दबाव डाला और उस समय बाहरी सहायता का भी विशेष अभाव-सा ही रहा। केवल आपकी ओर से अच्छी सहानुभूति रही। अब भी वहां का हाल जो एक भाई ने वहां के गांवों में घूमकर फरवरी, ३५ में देखा, उसके अनुसार खादी-कार्य अभी मरा नहीं, जीवित दशा में है। बुनकर, जो नये सीखे थे, उनमें से ५२ ने खुद का एवं दूसरों का बुना है। पिंजनें में १६४ घरों में धुनकने का काम हुआ। मर्दों में ७५ प्रतिशत खादीधारी हैं। सूत मोटा होने के कारण खादी पहनने में औरतों की संख्या कम है। इस समय बिजौलिया के ५ जने यहां कार्य कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि बिजौलिया में ही खादी-कार्य कपास, सूत, पिंजाई, बुनाई, रंगाई, छपाई आदि का होना आवश्यक है। इसपर पूर्णतया विचार करके आप हमें यह सूचना देने का कष्ट करें कि खादी-कार्य के संबंध में आपके क्या विचार हैं।

आज देश में नये-नये क्षेत्रों में जागृति के प्रयत्न किये जा रहे हैं। वहां बिजौलिया जैसे क्षेत्र को, जिसको तैयार करने में कई महान आत्माओं ने अत्यधिक कष्ट सहन किये हैं, इस प्रकार भुलाया न जाय।

वहां कार्य किया जाय। उसमें हम लोग तन-मन से सेवा सहर्ष करने को तैयार हैं।

आशा है, हमारे इस पत्र पर गंभीरतापूर्वक विचार करके इस संबंध में आगे के लिए क्या करना है, इसका उत्तर कृपया समय निकालकर देने का कष्ट स्वीकार करें।

भवदीय,
गंगाराम, भूधर शर्मा,
रूपचंद, हेमराज

: ९२ :

कांकरोली, १२–१०–३८

श्रीमान् आदरणीय सेठजीसाहब,

सादर वंदे। मेवाड़-प्रजा-मण्डल का प्रश्न आपके और हमारे सामने है। आंदोलन तो छिड़ ही गया है। आपके उत्तर को अखबारों में पढ़ बहुत लोग तैयार हो रहे हैं।

कल से नाथद्वारे में गिरफ्तारी शुरू हो गई है और पांच गिरफ्तार हो चुके हैं। जनता में काफी जोश है। आशा तो है, काफी अच्छी मात्रा में जनता साथ देगी।

तारीख १० की शाम को नाथद्वारा के कोतवाल ने मुझे बुलाया। प्रजा-मंडल के संबंध में करीब डेढ़ घंटे वाद-विवाद हुआ और मैंने उनको खुले रूप में कह दिया कि कार्य कल से आरंभ होगा। यह आग सारे मेवाड़ में लगी है, बुझने की नहीं। यदि आपने किसीके हाथ लगाया तो १ के बजाय १० और नहीं तो साधारण तौर से १ के बदले १० गिरफ्तार होने को लोग तैयार हैं। करीब ६० गिरफ्तारी के बाद उदयपुर की जनता काफी अच्छी मात्रा में साथ देगी।

अंदरूनी यह खबर भी लगी है कि महाराणासाहब बदनामी से काफी डर गये हैं और उन्होंने कुछ कर्मचारियों एवं जिलों के एस. पी. को बुलाकर यह कहा है कि अजमेर जाकर पता लगाओ कि इन लोगों की पीठ पर कौन-

कौन हैं ? पीठ मजबूत हो तो इनकी शर्तें स्वीकार कर लो और प्रतिबंध हटा लो और नहीं तो गिरफ्तारी चालू रखो।

मेरे कुछ साथी यह कहते हैं कि यदि ३००० या ४००० रुपये हों तो इस कार्य को अच्छी तरह से चलाया जा सकता है और सारा मेवाड़ हिल उठे और आंदोलन प्रबल हो जाय। अतः इस विषय पर आप विचार कर उत्तर दें।

श्री माताजी (श्रीमती जानकीबाईजी) ने भी इस संबंध में काफी कहा है और यही अंतिम शब्द है कि इस विषय को हल करना ही सर्वप्रथम हमारी आशा है।

अतः मैं आशा करता हूं कि आप अपना उधर का निर्णयकर लौटती डाक से या तार द्वारा सूचना देने की कृपा करेंगे।

शेष कुशल है। कृपा रहे। मैं आज रात तक नाथद्वारा वापस जा रहा हूं। पता नहीं कि इस बीच में मैं भी पकड़ लिया जाऊं, तो आप कृपा कर इसे प्रबल बनाने में अपनी शक्ति व सहयोग दें।

आपका,

नंदलाल जोशी

: ९३ :

उदयपुर २८-८-३८

श्रीमान् श्रद्धेय सेठ जमनालालजी साहब की सेवा में,

सादर वंदे। मेवाड़-प्रजा-मण्डल के कार्यकर्ताओं से, जो हाल ही में आपसे मिले थे, मालूम हुआ कि आपकी इस कार्य में केवल सहानुभति और सहायता ही नहीं किंतु समय पर अधिक सहयोग भी मिलेगा। यह जानकर हमें बहुत आनंद हुआ। साथ ही बहुत प्रेरणा व बड़ी स्फूर्ति भी मिली।

राजस्थान तो आप ही की ओर देख सकता है।

मेरे निज के लिए जो आपने सहानुभूति प्रदर्शित की, उसके लिए मैं आपका बहुत ही उपकृत हूं। हीरालालजी शास्त्री से कोई सूचना नहीं मिली, वरना मैं वहां चला जाता। जिस संस्था में मैं पहले काम करता था

उसी संस्था ने वापस आग्रहपूर्वक बुला लिया, अतः उसीमें काम करने लग गया हूं। दो या एक व्यक्ति का यहां रहना भी आवश्यकीय था। योग्य सेवा सूचित करें।

आपका,
बलवंतसिंह मेहता

: ९४ :

उदयपुर, १७-१०-३९

श्रद्धेय पूज्य सेठसाहब की सेवा में,

सादर वंदे। मैं तारीख २० को मुक्त होकर तारीख २१ को समाड़ा से यहां पहुंचा। आते ही गांधी-जयंती के आयोजन में लग गया। श्री भूरेलाल-जी बया से मालूम हुआ कि आप स्वयं इस अवसर पर यहां पधार रहे हैं। अच्छा होता कि आपके दर्शन इस अवसर पर होते। आपके पधारने से हम लोगों को बल ही नहीं मिलता, किंतु पथ-प्रदर्शन भी मिलता, जिसकी इस समय हमको नितांत आवश्यकता है। समाचार-पत्र से मालूम हुआ कि आप स्वास्थ्य लाभ के लिए बंबई शीघ्र ही प्रस्थान कर रहे हैं। परमात्मा आपको इसमें जल्दी ही सफलता प्रदान करे, यही प्रार्थना है। इसके बाद आप एक बार निकट भविष्य में इधर अवश्य पधारें। आशा है, इसकी सूचना मुझे शीघ्र ही मिलेगी।

युद्ध स्थगित हो जाने पर शांतिकाल में सैनिकों की प्रायः जो दशा हो जाती है वही हम लोगों की यहां हो गई है।

जनता में इस आंदोलन से जागृति अवश्य हुई है। यही कारण था कि गांधी-जयंती, जो पहली बार मनाई गई थी, काफी सफल रही। भाई माणिकलालजी और वैद्य मथुराप्रसादजी अभी जेल ही में हैं। उनका स्वास्थ्य काफी गिर गया था। अब इलाज से कुछ ठीक है। कुछ दिनों से दोनों की बेड़ियां काट दी गई हैं। प्रतिबंध ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। राज्य की मनोवृत्ति में विशेष कोई परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता। अधिकारियों में गुटबंदियां हो रही हैं। मेवाड़ी लोग जिम्मेदारी के पदों से हटाये जा रहे हैं।

निरंकुशता और स्वेच्छाचारिता का दौर-दौरा पूर्ववत् ही है। अस्तु। कुशल पत्र से अनुगृहीत करें।

आपका,

बलवंतसिंह मेहता

: ९५ :

उदयपुर, ८-१०-४१

पूज्य सेठसाहब की सेवा में,

सादर वंदे। कृपा-पत्र आपका आज मिला। मेवाड़-प्रजा-मण्डल का अधिवेशन हो और उसके प्राण—आप—न पधारें, यह कैसे हो। यह तो हम लोगों के लिए दुख ही नहीं, शर्म की भी बात है। किसी भी अवस्था में आपको पधारना होगा।

अधिवेशन का उद्‌घाटन आपके करकमलों द्वारा हो यह पहले से ही निश्चित था। प्रदर्शिनी के उद्‌घाटन के लिए पूज्य राजेंद्रबाबू का नाम सूचित किया था।

यदि आपकी स्वीकृति शीघ्र ही नहीं मिली तो हममें से किसीको वहां उपस्थित होना होगा।

संस्था की रजिस्ट्री हो चुकी है। विधान की प्रति आपकी सेवा में आज की डाक से भेजी है।

विधान के उद्देश्य तथा कार्यक्रम के लिए प्राइम मिनिस्टर से काफी बातचीत के बाद आश्वासन ले लिया गया कि इस कार्यक्रम में किसी किस्म की अनुचित दस्तंदाजी नहीं की जायगी। विधान खुले अधिवेशन में अब पास होगा, अतः इसमें परिवर्तन योग्य कोई सूचना हो तो भिजवा देवें।

लेजिस्लेटिव एक्ट बनाने के लिए एक कमेटी सरकार की ओर से बिठाई गई थी, उसमें प्रजा-मंडल के कार्यकर्ता को लिया गया। यह जो कुछ भी बन पाया है, उन्हींके द्वारा प्रजा-मण्डल का प्रयत्न है। इसको आलोचना के लिए चार महीने की अवधि दी गई है। प्रजा-मण्डल की ओर से क्या सुझाव पेश करने चाहिए?

राज्य की नीति अबतक वही सहयोग एवं सहानुभूति की रही है। समय-समय पर वह सहयोग देता है तथा यहां के रखे हुए सुझावों पर काफी विचार किया जाता है।

आशा है, आपका स्वास्थ्य अब बिल्कुल ठीक होगा।

आपका,
बलवंतसिंह मेहता

: ९६ :

उदयपुर, २६-७-३६

पूज्य श्री जमनालालजी,

सस्नेह वंदे। आपको कई दिनों से पत्र लिखने की सोच रहा था। आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

मैं आपको विद्या-भवन के संकट-निवारण की फिर याद दिलाना चाहता हूं। प्रतिमास यह चिंता का पहाड़ छाती पर सवार हो जाता है। काम उपयोगी और देश के लिए आवश्यक समझ उसको छोड़ भागने को भी जी नहीं करता। यह कष्ट तो पुण्य-तप है और कदाचित हमारी परीक्षा के लिए पवित्र अग्नि है, फिर भी मैं तो एक छोटा-सा जीव हूं। आप-जैसे उत्तम विचारवाले प्रभावशाली मित्र की शरण लेता हूं। आशा तो आपसे यही है कि आप सहायता करेंगे। दूर होने से भूल मत जाइये।

एक तो रामनारायणजी रुइया ट्रस्ट के लिए अब आप कृपया उद्योग कीजिये। उस ट्रस्ट में अब पंद्रह लाख तक जमा हो गये हैं। यदि उसमें से सवा दो लाख आप विद्या-भवन को दिला दें तो हम उसकी आधी रकम में से हमारा ऋण चुका दें। बाहर से आनेवाले बालकों के लिए रहने को मकान नहीं होने से बड़ा कष्ट होता है। उसको दूर कर दें और विद्यालय तथा छात्रावास के लिए जरूरी मकान बना लें। कुछ जरूरी सामान मंगा लें और आधी रकम को अलग जमा करा दें तो उसकी उपज से चालू खर्च में भी कुछ मदद मिल जाय। साल का करीब सोलह-सत्रह हजार का बजट है। उसमें से पांच-चार हजार मिलने की आशा हो जाय तो कुछ तो ठिकाना

हो जाता है। आप जितनी भी रकम वहां से अपने प्रभाव से दिलवा सकें वह अच्छे काम में लगेगी, यह विश्वास रखिए।

दूसरे, सुना है, रामेश्वरदासजी को इन दिनों व्यापार में अच्छा फायदा हुआ है। कुछ दान भी कर रहे हैं। सुना है वह आजकल काशी में हैं और उन्होंने अपनी मुट्ठी खोली हुई है। इस अवसर पर विद्या-भवन की आवश्यकता व उपयोगिता की उन्हें याद दिलाने की कृपा करें। जल्दी ही लिखें तो अच्छा हो।

तीसरे, नीमच चोरड़िया जैन गुरुकुल के लिए बाबू हुकमीचंदजी को रखने के बारे में आपका क्या विचार है ? वह अपनी बीमारी से अब अच्छे हो गये हैं। आप कहें तो उन्हें मैं नीमच बैठने को कह दूं। थोड़ा जिक्र तो मैंने किया था। परंतु कोई बात नहीं की। उनके जैसा व्यक्ति यदि वहां जमकर बैठ जाय तो संस्था के प्रारंभ-काल में अच्छा रहे। परंतु ट्रस्टियों की राय हो तो फिर उनपर जोर डाला जाय। आप जैसा कहें वैसा किया जाय।

मिस हाइलामैन सामाजिक कार्य करने की इच्छा से अहमदाबाद गई हैं। वहां अनसुयाबेन के पास ठहरी हुई हैं। वहां रहेंगी या नहीं, यह अभी निश्चय नहीं है। शिक्षा-कार्य की अपेक्षा इनको समाजसेवा का कार्य ज्यादा पसद है। यहां एक अंग्रेजबहन और आ गई हैं जो शिक्षा में ही विशेष रुचि रखती हैं।

हमारे महिला-विद्यालय के लिए अच्छी स्त्री मिल सके तो ध्यान में रखियेगा। हमें एक अच्छी, समझदार, अनुभवी तथा त्यागभाववाली महिला की आवश्यकता है।

आपके समाचार लिखियेगा। विद्या-भवन के लिए प्रयत्न करने में पूरी मदद दीजिएगा। हुक्मचंदजी के बारे में जो राय हो लिखें।

आपका बंधु,

मोहनसिंह मेहता

: ९७ :

बिजौलिया १२–८–४०

मान्यवर श्री सेठसाहब,

बिजौलिया के किसानों की वर्तमान परिस्थिति के विषय में आवेदन-पत्र भेज रहा हूं। आशा है, इस विषय में स्टेट से लिखा-पढ़ी करेंगे, क्योंकि यहां के किसान अपना सबकुछ भार श्रीमान पर ही समझते हैं। साथ ही यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि पहले जमीन-संबंधी कठिनाई को दूर करने में जितनी भी सफलता व सहायता मिली, वह एकमात्र श्रीमान की दया का ही सफल फल है। अस्तु, इस्तीफाशुदा मालजमीन सत्याग्रह के बाद ४००० बीघा थी, जिसके लिए श्रीमान ने भी स्टेट से काफी लिखा-पढ़ी की और यहां के किसान भी सन् १९३८ में महाराणासाहब की वर्षगांठ पर डेप्यूटेशन लेकर गये। महाराणासाहब ने तत्काल जमीन सौंपने का वादा किया और सन् १९३८ के दिसंबर में यह जमीन तीन भागों में बांट दी गई।

किसानों का कहना है कि आप एक तार द्वारा जमीन सौंपने व जब-तक हमारी तकलीफें दूर न हो जावें—मुन्सामात न उठावें, यह सूचना स्टेट को दे दें?

आपका,

गणपतिलाल वर्मा

: ९८ :

अजमेर, ८–१–३८

आदरणीय सेठसाहब,

जेल में लोग बारबार जाते-आते रहेंगे। केवल संख्या अधिक नहीं बढ़ाई जायगी। दुर्भाग्य से मुझे गरीब और दरिद्र सत्याग्रही ही मिले हैं। राज्याधिकारी भी कहते हैं कि यह आंदोलन नंगों-भूखों का है। सौभाग्य से ६० में से २० ऐसे व्यक्ति मिल गये हैं जो सहायता के चाहनेवाले नहीं हैं या जिनको जरूरत नहीं है। १० ऐसे हैं जो जरूरत होते हुए भी लेना नहीं

चाहते। बाकी २० भी नंगे-भूखे नहीं होते और वे भी उसी श्रेणी के मिलते-तो पहले जानेवालों की चिंता तो मुझे नहीं रहती। भीतर जानेवालों से भी ज्यादा खर्चा उन लोगों का है जो बाहर रहकर प्रचार कर रहे हैं।

इस पत्र का आशय आप कदापि यह न समझें कि अब मैं थक गया हूं और ज्यों-त्यों कर समझौते का इच्छुक हूं। मुझे जरा भी इस समय के आंदोलन में चिंता और पश्चात्ताप नहीं है, बल्कि उत्साह की मात्रा अधिक है और मेरा यह दृढ़ मत है कि जबतक सरकारी अधिकारी न झुकेंगे मैं तनिक भी झुकने को तैयार नहीं हूं। आंदोलन बंद हो जायगा तो मैं स्वयं जाकर जेल में बैठ जाऊंगा। सब साथी साथ छोड़ देंगे तो भी कभी सिर नहीं झुकाऊंगा और दुनिया को यह दिखा दूंगा कि एक व्यक्ति भी अपने निश्चित मार्ग पर डटा रह सकता है।

आपका,

माणिकलाल वर्मा

: ९९ :

अजमेर, २५–८–३८

आदरणीय सेठसाहब,

सादर वंदे। अहमदाबाद में एक सौ रुपया नकद तथा १०० रुपया का वचन गुप्त सहायता के रूप में मिला है। अबतक ५०० रुपये नकद तथा १२५ रुपये मासिक सहायता की व्यवस्था हो गई है। इस प्रकार सत्याग्रह शुरू होने तक चार-पांच कार्यकर्त्ता रख दिये हैं और उनके लिए काफी है। बाकी लोगों को कह दिया है कि अभी अपना धंधा मत छोड़ो। समय पर आ जाना। और सौदा करके मत आना कि मुझे तनख्वाह दो। बिना कुछ कहे-सुने आ जाओगे और कमेटी मुनासिब समझेगी तो सहायता का प्रबंध कर देगी। २३ अगस्त को कार्यकारिणी कमेटी का चुनाव कर लिया। अधिकांश सदस्य पुरानी कार्यकारिणी के ही हैं। श्री शोभालालजी व प्रेमनारायणजी, श्री सरदारसिंहजी कोठारी (मोतीसिंहजी कोठारी के सुपुत्र) और डा. अंबालालजी नये रखे हैं। डा. अंबालालजी मसूरी गये हुए हैं। आफिस का

काम प्रो. प्रेमनारायणजी करेंगे। प्रकाशन श्री शोभालालजी और धन-संग्रह का जिम्मा सरदारसिंहजी ने लिया है। ये तीनों अवैतनिक रूप से सेवा करने वाले हैं। एक पत्र शोभालालजी ने दिया है। उसकी सूचना तो मैं भेज चुका हूं। बाद में आपके सूचनानुसार अपनी ओर से एक दरख्वास्त इस आशय की दी है कि वे मण्डल पर से प्रतिबंध उठा लें। उसकी नकल भेज रहा हूं। सरदारसिंहजी तथा प्रोफेसरसाहब को मेरे बाद या पहले भी आपसे पत्र-व्यवहार करने का अधिकार मिल चुका है। सरदारसिंहजी एक उत्साही युवक हैं। आप शायद जानते होंगे। घर के धनी और बात के सच्चे तथा गंभीर हैं। उनकी मेवाडियों पर अच्छी छाप है। मोहनसिंहजी के निकट संबंधी हैं। १५ सितंबर को सत्याग्रह में जानेवाले लोगों से मिलने का प्रबंध अजमेर में ही किया गया है। दशहरे को सत्याग्रह करने का विचार निश्चित है। आपके वक्तव्य की खूब प्रतीक्षा की जा रही है। इस बीच आपके वक्तव्य के बाद रियासत का क्या रुख होता है, यह भी देखना है। श्री हरिभाऊजी से बातचीत कर ली है। उनका तो सहयोग मिलेगा ही और मेरे जैसा आदमी तो सबके ही सहयोग का प्यासा है, पर लोग किसी कारणवश न दें तो उनकी मरजी है। मैंने दूसरे पक्षवालों से भी कहा; मगर उन्होंने एक शर्त रखी। इसलिए मैंने इंकार कर दिया है। वह केवल मेरे संबंध की ही थी। दूसरों की उसमें कोई बुराई नहीं थी। पर मेरी इच्छा के विरुद्ध थी। वे चाहते थे कि मैं हरिभाऊजी को गिराने में साथी बनूं। यह मुझे मंजूर नहीं था। फिर भी सबसे सहयोग की आशा रखता हूं। आप मुझे सहयोग दें या न दें। आपमें मेरी श्रद्धा है और रहेगी। गोपीलालजी का छपा हुआ परचा यहां देखने को मिला है। प्रो. साहब और दूसरे ५-७ मित्रों ने मुझसे पूछा था। मैंने कहा जबतक बिजौलिया की किसान-पंचायत न लिख दे तबतक किसीके परचे पर कोई विश्वास मत करो। सेठसाहब का बिजौलिया पर अहसान है। जमीन सौंपने की कोशिश हो रही है।

आपका,

माणिकलाल वर्मा

: १०० :

वर्धा, १-९-३८

प्रिय माणिकलालजी,

आपका २५-८-३८ का पत्र मिला। आपने रु. १०० नकद व रु. १२५ मासिक का प्रबंध कर लिया तथा श्री शोभालालजी, प्रेमनारायणजी, सरदारसिंहजी व डा. अंबालालजी को वर्किंग कमेटी में लिया है। कार्यालय का काम प्रो. प्रेमनारायणजी करेंगे तथा प्रकाशन शोभालालजी और धन-संग्रह सरदारसिंहजी करेंगे, लिखा सो जानकर खुशी हुई। श्री धर्मनारायणजी द्वारा मेरे पत्र का अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला है। इसलिए मैं उनको साथ का पत्र, अब आपकी ओर भेज रहा हूं।

श्री शोभालालजी आदि मित्रों से सलाह करके इस पत्र-व्यवहार का जैसा उचित समझें, उपयोग कर सकते हैं। आपने तारीख २५ को जो पत्र महकमा खास को भेजा वह देखा, ठीक है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १०१ :

अजमेर, ८-१०-३८

श्री सेठ साहब,

सादर वंदे। यह तो आपको पत्रों द्वारा मालूम हुआ ही होगा कि मेवाड़-प्रजा-मण्डल पर से प्रतिबंध हटा लेने के लिए मेवाड़-सरकार से खूब आरजू व कोशिश की गई, पर राज्य पर कुछ असर नहीं हुआ। मेवाड़ी लोगों के डेप्युटेशन तक से मिलने की इजाजत नहीं दी गई। और एक आर्डर जारी किया गया, जिसके अनुसार न केवल सभा, संस्था, जुलूसों पर ही बल्कि धार्मिक समाजों—मौलूद पढ़ने तक पर प्रतिबंध लगा दिया गया। खद्दरधारी मात्र कड़ी निगाह से देखे जाते हैं और निर्दोष व्यक्ति बाहर निकाले जा रहे हैं। श्री प्यारचंदजी अपनी बहन की सगाई के संबंध में गांव गये थे। उन्हें अपने गांव में से निकाल दिया गया। प्रो. प्रेमनारायण माथुर अपनी माताजी की बीमारी के कारण कुरावड़ जा रहे थे कि उदयपुर स्टेशन पर

गिरफ्तार करके मेवाड़ से निर्वासित कर दिये गये। श्री रमेशचंदजी व्यास, जो शांति से कार्य कर रहे थे, उन्हें भी गिरफ्तार करके अंग्रेजी इलाके में छोड़ दिया गया। बनारस के एक व्यापारी की तलाशी ली गई। एक आर्य-समाजी को राज्य से निकाल दिया गया। इनसब छेड़खानियों के बावजूद हमारी ओर से बराबर संघर्ष टालने के प्रयत्न जारी रहे; पर राज्य प्रजा-मण्डल पर से प्रतिबंध हटाने को तैयार नहीं हुआ। तब हमें अपनी नीति बदलनी पड़ी। इसके परिणामस्वरूप ३० सितंबर, १९३८ को भूरेलालजी बया, उपाध्यक्ष प्रजा-मण्डल गिरफ्तार हो गये हैं, और कल तारीख ४ अक्तूबर से सत्याग्रह शुरू कर दिया गया है। रमेशचंद व्यास सत्याग्रही बनकर गिरफ्तार हो गये हैं। ता: ५ को श्री अंबालाल जोशी उदयपुर में गिरफ्तार हुए। उन्होंने नोटिस बांटे थे। कल मेवाड़-प्रजा-मण्डल का आफिस खोला जायगा। लोगों ने सभाबंदी का कानून तोड़ दिया और डेढ़-दो हजार के करीब सभा-स्थल पर आ गये। वहीं पर जोशीजी का भाषण हुआ कि गिरफ्तार कर लिये गये। भीड़ पुलिस कोतवाली तक पहुंच गई थी और "महात्मा गांधी की जय." "वंदेमातरम" आदि के नारे लगा रही थी। शाम को श्री दयाशंकरजी प्रजामण्डल के काम में मदद करते हुए पकड़े गये। श्री परशरामजी गोयल, फोटो लेते हुए गिरफ्तार हुए। दो निर्दोष व्यक्ति भी पकड़े गये, जिनको बाद में छोड़ दिया गया। रमेशजी, परशरामजी, जोशीजी को एक-एक साल तथा दयाशंकरजी को छ: माह की सजा दी गई है, ऐसा सुना है। श्री बयाजी सराड़ा के पहाड़ी किले में नजर-बंद हैं। इस प्रकार सत्याग्रह के संबंध में तारीख ५ तक ३ मेवाड़ से निर्वासित तथा ६ गिरफ्तार किये गये हैं।

आपका,

माणिकलाल वर्मा

पुनश्च :

बयाजी को बाद में रखने की स्कीम थी, मगर वह परसों पकड़े गये, इसलिए मेरा बाहर रहना ठहरा है।

: १०२ :

अजमेर, १६–१०–३८

आदरणीय सेठ साहब,

सादर वंदे। अबतक कुल ३९ गिरफ्तारियां हुईं। १४ रिहा किये गय। इनमें १२ विद्यार्थी थे, जिन्हें पीटकर छोड़ दिया गया। दो व्यक्ति फिर से गिरफ्तारी की तैयारी कर रहे हैं। जो निर्वासित किये गये हैं, उनमें से तीन व्यक्ति दुबारा गिरफ्तार हुए हैं। १ नजरबंद है। १७ जेल में हैं, जिनमें तीन व्यक्तियों को सहायता की जरूरत नहीं है, १४ को चाहिए। एक सौ रुपया मासिक में ५० रुपये तो बराबर आ रहे हैं। २५ रुपया बंबईवालों ने कह तो दिया पर कई बार लिखने पर आज तक भी न भेजा। दस रुपयेवालों ने पांच मास में दो मास का दिया है।

श्री बयाजी को भेज दिया था। मैं उन दिनों बीमार था, इसलिए दिल्ली न आ सका। अब जरूरत हो तो पूरी परिस्थिति समझाने मैं या श्री शोभालालजी या प्रेमनारायणजी—तीनों में से एक आ जावें। आपकी सूचना का इंतजार है। गिरफ्तारियां आशा से अधिक हुईं और फिर होने की उम्मीद है। रियासत पर कुछ भी असर नहीं पड़ रहा है। कल शाम को श्री हरिभाऊजी से सलाह की थी कि आप कहें तो किसी एक कोने में चिनगारी लगा दूं। उनकी सलाह है कि 'ऐसी स्थिति में फिर जनता की मांगें बंट जायंगी। अभी तो केवल प्रजा-मण्डल कायम करने की ही मांग है। और फिर अगर तुम मेवाड़ में होते तो मैं सलाह दे सकता था।' बिना जिम्मेदारी के जनता को उभाड़ना गलत रास्ते पर जाना है, इसलिए चुप हूं।

आपका,

माणिकलाल वर्मा

: १०३ :

वर्धा, २५–१०-३८

प्रिय माणिकलालजी,

आपका तारीख १५-१० का पत्र मिला। आपके बुलेटिन मिलते रहते हैं।

श्री प्रेमनारायण का भी पत्र मिला है। मैंने उनको जवाब दिया है।

मेरे आने की खास जरूरत प्रतीत नहीं होती। वे चाहें तो मुझे मिल जा सकते हैं।

आपने लिखा है कि रियासत में कोई असर नहीं पड़ा। आप लड़वैये होते हुए भी इतनी जल्दी असर पड़े, ऐसा कैसे सोचते हैं? अगर इतनी जल्दी सफलता मिलती तो सत्याग्रह करने में किसीको खौफ नहीं लगता। मेरी समझ में आपको शांति से काम लेना होगा, ताकि प्रजा-मण्डल के सिद्धांतों को किसी प्रकार की बाधा न आवे।

मेरी तो साफ राय है कि प्रजा-मण्डल को कायम करने के सिवा इस समय और काम आगे बढ़ना ठीक नहीं होगा। श्री प्रेमनारायणजी के पत्र का जवाब उन्हें अलग से दिया है। सत्याग्रहियों को जेल में सुविधाएं देना मंजूर किया गया, सो उन्हें सुविधाएं दे दी गई होंगी।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १०४ :

बंबई, ८-२-४०

आदरणीय सेठसाहब,

हिंदुस्तान की परिस्थिति महात्माजी और वाइसराय की मुलाकात के बाद ही बदल गई है। दूसरी बार मिलने पर कोई रास्ता निकले तो अलग बात है; मगर अभी तो ऐसा ही मालूम होता है कि ब्रिटेन उसी वर्षों पुरानी हेकड़ी पर तुला हुआ है। ऐसी स्थिति में देशी राज्यों के सत्ताधारियों के दिमाग तो वातावरण शांत बनाने में लग ही नहीं सकेंगे। आज ही सर सी. पी. रामस्वामी अय्यर का वक्तव्य मेरी इस धारणा का समर्थन करता है। जयपुर के ज्ञाननाथ जब साधारण से समझौते को भंग करने पर तुले हुए हैं तो मेवाड़ का सीधा होना असंभव-सा प्रतीत होता है। उधर दुष्काल ने लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया है। उदयपुर के मित्र पूछ रहे हैं कि प्रजा-मण्डल के संबंध में बातचीत करने के लिए एक डेप्यूटेशन सर टी.

विजयराघवाचार्य के पास जाय क्या ? और बाद में सेठसाहब आयेंगे क्या ? मैं चाहता हूं कि उदयपुर के मित्रों को आपका उत्तर आने के बाद ही उत्तर दूं ? यदि आप उचित समझें तो राजाजी को एक पत्र फिर दे दें, क्योंकि जो पत्र आपने दिया वह बहुत दिनों का हो गया। राजाजी का उत्तर आपको अभी नहीं मिला है। फिर भी अगर आपको ऐसा लगे कि मौजूदा परिस्थिति में लिखना ठीक नहीं, तो मुझे सम्मति दें कि उनको डेप्यूटेशन के लिए क्या लिखूं ? दुष्काल-पीड़ितों की सेवा में उन्हें लगना चाहिए, या जयपुर का सत्याग्रह शुरू होते ही हमें भी जितनी भी हमारे पास शक्ति हो उसको लेकर उदयपुर में सत्याग्रह शुरू कर देना चाहिए।

आपका,

माणिकलाल वर्मा

: १०५ :

उदयपुर, २३-२-४१

आदरणीय सेठसाहब,

सादर वंदे। कल तारीख २२-२-४१ को श्रीमान महाराणासाहब के जन्मोत्सव पर मेवाड-प्रजा-मण्डल पर से पाबंदी उठा दी गई है। साथ ही यह भी घोषणा की गई है कि बहुसंख्यक निर्वाचित असेंबली स्थापित की जायगी।

यह सब आपके आशीर्वाद और सहयोग का सुपरिणाम है। उम्मीद है कि खुले रूप में आये हुए मेवाड़-प्रजा-मण्डल को आपकी ओर से संदेश मिलेगा।

बिजौलिया की जमीन के लिए अभी कोई निर्णय नहीं हुआ है।

आपका,

माणिकलाल वर्मा

: १०६ :

उदयपुर, ५-६-४१

आदरणीय सेठसाहब,

यहां का काम सुचारु रूप से चल रहा है। प्रजा-मण्डल ने देहाती जनता

में प्रवेश किया है। राज्य की ओर से कोई बाधा अबतक नहीं डाली गई है। दोनों तरफ सहयोग की भावना से काम हो रहा है। प्रजा-मण्डल पर से पाबंदी उठ गई है। सभा-बंदी कानून भी अभी तक है। जिसके लिए प्राइम-मिनिस्टर साहब उठाने के प्रयत्न में हैं। अलबत्ता बिजौलिया के किसानों की जमीन अभी तक नहीं मिली है। परसों फिर मिलकर बातचीत का परिणाम भेजूंगा। आपकी बातचीत में यह बात बाकी रह गई है। आशा है आप भी जल्दी लिखेंगे। वर्षा का समय नजदीक आ रहा है।

आपका,

माणिकलाल वर्मा

: १०७ :

उदयपुर, ६-७-३८

श्रीमान श्रद्धेय एवं पूज्य सेठसाहब,

आपकी प्रशंसा में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। फिर भी आधुनिक वातावरण को मद्देनजर रखकर आपके कदमों में कुछ लिखना भी मेरे खयाल से सभ्यता व संस्कृति से संबंध रखता है।

आपके वर्धा-आश्रम की व साथ में आपके अनुपम त्याग और परिश्रम की अतुलनीय प्रशंसा सुनकर हृदय चाहता है कि अपने-आपको धर्म-पत्नी-सहित आपके चरणों में अर्पण कर संसार में कुछ उन्नत बनकर इस मानव-जीवन को सफल बनाने की कोशिश करूं।

में एक अबोध, मूर्ख मेवाड़-निवासी हूं। मैंने आधुनिक शिक्षा के हिसाब से राजपूताना मैट्रिक की परीक्षा सन् ३७ में पास की है। बाद में करीब एक साल से बिड़ला शक्कर मिल, सिहौरा, यू. पी. में काम कर रहा हूं, पर उसमें मुझको आत्मोन्नति का कोई पथ नजर नहीं आता है। उसके साथ ही मैं अब आपको मेरी धर्मपत्नी के बारे में भी लिख देना चाहता हूं। इसका नाम कृष्णा है। इसने अहमदाबाद शारदा-मंदिर में करीब तीन साल रहकर शिक्षा ग्रहण की है। बाद में वहां से आने के बाद यहां कुछ अभ्यास करके अंग्रेजी

की सातवीं कक्षा तक पढ़ाई की योग्यता प्राप्त की। एक बच्चा करीब सवा या डेढ़ साल का है।

ऐसी हालत व विचारणीय परिस्थिति को आपके सामने रखकर अंत में यह इच्छा प्रगट करता हूं कि मुझको इस वक्त किसी भी बात की कोई खास इच्छा नहीं है, सिवाय इसके कि आपके आश्रम में रहकर उन्नत बनूं। इससे आप मुझको इस विषय में कहांतक सहायता दे सकते हैं, सो कृपया लिखने का कष्ट करें।

आपका कृपाभिलाषी,
हरिश्चंद्र शर्मा

: १०८ :

उदयपुर, २०-५-३८

श्रद्धेय सेठजी साहब,

वंदेमातरम। आपकी सेवा में भाई माणिकलालजी वर्मा और बयाजी के दो पत्र यहां की स्थिति के विषय में भेजे गये थे। मिले होंगे?

पुलिस द्वारा प्रजा-मण्डल का बोर्ड उतारने तक के समाचार तो आपकी सेवा में भेज ही दिये गये हैं। बाद में उसी दिन राजेश्री महकमा खास में भाई माणिकलालजी, रमेशचंदजी और मंडल के प्रधान मास्टर बलवंतसिंहजी मेहता से दीवानसाहब ने २-२।। घंटे तक इसी विषय की चर्चा की और अंत में यही तजवीज जबानी सुनाई कि यहां प्रजा-मण्डल की आवश्यकता नहीं है, अतः मण्डल का कार्य बंद कर दीजिये।

बाद में यह निश्चय किया कि स्थानीय नागरिकों की ओर से महाराणा-साहब को यह प्रार्थनापत्र भेजा जाय कि हमें प्रजामण्डल की आवश्यकता है और उससे पूरी सहानुभूति भी है, अतः संस्था पर लगाई गई पाबंदी हटा दी जाय। इस प्रार्थनापत्र पर आज से भाई माणिकलालजी और बयाजी ने हस्ताक्षर कराने आरंभ कर दिये हैं। मेवाड़ के मुख्य-मुख्य नगरों से भी इसी प्रकार से प्रार्थनापत्र वहां के स्थानीय व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से भिजवाने की कोशिश हो रही है।

कृपया आप कमलाजी के पते पर ही पत्र लिखा करें ताकि सुरक्षित पहुंच जायं। आपके पत्र की प्रतीक्षा में—

सेवक,

दयाशंकर श्रोत्रीय

: १०९ :

मई, १९३८

प्रिय दयाशंकरजी,

तारीख २०-५-३८ का पत्र मिला। श्री माणिकलालजी के पत्र मझे मिले हैं और उनका उत्तर भी मैंने दे दिया है। वहां की परिस्थिति पूरी जाने वगैर कुछ कहना अशक्य है। परंतु लोगों के दस्तखत लेकर दरबार के पास मेमोरेंडम भेजने का विचार अच्छा है। हजारों की तादाद में दस्तखत प्राप्त करने चाहिए। सब तरह के वैध और शांतिमय उपायों द्वारा आंदोलन करने से जनता की ताकत बढेगी और अधिकारियों पर असर भी अच्छा होगा। मैंने श्री माणिकलालजी को लिखा है कि वह इस मामले में श्री हरिभाऊजी उपाध्याय व हीरालालजी शास्त्री की सलाह लेते रहें।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ११० :

उदयपुर, २३–५–३८

श्रद्धेय बजाजजी साहब,

सादर वंदेमातरम। सेवा में तीन पत्र लिखे गये, वे समय पर मिले होंगे। उसके बाद की स्थिति आज सेवा में लिख भेज रहा हूं। भाई माणिकलालजी वर्मा को उदयपुर छोड़ने का नोटिस देकर मेवाड़-बाहर कर दिया है और रमेशचंद्रजी व्यास को भी निकाल दिया है। बयाजी आपकी सेवा में उपस्थित होनेवाले ही हैं, अतः सारी परिस्थिति से आपका परिचय करावेंगे।

मैं विद्या-भवन में काम करता था, सो मुझे भी वहां से त्यागपत्र देने को बाध्य किया और मंडल के प्रधान मास्टर बलवंतसिहजी मेहता एक जैन स्कूल म हेडमास्टर थे, अतः उन्हें भी संस्थावालों ने त्यागपत्र देने को बाध्य किया।

अतः उन्होंने भी त्यागपत्र लिख दिया है। खास बात तो यह है कि यहां की जितनी भी सार्वजनिक संस्थाएं हैं उनमें सब राज्य कर्मचारी भरे पड़े हैं। अतः यहां का सार्वजनिक जीवन पनप नहीं पाता है।

अब मैं मेवाड़ के मुख्य-मुख्य नगरों में होता हुआ उन निर्वासित भाइयों से मिलूंगा। बयाजी भी निश्चित समय पर अजमेर में मिलेंगे। मेवाड़-प्रजा-मंडल को मृत देखना हम नहीं चाहते हैं। अतः यह निश्चय किया है कि दूसरा दफ्तर अजमेर में ही रखा जाय और मेवाड़ में फिरकर और पत्रों में लोकमत जागृत करने का साहित्य प्रकाशित करके अवसर आते ही फिर उदयपुर में जम जावेंगे।

आप कृपया अपनी मूल्यवान सलाह समय पर देते रहें और यहां की स्थिति में दिलचस्पी रखकर समय पड़ने पर सहयोग देवें, ऐसी मेरी नम्र प्रार्थना है।

कमलाजी वंदे अर्ज लिखवा रही हैं।

सेवक,
दयाशंकर श्रोत्रीय

: १११ :

उदयपुर, १४–५–३८

पूज्य काकाजी,

चरणों में सादर प्रणाम। मैं व जीजी यहांपर अच्छी तरह से पहुंच गई हैं। आप चिंता न करें।

यहांपर प्रजा-मण्डल कायम हो गया है, इस बात की सूचना तो आपको मिल ही गई होगी। स्टेट की प्रजा-मण्डल पर बड़ी कड़ी निगाह है। स्टेट ने प्रजा-मण्डल का बोर्ड हटाने की सूचना दी है तथा स्टेट के कार्यकर्ताओं को प्रजा-मण्डल के मेंबर बनने से मना किया है। माणिकलालजी तो डटे हुए से दिखाई देते हैं।

श्री जनार्दन रायजी नागर का परिचय तो शायद मैं आपसे पहले ही करा चुकी हूं। इनको मैंने पहले कहा था कि आप अभी स्टेट में नौकरी

कर लीजिये, बाद में देखिये कि स्टेट आपके साथ कैसा बर्ताव करती है। उनके राष्ट्रीय विचार होने से डाइरेक्टर ऑफ एजुकेशन तो उनसे सख्त नाराज हैं और अभी उनको यह भी सूचना मिली है कि आप यदि किसी प्रकार से प्रजा-मंडल में भाग लेंगे तो आपको नौकरी से हटा दिया जायगा। आप ही बताइये ऐसी स्थिति में क्या किया जाय ? मैं तो इस समय अपनी राय यह कभी भी नहीं दे सकती हूं कि सरकार के डर से प्रजा-मंडल में भाग न लें।

काकाजी, यह लड़का होनहार है। यदि आप मिलेंगे तो बात करके आपको भी आनंद होगा। इनके पिताजी तो स्टेट सर्वेंट हैं, इसलिए इनसे पटती नहीं। इस क्षेत्र में आने के लिए एक बार उनसे नाता तोड़ना होगा। लेकिन पिता से नाता तोड़ने से पहले मैं आपसे जान लेना चाहती हूं कि आपकी क्या राय है, क्योंकि मैं बिना आपकी इजाजत के कुछ नहीं कर सकती हूं। इसलिए आपकी आज्ञा पर सारी बात निर्भर है।

मैं आपसे एक बात का आग्रह तो अवश्य करूंगी कि यदि आप किसी कारण से प्रजा-मण्डल में काम करने की अनुमति न दें तो उन्हें किसी भी तरह आपके पास बुलाकर रखना होगा।

विशेष सब कुशल है। यदि हो सका तो मेरा इन दो महीनों में स्त्री मेंबर बनाने का प्रयत्न करने का विचार है।

जीजी अच्छी हैं।

सज्जन

: ११२ :

वर्धा ३०–५–३८

चि. सज्जन,

तुम्हारा पत्र यथा समय मिल गया था। प्रजा-मण्डल के विषय में जयपुर-दरबार काफी सख्त कदम उठा रहा है, ऐसा सुना है। श्री जनार्दन राय नागर के बारे में तुमने लिखा। अभी-अभी प्रजा-मण्डल की हालत जो वहां है, उसको देखते हुए श्री जनार्दनजी की क्या तैयारी है, लिखना। प्रजा-

मंडल के कार्यकर्ता उदयपुर से बाहर रहकर प्रजा-मण्डल का काम करना चाहते हैं, यह रीति सदोष है। उदयपुर में ही रहकर काम करना उचित है, तथापि इस बारे में निश्चित राय तो वहां की परिस्थिति देखकर ही वहां कार्य करनेवाले ठहरा सकते हैं। श्री मोहनबाई कलतक यहां आनेवाली हैं।

जमनालाल बजाज

: ११३ :

बिजौलिया, ९-११-३३

मान्यवर महोदय !

आज कई महीनों के पश्चात् हमने किसान पंचायत की बैठक बीच में ही करके यह निर्णय किया गया है कि श्रीमान सेठसाहब के पास दो प्रतिनिधि भेजे जावें और जैसी यहां कि हालत है उसका वहां जाकर ठीक-ठीक प्रदर्शन करें जिससे उनको मालूम हो जावे; क्योंकि हमने श्रीमान् की सेवा में पहले भी २-३ पत्र दिये थे, किंतु कोई उत्तर न मिलने से पशोपेश में थे, अब ये प्रतिनिधि यहां की ठीक परिस्थिति बात देंगे, और आप जो राय देंगे उसको भी ये लोग यहांपर कह देंगे। फिर भी हम यहांपर कुछ खास-खास बातें बता देना ठीक समझते हैं।

(१) यहां का संघटन बिल्कुल बिगड़ा हुआ है, लोगों में इतना असंतोष फैल गया है कि एक बार आपके यहां पधारे बग़ैर सुधरना मुश्किल है। हां इतना अवश्य है कि जिस समय आप यहां पधारकर लोगों को सांत्वना देंगे, तो अवश्य सुधरने में देर न लगेगी।

(२) यहां का सर साहब तथा आपके बीच में जो फैसला हुआ, वह अबतक हम नहीं जानते और न हमारी कामयाबी हुई। इसका क्या कारण है ?

(३) जो मवेशी नीलाम हो गये थे, उनको वापस दिलाने का हुक्म हो चुका था, वे भी न मिलीं, इसका क्या कारण है ? इसके लिए सर साहब के पास आप लिखें कि जिस चीज को दिलाने का हुक्म हो चुका था वह भी अबतक न सौंपी गई।

(४) खैर जमीन न आई किंतु ये नीलामशुदा मवेशी ही आ जाते तो हममें कभी असंतोष पैदा न होता।

(५) आपका पत्र भी बराबर किसान-पंचायत को मिलता रहे तो ठीक रहे।

(६) जहांतक हो सके आप शीघ्र पधारकर हमको दर्शन दें, तो बड़ी खुशी होगी। आपके पधारे बगैर काम न चल सकेगा।

(७) माणिकलालजी की बीमारी का हाल सुना है। उनकी भी जल्दी-से-जल्दी रिहाई के लिए हमने भी दरख्वास्त दी है।

(८) हम किसानों की हालत तो आप जानते ही हैं। वैसी ही हमारी पंचायत है। हमारे ऊपर बिजौलिया किसानों का एक ही स्कूल है। उसका कोई प्रबंध नहीं है। वह मास्टर हमारा सहयोगी है। जबतक माणिकलालजी न आ जायं तबतक उनको जरूरी समझते हैं। पंचायत के पास एक पैसा नहीं जिससे हम मास्टर की सहायता कर सकें। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि उसका भी जल्दी प्रबंध करें।

(९) हमें अगर कभी ऐसा मौका मिले कि कुछ पैसे खर्च होने पर हमारी जमीन आ सके ऐसा भरोसा हमको हो जाय, तब श्रीमान के पास से कुछ रुपये मदद लेना पड़े, सो उसके लिए भी आप इनको वह देवें। हमारी जमीन वापस आने पर ब्याजसमेत वापस दे सकते हैं। बातचीत चल रही है, यह आपसे निवेदन कर सकेंगे। यह बात हार से न लिख रहे हैं, किंतु हमारा सिद्धांत है कि धन जाय पर इज्जत रहे।

(१०) यह हमारी सब लोगों की विनय है कि हमारी ऐसी नाजुक स्थिति में हम गरीब लोगों को संभालते रहें।

आपका,
द: जमना
सरपंच—किसान पंचायत, बिजौलिया

: ११४ :

वर्धा, १४-११-३३

प्रिय महोदय,

श्री नौदरामजी और श्री खेमराजजी पंचायत की तरफ से आपकी

तथा अन्य पंचों की सही का ता. ९-११-३३ का पत्र लेकर मिले। पत्र पढ़ा और उनसे बात की। पंचायत की कोई भी चिट्ठी, इस चिट्ठी के अलावा, अभी तक मुझे नहीं मिली। अगर चिट्ठी मिली होती तो मैं जवाब जरूर देता। आप लोगों के समाचार श्री हरिभाऊजी, श्रीरामनारायणजी और श्री शोभालालजी द्वारा समय-समय पर मिलते रहे हैं। श्री माणिकलालजी का पत्र भी कभी-कभी आता है। मैं उनको उत्तर बराबर देता ही रहता हूं। आपकी भी चिट्ठी आती तो मैं उत्तर जरूर देता। आप लोगों का मेरे ऊपर जो प्रेम है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। आप लोगों में मुझे उदयपुर या बिजौलिया बुलाने की जो इच्छा है उसके बारे में मुझे आपसे एक बात कहनी है। मुझे वहां आने में कोई आपत्ति नहीं है। अगर मेरे वहां आने से आपका फायदा होता दिखाई दे तो मैं जरूर आऊं। लेकिन बात ऐसी है कि आज की परिस्थिति में मेरे वहां आने से आपका नुकसान होने की संभावना है। आजकल हम लोगों से और अंग्रेज-सरकार से युद्ध छिड़ा हुआ है। मेरे आने से उदयपुर-सरकार अगर आप लोगों को कुछ फायदा करने की इच्छा करती भी होगी तो नहीं करेगी। उसको अंग्रेजी सरकार का डर रहेगा कि कहीं उससे जवाब तलब न किया जाय। आज की परिस्थिति में मेरे कहने का असर भी नहीं पड़ेगा। बजाय उदयपुर आने के कहीं दूसरी जगह जैसे बंबई आबू इ. पर मेरी इच्छा सर सुखदेवप्रसादजी से मिलने की है। मैंने पहले भी उनसे मिलने की कोशिश की थी, लेकिन मिलना नहीं हो सका। अब भी जबतक मैं जेल के बाहर हूं, यदि तबतक सरसाहब का आना इधर हुआ तो मैं उनसे मिलने की कोशिश करूंगा। आपका मामला शुरू से ही दूसरों ने बिगाड़ दिया है। उसमें अड़चनें काफी हैं, फिर भी मुझसे जो हो सकेगा करूंगा।

(१) आप लोगों को मैं भूला नहीं हूं। आपका ख्याल तो मुझे रहता ही है। आप लोगों ने काफी कष्ट सहा है।

(२) रुपया देकर जमीन लेने की दिक्कतें जो हैं वह बात इन भाइयों को समझा दी है। वे आपसे सब हाल कहेंगे।

(३) जो दिक्कतें जमीन मिलने के बारे में हैं वे ही मवेशी के बारे में भी हैं। आप लोगों के जो मवेशी वापस नहीं मिले हैं, उनकी एक फेहरिस्त आज मेरे पास भेज दीजियेगा। और ज्यादा सलाह मैं इस बारे में बगैर माणिलकलालजी से मिले और पूरी परिस्थिति समझे कुछ नहीं दे सकता।

(४) शिक्षक की मदद के बारे में मैं श्री हरिभाऊजी को पहले ही लिख चुका हूं। आशा है, उसका प्रबंध हो गया होगा। फिर भी मैं उनको लिख दूंगा।

(५) मुझसे और सर सुखदेवप्रसाद से जो फैसला हुआ था वह श्री माणिकलालजी को मालूम था। और आप लोगों को बता भी दिया होगा। लेकिन उस फैसले को पूरा कराना आजकल इस युद्ध के कारण हमारे लिए मुश्किल है।

(६) माणिकलालजी के लिए एक तार दिया था। फिर भी मौका लगने से कोशिश करूंगा।

(७) इन भाइयों को ३२) रुपया लौटने का किराया देकर विदा करता हूं। आज मैं तो अनायास इन्हें मिल गया। अगर पूज्य महात्माजी के साथ चला गया होता तो १५-२० दिन तक भी मिलना न होना संभव था। ऐसी हालत में इन्हें बहुत अड़चन होती। इसलिए भविष्य में अगर किसीको भेजने की जरूरत पड़े तो मेरी चिट्ठी मंगाकर ही भेजना, जिससे आनेवालों को मुफ्त में कष्ट न हो।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

(जयपुर)

: ११५ :

जयपुर सिटी, २४-५-३८

प्रिय भाई जमनालालजी साहब

सप्रेम वंदे। माफी चाहता हूं कि यह पत्र बहुत देरी से लिख रहा हूं। मेरी लड़की जो मण्डल के अधिवेशन के वक्त बहुत बीमार थी, आखिरकार १७-५-३८ को चल बसी। मैं उसकी देखभाल भी न कर सका।

भाईजी, आपका थोड़े अर्से के लिए ही जयपुर रहने का इत्तफाक हुआ; लेकिन आप लोगों ने जादू की तरह मुझको बांध लिया है। आप बड़े अमीर, प्रभावशाली और देशभक्त हैं। मैं एक छोटा-सा गरीब, मजदूर और साधारण मनुष्य का लड़का। इतना भेद होते हुए, मालूम नहीं आपका साथ कैसे निभेगा? लेकिन इस वक्त तो आपके हृदय की पवित्रता, आपकी बुद्धि की सरलता और आपके प्रेम ने मेरे मन को मोह लिया है। माताजी का भी प्रेम खूब ही था। मैं कुछ परेशान-सा था, इसलिए आप लोगों की सेवा न कर सका। मेरी पत्नी भी आप लोगों के दर्शन नहीं कर सकीं। उनको बीमार बच्ची के पास ही रहना पड़ा। आप हम लोगों के इस अविनय के लिए माफी बख्शेंगे।

आप अब कांग्रेस की कार्यसमिति से फुर्सत पा चुके होंगे। प्रजा-मण्डल का कार्यभार आपको ही उठाना है। इसके बारे में एक छोटी-सी अर्ज करनी है कि कृपा करके आप मुझको कार्य-समिति से माफी दे दें। मैं यह चाहता हूं कि नगर-कमेटी के काम को मैं देखता रहूं। शास्त्रीजी व दूसरे मित्र जयपुर राज प्रजा-मण्डल का कार्य करते रहेंगे। नगर में काम का खर्चा हम नगर से निकाल लेंगे। और यह भी मालूम हो सकेगा कि कहां कैसा काम हुआ। यह हम लोगों में बीमारी है कि एक आदमी हर जगह हो जाता है और काम कहीं नहीं करता। बात करने और डींगें मारने के लिए हरदम हम तैयार रहते हैं। नगर में कार्य करने के लिए कुछ बहनों ने भी मुझे वचन दिया है।

कार्य के विभाजन करने की जरूरत है और जो शख्स कि जयपुर राज्य प्रजा-मण्डल की कार्यकारिणी में हो उसको नगर-कमेटी के काम में हाथ नहीं डालना चाहिए और जो नगर में हों वे मंडल की कार्यकारिणी से अलग रहें। आप भी इसको मंजूर करेंगे। मेरे बजाय किसी दीगर सज्जन को कार्यकारिणी में रख लें। वैसे मैं हमेशा हाजिर ही रहूंगा।

माताजी, बहनजी को नमस्ते। आपका,

चिरंजीलाल अग्रवाल

: ११६ :

वर्धा २९-५-३८

प्रिय भाई चिरंजीलालजी,

आपका बिना तारीख व मिती का पत्र कल मुझे यहां मिला। आपकी लड़की इतना इलाज, व्यवस्था आदि करने के बाद भी आखिर बच नहीं सकी, यह जानकर दुःख हुआ। जो उचित प्रयत्न करना था वह तो आपने किया ही था। बच्ची की माता से हम दोनों की संवेदना प्रगट करें व उन्हें हिम्मत से व विचार से इस दुख को सहन करने को कहें।

आपने मेरे व जानकीदेवी के प्रति जो प्रेम दिखाया उस बारे में मैं क्या लिखूं ? यह बात सत्य है कि हम लोग थोड़े परिचय-से भी निकट आ सके और मुझे तो विश्वास होता है कि अधिक साथ रहने से व परिचय बढ़ने से विशेष नजदीक आ सकेंगे।

प्रजा-मण्डल के बारे में मन में कई विचार व योजनाएं आती रहती हैं। श्री शास्त्रीजी के पत्रों से मालूम होता है कि वह भी चिंतित-से हैं। बहुत सी बातों का खुलासा तो मिलने पर ही हो सकता है, तथापि शास्त्रीजी से मिलने पर उनके विचार अधिक स्पष्ट जान लेने पर मुझे विचार करने में सहायता मिलेगी। आप चिंता न करें। हमें प्रजा-मण्डल को तो हर हालत में सफल बनाना ही है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ११७ :

जुहू, ८-१-३९

प्रिय श्री चिरंजीलालजी,

आपका पत्र श्री राय के हाथ मिल गया था। खेद है कि इस अवसर पर आपका आना न हो सका। आप आते तो पूज्य बापूजी और सरदार पटेल से जो कुछ सलाह-मशविरा यहां हुआ उसकी विगत से वाकिफ हो जाते। खैर यहां सबकी सलाह से जो पत्र मेरी तरफ से प्रेसिडेंट जयपुर कौंसिल को गया है उसकी एक प्रति श्री राय को मैंने दी है, जिसे आपने देख ही लिया

होगा। मुझे आशा है, उससे आपको संतोष हुआ होगा। खासकर इस बात से कि उसमें राजनीतिक मांगों को ही लड़ाई का आधार बनाया गया है, जैसाकि आप भी चाहते थे। मेरा तो पहले से ही यह मत रहा है कि हमें किसानों के तात्कालिक प्रश्न को राजनीतिक मांगों के साथ नहीं मिलाना चाहिए। श्री हीरालालजी के साथ के आपके स्वभाव-भेद तथा किसानों में किये गये प्रचार के संबंध में आपकी शिकायत भी जानी। मेरा खयाल है कि जबकि लड़ाई हमारे सिर पर आ रही है हम सबके लिए यही मुनासिब है कि हम सब संयत रहकर और भेदों से ऊपर उठकर अपने एक ध्येय की सफलता में ही सारी शक्ति लगा दें। इधर लड़ाई की संभावना को देखकर अब प्रजामंडल के सारे सूत्र मेरे हाथों में आ गये हैं। और किसानों के तथा राजनीतिक मांगों के बारे में मेरी सूचनाओं के मुताबिक ही सभी काम होगा। इसलिए आपको किसानों की मांगों के या उनमें होनेवाले प्रचार आदि के बारे में अब निश्चिंत हो जाना चाहिए। आपका पत्र यद्यपि आ गया था, फिर भी शास्त्रीजी-संबंधी शिकायतों के महत्व को ध्यान में रखकर मुझे उन्हें वह बता देना ही आवश्यक प्रतीत हुआ; क्योंकि आपस में अपने मतभेदों या शिकायतों के संबंध में बातचीत करके उनकी सफाई कर लेना अच्छी नीति है और हम लोग कांग्रेस-कार्य-समिति में इसका अवलंबन करते हैं, जिससे हमारे आपस में सद्भावना और कार्य में बल तथा उत्साह रहता है।

फरवरी के पहले आपसे भेंट होने का मौका आया तो विशेष बातचीत करेंगे। नहीं तो मैं यह आशा तो अवश्य रखता हूं कि इस लड़ाई में आप अपना पूरा-पूरा हिस्सा देंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ११८ :

जयपुर, ९-२-४०

पूज्य श्री भाई सेठ जमनालालजी बजाज,

सादर वंदे। आपका ३-२-४० का कृपापत्र मिला। अभी तक बीमारी जारी रहने का समाचार पाकर बड़ा दुःख हुआ। मेरे खयाल से तो आपको

पूरा इलाज कराना चाहिए। जबतक कि डाक्टर इजाजत न दे कोई परेशानी नहीं लेनी चाहिए। गये-साल आपने हम जयपुरियों के लिए कितना कष्ट उठाया था, वह जयपुर-निवासियों के दिल में हमेशा याद रहेगा।

जयपुर में दमन-नीति जारी है, उसके लिए तो हम भारतवासी ही दोषी हैं। हमने हिंदुस्तानी प्रधानमंत्री की मांग की। हम कामयाब हुए। किंग लाग के बजाय किंग क्रेम हमको मिल गया। लेकिन थोड़े दिनों में बात जरूर बदल जायगी। वकीलों के बारे में जो आपने लिखा सो ठीक है। एक प्रस्ताव बार एसोसियेशन से पास किया गया है। उसकी नकल आपकी सेवा में भेजता हूं। तमाम वकीलों की एक मीटिंग और बुलाई गई है। उसमें भी कुछ पास किया ही जायगा।

मेरे विचार से आपको सत्याग्रह शुरू करने की जरूरत तो नहीं आवेगी। राजा ज्ञाननाथ से मैं मिला था। यह आदमी प्रतिक्रियावादी हो सकता है क्योंकि वह पोलीटिकल डिपार्टमेंट का खास आदमी है; लेकिन इसकी होशियारी में कोई शुबहा नहीं है। आदमी मेहनती भी है और रियासत का रुपया बेजा खर्च भी करना नहीं चाहता। अगर यह शख्स अपने खिलाफ हुआ तो बड़े-से-बड़ा जुल्म ढाने पर उतारू हो जायगा और खूब दमन करेगा। अगर यह अपने मुआफिक हो गया तो यह बहुत भलाई भी कर सकता है। सर सी. पी. रामस्वामी ऐय्यर के टाइप का आदमी है। यह मैंने आपकी जानकारी के लिए लिखा है। सबसे खराब तो यहां की सारी मिनिस्ट्री है। मेरे खयाल से तो हमें स्पष्ट चर्चा करके मिनिस्ट्री को एक दूसरे की स्थिति साफ बतला देनी चाहिए। हम क्या चाहते हैं और राज्य क्या चाहता है। इस समय आप बीमार हैं, यह हमारी बदकिस्मती है। आप यहां होते तो ठीक होता।

एक बात अभी तक मेरी समझ में नहीं आई। हम लोग कबतक आपको बुला-बुलाकर तकलीफ दिया करेंगे। इसका उपाय वहीं आपको सोचना होगा।

प्रजामण्डल का प्रोग्राम तो आपको व उसकी कार्य-समिति को तय करना ही है। मैं इस संबंध में आपसे कुछ अर्ज करना चाहता हूं। हालांकि मुझको इस बारे में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है।

१. कार्य-समिति का कोई सदस्य प्रधानमंत्री को या किसी दूसरे मिनिस्टर को पबलिक स्पीच में गाली-गलौज न दे। ऐसा करना न सत्य है, न अहिंसा।

२. किसानों के बारे में पूरी जानकारी हासिल करके आर्थिक कार्यक्रम तैयार किया जाय। उसके मुताबिक काम हो। बगैर हालात जाने किसानों के आंदोलन को प्रजामण्डल से अलग रखा जाय। जो आर्थिक प्रोग्राम ठीक हो उसको फैलाना चाहिए। उसके लिए प्रचार जरूर करना चाहिए। यह हमारी मांग होनी चाहिए।

३. क्लास-स्ट्रगल (वर्ग-युद्ध) को आप पसंद करते हैं या नहीं? अगर पसंद करें तो वैसी पालिसी चलावें। वरना दूसरी तरह की आलोचना उसूल की बिना पर होनी चाहिए। किसी शख्स के ऊपर इस वक्त तक हम इस उसूल को बरत नहीं रहे हैं। कुछ जिम्मेदारी भी महसूस करनी चाहिए।

ये मेरे विचार हैं, आप इनको सोचें। क्योंकि एक तरफ मैं फारवर्ड ब्लाक का प्रेसिडेंट हूं, दूसरी तरफ सरकार द्वारा खरीद लिया गया हूं, इसलिए मुझे डर है कि शायद मेरे विचार फारवर्ड ब्लाक या सरकार की सफाई में न हो?

आपका,

चिरंजीलाल अग्रवाल

: ११९ :

पूना, १५-२-४०

प्रिय श्री चिरंजीलालजी,

आपका ९-२-४० का पत्र यथासमय मिला। बार-एसोसियेशन का प्रस्ताद देखा। प्रस्ताव अच्छा है। आशा है, तमाम वकीलों की सभा ने भी इसी तरह का रुख अख्तियार किया होगा। अगर वकील लोग इसी तरह मजबूत रहेंगे तो उनकी भी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और प्रजापक्ष की ताकत भी।

राजा ज्ञाननाथ के विषय में आपने अपने विचार लिखे सो ठीक किया। मैं मार्च के पहले सप्ताह में वहां आ रहा हूं। आपकी अन्य सूचनाओं के बारे में

आपके विचार उस समय रूबरू में विस्तार से जान सकूंगा।

मुझे जयपुर बार-बार न आना पड़े व जयपुर के मित्र मुझे जयपुर की चिंता से मुक्त कर दें तो मुझे भी खुशी होगी और कांग्रेस के अन्य सार्वदेशिक प्रश्नों की ओर में अपना समय और शक्ति अधिक लगा सकूंगा। आज मुझे जयपुर के मित्र लोग बार-बार बुलाते हैं। यह मेरे प्रति प्रेम और विश्वास का ही कारण है। यह मैं जानता हूं कि आखिर आज नहीं तो कल सारी जिम्मेवारी उन्हें ही उठानी पड़ेगी। यह सब बातें मैंने पहले ही जयपुर के मित्रों को साफ तौर से कह दी हैं। आपकी भी मदद रहेगी तो मुझे जल्दी मुक्ति मिलने में सुगमता रहेगी। आशा है, घर में सब अच्छे होंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १२० :

जयपुर, ६-८-४१

प्रिय भाईजी श्री सेठ जमनालालजी साहब,

सादर वंदे। यह समाचार जानकर कि आपके शिमला पधारने से आपकी तंदुरुस्ती पहले से अच्छी है, बड़ी खुशी हुई। बहुत जल्द शायद दर्शन हो सकेंगे।

मेरा व मेरे मित्रों का जयपुर-प्रजा-मण्डल की कार्यकारिणी-कमेटी से विचारों में विरोध रहा है। यह आपको मालूम है। विचारों में समानता न होने की वजह से मैं कार्यकारिणी-कमेटी से अलग हुआ था। अब यह महसूस करके कि मौजूदा कार्यकारिणी के पास कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं है कि जिससे मौजूदा सूरत में राजनैतिक मामलों में कामयाबी हासिल हो सके, मेरे कुछ मित्रों ने प्रजा मण्डल 'प्रोग्रेसिव-पार्टी' कायम की है। हो सकता है कि हम भी नाकामयाब रहें—हो सकता है कि कुछ कर सकें, वह तो भविष्य में छिपा है। लेकिन मैं अपनी विचारधारा के मुताबिक कार्य कर सकूंगा।

यह पार्टी प्रजा-मंडल का एक अंग रहेगी और जो प्रजा-मंडल का मेंबर होगा वही इसका मेंबर हो सकेगा। आगामी वर्ष में यह सिर्फ तीन बातों

पर जोर देना चाहती है (१) म्युनिसिपल सुधार (२) जकात का सवाल (३) किसानों का बंदोबस्त। मेरा ऐसा विचार है कि इस मामले में पूरी जानकारी न होने की वजह से कार्यकारिणी-कमेटी इसमें सफलता प्राप्त न कर सकी। जो आंदोलन राजा ज्ञाननाथ के खिलाफ किया गया है, हम लोग शुरू से इसके विरोधी थे, यह भी आपको मालूम है।

इस पार्टी का पहला आम अधिवेशन १४–१५ सितबर, १९४१ को जयपुर-नगर में श्री नौशेर अली की अध्यक्षता में होगा। श्री अमृतलालजी कांफ्रेंस का उद्‌घाटन करेंगे। आपका मेरे साथ बड़ा स्नेह हमेशा से रहा है और मैं उम्मीद करता हूं कि आपका आशीर्वाद इस पार्टी पर रहेगा। मैं यह भी प्रार्थना करूंगा कि आप १४–१५ सितंबर, १९४१ को इस कांफ्रेंस में जरूर पधारें। इधर आपकी तंदुरुस्ती भी सुधर जावेगी और हम सब लोग आपके दर्शन भी कर लेंगे। हम लोगों के कार्यों का ढंग भी आपको मालूम हो सकेगा।

शायद आपको मालूम होगा, मेरे बारे में बहुत-से समाचार आपको वक्तन फवक्तन दिये गये थे, कहांतक सत्य है, वह आप खुद जानते हैं। मेरे अलग काम करने से अब आयंदा इस तरह गलतफहमी नहीं हो सकेगी। हरएक आदमी यह जान सकेगा कि मेरा क्या विचार है और किस-किस आधार पर है—न मुझको फिजूल सफाई देनी पड़ेगी और न कोई किसी तरह का प्रचार मेरे या मेरे मित्रों के खिलाफ हो सकेगा। हम लोग प्रजा-मण्डल में कोई ओहदा नहीं चाहते। हम अपने विचार से कार्य करेंगे।

मुझे तो पक्की उम्मीद है कि अगर आप हम लोगों के हृदय चीरकर देखने व हमारी प्रणाली जानने की कृपा करें तो आपको खुद यह मालूम हो जायगा कि अभी तक हम लोगों के बारे में आपको भुलावा था। हम बेवकूफ सही नादान व नातजुर्बेकार सही, लेकिन जिन बड़ी-बड़ी बातों में मेरा मतभेद कार्यकारिणी से रहा, वहां कार्यकारिणी की गलती बाद में सबित हुई।

(१) शेखावटी में किसानों में जो श्री शास्त्रीजी ने पहले दौरा किया और सरकार की रिपोर्ट के मुताबिक उन्होंने लगान न देने का प्रचार किया,

में उसका विरोधी था। आपको पत्र डाला था, उसकी वजह से क्या-क्या हुआ आपको मालूम है।

(२) राजा ज्ञाननाथ के मुताल्लिक जो प्रस्ताव पास किया उसका मैंने कितना विरोध किया, उसका फल आज हम लोग सब देख रहे हैं।

ये दोनों बातें तो आपको भी मालूम हैं। छोटी-छोटी बहुत-सी बातें हैं, लेकिन मेरी हरएक बात पर यह कहा जाता था कि चूंकि मैं कार्यकारिणी का विरोधी हूं, इसलिए दूसरी राय रखता हूं।

मैं तो यह चाहता हूं कि म्युनिसिपल-सुधार, जकात और जमीन के बंदोबस्त के बारे में हमारी योजना को दूसरे मित्र देखें। हमको कार्य करने का मौका दें, या तो हमारी मदद करें या इन बातों को बिल्कुल न छूवें। गाली-गलौज का काम बंद कर दें तो कामयाबी निश्चय होगी—बस, आपका आशीर्वाद होना चाहिए। आप एक मर्तबा पधारें तो सही।

मैंने अपने मित्रों को उम्मीद दिलाई है कि अगर आपकी तंदुरुस्ती ठीक रही और साथ में अवकाश भी रहा तो आप जरूर-जरूर पधारेंगे। कृपया जरूर-जरूर पधारें। तार द्वारा फौरन पहुंचने की सूचना दे दें।

माताजी को सादर प्रणाम।

आपका,
चिरंजीलाल अग्रवाल

: १२१ :

जयपुर ९-९-४१

मान्यवर,

आपकी रिहाई के समय आपके स्वास्थ्य के बारे में चिंताजनक समाचार थे। उस समय हमको यह उचित नहीं मालूम हुआ कि हम स्थानीय मामले आपके सामने पेश करके आपकी नाजुक तबीयत पर जोर डालें। कुछ सप्ताह पहले आपके स्वास्थ्य लाभ की बात जानकर बहुत प्रसन्नता हुई।

अगर आवश्यक न होता तो जयपुर की हम लोगों की आपस की बातों में इस समय आपका ध्यान बंटाने की हमारी इच्छा नहीं थी। प्रजा-मंडल में हम लोगों की जो सुविधाजनक स्थिति थी, आपके जाने के साथ असाध्य

ही होती गई। आपकी सरपरस्ती में जो सौजन्य का वातावरण रहता था, बार-बार उसकी याद आती है। मंडल की कार्यकारिणी से, हमारी दृष्टि के अनुसार, कार्यक्रम का आग्रह रखते हुए भी हमने सदा ही आत्म-समर्पण किया है। कार्यकर्ता के लिए यह कहना कि उसने क्या किया है, कोई शोभा की बात नहीं है। हम तो नम्रतापूर्वक यही पूछ सकते हैं कि हम और क्या कर सकते थे? प्रजा-मंडल को अपने खून से सींचने का दावा कोई भी कर सकता है; पर क्या यह क्षोभजनक नहीं होगा, यदि यह कहा जाय कि प्रजा-मंडल का हित हमारे लिए सर्वोपरि नहीं है, क्योंकि प्रजा-मंडल कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के संरक्षण की चीज हो गया, तो क्या जयपुर के उद्धार की जिम्मेदारी, जैसा कुछ मित्र कहते हैं, भगवान ने उनपर डाली होगी? पर क्या भगवान ने उनपर यह भी जिम्मेदारी डाली है कि वे ऐसे लोगों को जो उनसे नीति और कार्यक्रम के संबंध में मतभेद रखते हैं, काम न करने दें। जिनके लिए राजनीति सहूलियत से करने का काम है उनको भले ही आलोचनात्मक दृष्टि से सोचने की जरूरत न पड़े; पर जिनके लिए राजनीति जिंदगी है उन्हें अपना विश्वास, अपनी श्रद्धा, अपना मार्ग निश्चित और व्यक्त करना होता है। जयपुर की परिस्थितियों में मौलिक मतभेदों की गुंजाइश नहीं है। समाज के पुर्निर्माण, नई आर्थिक व्यवस्था अथवा जीवन-दर्शन की नई कारिका जैसी मूलभूत बातों पर यहां के काम का कोई असर भी नहीं पडने वाला है। अतः हम यह आशा लगाये थे कि तफसील की बातों के बारे में, उत्तरदायित्वपूर्ण शासन के लक्ष्य की ओर मंडल की प्रगति के प्रयत्न में, कार्यकर्त्ताओं के मतभेद वांछनीय सीमा में रहते हुए, पारस्परिक सदभावना और सहयोग के साथ काम करना संभव हो जायगा। हमने यह नहीं समझा था कि वह सहयोग एक ओर के लोगों की कृपा पर दूसरों के आश्रित रहने के आधार पर ही कायम रहेगा। अपनी सार्वजनिक प्रवृत्ति दूसरों के रहम पर छोड़ देने की शर्त पर ही हमें काम करने का अवसर दिया जायगा। पर अगर वर्षों तक हमने इसी स्थिति को बर्दाश्त किया तो उसके लिए हमें कोई खेद नहीं है, साथियों का—बड़ी उम्र के साथियों का

एहसान उठाते जाना भी फख्र की बात है। जीवन में अदब की बहुत बड़ी कीमत है, और इन सबके अतिरिक्त आपका आग्रह, बहुत-कुछ देकर, बहुत कुछ छोड़कर भी, मान्य रखने में हमने गौरव अनुभव किया है। हमें निस्संकोच यहांपर कहना चाहिए कि यह आग्रह कार्यकारिणी की मर्जी रखने का था— यह एक वास्तविकता है कि कोई भी नेता इसके अलावा कोई दूसरा स्टैंड नहीं ले सकता। नेता का प्रयत्न सारी शक्तियों का पूरे-से-पूरा उपयोग करने का ही हो सकता है, पर अगर वह संभव नहीं होता है तो फिर अधिक सामर्थ्यवान दल को स्वायत्त दे देने में भी औचित्य है। हमें इस संबंध में जरा भी आपत्ति नहीं है।

आपके यहां से जाने के बाद व्यक्तियों के मतभेद जिस सीमा तक पहुंच गये, अग्रवालजी के विरुद्ध कार्यकारिणी की कार्यवाही उसमें एक दुःखांत घटना है। आप अग्रवालजी को किसीसे कम नहीं जानते। हमारा संपर्क भी उनसे बहुत रहा है। उन्हें उस कार्यवाही से बहुत बड़ी ठेस पहुंची है। हमारा यह विश्वास है कि अगर आप यहां होते तो ऐसी कार्यवाही हर्गिज नहीं हो सकती थी। संभव है, यह मामला आपके सामने असलियत से भिन्न रूप में गया हो। हम आपको यकीन दिला सकते है कि कोई ऐसी गलती अग्रवालजी से नहीं हुई कि उन्हें इतना कठोर दण्ड दिया जा सके।

पर इस घटना से, हमने जो प्रजा-मंडल प्रोग्रेसिव पार्टी, मंडल के अंतर्गत बनाई है, उसका इतना ही संबंध है कि वर्किंग कमेटी के कुछ सदस्यों द्वारा अग्रवालजी में दोष ढूंढ़ते रहने पर भी उनके साथ सहयोग करने और उनकी योग्यता का फायदा जनता के हित में उठाने में पार्टी को झिझक नहीं है, क्योंकि हम जानते है कि प्रजा-मंडल के ध्येय के प्रति, सिद्धांत के प्रति वह उतने ही सच्चे हैं जितना कोई दूसरा सदस्य हो सकता है। वह उस हद तक जोखिम भी उठा सकते है, जितना प्रजा-मंडल के हिस्से में आये। हम तीन आदमियों को तो आप निकट से जानते हैं। आपका स्नेह हमें भी मिला है।

अकर्मण्यता, विवशता, नैराश्य की स्थिति सहन करते-करते उकताकर हमने अपनी निश्चित सेवाएं प्रजा-मंडल को देने के लिए यह रास्ता निकाला है। हमारी हरेक प्रवृत्ति प्रजा-मंडल को आगे बढ़ाने के लिए ही होगी। हम बार-बार इस बात को दोहराते हैं और यह हमारा आत्म-विश्वास है कि आपको इसका सबूत हमारे कामों से मिलता रहेगा। प्रजा-मंडल का संदेश यदि प्रोग्रेसिव पार्टी के द्वारा लोगों तक पहुंचेगा तो किस प्रकार इससे कोई अहित हो जायगा अथवा विचार-भेद पैदा होगा, यह हमारी समझ से बाहर है। हमारी कठिनाई को आप समझते है। आपके हृदय की उदारता का हमें अनुभव है। कोई पार्टी, चाहे उसका कुछ भी नाम हो, यदि प्रजा-मंडल की भक्ति की शपथ लेकर राजनीतिक कार्य करना चाहती है तो उससे किसीको भी खुशी ही होनी चाहिए। हमारी अगर कोई महत्वाकांक्षा है तो जयपुर को प्रगतिशील देखने की है। हमारे नेता हमारी महत्वाकांक्षा को धृष्टता न समझें तो हमारी बहुत बड़ी सहायता करेंगे। राज्य के साथ प्रजा-मंडल का जो संबंध होगा, पार्टी कभी उससे भिन्न सोचेगी, यह संदेह करना हमारे साथ ज्यादती होगी।

अगर एक बार आप जयपुर पधार सकते तो जयपुर के वातावरण में कटुता आदि की संभावना ही जाती रहती।

पार्टी की कांफ्रेंस १४ व १५ सितंबर को हो रही है। आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वाजिब नहीं होगा कि हम आपके पधारने का आग्रह करें। आप पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ करके लौटेंगे, तब अवसर मिलेगा—इसी आशा में इस समय आशीर्वाद से संतोष कर लेंगे। आशीर्वाद और पथ-प्रदर्शन के दो शब्द तार द्वारा प्रदान करें। आपके स्वास्थ्य-लाभ का समाचार जयपुर के लोगों को कांफ्रेंस में सुनकर बहुत खुशी होगी।

आपके स्नेह-भाजन

दुर्गालाल, राधावल्लभ

(प्रजा-कांग्रेस प्रोग्रेसिव पार्टी)

: १२२ :

गोविंदगढ़, मलिकपुर, ३-३-४०

श्रीमान् सेठ जमनालालजी साहब,

सादर वंदे । श्री हीरालालजी के साथ मेरा जो पत्र-व्यवहार हुआ है उसकी नकल आपके अवलोकनार्थ भेजी है। जयपुर की बिगड़ी हुई परिस्थिति को सुधारने का बोझ आपने प्रजा-मंडल के एकमात्र सर्वाधिकारी बनकर अपने सिर पर लिया है। इसको सुधारने में आपको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। बहुत-से कड़ुवे घूंट पीने होंगे। इसमें हम आपके कैसे सहायक बन सकेंगे ? इस व्यथा से दिल भर आता है। आपकी विजय के लिए हम भगवान से प्रार्थना करें, इसके सिवाय हमारे पास क्या है ? वही सबका रक्षक है। आपकी भी रक्षा करेगा। जयपुर की जनता आपकी तरफ आंखें लगाये हुए बैठी है। आपको जयपुर में देखकर उसे आश्वासन मिलेगा। शुभम्भूयात।

आपका,

व. सा. देशपांडे

: १२३ :

दिल्ली, १-१०-३८

प्रिय कपूरचंदजी,

मेरा कल का पत्र मिला होगा। श्री घनश्यामदासजी ने आज भी यंग के साथ फोन पर बात की थी। सीकर के आम माफी के प्रश्न पर वे यथाशक्य शीघ्र हल होने की आशा रखते हैं। म्युनिसिपल चुनाव के बारे में आपने लिखा कि आगे आवश्यकता पड़ने पर सदस्य लोग एकदम त्यागपत्र दे सकते हैं, मैं अभी तक आपकी कल्पना ठीक तरह नहीं समझ सका। कुछ भी हो; परंतु अभी हमें जनता या मेंबरों से इस बात का जिक्र नहीं करना चाहिए, ऐसी मेरी राय है। वहां के सब हाल से मुझे व श्री घनश्यामदासजी को वाकिफ रखना आवश्यक है। परंतु मुझे अनुभव हो रहा है कि अपने कार्यालय से यह काम जितनी खूबी के साथ किया जाना चाहिए, नहीं हो

रहा है। आप कार्यालय में ऐसा प्रबंध करवा दीजिये कि आप या हीरालालजी वहां हों या न हों, कार्यालय हम दोनों को वहां के समाचारों से बराबर वाकिफ रखता रहे।

हैदराबाद के बारे में "ए पीप इन हैदराबाद" नाम की एक किताब छपी है, जिसकी एक नकल बुक-पोस्ट से दामोदर आपको भेज रहा है। उस प्रकार अपनी ओर से जयपुर के बारे में भी एक पुस्तिका शीघ्र-से-शीघ्र छपना आवश्यक है, जिससे जयपुर स्टेट की पूरी जानकारी बाहर के लोगों को हो सके। मि. यंग की बातों पर पूरा विश्वास अगर न भी किया जाय तो भी अपनी ओर से ता० १५ तक कोई भी बात सीकर-एमनेस्टी (रिहाई) के मामले में ऐसी न होनी चाहिए जिससे उन्हें कोई बहाना करने का मौका मिले।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १२४ :

जयपुर, ५-१२-३८, (रात को १०॥ बजे)

मान्यवर सेठसाहब,

सादर प्रणाम। मि. यंग से फोन पर आज शाम को पं. चिरंजीलालजी मिश्र की बातचीत हुई थी। मिश्रजी को अपने परिवार के लोगों के लिए जापान जाने के लिए पासपोर्ट की आवश्यकता थी। मिश्रजी बातचीत खत्म कर फोन रखनेवाले ही थे कि मि. यंग ने उनसे पूछा कि आप लोगों की तरफ की और क्या नई खबरें हैं? इसपर मिश्रजी के और उनके बीच जो बातचीत हुई, सो सार रूप से ज्यों-की-त्यों आपको नीचे लिखी जाती हैं—

मिश्रजी—"वैसे तो कोई खास खबर नहीं है; पर सुना जाता है कि स्टेट प्रजा-मंडल को दबाने का विचार कर रही है और इसका जवाब देने के लिए हम लोगों ने भी आवश्यक तैयारी कर ली है और लड़ाई शुरू होने का इंतजार कर रहे हैं।"

यंग—"यह खबर तो बिल्कुल निराधार है कि स्टेट प्रजा-मंडल को

दबाना या इससे लड़ाई करना चाहती है। इतनी गलत तो दूसरी कोई खबर शायद ही हो। अभी तक तो स्टेट का इस किस्म का कोई इरादा नहीं है।"

मिश्रजी—"सुना है कि स्टेटवालों का ऐसा खयाल है कि प्रजा-मंडल वाले देहात में लगानबंदी का प्रचार कर रहे हैं; पर उनका यह खयाल बिल्कुल गलत है। प्रजा-मंडल की तरफ से ऐसा कोई प्रचार नहीं है और अधिकारियों को जो इस प्रकार की खबरें मिलती हैं वे गलत हैं। हमने तो अपनी स्थिति साफ रखने के लिए यहांतक सोचा था कि एक पर्चा प्रजा-मंडल की तरफ से निकाल दिया जाय कि प्रजा-मंडल के बारे में कुछ लोगों में यह गलतफहमी है कि प्रजा-मंडलवाले काश्तकारों से लगान-बंदी की बातें करते हैं; पर यह बात गलत है। प्रजा-मंडलवाले इस किस्म की कोई बात नहीं चाहते। हां, यह अवश्य चाहते हैं कि जहांपर पैदावार नहीं हुई हो अथवा कम हुई हो वहां के लोगों से पैदावार के हिसाब से ही टैक्स लिये जावें और गरीब लोगों को खामखा तंग न किया जाय। अफसोस तो यह है कि शास्त्रीजी तक के लिए यह समझ लिया गया कि वह लगान-बंदी का प्रचार करते हैं और शहर में तो यहांतक अफवाह है कि उनके लिए वारंट तक निकाल दिया गया है।"

यंग—"शास्त्रीजी के संबंध में ऐसा कोई खयाल नहीं बनाया गया है। खबरें कई तरह की आती हैं; पर मैंने तो शास्त्रीजी से पहले ही कह दिया था और अब आपको भी कहता हूं कि मैं उनकी सत्यता के बारे में उनसे खुद से अथवा आप लोगों से जांच किये बिना कभी कोई कदम नहीं उठाऊंगा। शास्त्रीजी को गिरफ्तार करने के इरादे की बात भी बिल्कुल गलत है। आपने जो पर्चा निकालने की बात कही वह बहुत ठीक और दुरुस्त है। उसे जरूर निकाल दीजिये। इससे स्थिति बहुत साफ हो जायगी। यह जरूर कर दीजिये।"

मिश्रजी—"हम लोगों का कई दिन से ऐसा इरादा था कि हम यहां के केबीनेट के मिनिस्टरों से बातचीत कर उन्हें प्रजा-मंडल की स्थिति साफ-

साफ बतला दें और हमारा दृष्टिकोण समझा दें। पाटनी ने कहा कि इस बारे में आपसे भी बातचीत करना ठीक होगा। इसपर हमने कहा कि ठीक है। आपसे भी मिल लेंगे, सो शायद पाटनी ने आपको लिखा होगा या अब लिखेंगे। अब यदि आप मुनासिब समझेंगे तो उस समय राजनीतिक स्थिति पर बातचीत करेंगे।"

यंग—"हां, जरूर कर लेंगे। पाटनीजी का पत्र आने पर समय निश्चय कर लेंगे।"

इस सब बातचीत पर से यही मालूम होता है कि अभी इन लोगों का प्रजा-मंडल से लड़ाई मोल लेने का इरादा नहीं है। मैं इस बातचीत में कोई खास चालबाजी या झूठ तो नहीं समझता। अब मैं कल यंग को पत्र लिखूंगा और मिलने का टाइम आने पर मिश्रजी और मैं दोनों उससे मिलेंगे। और जो कुछ बातचीत होगी वह आपको लिख भेजेंगे। हमारा इरादा सब मंत्रियों से और रेजीडेंट से भी सब बातें साफ-साफ करने का और अपनी कम-से-कम मांगें बता देने का है। अपनेको किसी प्रकार बंधन में न डालते हुए सब बातें दृढ़तापूर्वक और जोरदार शब्दों में रख देंगे। देखेंगे वे लोग क्या कहते हैं। व्यर्थ ही लड़ाई चालू कर देने का तो हम लोगों का भी इरादा नहीं है।

विनीत,

कपूरचंद पाटणी

: १२५ :

जयपुर, ८-१-४०

पूज्य सेठसाहब,

सादर वंदे। आपका तारीख ५ का पत्र मिला।

आज पंडित हरिश्चंद्रजी से मिलने गये थे। हरिश्चंद्रजी ने उनसे आपके, महाराजसाहब के तथा प्रधान मंत्री के पत्र-व्यवहार की चर्चा की थी और पूछा था कि आपकी महाराजासाहब से मिल सकने की संभावना है या नहीं? इसपर जवाब मिला कि यह निश्चित नहीं है। उनका कहना था कि महाराजा

की पोजीशन भी बड़ी खराब हो रही है। और यद्यपि वे संकट को टालना चाहते हैं; पर उनकी पोजीशन ऐसी नहीं है कि अपनी बात पर जोर दे सकें। इस समय प्राइम मिनिस्टर और होम मिनिस्टर दोनों इस दमन के चार्ज में हैं और वाजपेयीजी उनके सलाहकार हैं। दूसरे मिनिस्टर भी उनको मदद करते हैं। दरबार को भी काफी बदनाम कर दिया गया है और वे ऐसी परिस्थिति में नहीं है कि इन लोगों का जोर के साथ विरोध कर सकें। आप लोगों ने कड़ुवी स्पीचें देकर मामले को बिगाड़ डाला। आपको मदद करने-वालों की पोजीशन खराब हो गई और उन्हें अब दमन-नीतिवालों की हां-में-हां मिलानी पड़ती है। सेठसाहब को प्रधान मंत्री से और दरबार से मिलने की कोशिश करना चाहिए। इससे मामला सुलझ जाना संभव है। यह पूछे जाने पर कि क्या दमन-नीति शीघ्र ही अमल में आनेवाली है, उन्होंने कहा कि यह लोग अभी अपने विचार तय नहीं कर पाये हैं और दुविधा में ही हैं; हालांकि दमन के पक्ष में जरूर हैं।

अजमेराजी परसों राजा ज्ञाननाथ से मिले थे। उन्होंने उनसे भड़की-भड़की-सी ही बातें कीं और धमकाकर पूछा कि आपने वह पर्चा छाप ही कैसे दिया। उन्होंने कहा कि मैंने उसमें कोई बात आपत्तिजनक नहीं समझी और इसलिए "जाब वर्क" के तौर पर छापा है। इसपर ज्ञाननाथ ने उनको बहुत धमकाया और चेतावनी दी है। बाकी सब कुशल है।

विनीत,

कपूरचंद पाटणी

: १२६ :

जयपुर, ४-८-४०

पूज्य सेठसाहब,

सादर प्रणाम। मेरा पिछला पत्र तो आपको मिल ही गया होगा।

शास्त्रीजी के नामवाले पत्र से यह जानकर जरा चिंता हुई कि कई कारणों से आपको मानसिक अशांति चल रही है। मुझे भय है कि शायद जयपुर में भी आपको कुछ अशांति ही रहने के कारण उपस्थित हों। आज

प्रजा-मंडल की फाइनेंस कमेटी की मीटिंग थी। उसमें हुई चर्चाओं से शास्त्रीजी को कुछ चोट लगी और वर्तमान परिस्थिति में प्रजा-मंडल के प्रधान मंत्रित्व का काम छोड़ देने की लहर उनके दिमाग में फिर से उठने लगी है। खास-खास काम करनेवालों में विभिन्नता काफी अधिक मालूम होती है। वनस्थली की जमीन का पक्के मकानों के माफिक नजराना वसूल करने का जयपुर-सरकार ने निश्चय कर लिया है। इसकी वजह से काफी बखेड़ा उठने की आशंका है। यह प्रश्न भी शास्त्रीजी के दिमाग में गंभीरता से घूमता दीखता है। बाकी सब कुशल है।

विनीत,

कपूरचंद पाटणी

: १२७ :

जयपुर, २०-८-४०

पूज्य सेठसाहब,

सादर प्रणाम। आपका तारीख १४ का पत्र यथासमय मिल गया था। मैं रामदयालजी मिस्त्री से मिल लिया हूं। उन्होंने कोई एक मशीन कुएं में से पानी निकालने तथा आटा पीसने की बनाई है, जिसमें हाथ की अपेक्षा अच्छा काम निकलता बताया और उस बारे में अब वे आपसे कुछ सहायता चाहते हैं। वह मशीन मुझे दिखाने में उन्हें काफी हिचकिचाहट नजर आई और उन्होंने कहा कि सेठसाहब के आने पर उन्हें ही मैं अपनी मशीन दिखाऊंगा।

यहांपर स्टेट का अजब रवैया चल रहा है। प्रजा-मंडल की पिछली एक मीटिंग में जाने की रिपोर्ट पर स्टेट के कुछ अहलकारों को बुलाकर उनके डिपार्टमेंटों के अफसरों ने थोड़ी पूछताछ और डाट-डपट की। लड़ाई के लिए चंदे के लिए, सुना है कि, शिक्षा और रेवेन्यू मिनिस्टर की पत्नियां जागीरदारों और बड़े-बड़े आफिसरों के घरों पर जा-जाकर स्त्रियों से जेवर वगैरह मांग-मांग कर लाती हैं। सुना है कि चंदे के लिए

नोट लेना तो डिस्करेज कर रहे हैं और चांदी-सोना लेने की कोशिश रहती है।

नेशनल प्लैनिंग कमेटी को किसी तरह के आंकड़े देना अहितकर हो सकता है। अतः प्रांतीय सरकारों को यह हिदायत कर दी गई है कि वे प्लैनिग कमेटी को जानकारी न दें। इस आशय का रेजीडेंट का गुप्त पत्र स्टेट में आया है और उसमें लिखा है कि सूचना तथा जरूरी कार्रवाई के लिए यह बात स्टेट को लिखी है। इस पत्र के हवाले से स्टेट अधिकारियों ने सब प्रधान-प्रधान महकमों को गुप्त सर्कुलर भेजा है। आज मालूम हुआ है कि स्टेटवाले आपके यहां पधारने के पहले-पहले शेखावटी के कस्टम के सवाल के बारे में कुछ-न-कुछ कर डालना चाहते हैं, और इस बारे में खूब जल्दी की जा रही है। शायद इसी सिलसिले में कर्नल अमरसिंहजी कल झुंझूनू जा रहे हैं। अगर कुछ ठीक-ठाक कर दें तो अच्छा ही है।

विनीत,

कपूरचंद पाटणी

: १२८ :

हिंडौन, २४-४-४०

परम श्रद्धेय सेठजी,

सादर वंदे। मुझे खेद है कि पत्नी की अस्वस्थता के कारण और कुछ अन्य कारणों से इच्छा रखते हुए भी, कार्यकारिणी की मीटिंग में उपस्थित नहीं हो सका। आशा है,आप अवश्य क्षमा करेंगे। यदि मैं आ भी सकता तब भी शायद आपके कहे प्रश्न का अभी कोई निश्चित उत्तर न दे सकता। कर्त्तव्य के आवाहन और निजी परिस्थितियों के विचारों ने मुझे अभी दुविधा में डाला हुआ है। जब कर्तव्य अनिवार्य रूप से सामने आ खड़ा होता है तो मनुष्य को परिस्थितियों का विचार करने का अवसर ही नहीं मिलता और वह एकदम कूद पड़ता है। परंतु जब सोच-विचार का अवसर मिलता है तो कई कठिनाइयां सामने आ खड़ी होती हैं। जो हो, मैं समझता हूं मंडल

के सालाना जलसे में अब अधिक विलंब न होगा। अतः उसी समय तक इस प्रश्न का कुछ निश्चय हो सकेगा।

आपका विनीत,
टीकाराम पालीवाल

: १२९ :

जयपुर, ४-८-४०

परम श्रद्धेय सेठजी,

सादर वंदे। आपके आदेशानुसार कल यहां आने पर जयपुर शहर कमेटी की चुनाव-संबंधी शिकायत के सब कागजात प्रधान कार्यालय से मुझे दे दिये गये थे। मैंने उन्हें खूब ध्यान से देखा है। जैसाकि जांच-कमेटी ने भी स्वीकार किया है, प्रचार अधिक होता तो अच्छा होता। मैं भी अनुभव करता हूं कि चुनाव में यह एक टेक्निकल नुक्स तो रहा ही है; परंतु सब चीजों को ध्यान में रखते हुए मैं यह अनुभव नहीं करता कि इस टेक्निकल नुक्स का चुनाव की वास्तविकता पर कोई असर नहीं हुआ है, अतः मेरी राय में मामला फिर से उठाने लायक तो नहीं है।

अब आपके यहां दर्शन कबतक होंगे? मैंने अपनी दो साल की प्रेक्टिस की अवधि समाप्त होने पर अब समस्त जयपुर राज्य में प्रैक्टिस कर सकने के लिए इजाजत की दरख्वास्त दी है। किंतु अधिकारियों के रवैये से कुछ ऐसी शंका होती है कि जेल का समय वे इन दो वर्षों में शायद न मानें। जैसा होगा देखा जायगा।

आपका विनम्र,
टीकाराम पालीवाल

: १३० :

चिड़ावा २८-१२-४०

श्रद्धेय,

आज मेरा मन प्रसन्न है। कल मुझे एक मृतक के पानीबाड़े में जाना पड़ा। वहां मैंने कई आदमियों के नहाने के लिए कुएं से पानी खींचा और जैसे

पानी निकालने की शर्म भाग गई। परसों दो बालकों की नाममात्र की-सी परिचर्या की और औषधि का प्रबंध किया, यह भी मन को अच्छा लगा। अब मैं किसी तरह भी गरीब बीमारों के लिए और शिशुओं के लिए सांस्कृतिक शिक्षा-विषयक एक संस्था की आयोजना करना चाहता हूं। शिशु-शिक्षा का प्रबंध तो स्नेह, धर्म और मानव-संस्कृति के वातावरण में करूंगा और दवा का इंतजाम सिर्फ गरीबों के लिए, यह ध्यान रखूंगा।

कभी तो सोचता हूं कि सब कुछ छोड़-छाड़कर सपत्नीक संस्था में बैठ जाऊं। पर एक तो अभी सुख से ममत्व बना हुआ है, बालकों का कुछ खयाल है और कर्जा भी तो चुकाना है। घर में श्रम करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आदमी मृत्यु से जूझने योग्य जल्दी हो भी सकता है, पर जीवन के दैनिक रस से अति मुक्त होना सचमुच कठिन है।

कस्बे के लोगों को एक-दो बार अदालतबाजी से रोक लेने में प्रभु द्वारा सफल कर दिये जाने पर आसपास के परिचितों पर कुछ और भी अच्छा असर पड़ा है। आपका स्नेह और आशीर्वाद यथेष्ठ मिलता रह सकना मेरे लिए प्रभु-कृपा का इंगित है।

विनीत,
मातादीन भगेरिया

: १३१ :

बंबई ११-१०-३८

प्रिय रायजी,[1]

२९-९-३८ का पत्र मिला। तुम्हारे जयपुर के काम के बारे में मैंने भी काफी विचार किया। श्री घनश्यामदासजी से भी बात की। उनकी समझ में भी कुछ नहीं आ सका कि वे जयपुर में तुम्हारे लिए कौन-सा काम ढूंढ़ सकते हैं। 'हिंदुस्तान टाइम्स' में जयपुर के बारे में तुम जो कुछ लिखकर भेजना चाहो भेज सकते हो। तुम्हारे लेख बिल्कुल वैसे ही छपेंगे या नहीं, इसके बारे में निश्चित नहीं कहा जा सकता, क्योंकि स्वयं श्री घनश्यामदासजी

१. **हंस० डी० राय**

भी जयपुर के काम में दिलचस्पी ले रहे हैं तथा कोशिश कर रहे हैं। यंग से भी उनकी काफी बातें हुई हैं। यद्यपि सीकर का मामला रावराजा के माफी मांगने की वजह से तय-सा हुआ है फिर भी जयपुर-प्रजा-मंडल के बारे में तो वे अपनी यंग के साथ की बातचीत का खयाल रखकर ही लिखेंगे। तुम लेख अपने नाम से भेज सकते हो। म्युनिसिपल चुनाव का काम ठीक चल रहा होगा। मैं आज वर्धा जा रहा हूं। आगे फिलहाल तो जयपुर आने व सीकर के मसले को लेकर जेल जाने की बात मुलतवी हो गई है। तुम्हारी याद बराबर आती है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १३२ :

दिल्ली, २-१-४२

पूज्य काकाजी,

सादर वंदे। आपका कृपापत्र मुझे जयपुर में मिल गया था।

हम दोनों ने वर्धा आना इसी भ्रम में स्थगित कर दिया था कि शायद आप भी बारडोली वर्किंग कमेटी के लिए चले जावेंगे। हमें बाद में बहुत अफसोस हुआ कि हम दोनों इतनी तैयारी और इरादों के बाद भी वर्धा आने से रह गये। वर्धा आने की तो बराबर लगी हुई है और मैं तो कुछ अपने बारे में आपके सामने खास प्रश्न रखना चाहता हूं, जिसके बारे में मैंने अपने पिछले एकाध पत्र में उल्लेख भी किया था। शायद फरवरी मास में हम दोनों आपके पास पहुंच सकें।

इस वर्ष जगह-जगह राजनीतिक-सम्मेलन होने से प्रजा-मंडल के काम को काफी लाभ पहुंचा है। जन-जागृति के लिए यह अच्छा साधन साबित हुआ है। इस वर्ष जयपुर के काम में मित्रों का सहयोग काफी मिला नहीं था, जिसका कारण उदासीनता के अलावा कुछ नहीं दीखता। हमारे बड़े कहलानेवाले कार्यकर्त्ता इस विषय में ज्यादा जिम्मेवार ठहराये जा सकते हैं। फिर भी मैं अपनी शक्ति से जितना कुछ कर सका, करता रहा। क्या ही

अच्छा होता जो सभी यथाशक्ति हाथ बंटाते। भाई श्री शास्त्रीजी को इस वर्ष खूब ही काम करना पड़ा है। काम में श्री लादूरामजी ने भी कमी नहीं रखी। प्रजा-मंडल को ऐसे ही काम करनेवालों की जरूरत है।

मुझे आशा है, आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक होगा। हम दोनों और बच्ची मजे में हैं। आपकी सेवा में प्रणाम !

आपका,
हंस डी. राय

: १३३ :

हिण्डौन, १६-११-३९

मान्यवर,

श्री टीकारामजी का पत्र मिला होगा। सम्मेलन की तैयारियां संलग्नता-पूर्वक जारी हैं। सब कार्य ठीक-ठीक हो रहे हैं। सिर्फ मेरा ही काम संदिग्धा-वस्था में है। काम भी बड़ी जिम्मेदारी का है। यह सबकुछ होते हुए भी मुझे एक बात कहनी पड़ेगी—और वह है–"सम्मेलन में आपकी उपस्थिति"। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि आप अस्वस्थ हैं। आपके लिए एक स्थान पर रहना जरूरी है। परंतु यह सम्मेलन, जिसकी तरफ हजारों नर-नारियों की आंखें लगी हुई हैं और जिनके अंतःस्थल में तथा जबान-जबान पर "सेठजी आवेंगे" हो रहा है। कहते-कहते भी कि उनका आना संभव नहीं दिखाई देता, चारों ओर यही चर्चा है। इस अवसर पर आपका पधारना कितना जरूरी है यह तो आप यहां आकर ही अनुभव कर सकते हैं।

जब लोगों को मैं यह कहता हूं कि वे अस्वस्थ हैं और उनका आना शायद ही हो सके तो वे यह कहते हैं—पांव के गोड़े पेट की ओर ही नमते हैं। बीमारी की हलात में सीकर, शेखावटी जाना संभव हो सकता है तो क्या हमारे इतने अनुरोध पर भी सिर्फ दो दिन के लिए ऐसे सुअवसर पर, जिसके निमित्त वे ही हैं, सम्मेलन में उनका न आना हमारे साथ अन्याय नहीं होगा क्या ? मेरे पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है। इसलिए सीधे आपके पास पहुंचा देता हूं।

सम्मेलन के सभापतित्व के लिए श्री मिश्रजी को काफी कहा, परंतु उन्होंने इन्कार ही कर दिया। अत: श्री शास्त्रीजी ने सभापतित्व ग्रहण करना स्वीकार कर लिया है। खादी-प्रदर्शिनी और कवि-सम्मेलन आदि अन्य बातें भी होंगी। जनता में काफी उत्साह है।

इसके अलावा एक बड़ा जिम्मेदारी का दूसरा काम है, संदेशों का—साथ में नेताओं की लिस्ट भेज रहा हूं। उनके संदेश हमें मिल जावें, ऐसी व्यवस्था कर दें।

आशा है, आपके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा होगा।

विनीत बालक,

चंद्रशेखर शर्मा

: १३४ :

हिण्डौन, १-४-४०

मान्यवर,

बहुत दिनों से दिल में है कि हम लोगों (कार्यकर्त्ताओं) को आपसे बातचीत करनी चाहिए। एक-दो अवसर तलाश करने का प्रयत्न भी किया; परंतु सफलता न मिल पाई। अबकी बार तो यही उचित समझा सीधा आपके पास ही क्यों न पत्र रूप में पहुंचकर प्रार्थना की जाय। अत: आपके एक-दो मिनट ले ही रहा हूं।

आप जब- कभी जयपुर में आते हैं तो उन्हीं लोगों से मिलते है, जो या तो वर्किंग कमेटी के मेंबर हैं या मंडल के खास-खास व्यक्ति हैं। इनके अलावा कभी भी ऐसा अवसर नहीं आया कि थोड़ा-बहुत समय उन लोगों को भी देकर उनका मार्ग-प्रदर्शन करें, जोकि वास्तव में मोर्चे पर हैं; जिन्हें रात-दिन जनता से मुठभेड़ लेनी पड़ती है। संभव है, इनसे बातचीत करने पर आपको कुछ ठोस चीज मिले, उन्हें आपसे उत्साह और शक्ति मिले, और सीधा संपर्क भी कायम हो सके। यदि कोई यह कहे कि आपके पास समय की कोताही है और उस कीमती समय में से इन कामों के लिए समय दे सकना कठिन है, तो मैं नम्रतापूर्वक यह कहने का साहस करूंगा कि जयपुर में आने

के बाद प्रधानता जयपुरीय समस्याओं को मिलनी चाहिए। मुझे भय है कि आप हम लोगों में से बहुतों को शायद नाम या शक्ल से पहचानते भी न होंगे। जयपुर में आपका रहना हो और फिर भी हम लोगों को आप पहचानें भी नहीं, यह स्थिति मुझको अखरती है, और अधिकारपूर्वक तो नहीं, पर अनुमान है कि मेरे अन्य साथी भी भीतर-ही-भीतर अवश्य ऐसा महसूस करते हैं।

संभव है, अबकी बार आपको कुछ अधिक समय ठहरना पड़े, अतः इस अर्से में सब साथियों का आपसे मिलना हो सके तो बड़ा लाभदायक हो और जबकि राजनीतिक स्थिति विषम है तो आवश्यक भी हो जाता है।

आशा है कि इस प्रश्न पर आप सहानुभूति से विचार करेंगे।

विनीत,
चंद्रशेखर शर्मा

: १३५ :

जयपुर, ११-९-४०

श्रीमान माननीय महोदय,

सादर वंदे। आज बहुत समय पश्चात आपको पत्र लिख रहा हूं।

प्रजा-मण्डल के सत्याग्रह के बाद से ही चर्खा-संघ में काम करने के संबंध में मेरी स्थिति डांवांडोल हो रही है। प्रजा-मण्डल के बाद मैं संघ में कार्य करने की इच्छा न रखता हुआ भी श्री देशपांडेजी के आग्रह से काम करने में प्रवृत हुआ था, परंतु कुछ दिन बाद ही मुझे छुट्टी लेने के लिए विवश होना पड़ा। अबकी बार लगभग ऐसा ही हुआ।

यद्यपि इस प्रकार आना-जाना मुझे ठीक नहीं लगा; परंतु इच्छा न रहते हुए भी इस प्रकार कुछ बन ही गया। अस्तु जो-कुछ हुआ वह तो हो गया अब तो चरखा-संघ में काम करना निश्चित ही है।

मैंने अपना त्याग-पत्र भेज दिया है। अब इच्छा तो यही है कि जयपुर में ही काम करूं, परंतु सबकुछ भाग्याधीन है।

आपका,
ओमदत्त शास्त्री

: १३६ :

वनस्थली, २३-३-३८

मान्यवर,

मैं वर्धा से कलकत्ता गई थी। वहां भागीरथजी और सीतारामजी से जयपुर की राजनीति और विद्यालय के बारे में सब बातचीत हुई। सब बातचीत हो चुकने के बाद भी करीब पांच हजार की जिम्मेवारी मेरे खुद के ऊपर ही रही है। जयपुर में शांति रही तो १०००-१५०० रु० तो मैं जयपुर में कर सकती हूं। सवाल केवल इतना ही है कि विशेष टाइम लगाना पडे तो अभी छात्रावास से बहुत समय अलग रहना असंभव मालूम होता है। बाकी रुपये कलकत्ता में तो करने का सवाल नहीं और कहीं मेरी ज्यादा जान-पहचान नहीं है। कुछ बंबई और कुछ और जगह भी मेरी नई जान-पहचान हो तब काम चले। विद्यालय का काम खूब अच्छी तरह से चल रहा है। यहां छुट्टियां १ मई के करीब होंगी। जयपुर के कोई खास समाचार मालूम नहीं। यह सब हाल आपकी जानकारी के लिए लिखा गया है।

विनीत,
रतन (शास्त्री)

: १३७ :

कलकत्ता, १२-७-२८

मान्यवर भाईजी,

इन दिनों बारडोली का अपूर्व रंग जम रहा है और मैं जानता हूं कि आप अवश्य उस संबंध में व्यस्त होंगे। ऐसे समय में मैं आपको अपनी व्यक्तिगत बात लिखकर आपका ध्यान बटाऊं, यह सबकुछ अनुचित मालूम पड़ता है। फिर भी आवश्यक जानकर लिख रहा हूं। फुर्सत से उत्तर भिजवा दीजियेगा।

कलकत्ते में कुटुंब-सहित एक महीने से अधिक रह चुका, तब मैंने

यहां के खर्चे के हिसाब को ध्यानपूर्वक देखा। देखने से मालूम हुआ कि जो अनुमान पहले किया था, उससे कहीं अधिक खर्च यहांपर हो रहा है और भविष्य में भी प्रायः उतना ही होता रहेगा। इस विषय में मैंने सब आवश्यक बातें श्री बिड़लाजी को कह दीं। उन्होंने यह कहा था कि जरा और देख करके और दूसरे कम आमदनीवालों के खर्चे को देख करके अपना बजट बना लो। बजट जमनालालजी और हरिभाऊजी के पास भी भेज देना। इसके अनुसार पूछताछ करके मैंने अपना बजट बनाया और उसे श्री बिड़लाजी को दिखाया। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक कार्यकर्ता की हैसियत से तुमको चंदा नहीं देना चाहिए और समाचार-पत्र कोई पुस्तकालयवाला तुम्हें दे सकता है। पुस्तकों का उपयोग भी किसी पुस्तकालय से सहज हो सकता है अर्थात् इस प्रकार २५ रुपये मासिक की कमी श्री बिड़लाजी की सम्मति से की जा सकती है। उनका यह भी खयाल है, जैसाकि मेरा खुद का भी है, कि शायद ३००) रुपये वार्षिक कपड़ों के लिए खर्च नहीं होंगे।

बजट की एक नकल आपके पास भेजी जाती है। उसको आप ध्यानपूर्वक देखिये और मुझे बतलाइए कि किस मद का खर्चा अभी कम कर देना चाहिए और किस मद का खर्चा अभी कम नहीं हो सकने की हालत में आइंदा कम कर देने को ध्यान में रखना चाहिए। रुपयों के आगे जो टिप्पणियां लिखी हुई हैं उनसे सब बात स्पष्ट हो जायगी। चंदे में मैं ५) रुपये तो अपने स्वर्गीय पिताजी की स्मृति में देता हूं और २) अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी की स्मृति में। ५) पारीक-पाठशाला में देता हूं। और ३) रुपये मैंने और रख लिये हैं। मैं समझता हूं, पिछले ८ रुपये की कमी तो हो सकती है, बाकी ७ रुपये तो बंद करने लायक नहीं मालूम होते। रही समाचार-पत्र और पुस्तकों की बात सो कमी होना संभव नहीं जान पड़ता। केवल २-३ रुपये महीने की बचत के लिए समाचार-पत्र पढ़ना दूसरों के भरोसे रखना कुछ जंचता नहीं। मैं अपने लिए पुस्तकें नहीं भी खरीदूंगा तो भी स्त्री के लिए तो अवश्य खरीदनी पड़ेगी, क्योंकि एक तो उसे कुछ परीक्षाएं

दिलवानी है, दूसरे उसकी योग्यता बढ़ाने के लिए खास तरह की पुस्तकें खरीदी जायंगी, तब ठीक रहेगा ।

अपने लिए मैं दो कमरे आवश्यक समझता हूं । वे यदि किसी अच्छे मुहल्ले में लिये जायंगे तो आजकल के २६) रुपये के बजाय शायद ५०) लगें । इसके अलावा एक बात यह है कि स्त्री को विशेष रूप से शिक्षा देना तथा सार्वजनिक कार्यों में प्रवृत करना अव्वल तो वैसे ही कठिन है और फिर यदि उस अकेली पर बच्चों को दिनभर रखने का, भोजन बनाने का तथा और गृहस्थी का भार रहे तो परिणाम यह होगा कि या तो दोनों काम बिगड़ेंगे या एक हो जायगा, दूसरा रह जायगा । इसलिए अबतक के अनुभव से ऐसा जान पड़ रहा है कि एक छोटा-मोटा सहायक लड़का घर में रखना पड़ेगा, जो बालक को रख ले और घर के काम में थोड़ी-बहुत सहायता दे दे । उसको रखने में भी १०) रुपये मासिक कम-से-कम लगेंगे । इस तरह से २३३ रुपये+२४ रुपये +१० रुपये याने २६७ पर जोड़ पहुंचता है । अभी इसमें कुछ रुपयों के अनुमान करने में गलती भी हो गई हो तो भी २५० रुपये मासिक तो यहां रहने मात्र के लिए चाहिए ।

मैं इस बात को खूब जानता हूं कि सार्वजनिक कार्यकर्ता को अपने व्यक्तिगत काम में कम-से-कम रुपया लगाना चाहिए । और विशेष करके संयम के साथ रहना होगा तो कुछ खर्च खाने-पीने का वैसे भी कम हो सकता है । परंतु मैं यह भी सोचता हूं कि दिन-रात परिश्रम करनेवाले आदमी को घी, दूध, फलादि नहीं मिले तो उसके काम करने की शक्ति पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा । जो काम जयपुर, अजमेर में १०० रुपये मासिक अथवा अधिक-से-अधिक १२५ रुपये में हो जाय, उसके लिए यहांपर २५०-२७५ रुपये मासिक खर्च करना पड़ेगा, ऐसा स्पष्टतया मालूम हो रहा है । आप कोई भी मार्ग कमी करने का बता सकेंगे तो मेरी अंतरात्मा को बड़ा संतोष रहेगा और कोई अत्यंत विशेष कारण न हुआ तो मैं आपकी बात संकेतमात्र के होने से मान लूंगा ।

आपका कृपाभाजन

हीरालाल (शास्त्री)

: १३८ :

वनस्थली १७-५-३६

माननीय श्री भाईजी,

आपका १०-५-३६ का पत्र मिल गया था। श्री हरिभाऊजी, श्री रामनारायणजी और मैंने मिलकर बातचीत कर ली है। दो-तीन दिन के गहरे विचार-विनिमय के बाद हम तीनों ने जो कुछ तैयार किया है उसकी एक नकल आपकी जानकारी के लिए आपके पास भेजने का भार मुझको सौंपा गया है। आपका ध्यान तुरंत चला जायगा कि यह सारे राजस्थान को संगठित करने का प्रश्न नहीं है, बल्कि उन लोगों की ओर से मिलकर काम करने का प्रयत्न है, जिनको मिलकर काम करने की आवश्यकता का अनुभव हो रहा है, और जो विश्वास के आधार पर मिलने को तैयार हैं। पहले-पहल मिलनेवाले हम तीनों, दूसरे नंबर मिलनेवाले हमारे अब तक के साथी, तीसरे नंबर मिलनेवाले थोड़े-से वे निकटवर्ती लोग जिनको मिलने के लिए कहना ठीक होगा। जितने लोग मिल जावेंगे वे अपने सामर्थ्य के अनुसार काम करेंगे। प्रांतभर के सब लोगों को मिलाना या सारे प्रांत के काम के भार को उठाने की हमारी ताकत अभी नहीं है। अलबत्ता अच्छी शुरुआत हो जावे तो क्रमशः बहुत अच्छा परिणाम भी निकल ही सकता है।

आशा है, इस रूप में यह चीज आपको भी पसंद आयेगी। हम तीनों चाहते हैं कि आप इस संबंध में हमारे मार्ग-दर्शन के लिए रचनात्मक सूचनाएं देने की कृपा करें।

राजस्थान-संघ की स्थापना के परिणामस्वरूप कुछ परिवर्तन आवश्यक होंगे—यथा मेरा अधिकतर हटुंडी में रहना, एक साप्ताहिक पत्र का निकालना, बालकों व युवकों की शिक्षा व ट्रेनिंग का प्रबंध हटुंडी में करना इत्यादि। हटुंडी-आश्रम का उपयोग किया जा सकेगा, ऐसा हमने मान लिया है। सोचा तो हमने यह भी है कि श्री काशीनाथजी त्रिवेदी का उपयोग

इधर होनेवाले शिक्षण-कार्य में हो सके। आपकी अनुमति हो तो इन दोनों मामलों में लिखा-पढ़ी की जाय।

विनीत,

हीरालाल

: १३९ :

जयपुर, २१-२-३८

माननीय श्री भाईजी,

आपके तार के उत्तर में मेरा तार मिला ही होगा। यहां की स्थिति अभी तक साफ नहीं हुई है। एकदम साफ तो होनेवाली भी नहीं मालूम पड़ती है। मि. यंग तो छेड़छाड़ न करने के पक्ष में ही ह। परंतु सर बीचम आदि की मनोदशा अभी तक वैसी ही जान पड़ रही है। मेरे लिए भीतर के उफान को रोकना मुश्किल होता जा रहा है। फिर भी उतावलापन नहीं करना है। राजवाले सहयोग चाहे न करें, परंतु उन्हें सीधी रुकावट भी तो नहीं करनी चाहिए। सामने वार्षिक अधिवेशन का सवाल है, उसमें ही अड़ंगा खड़ा कर सकते हैं। तो फिर क्या अधिवेशन किया ही न जाय? मेरा झुकाव तो यही होता है कि अधिवेशन हर सूरत में करना चाहिए। राजवाले गोलमाल करने लगे तो फिर इसी सवाल पर सही। आपकी क्या राय है? आप सभापति बनने को राजी हैं, यह बड़ी खुशी की बात है। हम लोग भी आपको बनाना ही ज्यादा-से-ज्यादा पसंद करेंगे। परंतु इसी बात पर राजवालों की ओर से आपत्ति की जाय तो? मैं तो ऐसी आपत्ति का मुकाबला करने के पक्ष में हूं।

राजवाले सहयोग करें तबतक एक शांतिमय कार्यक्रम चल सकता है। वे किसी काम की सुनवाई न करें, उस हालत में उनको कहांतक कहा जायगा? राजवालों से जनता की जरूरतों के बारे में न कहा जायगा तो फिर प्रकाशन की नीति का अवलंबन करना होगा। अथवा और कौन-सी नीति होगी?

अधिवेशन अप्रैल के प्रथम सप्ताह में हो सकता ह। समय बहुत कम

हूं। आपसे सलाह करने के लिए मिलना जरूरी है। यह पत्र मिलते ही लिखिए कि जल्दी-से-जल्दी आपसे कहांपर मिला जावे ?

विनीत,

हीरालाल

: १४० :

वर्धा, २९–५–३८

प्रिय हीरालालजी,

आपका २४–५–३८ का पत्र कल शाम को मिला।

मैं बंबई ता. १ को पहुंच जाऊंगा। आपको निरुत्साह होने का कोई कारण नहीं होना चाहिए। परंतु साथ ही जवाबदारी का साफ तौर से बंटवारा मित्रों के बीच हो जाना जरूरी है। मुझे तो आशा है, अगर हम सातों मिल सकेंगे तो जरूर ठीक तौर से मार्ग निकल सकेगा।

सीकर के स्टेटमेंट के बारे में भाई कपूरचंदजी की राय से अगर अहिंसा-मय आंदोलन में हमारा विश्वास हो तो हमारे पास इसके सिवाय कोई दूसरा साधन नहीं रह जाता। जबतक हममें सच्चाई से व दिमाग से साफ बात करने की ताकत नहीं आयेगी, तबतक हम जनता की भली प्रकार सेवा नहीं कर सकेंगे। मेरा तो दिन-ब-दिन अधिक विश्वास होता जा रहा है कि वर्तमान मामले में सीकर की जनता गलत रास्ते पर है। जयपुर की चाहे जो कमजोरी हो परंतु हमें तो जो मार्ग उचित मालूम हो उसीके मुताबिक प्रयत्न करना चाहिए। श्री लादूरामजी के पत्र से तो चिंता बढ़ती है। मेरा उधर जुलाई के आखिर में जाना हो सकेगा।

श्री रतनजी को वंदे कहना।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १४१ :

वर्धा, ३०–८–३८

प्रिय हीरालालजी,

आपके दिये दो तार और एक पत्र मिल गये। आपके पत्र से मि. यंग

की बातचीत और वर्किंग कमेटी की कार्यवाही के बाबत सब हाल मालूम हुए।

मेरे खयाल से स्टेटमेंट देना जरूरी है। वह एक महीने तक रोका नहीं जाना चाहिए। आपसे यहां सलाह करने के बाद जल्द ही निकालना चाहूंगा। मि. यंग को पत्र लिखकर देने की कोई आवश्यकता नजर नहीं आती। आपसे सब बातें खुले तौर से हो ही चुकी हैं। धागेसिंह, लोनसिंह से जो कुछ भी यंग ने कहा उससे मि. यंग के असली विचारों का पता चलता है। पर इन बातों के होते हुए भी अगर पत्र देने की जरूरत होगी तो आप से यहां सलाह करके ही फैसला करना पड़ेगा।

माफी का वादा १५ दिनों में करने का किया था, पर उस बात में राज ने अभी तक कुछ नहीं किया। उस बात को देखते हुए राज-अधिकारियों की बातों का विश्वास नहीं किया जा सकता। हमको यह बात ध्यान में रखकर ही चलना चाहिए।

राज से अगर झगड़ा करने की नौबत आती दिखाई देगी, तो उससे पहले हम लोगों को अपने हाथ मजबूत कर लेने होंगे और फिर प्रजा-मंडल की वर्किंग कमेटी की सलाह और राय से ही कुछ करना होगा।

हमको अपनी तरफ से झगड़ा नहीं करना है, पर अगर राज हमारे लिए कोई रास्ता न छोड़कर झगड़ा करना चाहेगा तो हमें पूरी तैयारी करके उसका सामना करना ही होगा।

बाकी बात आपसे यहां होगी। आपके तार के अनुसार पूरे छः हजार रुपये भेजने के लिए बंबई लिख दिया है।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १४२ :

बंबई, १०-१०-३८

प्रिय हीरालालजी,

आखिर आपका पत्र कल मिला। सीकर के बारे में अखबारों में खबर

आई है कि रावराजा ने जयपुर दरबार से माफी मांग ली है। जयपुर कार्यालय या सीकर से मेरे पास तो अभी तक कोई अधिकृत खबर नहीं आई है। यदि अखबारों की खबर पर भरोसा किया जावे तो सीकर का मामला तो फिलहाल तय हुआ-सा मालूम होता है, जिससे मेरे तुरंत जयपुर आने व जेल जाने की बात नहीं रहती है। अभी तक तो सारा प्रोग्राम इसी दृष्टि से तय किया जा रहा था कि शायद जेल जाना पड़े। अब तो आपने भी लिख दिया है कि जयपुर के काम की चिंता न करो, तब तो अपनेको वहां की चिंता से बरी समझता हूं।

जमनालाल **बजाज का वंदेमातरम्**

: १४३ :

जयपुर, १६-१०-३८

मानतीय श्री भाईजी,

आज जाकर आपको पत्र लिखने का मौका मिला है। आपके एक-दो पत्र मिले थे। मैंने कल एक तार आपको तथा घनश्यामदासजी को भेजा था।

सीकर का हाल श्री चुडगरजी से मालूम हुआ। रावराजाजी ने माफी का जो पत्र लिखा, उसकी नकल भेज रहा हूं। रावराजाजी माफ कर दिये गये हैं और गिलन-कमीशन का काम खत्म के बराबर समझा जा सकता है। कसर इतनी-सी है कि इसमें भारत-सरकार की अनुमति प्राप्त कर लेने की जरूरत है। तभी रावराजाजी को सीकर जाने की छुट्टी मिल सकेगी। जो लोग अभी जेल में हैं, उनके (लादूरामजी सहित) छूट जाने की पूरी संभावना है। श्री चुडगरजी ने इसके लिए बड़ा प्रयत्न किया। उधर मि. यंग ने भी बहुत जोर लगाया। जिन दस आदमियों से लिखाया गया था वे भी बरी हो ही जायंगे। परंतु जो लोग नौकरी से अलग हो गये उनका सवाल टेढ़ा है। खासकर उनका, जो पुलिस में थे। नौकरी के बारे में तो अलग-अलग फैसले दिये गये हैं, उनका एक कागज इस पत्र के साथ है। मि. बापना तो जयपुर आ ही गये। कैप्टेन वेब को अभी तक सीकर से वेतन मिल

रहा है, परंतु वे भी अलग हो जायंगे, यह निश्चित है। मि. किचलूजी की श्री चुडगरजी तारीफ कर रहे थे। संभव है, फिलहाल वे ही यहांपर जमा दिये जावें। श्री चुडगरजी का कहना है कि गिलन-कमीशन का फैसला रावराजाजी के बहुत खिलाफ जाता, क्योंकि बगावत कराने का जुर्म साबित हो जाता, सो रावराजाजो को गद्दी से उतारा जा सकता था। उन्हें जेल भी हो सकती थी। इसी कारण से माफी मांगने में सार समझा गया। जामनगर के महाराज अपने तौर पर जयपुर आये थे। उनकी बहन ध्रांगध्रा ब्याही है। उस बहन की लड़की से सीकर के राजकुमार की सगाई हुई है। जामनगर के महाराज ने भी इस काम में सहायता पहुंचाई। गिलन-कमीशन का काम अभी एक महीने के लिए स्थगित हुआ है। भारत-सरकार की स्वीकृति आने के बाद वह खतम किया जायगा। रावराजाजी का विश्वास किसीको नहीं है। जहांतक में खयाल करता हूं, सीकर के लोग इस फैसले से नाखुश ही हुए होंगे। परंतु इसमें कोई शक नहीं कि इस मामले में और कुछ होनेवाला भी नहीं था।

म्युनिसिपल चुनाव की बड़ी धूम रही। प्रजा-मण्डल की ओर से प्रतिदिन सभाएं होती रहीं, जिनमें १०००–२०००–३००० और बाद में तो १०,००० तक लोग शामिल हुए। शहर के कोने-कोने में और आदमी-आदमी की जबान पर प्रजा-मण्डल हो गया। चारों ओर प्रजा-मण्डल की जय के नारे सुनाई देने लगे। मण्डल के उम्मीदवारों के जीतने की पूरी आशा हो गई। इस मामले में राज की ओर से जो कुछ हुआ वह अत्यंत निंदनीय था। मुसल्मानों को खड़ा किया गया। एक नागरिक संघ खड़ा किया गया। उसकी ओर से उम्मीदवार खड़े किये गये। प्रजा-मण्डल के उम्मीदवारों पर बैठ जाने के लिए या स्वतंत्र हो जाने के लिए बेजा दबाव डाला गया। सीक्रेट सर्विस में से १२ हजार रुपये की मंजूरी हुई और न जाने किस-किस प्रकार से यह रुपया प्रजा-मण्डल के विरोधियों में बांटा गया।

इनसब बातों को हमने सहन किया। आखिर राज की ओर से एक

गुप्त सर्कुलर निकला, जिसकी एक नकल इस पत्र के साथ है।[१] सर्कुलर के शब्दों पर भले ही बहुत बड़ी आपत्ति शायद न उठाई जा सके, लेकिन उसका सीधा लक्ष्य प्रजा-मण्डल पर था, इसमें रत्तीभर संदेह नहीं हो सकता। सर्कुलर का प्रभाव भी पडा। ३०-४० फी सदी वोटर राज के नौकर हैं। उनमें से अधिकांश का झुकाव मण्डल की ओर था। परंतु सर्कुलर के बाद उन्होंने समझ लिया कि मण्डल के उम्मीदवारों को वोट देना उनके हक में ठीक नहीं रहेगा और दूसरों को वे वोट देना नहीं चाह सकते थे। नियमानुसार गुप्त मतदान होना चाहिए था, परंतु जो बैलट पेपर छपे थे उनपर से यह पता लग सकता था कि किसने किसको वोट दिया। इसलिए राज के नौकरों की मुश्किल और भी बढ़ गई। राज के इशारे पर यह प्रचार बेहद कराया गया कि जो प्रजा-मण्डल को वोट देंगे उनकी जायदाद जब्त हो जायगी और न जाने उनपर किन-किन मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़ेंगे। इतना सबकुछ होने पर भी जीत प्रजा-मण्डल की ही होती, लेकिन सवाल तो सिद्धांत का

[१] **गोपनीय और आवश्यक** **जयपुर, ९-१०-३८**

सभी मिनिस्टरों की सेवा में——

मुझे सूचना मिली है कि राज्य के कुछ कर्मचारी राजनीतिक मामलों में क्रियात्मक दिलचस्पी ले रहे हैं और वे एक उम्मीदवार का, जो जयपुर म्युनिसिपल चुनाव के लिए ऐसी संस्था द्वारा खड़ा किया गया है, जो दरबार द्वारा मान्य नहीं, समर्थन कर रहे हैं।

मैं कृतज्ञ होऊंगा अगर सभी मिनिस्टर अपने सभी विभागों के अधिकारियों को गुप्त आदेश भेज देंगे कि राज्य-कर्मचारियों के व्यवहार-संबंधी व्यवस्था का पालन पूर्णतः होना बहुत आवश्यक है——खासकर आगामी म्युनिसिपल चुनाव में।

प्राइम मिनिस्टर,
जयपुर राज्य

था। खूब सोच-विचार के बाद हमने यह निश्चय किया कि मण्डल के उम्मीदवारों को चुनाव से हटा लेना चाहिए। सभी उम्मीदवार हटने को राजी हो गये और उन्होंने सुपर्वाईजिंग आफिसर के पास लिखकर भेज दिया। मंडल के इस निश्चय से शहर में सनसनी फैल गई और लोगों का वोट देने में रस नहीं रह गया। कल चार वार्डों में वोटिंग हुआ। कहीं भी एक चौथाई से ज्यादा वोटर नहीं गये। एक जगह ७५० में से ७५ गये। ऐसा ही हाल बाकी के वार्डों में होनेवाला है। वोटिंग-स्टेशनों पर प्रजा-मण्डल की जय बुलती रहती है और जो स्वतंत्र उम्मीदवार खड़े हैं, उनको बहुत नीचा देखना पड़ रहा है। सर्कुलर और सिक्रेट वोटिंग के मामले में राज्याधिकारियों से मिलकर और उन्हें लिखकर पूरी कोशिश की गई, लेकिन समाधानकारक उत्तर नहीं मिला।

इस संबंध में मि. यंग से जो मेरा पत्र-व्यवहार हुआ है, उसकी नकलें आपके पास भेज रहा हूं। चुनाव-आंदोलन में एक लाभ यह हुआ कि बहुत से मुसलमान प्रजा-मण्डल के हिमायती हो गये।

अकाल-पीड़ितों की सहायता का काम शुरू कर रहे हैं। चोर का पता लगाया जा रहा है। मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी का सहयोग भी मिल जायगा। उधर शेखावटी में वातावरण काफी तना हुआ है। श्री हरलालसिंहजी आदि को छोड़ दिया गया। उनको मि. यंग ने बुलाया भी था। टेढ़ी-टेढ़ी बातें ही कीं। लेकिन शेखावटी में अब बातों से काम नहीं चलनेवाला है। वहांपर बंदोबस्त होने की बात है। उसमें किसानों की इच्छा के अनुसार कुछ न हुआ तो बड़ा आंदोलन छिड़ जाने की संभावना है।

आपको पिछला पत्र लिखा। उसके बाद यहांपर हम लोग यही सोचने लगे थे कि राज समझौते के लिए तैयार नहीं होगा। दमन की संभावना ज्यादा मालूम हो रही थी। म्युनिसिपल चुनाव के सिलसिले में राज को प्रजा-मण्डल के प्रभाव का अंदाजा हुआ दीखता है। अब वे फिर नर्म मालूम पड़ रहे हैं। अभी तक कुछ कहा नहीं जा सकता कि क्या होगा। मि. यंग ने जो यह कहा है कि उन्हें प्रजा-मण्डल के मामलों में काफी सफलता मिली है,

उसका अर्थ तो मैं कुछ समझा नहीं। जिस कान्फ्रेंस की बात, थी वह होगी क्या ? सर बीचम दस-एक दिन बाद आवेंगे। क्या उसके बाद मि. यंग श्री घनश्यामदासजी को निश्चित उत्तर देंगे ?

संघर्ष टलता रहे, तबतक तो आपके इधर आने की खास जरूरत नहीं है। हम लोग सबकुछ संभालते रहेंगे। संघर्ष साफ दिखाई देने पर आपकी जरूरत पड़ेगी। वर्किंग कमेटी में मेंबरों का अच्छा हाल है। मिश्रजी जैसों को तो बड़ा जोश आ रहा है। परंतु अपनी ओर से गड़बड कुछ नहीं होगी। सारे जोश को काबू में रखा जा रहा है। फिर भी अपनी ओर से तैयारी का ऐलान किया हुआ है। और कोई खास बात तो ध्यान में नहीं आ रही है।

विनीत,
हीरालाल

पुनश्च :

१. श्रीचुडगरजी की निश्चित राय है कि आप अब सीकर के बारे में चुप रहें। मेरी राय में भी हम सीकर के मामले को न बढ़ावें तो ही ठीक है। बर्खास्त किये हुए लोगों का सवाल रहेगा; लेकिन इस बारे में मत-भेद की बहुत गुंजाइश है—शायद धीरे-धीरे श्री किचलू बहुत-कुछ तो ठीक कर दें।
२. जयपुर में लेजिस्लेटिव असेंबली की चर्चा भी सुनाई दे रही है। वाजपेयीजी ने कहा है कि आप लोगों को १०-५ दिन में ही कुछ और भी मिलनेवाला है, इतनी जल्दी क्यों करते हो ?
३. हम लोगों का अनुचित 'दाब-दहशत' में आ जाने का विचार तो है नहीं, बाकी अपनी ओर से ऊटपटांग काम न हुआ है और न होगा। राजवाले चाहे कितनी भी चालबाजी करें।

हीरालाल

: १४४ :

जयपुर, २०–१०–३८

माननीय श्री भाईजी,

कल वर्किंग कमेटी की बैठक गंभीर वातावरण में हुई। लोग अपनी

जिम्मेवारी खूब महसूस करने लगे हैं, ऐसा मुझको मालूम होता है। स्वयं-सेवकों के संगठन को मजबूत करना, जयपुर-शहर में मण्डल के संगठन को व्यापक बनाना, प्रकाशन-विभाग का काम अच्छी तरह चलाना, इन बातों के अलावा एक खास निश्चय एक विशेष कमेटी बनाने का हुआ, जो मौजूदा स्थिति पर विचार करे और आपसे परामर्श करके मण्डल की ओर से एक न्यूनतम मांग तैयार करे। फिर उस मांग को मिनिस्टर्स और महाराज के पास रूबरू मिलकर पेश किया जाय। उसे समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित किया जावे।

न्यूनतम मांग का स्वरूप मेरी राय में यह है —

१. किसी-न-किसी प्रकार की व्यवस्थापिका सभा कायम की जावे।
२. बिना इजाजत लिये सभा करने की और प्रेसों को बिना इजाजत लिये छापने की आजादी हो।
३. जयपुरियों के रोजगार के लिए एक कमीशन हो।
४. लाग-बाग और कवड़ी-चुंगी नाजायज करार दे दी जाय।
५. अकाल के क्षेत्रों में लगान माफ किया जावे।

विनीत,
हीरालाल

: १४५ :

जयपुर, १९-१२-३८

माननीय श्री भाईजी,

आपका १४-१२ का पत्र मिला। यहांपर अधिकारियों का जो रवैया है, उसको देखते हुए मुझको कुछ भी आशा नहीं है। वे हर तरफ से प्रजा-मण्डल को कुचल देना चाहते हैं, इसमें रत्तीभर भी शक नहीं है। वे आगे बढ़कर जाहिरा तौर पर कुछ नहीं कर रहे हैं। इसका कारण सिर्फ इतना ही है कि उनको मामला बढ़ जाने का बहुत डर है। पुलिस की तरफ से कई प्रकार की अड़ंगेबाजियां हो रही हैं। प्रजा-मण्डल के मामूली परचे बांटना भी मुश्किल हो गया है। जगह-जगह नई तरह के 'मायावेशधारियों' को

मण्डल के खिलाफ प्रचार करने के लिए छोड़ा हुआ है। हम लोग सबकुछ बर्दाश्त कर रहे हैं; लेकिन कबतक करते रहें। मेरा तो अब धीरज टूटा जा रहा है। आप इसकी बात कर रहे हैं, लेकिन मैं तो यह महसूस करता हूं कि हम लोग घाटे में डाले जा रहे हैं। आप दूर बैठे यह सोचा करते हैं कि इनसे हमारा क्या बिगड़ जायगा; लेकिन मेरी राय से तो हमारा बहुत-कुछ बिगड़ता है। जब राजवाले हमारा सब तरह से विरोध करते हैं और हम उसके बारे में कुछ भी हाथ-पैर न हिलावें ? फिर भी मैंने बेहद संयम से काम लिया है।

मि. यंग को यह शिकायत हो गई कि मैंने किसानों को लगान न देने के लिए भड़काया है। अगर मैंने ऐसा किया है तो मि. यंग को चाहिए कि वे तुरंत कानूनी कार्रवाई करें। आप भी उन्हें लिख दीजिये।

अगर राजवाले अपना रवैया नहीं बदलेंगे तो हमारे लिए कुछ महीने तो अलग, कुछ हफ्ते ठहरना मुश्किल होगा। आप कुछ भी समझें, मैं तो इन लोगों की बदमाशियों से तंग आ गया हूं। मैंने इनके साथ इतनी सच्चाई का व्यवहार किया है और इतना धीरज रखा है कि शायद ही दूसरा आदमी इतना कर सकता था। मि. यंग का विश्वास भी मैंने खूब किया; परंतु अब मैं उनका विश्वास नहीं कर सकता। मुझको पुख्ता-से-पुख्ता खबरें है कि वे भीतर से हमारे खिलाफ क्या-क्या कर रहे हैं।

मैं यह बतलाना चाहता हूं कि एक हाथ से ताली नहीं बज सकती। मि. यंग आपको यह कहते रहें कि सबकुछ ठीक हो रहा है और यहांपर हमारे लिए खड्डे खोदते रहें, यह कबतक चल सकता है। हमारा तो दम निकला जा रहा है। हम आगे होकर लड़ाई नहीं छेड़ना चाहते; परंतु फर्ज कीजिये कि लगान के बारे में ही किसानों पर अत्याचार होंगे तो क्या हम बैठे-बैठे देखते ही रहेंगे। उनसे कहेंगे कि नहीं ऐसा अन्याय तो मत करो। मैं तो बराबर यह चाहता रहा हूं कि इस कानून के भीतर तो काम कर सकें। हमारा दम तो न घुटे, चारों तरफ से हमारी चाल तो बंद न हो। लेकिन यह सबकुछ हुआ जा रहा है और हम असमर्थ की भांति देख रहे हैं।

आप हमारे यहां की मीटिंग के पहले अपनी राय लिख भेजेंगे तो ठीक रहेगा, ताकि उस राय पर भी विचार किया जा सके। मैंने ऊपर जो कुछ लिखा है, उसके होते हुए भी आप यह तो निश्चित जानें कि अपने यहां जल्दी-बाजी में अटपटांग निश्चय कुछ भी नहीं होगा। बात इतनी ही है कि जबतक राजवाले अपना रवैया नहीं बदलेंगे तबतक उनका विश्वास करना मुश्किल है।

आपके उत्तर के इंतजार में—

विनीत,
हीरालाल

: १४६ :

बारडोली, १४-१-३९

प्रिय हीरालालजी,

आपका तथा श्री कपूरचंदजी का पत्र मिल गया था। आपका तार भी प्रजा-मण्डल के गैर-कानूनी घोषित किये जाने के संबंध में मिल गया था, जिसके जवाब में यहां से नीचे लिखा तार पाटनीजी को गया है —

"आपके और शास्त्रीजी के पत्र और तार मिले। खुशी से हाजिर होऊंगा। आज रात फोन करें।"

आपके पत्रों में पूछे गये प्रश्नों का जवाब इस प्रकार है —

१. बैरिस्टर चुडगर कल यहां बंबई से आ रहे हैं। कल उनसे फोन पर बातचीत की थी। आने पर उनसे सर बीचम से हुई। बातचीत के सार्वजनिक उपयोग के बारे में निश्चय कर लिया जायगा।

२. पुलिस की तरफ से जो कुछ भी धांधली या गुण्डाशाही हो उसके लिए हमें हर वक्त तैयार रहना है। लेकिन हमारी तरफ से कोई बात ऐसी नहीं होनी चाहिए, जो हलकी और हिंसात्मक हो। जहांकहीं हमें ऐसे कार्य होने की शंका हो भी, वहां हमें शांति और अनुशासन का प्रचार करना चाहिए।

३. अंदरूनी कमी की पूर्ति तो आप लोग तेजी से कर ही रहे हैं। इसके बारे में तो आप ही ज्यादा काम कर सकते हैं।

४. बंबई में जयपुर-निवासियों के डेप्युटेशन की व्यवस्था हो रही है, लेकिन अब प्रजा-मण्डल को गैर-कानूनी करार देने के बाद विशेष उपयोग होता नहीं दिखता।

५. चक्रवर्ती के बारे में खयाल रखा जायगा।

६. साइन बोर्ड उतारने के मामले में पुलिस जो भी करे उसमें बाधा नहीं डालनी चाहिए। जब हम यह तय कर लेंगे कि इसको लड़ाई का मामला बना लेना है तब जैसा मुनासिब समझा जायगा उसकी सूचना कर दी जायगी।

७. गिरफ्तारी के केंद्र झुन्झनूं, सीकर आदि बनाये जायं तो कोई हर्ज नहीं है। जहां-जहां हमारे कार्यकर्ता और उनका प्रभाव अधिक हो वहां-वहां हमारे केंद्र बना देना ठीक होगा। अभी १ फरवरी तक तो हमें आप होकर गिरफ्तार होने की नीति नहीं रखनी है। इसलिए सभा और जुलूस का कार्य-क्रम पहली तारीख के बाद ही ठीक होगा। उसके पहले हम लोग कहीं-न-कहीं मिल ही लेंगे और कोर्ट के पिकेटिंग आदि के बारे में विचार कर ही लेंगे। हम लोग कहां और कब मिलें इसकी सूचना बाद में भेज दी जायगी।

८. आवेदन-पत्र पर हस्ताक्षर कराना तो अब निरर्थक है।

९. रुपये का इंतजाम करना ही है। मेरे यहां से बंबई जाते ही शुरुआत कर देंगे। मोटर की आवश्यकता तो मैं भी महसूस कर रहा हूं। आप लोग कोई सेकेंडहैंड मोटर तलाश कर लें।

१०. आज स्टेट कौंसिल को भेजा मेरा पत्र मेरे वक्तव्यसहित प्रकाशित करने को अखबारों को भेजा जा रहा है। मेरे पत्र की कापी तो आपके पास है ही, वक्तव्य की कापी इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। यहां कार्य-समिति ने भी रोक की निंदा में एक प्रस्ताव पास किया है, जिसकी नकल भी साथ है।

११. श्री पूर्णचंदजी को कुछ सामग्री भिजवाने को तार कराये हैं, वह तुरंत भिजवा दें।

१२. आपके यहां से विधान को स्थगित करने की जो घोषणा निकली

वह मुझे कम जंची है। महत्वपूर्ण घोषणा करने से पहले यहां की सलाह ले लेना ठीक मालूम होता है; नहीं तो परस्पर-विरोधी घोषणा के निकल जाने का डर है।

१३. जल्दी ही पब्लिक के नाम एक जनरल अपील निकालना है। आप दिल्ली से उसकी प्रतियां मंगाकर बांटने का प्रबंध कर लें।

१४. मेरा इरादा कल शाम को यहां से बंबई जाने का ह।

१५. शंकरलालजी को यहां से सूचित किया है कि दिल्ली आफिस में तार का पता रजिस्टर करा लें। 'जयप्रज्ञा' पता यहां से सूचित किया गया है।

१६. इसी 'हरिजन' में पूज्य बापूजी ने 'जमनालालजी पर निषेधाज्ञा' नामक लेख छपाया है। उसकी प्रतियां उर्दू और हिंदी में छपाकर आपके पास भेजने के लिए यहां से तार दिया गया है। आप भी वहां से मंगाकर बंटवाने का ध्यान रखें। वह लेख मेरी गैर-हाजिरी में लिखा गया और छापने के लिए भेजा गया है। उसमें एक-दो जगहें भूलें रह गई हैं।

एक जगह यह कहा गया है कि जयपुर के तमाम मंत्री बाहरी हैं। पूज्य बापू की मनशा 'प्रायः सब' लिखने का था, शायद छपने म 'प्रायः' शब्द छूट गया है।

इसी पैरे में आगे 'पिछले छः साल से जमनालालजी की प्रेरणा से प्रजा-मण्डल काम कर रहा है" ऐसा छपा है। इसमें 'पिछले छः साल' सुधारने-योग्य है। पूज्य बापूजी की निगाह में ये भूलें लादी गई हैं।

१७. प्रजा-मण्डल पर प्रतिबंध लगाने के बाद तो मेरी इच्छा मुझपर लगाये गये प्रतिबंध को तोड़ने की थी, लेकिन ऐसा करने से बाहर के संगठन और प्रचारादि का काम अधूरा रह जाता। इसलिए मैं फिर पहली तारीख तक रुक गया हूं। पहली को मुझे प्रतिबंध अवश्य तोड़ना है। इसलिए मैं ३० या ३१ को देहली जरूर पहुंचना चाहता हूं। आप लोग भी अगर गिरफ्तार न हुए तो वहां आने का कार्यक्रम रखें जिससे आगे का कार्यक्रम निश्चित किया जा सके।

१८. प्रजा-मण्डल से संबंध रखनेवाला कोई भी व्यक्ति यदि विज्ञप्ति निकाले तो उसे मण्डल की नीति और स्टेट कौंसिल को लिखे मेरे पत्र की भावना के समर्थन का ध्यान रखना चाहिए, उसके विरुद्ध तो कतई न हो।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १४७ :

पूना, ३-११-३९

प्रिय श्री शास्त्रीजी,

आपके दो पत्र मिले। मैं आज सुबह ही बंबई से यहां आया। जयपुर महाराज की तबियत अब ठीक है। उन्हें गवर्नमेंट हाउस ले जाया गया है। उनकी हालत अब खतरे से बाहर है।

मैं बंबई में करीब ४–५ रोज रहा। मालूम पड़ा कि राजा ज्ञाननाथ-जी भी यहां आ रहे हैं। मैंने विचार किया कि उनसे परिचय तो कर लिया जाय। अतः मैंने उन्हें कोटा तार दिया। उसमें महाराजासाहब की तबियत का हाल देते हुए उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की थी। उनका जवाब आया कि वे भी मिलकर खुश होंगे, परंतु बंबई आने पर समय व जगह तय कर सकेंगे। ता. २ को महाराजासाहब की ओर गवर्नमेंट हाउस में गया। वहां राजा ज्ञाननाथ से साधारण परिचय जबर्दस्ती कर लिया गया। ताजमहल होटल में दोपहर को २।। बजे मिलने का तय हुआ।

वे चाहते थे कि उनकी मुलाकात का जिक्र अखबारों में न आवे। काफी समय तक उनसे बातें हुई व बीच-बीच में मुझे एकाध बात साफ-साफ कहनी पड़ी। प्रजा-मण्डल के बारे में बातें हुईं। इस बातचीत पर से यह मालूम पड़ता है कि यह चाहते हैं कि ऐसा थोड़ा-सा कुछ काम करना चाहिए कि जिससे लोगों को कुछ संतोष हो; परंतु इस काम में यह कुछ मजबूती दिखा सकेंगे, इसमें संदेह है। जबतक प्रजा-मण्डल के बारे में पूरा फैसला न हो, तबतक सभा इत्यादि नहीं करनी चाहिए, ऐसी इनकी राय है। मैंने साफ कहा कि हमारे लिए तो फैसला हो गया है और अब सभा इत्यादि कराने में

कुछ हरकत नहीं है । इनकी बात से मालूम पड़ता है कि यह पोलिटिकल डिपार्टमेंट का साथ देंगे । पहले मुझे संदेह ही था । सोसायटीज अमेंडमेंट एक्ट (प्रजा-मण्डल) के मामले में पोलिटिकल डिपार्टमेंट का हाथ है या नहीं, परंतु अब तो विश्वास हो गया है कि इसमें उनका तथा रेजिडेंट का पूरा हाथ है । इनकी तरफ से कुछ-न-कुछ गड़बड़ी हुई है, इसमें संदेह नहीं ।

हम लोगों को अपने ही पैरों पर मजबूत खड़ा रहना होगा । आनेवाली कोई भी कठिनाई आसानी से हल हो सकती है । हमें हमारा संगठन खूब मजबूत व उम्दा बनाना चाहिए । इतना मजबूत कि उन्हें हमसे मुलाकात करने की इच्छा महसूस हो । हमें अधिकारियों से मिलने-जुलने का खयाल आज की हालत में कम करके अपने संगठन को ठीक करने में सारी ताकत लगानी होगी । हमें अपनी ओर से कोई उग्र कार्रवाई नहीं करनी है, जिससे उन्हें कहने को कोई खास मौका मिले । भाषण वगैरह में खूब संयम से काम लेना होगा । मुझे यहां कुं. अमरसिंहजी से भी एक रोज दो घंटे से ज्यादा बातें करने का व वहां की स्थिति समझने का मौका आया है । रेजिडेण्ट व पोलिटिकल डिपार्टमेंट का असर कम करने में पूरी ताकत व बुद्धि का उपयोग करना होगा । वर्तमान हालत में तथा अन्य कारणों से महाराज से जो आशा की गई थी उस भरोसे रहने से कोई विशेष परिणाम तुरत आता नहीं दीखता । भविष्य में शायद उनका फायदा मिले ।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १४८ :

कैंप हटुंडी ९-१-४०

माननीय श्री भाईजी,

रुपये के इंतजाम की सख्त जरूरत है । विद्यालय में बेहद मुश्किल हो रही है । प्रजा-मण्डल में भी रुपया बिल्कुल नहीं है । श्री जुगलकिशोरजी-वाला रुपया आ जाय तो सब तरह से ठीक हो जाय । मुमकिन है, मैं दो-तीन दिन में आपके पास पहुंच जाऊं । ऐसा हुआ तो मिलने पर बातचीत हो ही

आयगी। मेरी आपके पास इस समय आने की बात न रही तो फिर या तो आप श्री जुगलकिशोरजी को तार दें कि वे दस हजार रुपया मेरे पास मेरे कहे अनुसार भिजवाने के लिए भागीरथजी को कह दें। यह इसलिए कि आजकल जयपुर में सीधा रुपया मंगाना ठीक नहीं होगा। आप श्री जुगल-किशोरजी को तार देना ठीक न समझें तो कम-से-कम पांच हजार रुपया और कहीं से तुरंत दिलवाने की व्यवस्था करें। जब श्री जुगलकिशोरजी का रुपया आ जायगा तो उसमें से यह रुपया परथारा ही लौटा दिया जायगा। मैं आपको इतनी ताकीद नहीं करता और न दिक्कत में डालता, लेकिन मैं यहां हटुंडी में बैठा हुआ रुपये का इंतजाम तुरंत नहीं कर सकता। मैं पहुंचूंगा तब तो रुपये की कुछ दूसरी व्यवस्था भी वहां से कर लूंगा।

अपने विद्यालय की स्वीकृति तीन शर्तों के साथ हुई थी। वे शर्तें पाठ्य-क्रम, परीक्षाओं और स्टाफ के बारे में थीं। मि. ओवंस ने एक पत्र लिखकर रतनजी से पूछा है कि उन शर्तों का पालन हुआ है या नहीं। रतनजी मि. ओवंस से मिल लेंगी और उनसे बात करने के बाद उनके पत्र का उत्तर लिख देंगी कि "सब शर्तों का पालन हो रहा है" खामखाह छेड़ने की खातिर टेकनिकल गड़बड़ निकालने की बात तो दूसरी है, बाकी असल में शिक्षा-विभाग अपने विद्यालय के बारे में कोई नुक्स नहीं निकाल सकता।

राज की मौजूदा नीति का एक परिणाम यह भी हुआ है। मेरा विश्वास है कि राज से संघर्ष नहीं होगा; क्योंकि राज का संघर्ष करने का निश्चय नहीं मालूम होता। लेकिन अगर राज प्रजा-मण्डल से, विद्यालय से या अपनी और किसी संस्था से छेड़खानी करके संघर्ष करना ही चाहेगा तो वह बड़ी खुशी के साथ संघर्ष करेगा। मैं खुद शांति के पक्ष में हूं। प्राइम मिनिस्टर की ओछी और फालतू बातों को मजबूती के साथ मैंने जरूर जवाब दिया है, लेकिन थोथी लड़ाई के पक्ष में न मैं था, और न हूं। बाकी मेरा यह संकल्प है कि मैं प्रजा-मण्डल और विद्यालय को लेकर जयपुर राज्य की सीमा के भीतर अडिग रूप से अड़ूंगा और दुनिया की कोई रावणी शक्ति नहीं हो सकती जो इस पग-रोपण को हटा सके। राज्य के भीतर संस्थाएं कायम करने

से मैं आज तक नहीं डरा बल्कि मैं तो उदाहरण पेश करना चाहता हूं कि हम चाहें तो रियासतों के भीतर संस्थाएं कायम कर सकते हैं और सफलतापूर्वक चला सकते हैं। वाजिब बात को मानने के लिए वनस्थली तैयार है, परंतु जो वनस्थली में बसते हैं वे अपने-आपको गिराकर वहां की कच्ची ईंटों को गिरने देंगे। आप वनस्थली के बारे में खास चिंता न करें और चिंता करनी हो तो रुपये की करें और सब बातों को मेरी सलाह से और बहुत करके मि. ओवंस की सहायता से रतनजी ठीक कर लेंगी।

विनीत,
हीरालाल शास्त्री

: १४९ :

ट्रेन से, ६–२–४०

माननीय श्री भाईजी,

कल शाम को नई दिल्ली पहुंचा। हरिभाऊजी से समाचार मालूम हो गये—यही कि पू. बापूजी सवेरे पंजाब मेल से वर्धा लौट रहे हैं, क्योंकि वायसराय की बातचीत में ज्यादा सार नहीं है। फिर कभी बातचीत होने की संभावना मानी जा सकती है, परंतु उसकी शुरुआत वायसराय की ओर से ही हो तब। असली बहस यह मालूम होती है कि हिंदुस्तान के भाग्य का फैसला करे कौन—अंग्रेज करें और दया करके हिंदुस्तानियों की राय लेवें—अथवा हिंदुस्तानी खुद करें। ज्यादा डिटेल का पता लगाने का समय और मौका मुझको नहीं मिला। पू. बापूजी ने एक इंटरव्यू दी है—बहुत करके उसकी स्थिति काफी साफ हो जायगी।

पू० बापूजी से आज सुबह ७ बजे मिला। १५–२० मिनट तक बड़ी शांति के साथ बातचीत हुई। पू० बापूजी अच्छे मूड में थे। राजा ज्ञाननाथ के लिए आपने जो पत्र तैयार किया है, उसको उन्होंने पसंद कर लिया है। बोले, "भेज दो। यह तो निर्दोष पत्र है।" मेरी इंटरव्यू का कटिंग उनको दिखला दिया, उसे भी उन्होंने पसंद किया है। फिर बोले, "मैंने जयपुर की बात नहीं छेड़ी। ऐसी स्थिति में छेड़ता तो उसमें प्रतिष्ठा की हानि थी। तुम

अपना काम शांति से करो—उनको चिढ़ाने की बात कोई न करो। वे चिढ़ावें तो भले चिढावें, पर तुम चिढ़ो मत। इसीमें तुम्हारी जीत है। काम करनेवाले आदमी खड़े करो। नामधारी आदमियों से क्या मतलब निकलनेवाला है। कुछ भी करो—खादी, अकाल-सेवा, साक्षरता-प्रचार, पर करो। मुझको लोग छोड़ दें या मेरा कहना मानें—तुम भी लोगों से कह दो कि हमारा साथ चाहते हो तो तुम्हें इतना करना ही पड़ेगा। शांति से काम करते-करते राजवाले किसीको पकड़ें तो पकड़ें।" पू० बापूजी ने जो कुछ कहा, उससे मुझको संतोष हो गया।

बाद में घनश्यामदासजी से मेरी बात हुई। वे बोले "राजा ज्ञाननाथ जयपुर में ठहर नहीं सकेंगे। जयपुर के अंग्रेज उनसे नाखुश हैं। मैंने भी ग्लेन्सी को लिखा था, ग्लेन्सी ने उत्तर तो यही दिया कि ज्ञाननाथ अच्छे आदमी हैं, पर मेरा खयाल है, ज्ञाननाथ ठहरेंगे नहीं। मैं खुद तो हिंदुस्तानी प्राइम मिनिस्टर के पक्ष में ज्यादा नहीं था, आखिर हुई यह गलती ही।" रुपये-पैसे की बात उन्होंने अपने-आप ही छेड़ी। बोले कि जमनालालजी को जयपुर के काम को ज्यादा गंभीरता के साथ करना चाहिए। उनके लिए ४०–५० हजार रुपया इकट्ठा कर लेना कोई बड़ी बात नहीं है। जयपुर के काम में वनस्थली भी शामिल है। वे कोई स्कीम बनावें, उसके अनुसार सबसे रुपया मांगें, खुद भी दें। मुझको भी कहें। तुमको तो रुपये से निश्चिंत होना चाहिए। यह न हो तो फिर तुम जो कुछ करो अपनी ताकत से करो।"

इन बातों से मैं यह समझा कि वे जयपुर के सब कामों में आपका प्रारंभीकरण चाहते हैं। इस बारे में मैं तो आपको कुछ बतला नहीं सकता। मैं तो, आप लोग कहें, उसके अनुसार काम करने को तैयार हूं। प्रजा-मण्डल में रुपया चाहिएगा तो सही, पर मैं प्रजा-मण्डल को (बाहर के और ऊपर के) रुपये के आधार पर नहीं चलाना चाहता। प्रजा-मण्डल का काम कम रुपये में ज्यादा अच्छा चल सकता है। परंतु वनस्थली की बात है दूसरी। रुपये की तकलीफ वहां भी रहे तो चिंता नहीं, पर वहांपर तो मूल

में ही घाटा है। वहां तो "पांच्यूं ही पराया लाड़ा मुरड धरसी।" ? की व्यवस्था हो और ? खर्च की तकलीफ रहे, तब तो मजा आवे। मैं ऐसा महसूस करने लगा हूं कि वनस्थली के आर्थिक कष्ट को मैं ज्यादा समय तक नहीं झेल सकूंगा। जीवन-कुटीर के जमाने में मैं महा कठोर था। प्रजा-मण्डल के लिए भी मैं कठोर हूं और रह सकता हूं। पर वनस्थली का पौधा कठोरता बर्दाश्त नहीं कर सकता, यानी एक हद से आगे। वनस्थली संस्था नहीं, वह मेरा घर है, मेरे 'बाल-बच्चे' वहां पर हैं। अपने परिवार के भोजन-वस्त्र की व्यवस्था किये बिना कोई भी कार्यकर्त्ता ठीक काम नहीं कर सकता। रतनजी वनस्थली में शांताबाई की अमर आत्मा को पूजती हैं। कहने या लिखने की बात नहीं है, परंतु वनस्थली के लिए रतनजी और मैं दोनों कई बार रोते हैं। दिल भर रोते हैं!! हम दोनों अभिन्न प्राणियों के आंसू वनस्थली की नींव में हैं। मैं मुसीबतों का सामना करने के लिए पैदा हुआ हूं। इस काम में रतनजी मेरी बहादुर साथिन हैं। वनस्थली में और भी कई बहादुर लोग हैं ही। चलती हुई फ्रंटियर मेल के साथ मेरा वेग बढ़ता जा रहा है। परंतु एक अंग्रेज मेरे पास बैठा है। मैं यहां से उठकर भी कहां जाऊं? खैर मैं अपने खर्च के लिए २०) रुपये लेता हूं। आज से मैं १५) रुपये लिया करूंगा। घी और दूध दोनों चीज नहीं खाऊंगा। अपने लिए कोई ऐसी चीज नहीं खरीदूंगा जो १५ रुपये पानेवाला गरीब आदमी नहीं खरीद सकता। कबतक? जबतक मेरे परिवार के लिए, वनस्थली के लिए, मेरे समाधानकारक व्यवस्था जनवरी ४० से जून ४२ तक के लिए नहीं हो जायगी। दही या छाछ खा सकूंगा—लंबे सफर में पूरी खाना पड़ेगी या किसीके यहां बिना घी का साग न मिल सके तो अपवाद कर लूंगा। वनस्थली की जय हो। और अब विद्यालय वनस्थली से नहीं हटेगा। वहीं रहेगा, और रहेगा।

मेरी तबियत हलकी हुई है। आप कर्म से बहुत-कुछ ब्राह्मण होते हुए भी जन्म से तो महाजन हैं। महाजन की दृष्टि से देखकर आप यह खयाल कर सकते हैं कि यह ब्राह्मण का लड़का पागल हो गया क्या? पर मेरे लिए

पागल होने का सवाल नहीं है अथवा मैं कभी 'श्याना' (सयाना) था ही नहीं। मैं लहर से चलता हूं। आज मेरी अंतरात्मा ने इसी बात को स्वीकार किया है। आगे उस शक्ति को मालूम है, जिसने मुझको यह हुक्म दिया है। इस तरह के हुक्म के आगे मैं व्यावहारिक बुद्धि से क्या सोचूं ? मेरे भीतर से तो एक ही आवाज आ रही है—वनस्थली की जय हो–आप भी यह भावना कीजिये वनस्थली की जय हो। अपने जीवन में मेरे लिए एक ही बाजी लगाना अभी बाकी है, पर वह बाजी मैं ठहरकर लगाऊंगा।

घनश्यामदासजी ने यह भी कहा कि अब पिलानी में एक अच्छा-सा बोर्डिंग हाउस कायम करके लड़कियों का हाईस्कूल खोलने का विचार है। रामेश्वरदासजी और ब्रजमोहनजी दोनों की पत्नियों का विशेष उत्साह इसमें है। मि० ओवेंस ने पांडेजी को कहा, "ऐसा करने से वनस्थली को धक्का लगेगा ना ?" खैर, वनस्थली को धक्का लगे, ऐसी कल्पना के लिए कोई जगह नहीं है।

रायजी से मेरा मिलना न हो सका। वे पू० बापूजी से मिल पाये या नहीं, यह भी नहीं मालूम। कम-से-कम हरिभाऊजी के सामने तो नहीं मिले। कल बापूजी ने मौन भी ले लिया था।

इस पत्र का उत्तर जयपुर के पते से भिजवा दें। पर देखना, कहीं नाराज मत हो जाना। मैं ऐसा कुछ न करता तो मेरा बोझ हलका नहीं होता और यह पत्र लिखने से पहले की सोची हुई बात नहीं है। राजा ज्ञाननाथजी के पत्र को डाक में डाल रहा हूं।

विनीत,

हीरालाल शास्त्री

: १५० :

पूना, ९-२-४०

प्रिय हीरालालजी,

आपका ६-२ का तार व ४-२ का बंबई से लिखा हुआ व ६-२ का ट्रेन से लिखा हुआ पत्र मिला। समाचार जाने। पूज्य बापू से मुलाकात हो

गई, स्टेटमेंट व राजा ज्ञाननाथ के नाम का पत्र उन्होंने पसंद कर लिया जानकर संतोष हुआ ।

वनस्थली की चिंता व लगन आपको रहे यह तो स्वाभाविक है । भाई घनश्यामदासजी ने मेरे बारे में जो कहा वह भी उनका मेरे प्रति प्रेम का ही कारण है । अगर मेरा स्वास्थ्य व मानसिक उत्साह जैसा चाहिए वैसा रहने लग जावेगा तो उनकी सूचना के बिना ही मैं जयपुर के मामलों में, खासकर प्रजा-मण्डल व वनस्थली के कामों में, अधिक उत्साह रखूंगा ही । अभी भी दोनों कामों का खयाल व चिंता तो मेरे स्वभाव के माफिक थोड़ी-बहुत रहती ही है । और बातें तो आप, मैं, रतनजी मिलकर ही करेंगे । वैश्य-कुल में जन्म होने के कारण अथवा बचपन से काम करने का तरीका व शिक्षण अन्य प्रकार का मिलने के कारण हम लोगों की कार्य-पद्धति में फर्क तो अवश्य है । मेरे में अब ज्यादा फर्क होता दिखाई नहीं देता । अगर ठीक ढंग से फर्क हो सका तो मैं तो उसका स्वागत ही करूंगा । आपकी लहर व त्याग-वृत्ति की मेरे मन में पूर्ण इज्जत व कदर होते हुए भी मैं इस मार्ग का अवलंबन नहीं कर सकता । खैर, परमात्मा आपकी चिंता जल्दी ही कम करे । अभी तो यहीं खतम करता हूं ।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १५१ :

पूना, १५-२-४०

प्रिय हीरालालजी,

१०-२ तथा १२-२ के पत्र मिले । श्री घनश्यामदासजी का जबाब भी देखा । यदि वे वनस्थली का पूरा बोझ उठा लें तो अपने लोग—मैं, आप और अन्य मित्र मिलकर प्रजा-मण्डल का बोझ उठा सकेंगे । आप भाई घनश्यामदासजी को यह बात सूचित कर सकते हैं । ऐसी हालत में वनस्थली का भार श्री रतनबहन पर अंदर की जिम्मेवारी का, श्री झालाजी वगैरह पर शिक्षा का व भाई घनश्यामदासजी पर आर्थिक व्यवस्था का रहेगा ।

उसमें वह श्री भागीरथजी, सीतारामजी की मदद अवश्य ले सकेंगे । प्रजा-मण्डल की व्यवस्था हम लोग मिलजुलकर, जैसा हो सकेगा, करते रहेंगे ।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १५२ :

वनस्थली, २४-३-४०

माननीय श्री भाईजी,

मेरे कल और परसों के पत्र मिलें होंगे । कल शाम को आपके २१-३ के तार की नकल और उसका जवाब आपके पास पहुंचा होगा। उसकी नकल मेरे पास जयपुर से पहुंची । मुझको बड़ा दुख है कि मैं अपने सिर के दर्दों की हालत की वजह से यहां फंसा हुआ हूं । और यह संभव नहीं हुआ कि आपके पास वर्धा से रवाना होने से पहले कुछ उपयोगी समाचार जयपुर से पहुंच जाते ।

वनस्थली में मैं जब ठहरा ही हुआ हूं तो यहां की ऐसी व्यवस्था करने की कोशिश कर रहा हूं कि मेरी कम-से-कम शक्ति यहां के काम में लगे । कठिनाइयां तो हैं, लेकिन आशा है कि इस दिशा में मेरा प्रयत्न सफल हो जायगा । तब फिर मैं प्रजा-मण्डल के काम में ज्यादा समय लगा सकूंगा । फिर भी यह जरूरी होगा कि प्रजा-मण्डल के काम का किसी-न-किसी रूप में बंटवारा हो । आज जो स्थिति है वह मेरे लिए हर तरह से खराब है । अगर शांति का वातावरण रहा तो आपके आने पर एक ऐसी योजना बना लेंगे जिससे आपको कम-से-कम कष्ट होकर आपसे अधिक-से-अधिक सहायता मिल सके । आज तो मैं दुख के साथ जानता हूं कि आपको आवश्यक और उचित से अधिक कष्ट होता रहता है और मेरी ओर से यह बात आपको कहने की नहीं है कि मुझे भी कम तोहमत नहीं हो रही है । आपने बड़े प्रेम के साथ मुझको अपनी दो-तीन बातें बतलाई थीं । मैं उन बातों से लाभ उठाने की पूरी कोशिश करूंगा और आप यह विश्वास रख सकते हैं कि मेरे लिए आप जो कुछ भी तै कर देंगे उसीका पालन मैं श्रद्धा के साथ करता रहूंगा । लेकिन मैं यह महसूस करता हूं और मैंने समय-समय पर

आपसे कहा भी है कि अपने बढ़ते हुए काम की बढ़ती हुई जिम्मेदारियों को ठीक-ठीक निभाने के लिए जरूरी है कि हम एक व्यावहारिक योजना बना लें जिसके अनुसार काम चला करे। आज तो मैं अपनी बेबसी में, जैसा मुझे सूझता है और जितना मुझसे बनता है वैसा और उतना ही, मैं करता हूं और खासकर इस कारण से भी सबकी निगाह में मैं कभी-कभी कसूरवार हो जाता हूं और कई बार दिखाई दे जाता हूं। आज मैं इन विचारों में लगा हुआ था, इसलिए इतना-सा आपको भी मैंने लिख दिया है।

विनीत,

हीरालाल

१५३ :

बंबई ६-६-४०

प्रिय हीरालालजी,

आपका २-६ का पत्र मिला।

फाइनेंस कमेटी ने १५००) रुपये मासिक तक का तफसीलवार बजट बनाकर पेश करने को आपको कहा है, सो मालूम हुआ। आप जो बजट बनावें उसकी एक कापी मुझे भी भेज दें।

एकाध मित्रों की हलचलों के बारे में भी श्री पाटनीजी शंकित हो रहे हैं, लिखा सो मालूम हुआ। उचित समझें तो मुझे भी उस बारे में सूचित कर दें।

"विरोध करनेवाले को मेरी ओर से विशेष धमकी नहीं मिलनी चाहिए", आपने लिखा सो मालूम हुआ। आपका यह लिखना ठीक हो सकता है। परंतु मेरे अपने कुछ विचार इस बारे में हैं। अपना विरोध करनेवालों से हम दुश्मनी या वैर भाव रखेंगे व उनका निरादर करते जावेंगे, तो उससे हमारा कार्य आगे बढ़ नहीं सकता। उससे हमारी प्रगति में क्षति होगी, व हम विरोधियों का मत-परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। मेरा मत-परिवर्तन में बहुत विश्वास है। मैंने जीवन में कई आदमियों को देखा है, जो पहले कांग्रेस व पू० बापूजी का विरोध करते थे; परंतु बापूजी की ओर से किये गये प्रेम के बर्ताव के कारण अंत में उनका मत-परिवर्तन हो गया। विरोध

करनेवाले किस मतलब से विरोध करते हैं, यह भी हमको देखना चाहिए। हमें उनका कहना प्रेम व शांति से सुनना चाहिए और इस तरह शनैः शनैः हम उन्हें समझाकर उनका मत-परिवर्तन कर सकते हैं।

आपने लिखा कि अपना काम प्रारंभिक अवस्था में है, इसलिए ऐसी-वैसी कमी पर जरूरत से ज्यादा ध्यान देने से विशेष लाभ नहीं हो सकता। हमारा काम प्रारंभिक अवस्था में है, इसलिए हमें अपनी नींव भी आरंभ में ही मजबूत बनानी चाहिए। हमारी नींव अच्छी नहीं बनेगी तो आगे चलकर इमारत को काफी नुकसान पहुंचने का डर रहता है। इसीलिए हमारा व्यवहार सबसे सीधा व सच्चाई का होना चाहिए। यदि इस तरह का बर्ताव सरल व सच्चाईपूर्ण हो तो हमारी जड़ मजबूत हो सकेगी। यदि हम भी हमारे विरोधियों की तरह से चाल से काम लेने लगेंगे तो अंत में हमारी हार और उनकी जीत होगी। शहर-कमेटी के चुनाव उससे अच्छे ढंग से हो सकता था। हमें लोगों की व्यावहारिक दृष्टि भी जागृत रखनी चाहिए। किसी बात के लिए किसी तटस्थ पार्टी को इंसाफ करने का मौका देने पर हमारे सर पर कोई इल्जाम या दोष आवे, यह ठीक नहीं होगा। ऐसे समय हमारे विरोधियों का दोष दिखाई दिया तो उससे उनकी शक्ति कम होगी। हमारा प्रभाव बढ़ेगा। चुनाव आदि के मामलों में हमेशा मेरी यह नीति रही है व रहेगी कि चुनाव के बारे में कुछ विरोध रहा तो उसका निर्णय किसी बाहरी तटस्थ पार्टी द्वारा कराया जाय। इससे विरोधियों को जनता में यह भ्रम फैलाने का मौका न मिले कि हमने ताकत हमारे हाथ में होने की वजह से उसका अनुचित लाभ उठाया। हम खुद तो अनुचित लाभ उठाना चाहते नहीं। साथ में यह भी चाहते हैं कि आगे चलकर ताकत जिसके भी हाथ में आये वह अनुचित लाभ न उठा सके। मेरे ये विचार आप श्री पाटणीजी को व अन्य मित्रों को अवश्य बतावें व उन लोगों का इसपर कुछ कहना हो तो मझे लिखें। हमारी कमी पर हम ध्यान नहीं देंगे व यदि हमारे विरोधी हमारा खयाल उस तरफ दिलाते हैं तो भी ध्यान न दें, इससे तो हमारी खामियां और बढ़ेंगी, और हमारी शक्ति कम होने की आशंका बनी रहेगी।

हमें हमारी कमियां मालूम पड़ने पर निकालने की भरसक कोशिश करनी चाहिए। इससे हमारी ताकत साफ व शुद्ध होगी।

श्री रतनजी के बारे में आपने लिखा वह मालूम हुआ। चर्बी घटाने के लिए तो प्राकृतिक चिकित्सा बहुत अच्छी है। यह मेरा विश्वास है।

मैं यहां ७-८ रोज और हूं। इसके बाद वर्धा जाऊंगा। शायद बीच म दो रोज के लिए पूना जाऊं।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १५४ :

जयपुर, ३१-८-४०

माननीय श्री भाईजी,

पिछले महीनों से मैं अपने बारे में अत्यंत गंभीरता के साथ सोच रहा हूं। मैं इस परिणाम पर पहुंच चुका हूं कि भले ही मुझको उतने स्पष्ट न दिखाई देते हों, तब भी मेरे में कुछ-न-कुछ ऐसे दोष अवश्य हैं जिनका सुधार हुए बिना मैं राजनैतिक जीवन का अधिकारी नहीं हो सकता। इस वृत्ति से प्रेरित होकर मैंने अपने-आपको पूरे तौर से आपके सुपुर्द करने के संबंध में कुछ समय पहले लिखा था। रात से मैं फिर विचार में पड़ा हुआ हूं और मैं यह सोच रहा हूं कि मैं सचमुच ही और पूर्ण तौर पर आपके सुपुर्द हो जाऊं और अपने व्यक्तित्व को भिन्न अस्तित्व मानना छोड़ ही दूं। मैं यह भी सोचता हूं कि मैं आपकी और दूसरे मित्रों की रजामंदी से राजनैतिक कार्य से एक बार हट जाऊं और मैं यह भी सोचता हूं कि मैं किसी साथी की बाकायदा मातहती में काम करने लग जाऊं। मैं महसूस करता हूं कि जिस हैसियत से मैं इन दिनों काम कर रहा हूं उसके लायक मैं नहीं हूं। सुपुर्द होना चाहनेवाले को अधिकार नहीं होना चाहिए कि वह खुद कोई प्रस्ताव कर सके। परंतु अपने-आपको सब तरह से आपके सुपुर्द करता हुआ मैं अत्यंत नम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि या तो मुझे राजनैतिक कार्य से छुट्टी दिलवा दे—ऐसा होगा तो मुझको वास्तविक सुख और शांति मिलेगी। आप यह न करना चाहें तो मेरा काम किसी दूसरे

भाई के सुपुर्द कर दें और मुझे उनका सहायक बना दें। यह भी न कर सकें तो दूसरे मित्रों के द्वारा और उनकी मर्जी के अनुसार सभी आवश्यक मामलों में निश्चित नियम बनवा दें जिनकी तामील में विनयपूर्वक करता रहूंगा। मैं यह मानता हूं कि मौजूदा स्थिति बहुत जल्दी-जल्दी असह्यता की ओर जा रही है और उसमें मेरा खुद का जिम्मा कम नहीं होना चाहिए, जबकि मेरे इतने साथी यह सोचते हैं कि मेरे काम करने के तरीके ठीक नहीं हैं। मैं अपनी प्रकृति के दोषों के अलावा कुछ सही-सही देख नहीं सक रहा हूं कि इस भारी गड़बड़ का मुझसे संबंध रखनेवाला कारण क्या है? ऐसी हालत में अपने-आपको सरल और नम्रभाव से आपके सुपुर्द कर देने के सिवाय और कोई उपाय नहीं है, जिसे मैं काम में ला सकूं। मैं इस घड़ी अपने-आपको सर्वथा शक्तिहीन अनुभव करता हूं, पर मुझको आशा है कि आपकी और मित्रों की कृपा से मुझको काम-चलाऊ शक्ति मिल जायगी। आप इस पत्र का जैसा चाहें उपयोग करें।

विनीत,

हीरालाल शास्त्री

: १५५ :

हनुमानपुरा, ६-७-३७

श्रीमान् सेठ जमनालालजी साहब,

नमस्ते। सेवा में निवेदन है कि हमें कुछ सहायता की जरूरत है, इसलिए आपकी सेवा में पत्र दिया जाता है। आपको जरा हमारी तरफ भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि हम लोग सार्वजनिक काम करने से ही फुर्सत नहीं पाते और परिवार का खर्चा भी हमारे जिम्मे है। और खर्चा जैसे-तैसे हम अपना चलाते हैं। हमारे खाने-पीने का खर्च कोई दे तो हम लेना भी नहीं चाहते क्योंकि हम सेवा कर रहे हैं; कोई प्रदर्शनी नहीं। अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। सिर्फ बच्चों की तालीम के लिए आप हमारी मदद करें। ६ लड़कियों को वनस्थली दाखिल करवा रखा है। उसके लिए कम-से-कम २५

रुपयों की जरूरत है। आप मेहरबानी करके हमारे पत्र पर गौर करें तो अच्छा होगा। हम यही आशा रखते हैं कि आप हमारी इच्छा पूरी करेंगे ।

आपका शुभचिंतक,
हरलाल सिंह

: १५६ :

जयपुर, १३-९-४०

श्रद्धेय श्री सेठ साहब,

सादर वंदे ! मैंने एक पत्र चि. रमेश व अन्य तीनों बालकों के बारे में सविस्तार समाचारों का २० जुलाई को आपके पास भेजा था, परंतु उसका उत्तर आजतक नहीं मिला ।

यहां का वातावरण जाहिरा तो सामान्य-सा है, परंतु अंदरखाने सफाई नहीं मालूम देती। सुना जाता है कि अपने गत अधिवेशन में जिन कर्मचारियों ने दर्शकरूप से भी भाग लिया था, उनसे विवरण पूछा जा रहा है और किसी-किसीको तो भारत-रक्षा आर्डिनेंस में चालान करने की और बरखास्तगी की धमकी दी जा रही है। समझ में नहीं आता कि ऐसा करने में क्या मसलहत है ।

श्री जानकीदेवीजी को व भाई कमलजी वगैरह को यथायोग्य कहें। कृपा बनी रहे। काम-धंधे में कोई विशेषता अभी तक नहीं है। परंतु यह सब परीक्षा का समय समझकर धक्कमपेली से समय निकाला जा रहा है। क्या अबकी बार तो उत्तर की प्रतीक्षा करूं ? हीरालालजी बजट के बारे में कुछ बिगड़े नजर आये। विशेष पधारने पर।

शुभचिंतक,
हरिश्चंद्र

(जोधपुर)

: १५७ :

ब्यावर (अजमेर), १२-३-३८

मान्यवर,

इस पत्र के साथ में आपकी सेवा में एक सर्क्युलर भेज रहा हूं। रियासतों

के संबंध में कांग्रेस की नीति क्या हो, इस विषय में चाहे आप हमारे विचारों से असहमत हों, पर कांग्रेस के हरिपुरा-अधिवेशन के प्रस्ताव के बाद सभी कांग्रेसवादियों के लिए अब एक ही रास्ता रह गया है। वह है कांग्रेस के नाम पर रियासतों से टक्कर न लेना और पार्लियामेंटरी चुनाव के झगड़ों में न उलझना। इसके माने ये हैं कि हर जोखिम के काम दूसरी संस्थाओं के नाम से किये जायंगे।

आप स्वयं 'रियासती प्रजा' हैं। अतः आपका ध्यान में खास तौर पर इस बात पर आकर्षित करना चाहता हूं कि रियासतों में काम करनेवाली संस्था एक ही रहनी चाहिए और वह रहनी चाहिए देशी राज्य प्रजा-परिषद्। दूसरे प्रजा-मंडल या तो उसकी शाखाएं रहें या अन्य प्रकार से संबद्ध। स्वतंत्र संस्थाओं द्वारा काम होने से उन संस्थाओं पर कोई बंधन या दूसरों से संबंध न होने से उनके गुमराह होने की संभावना रहती है। उदाहरणतः बूंदी में एक प्रजामंडल कायम किया गया अथवा कराया गया। अंग्रेज दीवान की मांग करके उसने खूब उछल-कूद मचाई। अंग्रेज दीवान आने के बाद वह खत्म हो गया। झांसी में एक प्रजा-कमेटी है। वह राजाओं को गद्दी से हटाये जाने के विरुद्ध खास तौर पर आंदोलन करती है। चाहे स्वतंत्र प्रजा-मंडलों के उद्देश्य परिषद् या कांग्रेस से मेल भी खाते हों, पर अखिल भारतीय संस्था से संबंध न होने से कार्यकर्ताओं का राज्याधिकारियों द्वारा दिये जानेवाले प्रलोभन में आ जाना संभव है और कई बार ऐसा हुआ है। अतः आपसे मेरा यह अनुरोध है कि आप प्रजा-परिषद् के सदस्य बनें और प्रजा-परिषद् की शाखाएं खुलवाने में हमें सहयोग दें।

आपको यदि आपत्ति हो सकती है तो यही कि परिषद् में बड़े व्यक्तित्व का सर्वथा नहीं तो बहुत-कुछ अभाव है। आप आइये। औरों को लाइये। परिषद् अच्छे-अच्छे व्यक्तियों से भर जायगी।

मुझसे भी शायद आपको शिकायत हो सकती है। वह यह कि मैं कांग्रेस के चुनाव में श्री हरिभाऊजी के खिलाफ खड़ा हुआ था। इसके दो कारण थे। एक यह कि मैं इस बार रियासती प्रश्नों को अपने ढंग पर प्रांत

और अखिल भारत कांग्रेस कमेटी में रखवाने के पक्ष में था। दूसरा यह कि मुझसे इंदौर के कुछ मित्रों ने अनुरोध किया था। मेरे विरुद्ध इस प्रकार का प्रचार किया गया कि मुझे रामनारायणजी ने खड़ा किया है। इस बारे में श्री हरिभाऊजी से भी गलती या गलतफहमी हुई। मैंने उनसे यह बात भी कह दी थी। अगले सप्ताह इस बारे में उनसे बातचीत करूंगा। फिर भी यदि यह समझा जाय कि मैं अयोग्य हूं या मेरे-जैसे व्यक्तियों के रहते हुए आपका परिषद् में प्रवेश करना असंभव है तो मैं परिषद् से अलग भी हो सकता हूं। आप मेहरबानी करके परिषद् का फार्म भर दीजिये। राधाकृष्णजी, दामोदरजी, कमलनयनजी और सभी आसपास के रियासती लोगों को आप मेंबर बनाइये। और वर्धा में, हो सके तो, रजवाड़ियों का एक संगठन खड़ा कीजिये।

हां, एक और गलतफहमी हो सकती है। वह यह कि मेरा नाम बाबाजी द्वारा स्थापित उत्तर भारतीय प्रजा संघ के मंत्रियों में भी है और उसका उद्देश्य है रिपब्लिक सरकार कायम करना। इस चुनाव का पता तो मुझे अखबारों और एक सर्कुलर द्वारा चला। मैंने उसी समय अपना नाम हटाने और इसकी घोषणा अखबारों में करने की बाबाजी से प्रार्थना कर दी। अभी तक उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे मिलकर बात करना चाहते हैं। अतः बात करने की प्रतीक्षा न करके मैं स्वयं ही प्रेस-नोट भेज रहा हूं। स्वतंत्र संस्थाओं में रहना मेरे लिए संभव नहीं है।

एक बात और। मैंने हिंदी शार्टहैंड का अभ्यास करना आरंभ किया है। पूनमचंदजी की पद्धति मुझे पसंद आई है। मुझे मालूम हुआ है कि काकासाहब या श्रीमन्नारायणजी इस कमी को निकालने में प्रयत्नशील हैं। जो भी महाशय इस काम के चार्ज में हों मैं उनके संपर्क में रहना चाहता हूं। आप उनका नाम लिखने की कृपा करें।

श्री हरिभाऊजी पोहरी से शायद वर्धा जायंगे। आप उन्हें यह पत्र पढ़ा सकते हैं।

आपका,

जयनारायण व्यास

(धौलपुर)

: १५८ :

आगरा, १७-९-३८

पूज्य सेठजी,

आपने पत्रों में धौलपुर के प्रदर्शन के विषय में पढ़ा होगा। वे लोग बड़े हताश हो गये हैं। उनको काफी परेशानी है। वैसे और स्टेटों की अपेक्षा तो कुछ भी नहीं है, मगर चूंकि ये लोग इसके लिए नये हैं, परेशान हैं।

इन लोगों का पूरा इतिहास भेजता हूं, पढ़ लें। एक-एक कापी सरदार पटेल को भी भेजी है। आशा है, आप इन्हें दिल्ली में कुछ समय देकर इन्हें उचित सलाह देंगे। ऐसा ही मत पं. हरिभाऊ का भी है। वे भी इस पूरे एजिटेशन से परिचित हैं। दिल्ली में मिलेंगे।

आपका,
प्रकाशनारायण

(बीकानेर)

: १५९ :

हिसार, १२-११-३७

आदरणीय सेठजी,

सादर वंदे। आपको स्मरण होगा कि बंबई में मैंने आपके दर्शन किये थे। परंतु राजपूताना की रियासतों के संबंध में उस समय आपसे परामर्श नहीं हो सका। कारण, आप उस समय बहुत व्यस्त थे। अब मुझे बहुत खुशी होगी, यदि आप राजपूताने की राजनीतिक समस्या को सुलझाने का रास्ता दिखा सकें। केवल मारवाड़ी-समाज में ही नहीं, परंतु समस्त राजपूताने के आप आदर्श नेता हैं।

आपका,
सत्यनारायण सराफ

: १६० :

हिसार, २५-६-३८

श्री आदरणीय सेठजी,

सादर वंदे। बहुत अरसे से आपसे पत्र-व्यवहार करना चाहता था।

परंतु हिसार की स्थिति व कुछ अन्य कारणों से ऐसा घिरा कि इच्छा होने पर भी आपसे पत्र-व्यवहार नहीं कर सका। आप जब जयपुर आये तो उस समय भी आकर आपसे परामर्श न कर सका। हिसार में हिंदू-मुसलमान-कलह के सुलझाने में मुझे दत्तचित्त होकर लगना पड़ा और बहैसियत प्रेसीडेंट, हिसार सिटी कांग्रेस, मैं इस जिम्मेदारी से बच भी नहीं सका। यही कारण था कि मैं आपके दर्शन नहीं कर सका। खैर, अब आप लिखें, आपसे कब मिलूं ? राजपूताने में कार्यकर्त्ताओं की आपस की फूट से दिल बहुत दुःखी है। जयपुर-राज्य-प्रजा-मंडल के अधिवेशन में आपके सभापतित्त्व में सफलता देखकर बहुत खशी हुई। आपका भाषण बहुत कमाल का था और जिस नीति का आपने इसमें वर्णन किया है, वही हम रियासती कार्यकर्त्ताओं का ध्येय है। और केवल आज यही हो सकता है। श्री नरसिंहदासजी की पुस्तिका से मुझे खेद हुआ। मैं उनसे ३-३॥ माह से नहीं मिल सका। इससे पहले मेरा उनसे यही प्रयत्न था कि हम आपके अधीन राजपूतान में यदि काम करें तो ज्यादा कार्य हो सकेगा। इसके लिए मुझे दुख हुआ। मुझे कृपा करके आप सलाह दें कि किस तरह इस फूट को रोका जाय और कैसे हम आपके नेतृत्त्व में काम करें।

आपका,

सत्यनारायण सराफ

: १६१ :

हिसार, १६-१२-३८

आदरणीय सेठजी,

सादर वंदे। बड़े दुख से मैंने पत्रों में पढ़ा है कि आपने कांग्रेस-महासमिति से त्यागपत्र दे दिया। महासमिति में आपके होने से हमें बहुत गर्व रहता था कि राजपूताने के देशी राज्यों की प्रजा के सच्चे मित्र, हितैषी व हमारे नेता वहां हैं और आपके कारण हमारे दुख कांग्रेस तक पहुंच जाया करते थे और वहां हमारी पैरवी भी हो जाया करती थी। बहुत-से मित्रों के पत्र भी मेरे पास आये हैं और उन्होंने भी असंतोष ही जाहिर किया है।

श्री हरिभाऊजी का पत्र मेरे पास आया था। उन्होंने मेरी राय चाही थी कि जैसे राजकोट का प्रश्न तमाम भारतवर्ष का प्रश्न बन गया है क्या उसी तरह मेवाड़ का सत्याग्रह समस्त राजस्थान का प्रश्न नहीं बन सकता। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए मैंने उनको मेवाड़-सत्याग्रह के लिए अपनी सेवाएं दी हैं। हरिभाऊजी से इस प्रश्न पर मैंने बहुत विचार किया है। राजकोट के सत्याग्रह में सरदार पटेल, जो कि अखिल भारतवर्षीय नेता हैं, आंदोलन को नेतृत्त्व दे रहे हैं। और जबतक वैसा सबल नेतृत्त्व उदयपुर को न मिले, तबतक यह कैसे समस्त राजस्थान का सवाल बन सकता है? हरिभाऊजी में या मेरे में इतनी शक्ति नहीं है कि हम इस आंदोलन को वैसा नेतृत्त्व दे सकें।

आप ही केवल-मात्र इस कमी को पूरा कर सकते हैं। आप यदि उदयपुर के विषय में नेतृत्व देवें तो वह भी ऐसा ही उपयोगी होगा। इस बारे में आप मुझे अपने विचार लिखेंगे।

आपके नेतृत्त्व में हम भारी-से-भारी कुरबानी करने के लिए तैयार रहेंगे। आशा है कि अब आप राजस्थान के आंदोलन में हमारे उग्र पथ-प्रदर्शक बनेंगे। कृपया पत्र देवें।

आपका,

सत्यनारायण सराफ

(भरतपुर)

: १६२ :

भरतपुर, २२-१०-३७

श्रीमान् सेठ जमनालालजी बजाज,

सादर वंदे। कदाचित आप भरतपुर में गोकुलजी वर्मा को न भूले होंगे। अनेक कठिनाइयों के रहते हुए वे अभी तक जीवित हैं। अधिक कष्ट पड़ने पर वे थोड़े-बहुत दिनों के लिए आगरे भी चले जाया करते हैं। लेकिन उन्होंने भरतपुर के राजा और प्रजा की सेवा करने के विचार को अपनी भूख-प्यास में भी नहीं भुलाया है। भरतपुर में प्रजा पर राज के परदेशी शासकों का

बड़ा दबाव है। राजा भी इन शासकों के मारे भागा-भागा फिरता है। परदेशी शासक-मंडल ए.जी.जी. की सहायता से १८-१९ वर्ष की आयुवाले राजा को भी नाबालिग बनाये हुए है। राजकोष से लाखों रुपये के जवाहिरात गबन हो चुके हैं। राजा ने भी वाइसराय तथा ए. जी. जी. आदि सबसे वर्तमान अत्याचारों की शिकायतें की हैं। दूसरी ओर गोकुलजी अपनी ओर से और सारी प्रजा की ओर से भारत-सरकार को सब कष्ट-कथा सुना रहे हैं। मूक किसानों का तो जिक्र ही कहीं नहीं है। अनेक कठिनाइयों के साथ-साथ भरतपुर प्रजा-परिषद् खोलने के संबंध में विगत २०-९-३७ को हमलोगों का एक मित्र-मंडल राष्ट्रपति पं. जवाहरलाल नेहरू से भरतपुर रेलवे स्टेशन पर मिला था। वर्मा कांग्रेस-सदस्य बनाने के काम में लगे हुए हैं। चूंकि राजपूताने के केंद्र अजमेर से भरतपुर बहुत दूर पड़ता है, हम लोगों ने आगरा जिला कांग्रेस कमेटी के अंतर्गत मांडलिक कमेटी बनकर काम करना तय किया है। इसकी स्वीकृति यू. पी. प्रांतीय कार्यालय से मिल चुकी है।

इस सब कार्य के लिए एक २४ घंटे कार्य करनेवाले व्यक्ति की आवश्यकता है। साधन-संपन्नों से डर के कारण तथा हमारे धनाभाव के कारण आर्थिक सहायता देने में हम असमर्थ हैं। पिछड़े हुए राजस्थान में कार्यकर्त्ताओं के मार्ग में धनाभाव मुख्य है। अतः आप उचित सहायता देकर हमारे कार्य में प्रोत्साहन देने का पूरा भार अपने ऊपर लें। धन आदि का सारा प्रबंध एक सुव्यवस्थित बोर्ड के अधीन होगा। राजनीतिक कार्य के साथ-साथ हरिजन-सेवा को भी समुचित स्थान होगा।

आशा है, आप विचार करने के पश्चात् शीघ्र उत्तर देने की कृपा करेंगे।

आपका,
गौरीशंकर मित्तल

(शाहपुरा)

: १६३ :

अजमेर, ११-७-२५

महानुभाव,

सादर प्रणाम। आपका कृपा-पत्र मिला। श्रीमान का यह लिखना है कि

मुझे श्री घनश्यामदास बिड़ला से पत्र-व्यवहार करना चाहिए और उन्हें अपनी पूरी स्थिति लिखनी चाहिए। इस संबंध में तो इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि आपको पत्र लिखने के पूर्व ही मैंने उन्हें एक पत्र दिया था, जिसमें मैंने उन्हें अपनी पूरी स्थिति लिख दी थी और २० रुपये के बजाय ३० रुपये मासिक प्रदान करने की प्रार्थना की थी। ६ जून को उनका मुझे यह उत्तर मिला कि मुझे दुख है कि मैं आपकी इच्छानुसार काम करने में असमर्थ हूं, अतः क्षमा करें। ऐसी अवस्था में अब उनको फिर लिखना कदाचित उचित न होगा। और अब लिखने की जरूरत भी नहीं रही, क्योंकि करीब-करीब इंतजाम हो ही गया है। श्री बंशीलाल इनाणी ने मुझे एकमुश्त ६५०) न देकर २५) रुपये मासिक दे देने का वचन दे दिया है। जहां इस उदार सहायता से मेरे अध्ययन में सुविधा हो गई है, वहां एक दिक्कत और पैदा हो गई है। मुझे शुरू में ही १५० रुपये की जरूरत थी। अब एकमुश्त न मिलने से यह जरूरत ज्यों-की-त्यों रह जाती है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि कम-से कम १५० रुपये तो आप उधार देने की कृपा करें। ताकि यह सब कर्ज जो मैंने लिया है, उससे मुक्त हो सकूं।

आशा है, मेरी प्रार्थना स्वीकृत होगी।

विनीत,

गोकुललाल असावा

: १६४ :

अजमेर, २५-६-२६

महानुभाव,

सादर प्रणाम। मैं गत दो वर्षों से काशी-विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा हूं। और इसी वर्ष मैंने वहां की बी. ए. की परीक्षा पास की है। मेरी हार्दिक इच्छा वहीं जाकर एम. ए. और लॉ पढ़ने की है, परंतु आर्थिक संकट के कारण ऐसा करने में असमर्थ हूं। गत दो वर्षों का अध्ययन श्रीमान घनश्यामदासजी बिड़ला की आर्थिक सहायता से हुआ। मेरे दुर्भाग्य से मेरे पूज्य पिताजी का देहांत गत ग्रीष्मकाल में हो गया और इसलिए मुझे गृह-भार

भी अपने सर पर उठाना पड़ा। जो कुछ सहायता इधर से मुझे मिलती थी, उससे भी वंचित हो गया। ऐसी अवस्था में बीस रुपये मासिक की वृत्ति पर मेरा काशी में पढ़ना नहीं हो सकता है।

श्रीमान से प्रार्थना है कि आप दया करके ६५० रुपये दो वर्ष के लिए बिना ब्याज उधार देकर सहायता कीजिये। इस काल के उपरांत मैं डेढ़ या दो वर्ष में किश्तों द्वारा सब रुपया चुकता कर दूंगा। यदि श्रीमान इस बालक की उदारतापूर्वक सहायता करेंगे, तो मैं आजन्म आभारी रहूंगा।

आशा है कि मेरी प्रार्थना स्वीकृत होगी।

आज्ञाकारी,

गोकुललाल असावा

: १६५ :

शाहपुरा, २६-८-३८

पूज्य काकाजी,

सादर प्रणाम। आपको शायद ज्ञात होगा कि शाहपुरा में भी प्रजा-मंडल बना है। उसकी स्थापना अप्रैल के मध्य में हुई है। उसकी नीति और उद्देश्य आदि सब जयपुर-प्रजा-मंडल के ढंग पर ही रखे गये हैं। राज्य के साथ में प्रजा-मंडल की नीति सहयोग और सद्भावनामय रखी गई है। और बातचीत के सिलसिले में स्वयं राजाधिराज ने मुझे यह आश्वासन दिलाया था कि यदि प्रजा-मंडल सहयोग की नीति से काम करना चाहता है तो इसमें राज्य कोई दखल नहीं करेगा। परंतु जो व्यवहार राज्य की ओर से हो रहा है, उसको देखकर ऐसा ज्ञात होता है कि प्रजा-मंडल की वृद्धि राज्य को अखरती है। प्रत्यक्ष में तो विरोध करके राज्य अपने ऊपर बदनामी लेना नहीं चाहता, परंतु आर्य-समाज की ओट लेकर आर्य-समाज के मंत्री द्वारा प्रजा-मंडल के खिलाफ इस प्रकार का कुप्रचार करवाया जा रहा है कि समय की गति को जाननेवाला कोई भी सभ्य आदमी इस बात को नहीं सह सकता। हरिजन आदि दुखित वर्ग में यह प्रचार आर्य-समाज के मंत्री महोदय द्वारा होता है कि यदि कोई भी प्रजा-मंडल का मेंबर बनेगा तो उसे जतों से पिटवाकर

बाहर निकाल दिया जावेगा। प्रजा-मंडल बागियों की संस्था है। उसमें बाहर के लोग काम करते हैं, जिनको बाहर की मंस्थाओं से तनख्वाहें मिलती हैं। लिखने की आवश्यकता नहीं कि ये सब बातें निराधार और महज झूठी हैं। आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन से भी कांग्रेस और प्रजा-मंडल के खिलाफ विष उगला जाता है।

आपको शायद ज्ञात होगा कि श्री मणिशंकर त्रिवेदी (भू. पू. सीनियर आफिसर, सीकर) यहां के नये दीवान होकर आये हैं। कृपा करके आप उनको लिखिये ताकि काम को धक्का नहीं पहुंचे। हमलोग नहीं चाहते कि अपनी ओर से राज्य तथा प्रजा-मंडल के बीच संघर्ष रहे, क्योंकि ऐसा होने से काम में नुकसान है। वैसे मैंने पू. हरिभाऊजी तथा माननीय हीरालालजी शास्त्री को लिख दिया है कि वे यहां आवें। परंतु आप यदि श्री त्रिवेदीजी को लिखेंगे तो बहुत ही अच्छा होगा।

शाहपुरा को तो आप जानते ही होंगे। राजपूताने की छोटी रियासतों में से वह एक है, जिसका रकबा केवल ७०५ वर्गमील है। वह मेवाड़, जयपुर और अजमेर-मेरवाड़ा के बीच में स्थित है। यहां के नरेश की आर्य सामाजिक क्षेत्र में अच्छी प्रसिद्धि है क्योंकि आर्य सामाजिक मामलों में अच्छी दिलचस्पी, लेते हैं और इस संस्था को आर्थिक मदद भी वे समय-समय पर पहुंचाते रहते हैं।

संक्षेप में, मैंने यह स्थिति लिखी है। आशा है,इससे आपको सारी स्थिति समझ में आ जायगी। पत्रोत्तर द्वारा शीघ्र ही सूचित कीजिये कि आप कब श्री त्रिवेदीजी को लिख रहे हैं। पत्र में आप यह भी लिख दीजिये कि शाहपुरा राज्य-प्रजा-मंडल के मंत्री रमेशचंद्र ओझा यदि आपसे मिलें तो आप उससे अच्छी तरह मिल लें।

आशा है, आप प्रसन्नतापूर्वक होंगे। सौ. रमादेवी (जो महिलाश्रम में २॥ वर्ष तक रही हैं) आजकल यहीं हैं और आपको प्रणाम लिखा रही हैं। शेष कुशल।।

सेवक,

रमेशचंद्र ओझा

: १६६ :

वर्धा, १-९-३८

प्रिय रमेशचंद्रजी,

२६-८-३८ का पत्र मिला। प्रजा-मंडल के बारे में सब हाल विदित हुआ। राज्य की ओर से प्रजा-मंडल के काम में बाधा उत्पन्न हो रही है, यह जानकर चिंता हुई। आपने श्री मणिशंकरभाई को पत्र लिखने के बारे में लिखा। परंतु इस प्रकार पत्र लिखना उचित नहीं है। कभी श्री मणिशंकरभाई से भेंट हो सकेगी तो रूबरू में मैं उन्हें जो उचित हो कह सकूंगा।

आप वहां के मुख्य जवाबदार कार्यकर्त्ता मणिशंकरभाई से मिलकर अपना प्रयोजन साफ तौर से बतलावें या लिखकर भेज देवें। इस बारे में श्री हीरालालजी या हरिभाऊजी ठीक राय दे सकेंगे।

जमनालाल बजाज कर वंदेमातरम्

(सिरोही)

: १६७ :

सिरोही, १२-३-४०

मुरब्बी श्री जमनालालजी,

जयपुर से प्रकट किया निवेदन तथा जयपुर में दिया भाषण (जो अखबारों में आया था) पढ़ा। सब जगह प्रजा-मंडल पर एक-से आक्षेप किये जाते हैं। प्रजा-मंडल की ही 'भड़क' है, लेकिन अपने धीरज छोड़नेवाले कहां हैं।

९ मार्च का "नोटीफिकेशन" सारा ही वापस लेने का आग्रह आप रखनेवाले हैं? हमारा नोटीफिकेशन भी करीब ऐसा ही है। एक कलम कम है। आफिलिएशन वाली कलम का व्यावहारिक दृष्टि से भी नजर में नहीं खटकता, न खटकना चाहिए, ऐसा पू. बापूजी का अभिप्राय है। फिर भी आग्रह रखेंगे क्या? मैंने तो आफिलिएशन का भाग इस तरह मान्य रखा है और संस्था-कानून के संबंध में अंतिम पत्र चार दिन पहले लिख भेजा है। हमारी स्थिति के अनुसार हम काम करते हैं, फिर भी हमारी कोई कमजोरी से आपको नुकसान पहुंचता दिखाई दे, तो सावधान करें।

आपकी तबियत अच्छी होगी। सबको यथायोग्य। मैं रामगढ़ आनेवाला नहीं हूं, इसलिए जवाब यहीं भेजें।

गोकुलभाई भट्ट के वंदन

: १६८ :

उदयपुर से सिरोही जाते, २७-११-४१

मुरब्बी श्री जमनालालजी,

हाल में मैंने आपको कुछ भी नहीं लिखा। मुझे आशा है कि आप मेवाड़ प्रजा-मंडलों की परिषद् में पधारेंगे। इस समय पहली बार मैं सिरोही के बाहर परिषद् में गया और फंस भी गया। अयोग्य को जवाबदारी सौंपने की तरकीबें रची जाती हैं तो जाने का मन भी नहीं होता। परंतु उदयपुर में कुछ कार्यकर्त्ता भिन्न-भिन्न प्रजा-मंडलों के मिले थे। उसपर से ऐसा लगता है कि राजस्थान के कार्यकर्त्ता साल में दो-चार बार अलग-अलग जगहों में मिलते रहने चाहिए ताकि एक-दूसरे का सहारा रहे। आप-जैसों का मार्ग-दर्शन मिलता रहे। आप इस बारे में हीरालालजी शास्त्री, जयनारायण व्यास, वर्माजी वगैरह द्वारा अवश्य कुछ कराइयेगा। वर्धा में खास बात हुई होगी तो जाहिर होगी ही।

गोकुलभाई भट्ट के वंदन

(सीकर)

: १६९ :

कलकत्ता (जवाब दिया, २३-८-२६)

जमनालालजी,

राम राम बांचना। आपके सीकर जाने का समाचार सुना सो उत्तम बात है। बाकी आपको मैं क्या लिखूं। आप स्वयं समझदार हैं। उपस्थित विवाद के विषय में बहुत विचारकर परिणाम और भविष्य को सोचकर अग्रसर होना चाहिए, कारण जैसी स्थिति सुनी जाती है, उससे हिंदुओं

के हृदय में असंतोष रहने से भी शांति होनी कठिन है। इस वक्त विकट समस्या उपस्थित है। धर्म की रक्षा प्राण का भी खयाल न रखते हुए करने योग्य है। पक्षपात तो करना ही नहीं चाहिए।

आपका,

ज्वालू[1]

: १७० :

सीकर, २५-१०-२४

श्रीमान् सेठ जमनालाल बजाज महोदय,

आपका कृपापत्र यथासमय बंबई से आया। पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। शिक्षा-विस्तार के संबंध में आपके शुभ विचार अवश्य प्रशंसनीय हैं, इससे मेरी हिम्मत बढ़ती है। मैं यथासाध्य इसकी पूर्ण चेष्टा करूंगा। बोर्डिंग हाउस की भूमि के लिए आपने लिखा, सो ठीक है। पर अभी तक कोई बात तय नहीं हुई है। जब कुछ होगा, आपको सूचित करूंगा। स्कालरशिप के विषय में आपकी राय बहुत ही ठीक है, पर अभी तक इस बारे में कुछ भी निश्चित नहीं हुआ है। कोशिश जारी है। पुनः चेष्टा की जायगी। जैसा होगा वैसी सूचना दी जायगी।

इधर गत मास सीकर के पंचराय दूकानदारों को एकत्रित करके जकात के संबंध में हमने कुछ नये प्रस्ताव रखे थे। यद्यपि वे सरल थे एवं उचित भी थे पर यहां की जनता में इनके विरुद्ध आंदोलन-सा खड़ा हो गया था; पर अब आशा है कि समझाने से कुछ कम-बेशी पर जनता मानने को तैयार होगी, अभी यह विषय विचाराधीन है। हमारा इरादा तो ऐसा है कि खद्दर एवं अनाज पर, जो गरीबों की खास आवश्यकता की वस्तु समझी जाती है, हम बिल्कुल ही जकात नहीं रखना चाहते। साथ में विदेशी एवं ऐयाशी की वस्तुओं पर जकात बढ़ाने की इच्छा है। जैसे विदेशी वस्तु, रेशमी एवं ऊनी

१. ज्वालाप्रसाद कानोड़िया

कपड़ा। इसका निश्चय होने पर आपको पुनः सूचना दी जायगी। अभी मैंने इसके विषय में एक मास की मोहलत दी है। सबकी राय मिलने पर पुनः इसपर विचार होगा, तब आपको सूचित किया जायगा। मुझे उम्मीद है कि आप अपना शुभ परामर्श यथासमय सदा देने की कृपा बनाये रखेंगे। पत्रोत्तर दें।

आपका स्नेही

अजीज रहमान ख्वाजा

: १७१ :

सीकर, ११-५-२५

श्रीयुत सेठजी साहब,

आपका पत्र मिला। पढ़कर निहायत खुशी हासिल हुई। कृपा और कष्ट के लिए धन्यवाद।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि किसानों के 'हासल' वाले विषय को तय कर दिया है और किसानों को पूरी आजादी दी गई कि वे दो बातों में से चाहे जो पसंद कर लें। इलाकेभर के जाटों के दस्तखत बही में लिये गये हैं। करीब १५०० जाटों ने दस्तखत किये हैं। अब केवल सीकर तहसील बाकी है। उम्मीद है, यह कार्य जल्दी ही पूर्ण हो जायगा। आपके अनुरोध से इस कार्य को उन्होंने बड़ी दिलचस्पी के साथ अंजाम दिया। सब जाटों की इच्छा है कि वे पुराने धारे के माफिक 'हासल' देवें—याने जमाने में जमाने के माफिक और अकाल में अकाल के माफिक।

आपको यह जानकर खेद होगा कि बोर्ड आफ इक्जामिनेशन, इलाहाबाद ने अपने श्री माधव स्कूल को हाई स्कूल, सन् १९२८ से पहले करने की आज्ञा नहीं दी है। लेकिन हम चाहते हैं कि हाईस्कूल के क्लासों की पढ़ाई इसी साल से शुरू की जावे, ताकि विद्यार्थी प्राइवेट परीक्षा दे सकें।

श्री दरबारसाहब का विचार इस महीने के अंतिम सप्ताह में आबू पधारने का है—मैं भी साथ में होऊंगा। आशा है, वहांपर आपसे मिलना होगा।

आपको याद होगा, आप यहां आये थे, उस वक्त आपने और सेठ दुर्गादत्तजी ने कहा था कि सीकर की वर्तमान स्थिति का एक स्टेटमेंट अखबारों में निकालेंगे ताकि सबको ज्ञात हो जाय कि सीकर राज्य में सब तरह शांति और संतोष है। किंतु ऐसा कोई स्टेटमेंट अभी तक नहीं निकला है।

आप अच्छी तरह इस बात को भी जानते हैं कि यहांपर किसी किसान को बेंत या कोड़ा नहीं लगाया गया ? किंतु कई शख्सों ने झूठी बातें अखबारों में छपाकर वर्तमान सीकर राज्य-प्रणाली को बुरा साबित करने की चेष्टाएं की है—यहांतक कि किसानों के मामले को पार्लियामेंट तक पहुंचाने का दुस्साहस किया; किंतु झूठ चलती कहांतक है। वहांपर भी यही उत्तर मिला कि बेबुनियाद और अविश्वस्त बातों पर कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती। आप-जैसे देश-भक्त सज्जनों को इन बातों पर ध्यान देना चाहिए और ऐसे क्रांतिकारी व्यक्तियों से, जिनसे आपके राज्य पर आक्षेप होते हैं, घृणा करनी चाहिए। उम्मीद है, आप खैरियत से होंगे।

आपका स्नेही,

अजीज रहमान ख्वाजा

: १७२ :

रामगढ़ (सीकर), १-३-२७

पूज्यवर जमनालालजी,

सादर प्रणाम। सीकर राज्य की जकात के समाचार आपको मिल ही चुके हैं। इसी जकात का विरोध करने के लिए स्थानीय जनता की एक विराट् सभा २७ फरवरी को यहां हुई थी, जिसका विवरण इस पत्र के साथ आपकी सेवा में भेजा जा रहा है। ३–३–२७ को यहांपर पांचों शहरों के प्रतिनिधियों की सभा होनेवाली है। उसका निर्णय होने पर आपको लिखा जायगा। इस कर से प्रजा में बड़ा असंतोष फैला हुआ है और राज्य कर्मचारी अभी से प्रजा पर भयानक अत्याचार करने लग गये हैं। प्रजा ने अभी

तक जकात नहीं देने का पक्का निश्चय किया है। आप प्रजा को शांत बना दें और इस नई जकात को न लगने दें।

आपके बालक,
महादेव चौधरी व इंदुमल

: १७३ :

सीकर, १७-५-३८

मान्यवर भाईजी,

सादर वंदेमातरम्। परसों आपको पत्र लिखा था। कल कोई खास घटना नहीं हुई। आज भी नार्मल स्थिति है। जयपुरवाले बिल्कुल खामोश हैं। मि. कोल जयपुर चले गये। सीकर रावराजाजी ने अपना केस पोलिटिकल डिपार्टमेंट में दायर कर दिया है, ऐसी यहांपर अफवाह है। कल रायगढ़ के पंचों को भी बुला लिया है। फतेहपुर के और लक्ष्मणगढ़ के पंचों को भी बुलाया है। शहर में अफवाह गर्म है। आपके संबंध में और प्रजा-मंडल के संबंध में खूब गलतबयानी की जा रही है।

लोग अब ऊबने लगे हैं और इस आफत से छूटना चाहते हैं। थोड़े दिन यदि यही हालत रही तो आपस में सिर-फुटौवल होने लग जायगी।

बाहर के कर्मचारियों को तनख्वाह मिल गई है, किंतु सीकरवालों को कुल नहीं मिला। पटवारियों को सूचना दी जानेवाली है कि वे अपने-अपने हल्के में जाकर अपना-अपना काम सम्हालें। शंकाशील वातावरण में शास्त्रीजी को बुलाने का विचार नहीं है। कल सुबह में खुद उनके पास जाने का विचार कर रहा हूं।

कई शहरों में एक यह अफवाह भी उठी थी कि सेठजी ने आबूजी जाकर रावराजाजी को रुपये खर्च करने की मनाही की है और बंबई के सेठों को इस बात पर रजामंद कर रहे हैं कि सीकर रावराजाजी पर अदालत खोलने का दबाव डालें। कुछ लोग कहने लगे हैं कि उनको अब हमारे काम में न पड़ना चाहिए।

आपका विनीत,
लादूराम जोशी

: १७४ :

सीकर, २४-५-३८

मान्यवर भाईजी,

सादर वंदेमातरम् । यहां की हालत में कोई फर्क नहीं पड़ा । बल्कि कल से तो ज्यादा उत्तेजना फैली हुई है । कल शाम को जयपुर से कैप्टन वेब और कर्नल फ्रेंच वापस आ गये हैं । अब जो मुझे विश्वस्त सूचना मिली है, वह तो यह है कि वे लोग अब शीघ्र ही धावा बोलकर शहर पर और अदालतों पर कब्जा करेंगे । ऐसा करते हुए कुछ हिंसा भी करनी पड़े तो भी वह आने वाले हैं, ऐसी उनकी मान्यता है । हमारी जनता एक इंच भी झुकने को तैयार नहीं है, वह तो मरने और मारने को बिल्कुल कटिबद्ध है । रावराजाजी ने आबूजी से श्री शंकरलालजी काबरा, जो सेठ लक्ष्मीरामजी चूड़ीवाले के मुनीम हैं, से सीकर की जनता को कहलाया है कि अदालतें खोलने में रुकावट मत डालो किंतु जनता कोई बात मानने को तैयार नहीं है । शहर में खुल्लम-खुल्ला हिंसा का प्रचार किया जा रहा है । आपस में अविश्वास की मात्रा अंतिम सीमा तक पहुंच गई है । पब्लिक कमेटी में भी दो दल हो गये हैं । एक दल हिसाब पेश करने को कहता है, तो दूसरा अभी रुपयों का हिसाब देने को तैयार नहीं है ।

आज सुबह कर्नल फ्रेंच एक अन्य अंग्रेज के साथ मोटर में बैठकर फतेहपुरी दरवाजे की तरफ आये तो सैकड़ों आदमी लाठी और तलवार लेकर सामने खड़े हो गये । वह अपनी मोटर को घुमाकर चांदपोल दरवाजे ले गया; किंतु वहां यही हालत मिली । तब वह वापस ले गया ।

अभी तक भी सारा खर्चा श्री राणाजी से लिया जाता है । छोड़ाजी और बालजी की स्वीकृति से उठता है । सीकर में वाल्मीकि रामायण का अखंड पाठ चालू हुआ है । करीब ४००० का बजट है । ये रुपये गांव से उगाये गये हैं । ऐसा ही एक यज्ञ रामगढ़ में भी होनेवाला है । उसका सारा खर्च वहां के सेठ लोग देंगे । सीकर की जीत और शत्रु-मरण के लिए यह यज्ञ किया जा रहा है । कल सुबह सब लोगों को गढ़ में बुलाया गया था । वहां

पर कहा गया कि शराब के ठेके से और जकात से उनको आमदनी हो रही है इसलिए जकात फिलहाल बंद कर दी जाय, अपने माल की तादाद और उसकी जकात की रकम लिखाकर ही आ जाना चाहिए। शराब पीना भी बंद कर देना चाहिए। सीकर के सारे मोचियों ने शराब न पीने का वचन दिया है।

यहां के कुछ आदमी रींगस लगान वसूली के लिए जयपुर अधिकारियों द्वारा भेजे गये थे। किंतु उनको रींगस में नहीं घुसने दिया गया। हजारों आदमी इकट्ठे होकर गढ़ और तहसील के आड़े फिर गये। सारे किसान भी वहीं आ गये। उनको वापस आना पड़ा।

सारी स्थिति को देखते हुए यह तय-सा लगता है कि इसी हफ्ते में जो कुछ होना है हो जायगा। मि. यंग आज जयपुर से आनेवाले हैं। कल-परसों ही संभव है हमला किया जाय।

गांवों में जाटों के विरुद्ध बहुत अधिक विष फैल गया है। लोग कहने लगे हैं कि सभी लोग तो राजाजी की तरफ हैं और जाट वेब अंग्रेजों का साथ देते हैं। गांवों से आनेवाला हरएक आदमी यही बात कहता है। जाटों में भी वेब के पक्षपाती बहुत कम लोग हैं।

भवदीय आज्ञाकारी,

लादूराम जोशी

: १७५ :

अजमेर, ११-१-४०

पूज्य भाईजी,

सादर वंदेमातरम्। आपका पत्र मिला और आपकी तंदुरुस्ती में प्रगति के समाचार जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। सफाई के गवाहों की तारीख ६ और ९ को गवाही हुई। अबतक कुल ६ गवाह गुजरे हैं और १६ जनवरी को और चार गवाहियां होंगी। वकीलों का और स्थानीय मित्रों का तो कहना यही है कि केस में कुछ दम न होते हुए भी सजा अवश्य होगी। ऐसे केसों में कमिश्नरसाहब सजा दिलाये बिना नहीं मानते। सहायक सर-

कारी वकील कहता था कि मुझे रोजाना तलब किया जाता है कि केस को आगे मत बढ़ाओ; जल्दी खतम करो। विश्वस्त सूत्र से यह भी मालूम हुआ है कि जयपुर के रेजीडेंट साहब के विशेष प्रयत्न से यह पुराना केस चलाया गया है। जो भी हो, मैं सजा भोगने को तैयार हूं; किंतु मुझे इस बात का बड़ा ही आश्चर्य होता है कि शासक वर्ग या तो बिल्कुल अंधा होता है या जान-बूझकर प्रगतिशील विचारवालों को बाहर नहीं रहने देना चाहता। मुझे तो यह सोचकर काफी संतोष होता है कि मैंने कोई गलत काम नही किया और फिर कष्ट-सहन करना पड़ रहा है तो इसमें प्रभु का कोई उद्देश्य ही तो होगा। निर्दोषों के उत्पीड़न से भी यदि शासक-वर्ग का हृदय-परिवर्तन हो सके तो उत्पीड़न भी प्रभु का प्रसाद सिद्ध होगा।

आपका,

लादूराम जोशी

: १७६ :

सीकर, २३-८-३८

प्रिय सेठसाहब,

मैं जो कुछ लिखता हूं, उसपर पूरा गौर करेंगे।

अखबार से मालूम हुआ कि आप सीकर में सत्याग्रह की सलाह देते हैं। मेरा जहांतक खयाल है वह नीचे प्रकट करता हूं—

१. सीकर जयपुर का एक मातहत ठिकाना है। यहां पहले सत्याग्रह करना फजूल है।

२. राजपूत, मुसलमान, जाट सत्याग्रह में शामिल नहीं होंगे, जिसको आपने खुद अनुभव किया ही होगा। तो भी सत्याग्रह फजूल है।

इस वक्त यह ढंग आगे के लिए अच्छा नजर आता है। यह सब आपकी यंग से मुलाकात का ही असर मालूम होता है। बाहर के पुराने अफसर करीब-करीब सब हटनेवाले हैं, और यहां के भी जो नाकाबिल हैं वे भी। अब यहां बाहर के नये अफसर भर्ती होंगे। काबिल ही भर्ती किये जावेंगे और प्रजा के साथ पूरा इंसाफ होने की उम्मीद है। जब नेक और भले आदमी

काम करेंगे तो अच्छा ही होगा। यहां फायदा तभी होगा कि आप जयपुर अफसरान से पत्र-व्यवहार चालू रखें न कि पब्लिक को भड़कावें। जब आप दो महीने के बाद यहां आवेंगे तो जरूर आप अच्छा ढंग देखेंगे। उम्मीद है कि जो रह गये हैं उनको भी माफी जल्द ही हो जावेगी। छूट भी जायंगे। पत्र की पहुंच लिखवावें। कृपा रखेंगे।

आपका,
डार्लसिंह

: १७७ :

वर्धा, ३०-८-३८

प्रिय श्री डार्लसिंहजी,

आपका २३-८-३८ का पत्र मिला। मैंने सीकर की प्रजा को सत्याग्रह करने की सलाह दी है। यह बात यदि अखबारों में छपी है, तो गलत छपी है। परंतु जयपुर अधिकारियों का मेरे साथ अनुचित व्यवहार हो रहा है। प्रजा-मंडल की ओर से जो मदद उन्हें दी गई है, उसका ये लोग उल्टा उपयोग कर रहे हैं। मेरे सीकर छोड़ने के पंद्रह रोज के भीतर-भीतर आम माफी देने का वादा मुझसे किया गया था। पर अबतक उस दिशा में कुछ भी नहीं किया गया है। वहां से जो खबरें मुझे मिल रही हैं, वे भी संतोषजनक नहीं हैं। इसलिए इस मामले में बुरा मालूम होना स्वाभाविक है। अखबारों में जयपुर-अधिकारियों के पक्ष में जो प्रचार किया जा रहा है, उसका परिणाम भी कुछ ठीक नहीं आ सकता। सत्याग्रह-जैसी कोई बात, जिसमें मेरा हाथ होगा, अधिकारियों को मैं उस बारे में पहले से ही सूचित कर दूंगा। सत्याग्रह का हथियार तो आखिर का हथियार है। यदि प्रजा की मांगों पर ध्यान नहीं दिया जायगा तो प्रजा को हक है कि वह सत्याग्रह का सहारा ले।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १७८ :

फतेहपुर, जुलाई, १९२६

साहजी श्री जमनालालजी की सेवा में

फतेहपुर से रामवल्लभ नेवटिया की जयगोपाल बंचना।

आज आपका तार कानपुर से आया। फतेहपुर के हिंदू मुसलमानों के

झगड़े को निपटाने के लिए आप भाग लें, ऐसा मित्र लोग चाहते हैं। मेरी सलाह दिल्ली के पते पर मंगाई है, सो आपको उत्तर में तार दिया है। आपके पास पहुंचा होगा। राज ने पंचायत के फैसले को तोड़कर ताजिये निकलवा दिये, जिस कारण से हिंदू जनता राज से असंतुष्ट है तथा संदेह में लक्ष्मण-गढ़ के सात आदमी हिरासत में हैं और भी पकड़-धकड़ चालू है। पकड़े हुओं को बहुत तकलीफ देते हैं, ऐसा सुनने में आता है, जिसका जनता को बहुत दुःख है। अगर राज नस (मुद्दे की बात) पकड़कर हिंदुओं को संतुष्ट करे तथा लक्ष्मणगढ़वालों को छोड़ दे, केस उठा ले तो आपका इस काम में पड़ना फायदेमंद हो सकता है। हिंदू मुसलमानों का आपस में अब कुछ भी नहीं हो सकता। बात सब राज पर है। मुसलमानों से हिंदुओं ने लेन-देन बंद कर रखा है सो आपस में मन फूट गये हैं। अभी तो लोगों का मुसलमानों से लेन-देन करना या नौकरी पर रखना मुश्किल दीखता है। बाकी राज से संतोषजनक समझौता हो जावेगा तो यह काम भी पट सकता है। अगर आपको राज बुलावे और आपको जंचे तो ही इस काम में पड़ना ठीक है। नरमाई किये बिना यह काम अभी सुलटता कुछ नहीं दीखता। बच्चे सब खुश हैं। बाई लीला वाली बात से पूरी उदासी छा गई है, पर उपाय नहीं।

: १७९ :

सीकर, २१-८-३८

श्रीयुत सेठजी,

आपका पत्र यथासमय मिल गया था; यहां की वर्तमान स्थिति यह है :—

१. पुलिस के ९२ आदमी बर्खास्त हुए हैं।

२. सीकर के १५, झुंझुनू के २, अजमेर के ६ और जयपुर के ८३ व्यक्ति उपरोक्त जेलों में हैं। बहुतों पर अभी कुछ भी चार्ज नहीं लगाया गया है।

३. जिन अफसरों एवं मुलाजिमों ने आंदोलन के दिनों में तनख्वाह

लेकर पुलिस लाइन में आना-जाना जारी रखा उनको छोड़कर सब सरकारी मुलाजिमों को अभी तक पिछले ४ महीने का वेतन नहीं मिला है। सिर्फ १ महीने के रुपये पेशगी खाते नाम लिखकर मिले हैं सो भी वापसी की शर्त पर।

४. अदालतों में नये मुकदमे नहीं के बराबर आ रहे हैं।

५. जकात सुपरिंटेंडेंट की जांच हुई। ठेकेदारों एवं जकात-चौकियों के बही-खाते देखे गये हैं। घूस साबित हो गई है। परंतु उस मामले को फौजदारी में न ले जाकर डिपार्टमेंटल ही रखा गया है।

६. मि. वेब, बापना, मेहरा, इंजीनियर रणजीतमलजी आदि ने अपने इस्तीफे पेश कर दिये हैं, परंतु कमीशन की रिपोर्ट के पहले मंजूर नहीं होंगे।

७. जनता की श्रद्धा अब कुछ प्रजा-मंडल में बढ़ने लगी है; परंतु क्षेत्र बहुत फैल रहा है। यदि आपके नेतृत्व में कुछ कार्य हो तो १००-५० आदमी जेल के लिए भी तैयार दीखते हैं। और सब ठीक है।

आपका,
वेंकटेश पारीक

: १८० :

श्रीमाधोपुर ३०-११-३५

मान्यवर भाईजी,

सादर वंदे। मुझे ज्ञात हुआ है कि सीकर के जाटों के संबंध में आपने राज्य और जाटों के बीच पड़कर काफी सहयोग दिया है, जिससे परिस्थिति बहुत-कुछ काबू में आई है। नयाबांस के ग्रामीणों की संकट-गाथा भी आपकी सेवा में भेज रहा हूं। हम लोग बराबर तार व चिट्ठियां महाराज के पास भेज ही रहे हैं; पर आपकी भी सहायता इसमें वांछनीय है। आप पत्र द्वारा महाराज पर प्रभाव डालकर इनके कष्टों में सहायक होने की ओर महाराज का ध्यान आकर्षित करें। यही आपसे प्रार्थना है।

भवदीय,
बंशीधर शर्मा

: १८१ :

कैंप रेस्ट हाउस, अजमेर, २४-४-३८

प्रिय दामोदर मूंदड़ा,

मैं अपने तार के सिलसिले में अफसोस के साथ कहता हूं कि मेरे पत्रों और तारों पर सेंसर होने के कारण मैं सीकर के गरम वातावरण से कुछ नहीं लिख सका, इसलिए मैं यह पत्र आपको अजमेर से तब लिख रहा हूं जबकि मैं एक शिष्ट-मंडल (डेप्युटेशन) के नेता के रूप में ए. जी. जी. से मिलने जा रहा हूं।

मैं सीकर के मामलों को संक्षिप्त रूप में लिख रहा हूं। १६ अप्रैल को जयपुर राज्य पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल ने रावराजा साहब बहादुर को गिरफ्तार करने के लिए एक योजना बनाई और वह भी बिना किसी कारण। परंतु भगवान की कृपा से और जनता की मदद से वे अपने ४० हजार प्रजा के संरक्षण में सुरक्षित रूप से गढ़ में ले आये गये। प्रजा पूर्णतः अहिंसात्मक रही। उस दिन से शेखावाटी के सभी बाजार बंद हैं और लोगों ने हड़ताल कर रखी है। सीकर के श्रीमान रावराजा बहादुर के सभी भाई और संबंधी जो शेखावाटी में हैं, उनके साथ पूरी सहानुभूति रखते हैं। जिस रात राव-राजासाहब गिरफ्तार किये जानेवाले थे उसी रात से गड़बड़ी शुरू हुई। जनता ने इस उपद्रव के शुरू होने पर यह मांगें रखी हैं—

१. रावराजासाहब की गिरफ्तारी की कोशिश क्यों की गई ?

२. खेती की भूमि पर जो कर घटाने की बात कही गई थी वह अमल में क्यों नहीं लाई गई ?

३. कैप्टेन वेब और श्री बापना को उनके वर्तमान पदों से हटा दिया जाय, और अगर ऐसा न किया जाय तो कम-से-कम उनके खिलाफ खुली जांच होनी चाहिए और जांच हो जाने तक उन्हें मुअत्तिल रखा जाना चाहिए।

४. १९३३ में एक दंगा हुआ था और उसमें भाग लेनेवाले किसानों को पटेल-पद से बिना किसी जांच के अलग कर दिया गया था। अब उन्हें उनके पदों पर पुनः बहाल किया जाना चाहिए।

५. सीकर के राजकुमार को लंदन तबतक नहीं जाना चाहिए जबतक कि उनकी शादी ध्रांगध्रा की महाराजकुमारी से न हो जाय।

अब स्थिति यह है कि गुरुवार की शाम को रेजीडेंट साहब रावराजा बहादुर से मुलाकात करने आये, जो उनके सम्मान में स्टेशन आये थे; परंतु जयपुर पुलिस की शरारत के कारण बीच ही में रोक दिये गये, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि रावराजा रेजीडेंट से मिलें। भ्रम पैदा किया गया और गोली चलाकर कुछ उपद्रव भी हुआ लेकिन जनता ने रावराजा साहब को सुरक्षित रूप में गढ़ वापस ला दिया। जयपुर पुलिस ने रेजिडेंट को यह कहकर भ्रम में डाला कि रावराजा उनके सम्मान में आने की इच्छा नहीं रखते और इस तरह उन्होंने सम्राट् के प्रतिनिधि का असम्मना किया।

इस समय में राजपूताना के ए. जी. जी. के पास डेप्युटेशन के नेता के के रूप में जा रहा हूं और आशा है कि भगवान की दया से हम अपने प्रयत्नों में सफल होंगे और सीकर में शीघ्र ही शांति स्थापित हो जायगी।

आपका,

बद्रीनारायण सोढाणी

: १८२ :

सीकर, २६-५-३८

मान्यवर श्री सेठ जमनालालजी बजाज,

सेवा में निवेदन है कि आपको कुछ दिन पहले तार दिया गया था किंतु उसका कुछ भी उत्तर न मिलने पर बड़ी निराशा हुई। नैराश्यपूर्ण जीवन में आशा ही एकमात्र आधार है। यही आशा बारंबार धीरज दिलाती है और कहती है कि आप-जैसे महानुभावों के सुव्यवस्थित तथा शांतिमय आदेश बुझते हुए दीपक में तेल का काम करेंगे और आपके अमृतमय संदेश से एक बार फिर मुर्दा दिलों में जान पैदा होगी।

जाहिर में तो सब ओर शांति व्याप रही है। किंतु पहले की तरह एक ओर तो असहाय जनता अपनी मांगों की पूर्त्ति के लिए दृढ़तापूर्वक डटी हुई है दूसरी ओर जयपुर के अधिकारी कैप्टेन वेब तथा मि. बापना का पक्ष लेकर

अपनी बात पर डटे हुए हैं। ऐसी भीषण परिस्थिति में जहां मार्ग सुझानेवाला कोई नहीं, जनता को भगवान का ही एकमात्र अवलंबन है।

समाचारपत्रों से मालूम हुआ है कि जयपुर शीघ्र ही सीकर पर पुलिस व फौज की शक्ति का प्रयोग करनेवाला है। अगर जयपुर गवर्नमेंट वास्तव में ऐसा ही करेगी तो निस्संदेह ही शांति भंग होने का और खूनखराबी होने का भय है।

आपने अपनी राय पहले ही जाहिर कर दी है। हम आपपर अधिक भार डालना नहीं चाहते। किंतु आपको यहां की परिस्थिति से परिचित कराना और नेक सलाह लेना हमारा कर्तव्य है।

आशा है, शीघ्र ही अपने आदेश से अनुग्रहीत करेंगे।

आपका,
बद्रीनारायण
मंत्री, पब्लिक कमेटी

: १८३ :

जुहू, ६-६-३८

श्री बद्रीनारायणजी,

सेक्रेटरी, पब्लिक कमेटी,

आपके भेजे हुए दो तार मुझे नासिक से कल वापस आने पर यहां मिले। समाचारपत्रों से भी खबर मिलती रहती है। और भी सीकर से खबर आती रहती है। मेरा तो पहले से ही विश्वास हो गया था और दिन-दिन बढ़ता जा रहा है कि सीकर की जनता जिस प्रकार से काम करना चाहती है उससे तो जनता और रावराजाजी का केस कमजोर होता जा रहा है। जयपुर राज्य से दो ही प्रकार से लड़ाई लड़ी जा सकती है—एक तो वैधानिक तरीके से, या फिर सत्याग्रह से। आपलोगों ने जो तीसरा रास्ता लिया है, उससे चाहे एक बार सफलता मिल भी जावे, परंतु स्थायी सफलता मिलना तो असंभव-सा मालूम देता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपकी सहायता करे और आपको योग्य मार्ग दिखावे।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १८४ :

वर्धा, १-७-३८

प्रिय बद्रीनारायण,

तुम्हारा २४-६-३८ का पत्र यथासमय मिला। इसके पूर्व भी तुम्हारा एक पत्र मिला है।

श्री मणिशंकरभाई व बैरिस्टर चुडगर मुझसे बंबई में मिले थे। सीकर में रहते हुए मैंने जो विचार प्रकट किये थे, उनसे वे प्रायः सहमत ही थे। मेरे आ जाने के बाद वहां आप लोगों की अन्य अधिकारियों से क्या बातचीत हुई तथा अधिकारीवर्ग का रुख आप लोगों के प्रति कैसा रहा, यह मैं नहीं जानता हूं। प्रत्यक्ष में सब हालात से पूरी तरह वाकिफ हुए बगैर किसी मसले पर कोई राय जाहिर करना उचित नहीं है।

श्री हीरालालजी शास्त्री यहां आये थे। संभव है, वह शीघ्र ही सीकर आवें। प्रज-मण्डल की सीकर के बारे की नीति स्पष्ट हो जाना आवश्यक है। आशा है, तुम उन्हें असली हालात से पूरी तरह वाकिफ करोगे। क्या श्रीरावराजाजी ने कानून के बमूजिब इस बात की स्पष्ट घोषणा कर दी है या करने को तैयार हैं कि वह अपने सब अधिकार सीकर-प्रजा की प्रतिनिधि-संस्था को दे देंगे। अगर उसका स्पष्टतया खुलासा हो जावे तो प्रजा के काम में ताकत आ सकती है। हमें अभी से सीकर प्रतिनिधि-संस्था का विधान भी विद्वानों के द्वारा तैयार करवाना चाहिए।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १८५ :

क्याउकप्यू, २०-१०-३८

श्रीमान सेठजी,

सादर नमस्ते। बहुत दिनों तक आपको कोई पत्र नहीं दिया, इसके लिए क्षमा करें।

बर्मा आने का मेरा बिल्कुल विचार नहीं था, लेकिन लोभ के वशीभूत होकर आना पड़ा। अभी ३-४ महीने यहींपर रहने की इच्छा है। मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है, इसलिए इसका भी भरसक प्रयत्न कर रहा हूं।

यहां पर तो ५-७ मारवाड़ी हैं, लेकिन अवयाब, जो यहां से ८० मील की दूरी पर है, और जहांपर हमारा भी फर्म है, जयपुर राज्य के १००-१२५ मारवाड़ी रहते हैं। मेरी ऐसी इच्छा है कि इन सबको प्रजा-मंडल का मेंबर बनाया जाय तथा इसमें कोई मुश्किल मालूम नहीं होती है। अतः अगर आप प्रजा-मंडल की मेंबरशिप फार्म्स की एक-दो कापियां मेरे पास पहुंचाने का प्रबंध कर पायें तो मैं मेंबर बनाने की भरसक चेष्टा करूंगा। रंगून भी मेरा जाने का इरादा है, सो वहांपर जितना कर सकूंगा मेंबर बनाने की कोशिश करूंगा। यहांपर जिंदगी के दिन काट रहा हूं, क्योंकि तन, मन और धन हर समय पैसे की तरफ लगा हुआ है। आशा करता हूं कि कभी वह दिन भी प्राप्त होगा, जब आपकी सेवा में उपस्थित होऊंगा। मेरे योग्य सेवा लिखें।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

बद्रीनारायण

: १८६ :

वर्धा, २६-१०-३८

प्रिय बद्रीनारायण,

तुम्हारा तारीख २०-१० का पत्र मिला। मैं तुम्हारी खोज में था। तुम्हारा पता नहीं लग रहा था। मैं तो चाहता कि तुम कुछ दिन के लिए यहां आओ तो जयपुर-सीकर के संबंध में जो कार्रवाई चल रही है, उससे तुम्हें वाकिफ किया जाय।

हीरालालजी शास्त्री यहां आनेवाले हैं। मैं उन्हें तुम्हारा पत्र दिखा दूंगा और जयपुर प्रजा-मंडल के मेंबरशिप फार्म की किताबें भेज देने के लिए उनसे कह दूंगा।

आखिर सीकर रावराजा की ओर से जो कुछ होना था वह हुआ ही। प्रजा को अधिकार देना मंजूर नहीं किया। जयपुर से बिना शर्त माफी और अपनी गलती कबूल की। तुम इधर कबतक आ सकोगे?

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: १८७ :

क्याउकप्यू, ६-११-३८

पूज्य सेठजी,

चरणकमलों में नमस्कार। आपका पत्र २६-१०-३८ का मिला। पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। मुझे बहुत दुख के साथ लिखना पड़ता है कि इस समय में वर्धा नहीं आ सकता, क्योंकि मेरे पिताजी देश जानेवाले हैं। उनकी गैरहाजिरी में व्यापार को मुझे ही देखना पड़ेगा।

सीकर से समाचार मिला है कि लादूरामजी से २००० रुपये की नेक-चलनी की जमानत मांगी गई तथा न देने से एक वर्ष की साधारण जेल दे दी गई। जमानत देने से इनकार करने पर उनको जेल हो गई है। दुख बहुत होता है, क्योंकि अन्याय की भी तो कोई सीमा न रही। लादूरामजी का सीकर-आंदोलन में कोई भी भाग नहीं था फिर भी इतना घोर जुल्म। मुझे आशा है कि उनके बारे में आप अपना प्रयत्न चालू रखेंगे तथा और लोगों की क्या हालत है? मेरा स्वास्थ्य भी कुछ खराब-सा रहता है, इसलिए उसके लिए भी मैं आजकल पूरा प्रयत्न कर रहा हूं।

प्रजा-मंडल की मेंबरशिप की कापियां आने के बाद काम चालू कर दूंगा। वर्धा आने की बहुत प्रबल इच्छा है तथा जितना हो सका जल्दी आने की कोशिश करूंगा। मेरे योग्य सेवा लिखें।

आपका आज्ञाकारी,

बद्रीनारायण

: १८८ :

वर्धा, २२-११-३८

प्रिय बद्रीनारायण,

तुम्हारा तारीख ६-११ का पत्र मिला। मैं बंबई चला गया था, इस-लिए पत्र नहीं दे सका। जयपुर-सरकार के वर्त्ताव से तो यही मालूम पड़ता था कि वह प्रजा-मंडल से सुलह करना चाहती थी। आठ कैदियों के रिहा होने पर भी अभी और अंडर-ट्रायल्स रहे हैं। किंतु इस समय तो प्रजा-मंडल

अपनी पूरी ताकत अकाल-पीड़ितों की सहायता में लगाने में व्यस्त दिखाई देता है।

तुम्हारा कबतक आना संभव है। प्रजा-मंडल के साथ लड़ाई छिड़ गई तो तुम्हें आना ही पड़ेगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १८९ :

सीकर, १४-३-४०

माननीय सेठजी,

मुझे बड़ा अफसोस है कि मैं आपके जेल से लौटने के पहले आपको कोई पत्र नहीं लिख सका। मैं इतने दिनों तक बर्मा में था और दो महीने से यहां इस इच्छा से हूं कि अभी ५-६ महीने यहीं ठहरूं।

मैं यहां गरीब, असहाय लोगों को अकाल से राहत पहुंचाने के लिए कुछ जनता और प्रजा-मंडल के कार्यकर्त्ताओं के साथ काम कर रहा हूं। इसके सिवा मैं ऐसे लोगों की, जिन्हें प्रकृति ने अपाहिज और अपंग कर दिया है—जैसे अंधे, लंगड़े, गंभीर बीमार आदि, सूची बड़ी सावधानी से, उनकी दशा देखकर, बना रहा हूं और इसमें किसी तरह का धर्म और जाति का भेद नहीं रखा है। उनकी संख्या ६९ तक पहुंच गई है और अभी कितने ही और हैं। आशा है कि यह संख्या १०० से अधिक नहीं बढ़ेगी। इनकी गुजर-बसर भर के लिए प्रति व्यक्ति पीछे महीने में २० सेर अनाज की व्यवस्था काफी होगी। इसके लिए हमने दरवाजे-दरवाजे मांगना शुरू कर दिया है और अभी तक इस काम में हमें काफी सफलता मिली है। हालांकि भिक्षा-वृत्ति में नया होने के कारण मुझे इसका पक्का निश्चय नहीं है कि यह काम ठीक चलेगा। ऐसे जरूरतमंद लोगों की सूची आपको कुछ ही दिन में भेजी जायगी।

जयपुर के रेजीडेण्ट के साथ प्राइम मिनिस्टर यहां २७ मार्च को आ रहे हैं। सुना गया है (यद्यपि वैसे विश्वस्त रूप में नहीं) कि रेजीडेण्ट यह निश्चय करने के लिए आ रहे हैं कि लोग वर्तमान हुकूमत से कहांतक संतुष्ट हैं।

स्थानीय स्वायत्त अधिकारियों ने इस सिलसिले में १५० आमंत्रण-पत्र प्रजाजनों को भेजे हैं और उनके साथ यह व्यवस्था कर ली है कि वे रेजीडेण्ट के सामने यह व्यक्त करें कि लोग वर्तमान शासन से संतुष्ट हैं। वे यहीं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जाटों के विरुद्ध झूठे और द्वेषपूर्ण कुप्रचार कर रहे हैं जिससे वे भी संतोष प्रकट करें। इसके सिवा राजा की एजेंसी भी कार्यक्रम का विरोध कर रही है और इसके लिए सभी साधनों का उपयोग कर रही है। इसके बारे में तो भविष्य ही कोई निर्णय घोषित कर सकेगा।

क्या मैं आपसे पूछूं कि पं. लादूरामजी के केस में आगे क्या हो रहा है ?

यहां के लोग प्रजा-मंडल की क्रियाशीलताओं से बहुत सहानुभूति नहीं रखते, लेकिन मेरी दृढ़ आशा है कि एक-न-एक दिन सत्य का प्रकाश होगा और अगर पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ काम होता रहेगा तो असत्य की पराजय होगी।

चूंकि मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब है, इसलिए मैं ऐसी स्थिति में नहीं हूं कि किसी कठिन काम में भाग ले सकूं; परंतु फिर भी मैं अकाल-पीड़ितों को राहत पहुंचाने का काम अपने बस भर करता रहूंगा।

नानू जाट[1] की हालत बहुत नाजुक है और परमात्मा की ही अनुकम्पा से उसकी बहुमूल्य जिंदगी बच सकती है, इसलिए आपसे मेरा निवेदन है कि इस परीक्षा के समय उसकी कुछ आर्थिक सहायता करें।

आपका आज्ञाकारी,

बद्रीनारायण सोढ़ाणी

: १९० :

सीकर, ३०-३-४०

माननीय सेठजी,

मेरा खयाल है कि मेरा पूर्ववर्त्ती पत्र आपको मिला होगा और आपने

[1] **जमनालालजी का व्यक्तिगत काम करनेवाला सेवक, जो उस समय पेंशन पा रहा था।**

उसकी ओर ध्यान दिया होगा। उसका कोई जवाब पाने के पहले, मैं इसे अपना कर्तव्य समझता हूं कि आपको यहांके ताजातर हालात से अवगत करदूं।

प्राइम मिनिस्टर और रेजीडेण्ट यहां पूर्व व्यवस्था के अनुसार २७ मार्च को आये। अधिकारियों ने उनका हर बात में बहुत बड़ा और दिखावटी प्रदर्शन किया। शहर के लोगों का एक डेप्युटेशन भी उनसे मिलने गया। उन्होंने अपनी जकात-संबंधी कठिनाइयां भी समझाई और रावराजा पर लगी निषेधाज्ञा आदि की बात कही। प्राइम मिनिस्टर ने उन बातों का जवाब कठोर स्वर में दिया। रेजीडेण्ट के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला, पर डेप्युटेशन से कहा कि प्रीमियर (मुख्यमंत्री) तुम्हारे मालिक हैं, इसलिए उन्हें ही सब बात समझाना चाहिए। यह पार्टी मोटर द्वारा लक्ष्मणगढ के लिए रवाना हुई और वहां भी कुछ ही मिनट रुककर वापस आ गई। इस आगमन का नतीजा सिर्फ यह निकला कि शहर की ऐसी गंदी जगहें भी साफ की गई, जिनकी गंदगी की ओर अधिकारियों का ध्यान बिल्कुल नहीं गया था।

नानू का आपरेशन हुआ है और भगवान की दया से वह सफल हुआ। किसी तरह अंधेरे में उजाला दीखा है।

मुझे १५० रुपये मिले हैं और अपाहिजों की सेवा के लिए और भी प्राप्त होने के वचन मिल रहे हैं। उसके लिए जबर्दस्त कोशिश की जा रही है और ऐसी आशा की जाती है कि भगवान संतोषजनक उपाय निकालेंगे।

इसके सिवा मैंने देखा है कि सीकर शहर में तीन ऐसे कुएं हैं जो मरम्मत न होने के कारण रेत और पत्थर से भर गये हैं। तीनों में से हरएक के लिए थोड़ी-थोड़ी रकमें चाहिए—अर्थात् प्रत्येक के लिए दोसौ से तीनसौ रुपये तक। पानी के बिना लोगों को बड़ी तकलीफ है। इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि उपरोक्त समस्या की ओर कुछ ध्यान दें और इस पुरानी शिकायत को दूर करा दें।

रावराजा के द्वारा विभिन्न जगहों से तार सीकर रेजीडेंट को भिजवाने की व्यवस्था कर ली गई। सुना जाता है कि रेजीडेंट को लगभग सौ तार मिले हैं।

चूंकि कोई और कार्यक्रम नहीं है, इसलिए हम उपरोक्त काम में लगे हैं। हम आपके आगमन का इंतजार उत्सुकता के साथ कर रहे हैं, जिससे कुछ निश्चित फैसला हो सके।

जागीरदारों द्वारा किसानों को ३०० से अधिक नोटिसें दी गई हैं कि वे खेत न जोतें। इससे किसानों में बड़ी खलबली मच गई है। आपके आने से परिस्थिति सुधर सकती है।

आपके जल्द जवाब के इंतजार में— आपका आज्ञाकारी,

बद्रीनारायण

सौराष्ट्र

: १९१ :

जोरावरनगर, २७-८-३५

प्यारे भाई श्री जमनालालजी,

माउंट आबू में कर्नल ओगिलवी के साथ मुलाकात हुई। लगभग दो घंटे तक बातें हुईं। सीकर तथा जयपुर की सब बातें मैंने उनसे कहीं। वह थोड़े अर्से में जयपुर जायंगे और वहां सब बातें होंगी। शांति के लिए आपका और मेरा जो मकसद है, तथा राजपूतों और जाटों के बीच में शांति करने की जो लगन है उससे कर्नल ओगिलवी को संतोष है और जब उधर जायंगे तब वह सब बातें करेंगे। इस दरम्यान आप जितना हो सके, उतना कार्य इस दिशा में कैप्टेन वेब के साथ चर्चा करके कर लें, ऐसी उनकी सलाह है।

जाट लोगों के लिए उनकी अच्छी सहानुभूति है, और शांति जल्दी हो जाय, यह वह चाहते हैं। कैप्टेन वेब से उनको बहुत संतोष है।

स्नेहाधीन,

मणिलाल कोठारी का स्नेहवंदन

: १९२ :

जोरावरनगर, २३-९-३५

प्यारे भाई श्री जमनालालजी,

···अखबार में तीन दिन पहले मैंने आपका स्टेटमेंट पढ़ा और जरा विस्मित हुआ। सीकर के संबंध में कैप्टेन वेब के साथ और श्री यंग के साथ आपकी मुलाकात हुई, उससे कुछ संतोष हुआ था। कैप्टेन वेब के साथ की बातों में उनकी अच्छी सहानुभूति और कुछ अधिक करने की वृत्ति थी। लेकिन जयपुर की मुलाकात तो एकदम निकम्मी थी। बल्कि उससे तो हमें खूब दुख हो, ऐसा रुख सर बीचम ने बताया था। स्वभाव भी गरम

था। आपको भी दुख लगा था। अपनेको कुछ स्टेटमेंट भी देना चाहिए उसमें अधिक विवरण देने का विचार नहीं था। मैंने आपकी सूचनानुसार स्टेशन जाकर श्री कपूरचंदजी को छोटा स्टेटमेंट लिखाया था, जिसमें कोई भी अंश आपत्तिजनक न था। मैंने लिखा था—

"सर बीचम ने जो रुख अख्तयार किया है, उसे देखते हुए इन सवालों की निस्बत जाटों के लिए कुछ भी किया जाना संभव नहीं दीख पड़ता।" करीबन ये शब्द थे। यह निवेदन आपने प्रसिद्ध नहीं किया है। इस बीच ऋषिदत्तजी मुझे मिले। मैंने उनसे इस बाबत बात की, लेकिन मैंने जो स्टेटमेंट जयपुर में ऊपर-मुजब छाप डाला उस हिसाब से उसको कहा। उसने उसके और मेरे बीच जो इन्टरव्यू हुआ, उसमें वैसा कहा ऐसा ऊपर हेडिंग दिया। उसमें "जयपुर की यात्रा सफल" आदि लिखा, वह जरा ज्यादा जान पड़ा। बाकी सार तो सच्चा ही था।

आपने तीन दिन पहले जो निवेदन जाहिर किया है, उसमें एक अंश ठीक नहीं है। उसमें सत्य तो है ही नहीं। जयपुर की मुलाकात डिस्करेजिंग (निराशाजनक) नहीं थी, ऐसा कैसे कहा जा सकता है? एक क्षण के लिए भी जयपुर के लिए वैसा नहीं कहा जा सकता। बल्कि वस्तुस्थिति भिन्न ही थी। उस मुताबिक आपने सूचित नहीं किया। मैंने कर्नल से बात की भी। उन्होंने इस संबंध में बराबर पूछकर मुझे विवेकपूर्ण जवाब दिया था। निवेदन म आपने सूचित किया है कि मेरे मित्रों के दबाव से मेरी पोजीशन क्लीयर करना चाहता हूं। आपको चाहिए था कि मुझे भी विश्वास में लेते। इंटरव्यू (मलाकात) में मैं साथ ही था। मुख्यतया मैंने ही अंग्रेजी में बातें की हैं। अपने पर जो असर हुआ, वह अपन जानते हैं। फिर भी जयपुर के संबंध में आपने इस तरह न लिखकर वह मुलाकात निराशाजनक नहीं थी, ऐसा छपवाया। मुझे बहुत दुःख हुआ है। किन-किन अखबारों में गलत रिपोर्ट की गलत नींध आई है, वह मैं कुछ नहीं जानता। मैंने एक भी अखबार में नहीं पढ़ा। मेहरबानी करके उसकी नकलें भेज देंगे। मैं एक स्टेटमेंट देना चाहता हूं। आपको उसकी नकल भेजूंगा। आपने अपनी पोजीशन का ही विचार

किया। मैं भी आपके साथ ही था। आपने अपने स्टेटमेंट में मेरे संबंध में कुछ सूचित नहीं किया। आपने तो केवल अपनी पोजीशन क्लियर (स्थिति स्पष्ट) करने का प्रयत्न किया। मुझे और सत्य को न्याय नहीं मिला। ऐसा में नम्रतापूर्वक मानता हूं।

मणिलाल कोठारी का स्नेहवंदन

: १९३ :

भावनगर, ३१-१-४२

मा. श्री जमनालालजी,

आपके दो कृपापत्र मिले। मैंने बंबई सरदार श्री के साथ सब बात की। बाद में पूज्य बापूजी को मैंने खत लिखा। मृदुलाबहन से पता चला है कि प्रो. दांतवाला इन कामों के लिए मिल सकेंगे, ऐसा संभव नहीं है। लेकिन पू. बापूजी के उत्तर से और आपके पत्र से मैं समझता हूं कि मंत्री के बारे में सेवाग्राम में खास प्रबंध किसी कार्यकर्त्ता द्वारा हो सकेगा और पू. बापू की सूचना के अनुसार समय-समय पर मैं कार्यालय[1] की देखभाल के लिए आता-जाता रहूंगा। कार्यालय शीघ्र बदलने के लिए मैं जल्द प्रबंध करूंगा। थोड़े दिनों से मैं काठियावाड़ कार्यकर्त्ता-सम्मेलन में उद्योगशील रहा हूं, इसलिए आपको विलंब से उत्तर भेज रहा हूं। मैं काठियावाड़ और भावनगर का कार्य छोड़ना नहीं चाहता, न मेरे दोस्त और साथी इसकी इजाजत देंगे। काठियावाड़ परिषद की महासमिति ने मुझपर आज मंत्रित्व का बोझ डाला है। मैं दस-बारह तारीख के करीब वर्धा आपकी और पूज्य बापूजी की सेवा में उपस्थित होऊंगा और सब बातें हम सब मिलकर तय करेंगे। पू. बापू को खत लिखता हूं। बजट और कर्ज के बारे में भी आपसे मिलकर विशेष बातें करेंगे। श्री जवाहरलालजी और पट्टाभि साहब को मैं आपसे और पूज्य बापू के साथ परामर्श करने के बाद इस निर्णय की इत्तिला दूंगा।

सेवक,

बलवंतराय मेहता का वंदेमातरम्

[1] **देशी राज्य प्रजा-परिषद।**

हैदराबाद

: १९४ :

हैदराबाद, १४-७-३८

श्रद्धेय बजाजजी,

सादर सप्रेम वंदे। आप सीकर पहुंचे होंगे। मैंने आपका एवं श्री सरदार पटेल का वक्तव्य पढ़ा। मुझे पूर्ण आशा है कि आप सीकर की वर्तमान परिस्थिति का पूर्णरूप से अध्ययन करके कोई ऐसा सर्वमान्य मार्ग खोज निकालेंगे जोकि सबके लिए हितकर होगा। मेरी समस्त सेवाएं आपकी आज्ञापालन के लिए सदैव प्रस्तुत हैं। आवश्यकतानुसार लिखिये। रामगढ़, लक्ष्मणगढ़ और सीकर-निवासी कई मित्रों को मैंने पत्र द्वारा सूचित कर दिया है कि वे आपकी उपस्थिति से लाभ उठा लें। कदाचित् आप २३ तारीख तक वर्धा पहुंचेंगे। हो सका तो मैं भी श्री भूलाभाई देसाई के साथ आने का प्रयत्न करूंगा।

भवदीय,
लक्ष्मीनिवास गनेड़ीवाल

: १९५ :

हैदराबाद, ३-८-३८

आदरणीय श्री जमनालालजी बजाज,

सादर सप्रेम वंदे। आपका तारीख १-८-३८ का कृपा-पत्र मिला। आपने जो कलकत्ते जाने के लिए लिखा सो ठीक है। परंतु मुझे आपसे मिलना जरूरी है। विशेषकर श्री बापूजी से कुछ बातें करनी हैं जो समक्ष में ही हो सकती हैं। १-८-३८ के मद्रास के 'हिंदू' के पेज ११-१२ पर जयपुर सीकर का कम्युनिक "सीकर के पीस-मेकर्स के बाबत में" जो आपकी निगाह से भी गुजरा होगा—देखकर मुझे बड़ा ही दुःख होता है कि इतना होने पर भी

जयपुर ने अपनी हुकूमत के जोश को जरा भी कम करने का खयाल नहीं किया है, अस्तु ।

मैं चाहता हूं, शीघ्र ही वर्धा आकर आपसे मिल लूं । अगर आप वर्धा मद्रास होते हुए कलकत्ते जाते हों तो सूचित करें, जिससे कि आपके वर्धा पहुंचने के पहले ही आ जाऊं । इति शुभ ।

भवदीय,

लक्ष्मीनिवास गनेड़ीवाल

: १९६ :

नागपुर, ३०-११-३२

श्रद्धेय भाई जमनालालजी,

सादर सविनय वंदे । आज मैं एक आवश्यक कार्य के लिए आपको कुछ कष्ट दे रहा हूं । आशा है, आप उसके लिए मुझे क्षमा करेंगे । वह यह है । करीब ५-६ वर्ष से हैदराबाद सरकार ने मेरा प्रवेश हैदराबाद में वर्जित कर रखा है । किसी प्रकार का कारण नहीं बताया गया । सिर्फ वाकूर सिंह नामक कान्सटेबल जो १९३० में हिंगणघाट में था, वह हैदराबाद सी. आई. डी. में है । वह मेरे पास कन्हैयालाल कलंत्री का परिचय हैदराबाद मारवाड़ी वाचनालय में पूछने आया था । मुझे बाहर का तथा खादीधारी देकर कलंत्री के विषय में खोदकर पूछने लगा । बाद में सुना कि कलंत्री पर पाबंदी लगाई जा चुकी है । श्री रामकृष्णजी धूत द्वारा विदित हुआ कि उक्त व्यक्ति सी. आई. डी. का है और सी. पी. से डिसमिस होकर आया है ।

इस पाबंदी से मुझे काफी अधिक क्षति पहुंची । मेरी उधारी सब क्षय हो गई । अभी मैंने सुना है कि सर हैदरी तथा आपमें परस्पर मैत्री है । आपने सीकर का निपटारा किया है । अतः मैं आपसे आशा रखता हूं कि मेरी यह पाबंदी आप कटवा देने की श्री हैदरी के मार्फत कृपा करावें । हालांकि नागपुर से सत्याग्रही जत्थे भी गये हैं, परंतु इसके संचालन की बागडोर महाराष्ट्रीयन लोगों के हाथ में है । अतः मैं उसमें शामिल नहीं हुआ । यदि आप परामर्श दे सकते हों तो हैदराबाद पहुंचकर पाबंदी को

भंग कर सकता हूं। यह अवश्य ऐसा अवसर है और आपका देशी राज्यों पर नैतिक प्रभाव है। अतः कार्यों की बाहुल्यता रहते हुए भी मेरे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

पत्रोत्तर दें। सेवा लिखें।

विनीत,
सागरमल गोपा

: १९७ :

नागपुर, २७-६-४०

सेवा में देशपूज्य श्री जमनालालजी बजाज,

सादर वंदे। आपको मैंने निजाम राज्य में मेरा प्रवेश वर्जित है, इस बारे में पहले पत्र दिये थे। मेरा खयाल था सर हैदरी से आपकी मैत्री है, अतः आपकी सिफारिश से यह प्रश्न हल हो सकेगा। परंतु बाद में आप जयपुर प्रकरण में लग गये।

जिस वक्त अर्जुनलालजी सेठी, पथिकजी व ठाकुर केसरीसिंहजी वर्धा थे, उस समय मैं पथिकजी व सेठीजी के स्टाफ में अवैतनिक तौर से "राजस्थान केसरी" में था। बाद में केसरी की हालत डांवाडोल देखकर मैं बंबई चला गया तब से मैं जैसलमेर स्टेट की राजनीति में भाग लेता रहा हूं। महाराजा को २६ जून, ४० के दिन २६ वर्ष राज्य करते हो गये हैं। पिछले दो वर्ष से मेरे साथ तथा मेरे साथियों के साथ गुण्डाशाही व्यवहार होने लगा है। लाठी-राज्य का बोलबाला है। इस वातावरण में मैं प्रकाश की रेखा आपमें अनुभव करता हूं। आप हमारी शिकायतें सुनें और जब आपका जयपुर का दौरा हो, तो एक दफा जैसलमेर पधारने की कृपा करें अथवा अधिकारीवर्ग महारावल जैसलमेर से इस गुण्डाशासन के संबंध में लिखा-पढ़ी करें।

मेरे पिताजी का हाल में स्वर्गवास हुआ है, मैं अपनी संतप्त माता के पास जैसलमेर जाता हूं तो लाठी-राज्य का शिकार होता हूं। चोरी आदि के कृत्रिम फौजदारी जुर्म लगाकर हमें जरायमपेशा करार दिया जाता है।

हममें से बहुतों से माफीनामे लिखाये गये हैं। परंतु माफीनामे पेश करके जो लोग ब्रिटिश भारत में आकर उसके पाबंद नहीं रहे, उनके आत्मीय जनों के विरुद्ध गुण्डापन का असभ्य बर्त्ताव रियासत कराती है। राजस्थान के ए. जी. जी. तथा जोधपुर के रेसीडेंट को लिखा गया, परंतु कोई सुनवाई नहीं होती।

जैसलमेर राज्य १६००६ वर्गमील में है, पांच लाख की आय है। इसमें आधा तो राज्य-कुटुंब में व्यय होता है। इतने बड़े राज्य की जनसंख्या ४० हजार मात्र है। १८ तहसीलें हैं, जिसके आफिसर हाकिम कहाते हैं। हाकिमों के लिए योग्यता की आवश्यकता नहीं, सिफारिश ही सबकुछ है। १ वर्ष की कैद ५०० रुपये जुर्माने की सजा देनेवाले हाकिमसाहब दस्तखत करना नहीं जानते। फैसले पर अंगूठे की सही करते हैं। ऐसी अनेक नजीरें हैं, जिससे जैसलमेर विश्व का आठवां आश्चर्य कहाने योग्य है। युवराज ३५ वर्ष के हैं, भले घरों की बहू-बेटियों के साथ बलात्कार व व्यभिचार करना उनका दैनिक कार्यक्रम है। सिंध प्रांत व सी. पी. और युक्तप्रांत में प्रवासी प्रजा जैसलमेर के अधिकांश में रहती है। आप राजस्थान के जाज्वल्यमान रत्न हैं, आपसे उस अंधेरे कोने में पड़ी रियासत के उत्थान की आशा समझ आज यह पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हूं। उम्मीद है, आप हमारे पथ-प्रदर्शक बनेंगे।

आपका,
सागरमल गोपा

: १९८ :

वर्धा, २२-१०-३८

प्रिय श्री नानलजी,

आपके के पत्र के लिए धन्यवाद। आपने मुझे हैदराबाद आने के लिए लिखा सो सर अकबर हैदरी को मैंने पत्र दिया था। उन्होंने उस पत्र के जवाब में कोई पत्र या तार अभी तक नहीं भेजा है। यदि उनका कोई पत्र या तार मुझे मिलेगा, जिससे मेरा आना ठीक होवेगा, तो मैं जल्दी आने का प्रयत्न करूंगा। उनकी तरफ से कोई सूचना न आने की हालत में मेरे

वहां जाने से विशेष काम नहीं हो सकेगा।

आशा है, वहां के डेवलपमेंट्स के बारे में आप मुझे लिखते रहेंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १९९ :

वर्धा, २-११-३८

प्रिय श्री सरोजिनीजी,[1]

आखिर हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की पाबंदी नहीं हटी और वहां के लोगों को मजबूरन सत्याग्रह का तरीका अख्तियार करना पड़ा। दिल्ली में जब सर हैदरी ने पत्र भिजवाया था, उस समय तो आपका भी यही खयाल था कि वह स्टेट कांग्रेस पर की पाबंदी जल्द ही याने अ. भा. कां. क. की सभा के पूर्व ही हटा देंगे। परंतु सर हैदरी की सरकार ऐसा नहीं कर सकी। सर अकबर के नाम का जो पत्र आपको मैंने दिल्ली में दिखाया था, वह तो वहीं से भेज दिया गया था। सर अकबर ने उसका कोई जवाब नहीं दिया, पहुंच तक नहीं दी। बाद में ता. १९-१०-३८ को मैंने यहां से एक दूसरा पत्र भिजवाया, जिसकी नकल साथ में है। उसका भी उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। हैदराबाद के कई मित्र मेरी सलाह लेना चाहते थे, मुझे वहां बुला रहे थे। उनके पत्रों की नकलें भी इसके साथ हैं। परंतु सर अकबर का जवाब नहीं आने से मैं वहां नहीं जा सका। हैदराबाद के मित्रों को भी मैं रोकता रहा। परंतु उनके धीरज की भी तो आखिर कोई हद होती है। हैदराबाद में जिस तरह अब लाठी-चार्ज आदि शुरू हो गया है, मेरा खयाल है कि हम लोगों का कर्तव्य है कि अब हम अपना अपना स्टेटमेंट भी प्रकाशित करें, परंतु उसके पहले यदि आपका हैदराबाद जाना संभव हो, तो मैं भी वहां आना चाहता हूं, ताकि सब हालत प्रत्यक्ष देख सकूं। सब स्थिति रूबरू देखने पर ही कुछ कहना ज्यादा उचित हो सकता है। आप अपनी राय तथा अपना प्रोग्राम मुझे शीघ्र लिख भेजें।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

[1] **सरोजनी नायडू।**

निर्देशिका

(इस सूची में उन्हीं लोगों के नाम दिये गये हैं जिनको श्री जमनालालजी बजाज ने पत्र लिखे हैं या जिनके पत्र उनको प्राप्त हुए हैं। पत्र-लेखकों तथा प्रदेशों के नाम अकारादि-क्रम से दिये गए हैं। —सं०)

कृपया इस पुस्तक को निम्नलिखित दिनांक या उससे पहले वापस कर दें।

Please return this book on or before the date last stamped below.

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.